निःशुल्क वितरण हेतु

समाज का अध्ययन : भारत और उसके आगे

सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक

कक्षा 7 | भाग 1

सत्र 2026-27

0783

विद्यया ऽमृतमश्नुते

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

यह पाठ्यपुस्तक शासकीय सम्पत्ति है। इसका क्रय-विक्रय अवैधानिक है।

प्रकाशन वर्ष - 2026

छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
के सौजन्य से छत्तीसगढ़ राज्य के द्वारा अनुकूलित

आवरण पृष्ठ, चित्रांकन एवं ले आउट डिजाइनिंग
रेखराज चौरागड़े, राजेंद्र सिंह ठाकुर, हिमांशु वर्मा

प्रकाशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक
छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ______________________

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मंशा है कि शिक्षा को समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जाए। यह इस संकल्प को भी लेकर चलती है कि शिक्षा व्यवस्था जनहित के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परम्परा और संस्कृति से विद्यार्थियों को जोड़कर रखें। रचनात्मकता के साथ सृजन की अभिवृत्ति को बल मिले। वह समाज के विकास में अपनी भूमिका का निर्वाह करने की शिक्षा भी प्राप्त करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नए पाठ्यक्रम के आलोक में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों में छत्तीसगढ़ की संस्कृति संदर्भों को जोड़कर उन्हें छत्तीसगढ़ राज्य के परिप्रेक्ष्य में अनुकूलित किया गया है।

यह पाठ्यपुस्तक ज्ञानवर्धक, दक्षता आधारित एवं 21वीं सदी के कौशल की वृद्धि में सहायक सिद्ध होगी। पाठ्यपुस्तकों के रोचक विषयवस्तु के माध्यम से राज्य के बच्चों को संस्कृति एवं संदर्भों को समझने का अवसर मिलेगा। यह पाठ्यपुस्तक बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं उन्हें वैश्विक नागरिक बनाने में मददगार होगी।

विद्यार्थियों में अपने आस-पास का वातारवण और समाज की गतिविधियों से सतत् जुड़ाव रहें इसका भी प्रयास किया गया है। इतिहास में न केवल तिथियों और घटनाओं का विवरण है बल्कि मनुष्यों, उनके जीवन, उनके समाज, उनके विचारों और उनके परिवर्तन की कहानी है साथ ही नई धार्मिक मान्यताएँ बनीं, व्यापार बढ़ा, नगरों का विकास हुआ, राज्यों का उत्थान, पतन हुआ और अनेक जातीय भाषाई तथा सांस्कृतिक समूहों का मेल-जोल हुआ।

सामाजिक विज्ञान पुस्तक का नाम परिवर्तन कर "समाज का अध्ययन: भारत और उसके आगे" रखा गया है अर्थात भारत की सीमाओं के पार जाकर विश्व को समझने का प्रयास। यह पुस्तक विद्यार्थियों में सामाजिक, मानसिक और तार्किक क्षमताओं का विकास करने में सहायक हैं। प्रत्येक अध्याय में नक्शा, चित्र और गतिविधियाँ दी गई हैं जिससे विद्यार्थी में स्वयं खोज और अध्ययन की प्रवत्ति बढ़ेगी। इस पुस्तक का उद्देश्य यही है छात्र इतिहास को जीवंत अनुभव करें समझें-एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में, जिसमें मनुष्य लगातार समाज और संस्कृति का विकास करता आया है।

इस पाठ्यपुस्तक की विषय वस्तु को पाँच भागों में विभाजित किया गया है:- भारत एवं विश्व: भूभाग एवं उनके निवासी, अतीत के चित्रपट, हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं ज्ञान परंपराएँ, शासन प्रणाली और लोकतंत्र, आस-पास का आर्थिक जीवन एवं सामान्य चेतना अध्याय में बच्चों को नशा से दूर रखने का प्रयास, विद्यालय में प्राथमिक उपचार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है इन सभी विषयों को सुंदर चित्रों, आरेखों, तालिकाओं, मानचित्रों, रेखाचित्रों के द्वारा और रूचिकर बनाया गया है साथ ही क्यूआर कोड स्केन (ई-कंटेंट) करके अध्ययन की सुविधा इस पुस्तक में हैं जिसमें विषय विशेषज्ञों, अध्यापकों,विद्वानों शिक्षाविदों की महती भूमिका रही है। इस पाठ्यपुस्तक के साथ अन्य उपलब्ध संसाधनों, सामग्री, ज्ञान, अनुभव और मार्गदर्शन की भी अध्ययन के दौरान अपेक्षा की जाती है।

हम एनसीईआरटी के निदेशक के प्रति आभारी हैं, जिन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य के लिए एनसीईआरटी दिल्ली द्वारा सृजित पाठ्यपुस्तक को छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में अनुकूलित करने की स्वीकृति एवं बहुमूल्य मार्गदर्शन देकर पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता व सुधार हेतु आवश्यक सुझाव एवं सहयोग किया है साथ ही छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षा स्थायी समिति के अध्यक्ष एवं अन्य सभी सदस्यों को इस कार्य को संपन्न करने के लिए साधुवाद देते हैं एवं उन सभी संस्थाओं और संगठनों तथा छत्तीसगढ़ के सहयोगी शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने इस कार्य को संभव बनाने में उदारता पूर्ण सहायता प्रदान की है।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के परिमार्जन एवं पाठ्यसामग्री पर राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़ के विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों और शिक्षाविदों के सुझावों, उपयोगी सम्मतियों का हृदय से स्वागत है, जिससे इस पाठ्यपुस्तक को भविष्य में और भी अधिक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी बनाया जा सके।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक परिवर्तनकारी पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना की अनुशंसा करती है, जिसके मूल में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और भारतीय ज्ञान परंपरा सन्निहित है। यह नीति विद्यार्थियों को इक्कीसवीं सदी की संभावनाओं और चुनौतियों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करती है। यह दूरदर्शी परिप्रेक्ष्य *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में सभी स्तरों और पाठ्यचर्या क्षेत्रों में समाहित है। बुनियादी और प्रारंभिक स्तर, मानवीय अस्तित्व के पाँचों आयामों को स्पर्श करते हुए विद्यार्थियों की अंतर्निहित योग्यताओं के संपोषण के साथ पंचकोश के अधिगम प्रतिफलों की मध्य-अवस्था में प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस प्रकार, मध्य स्तर कक्षा 6 से कक्षा 8 तक तीन वर्षों को समाहित करते हुए प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों के बीच एक सेतु का कार्य करता है।

मध्य स्तर पर इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य है— विद्यार्थियों को उन आवश्यक कौशलों में दक्ष बनाना, जो उनकी विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करें और उन्हें आने वाली चुनौतियों एवं अवसरों के लिए तैयार करें। मध्य स्तर पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पर विकसित बहुआयामी पाठ्यक्रम में ऐसे नौ विषय सम्मिलित किए गए हैं, जो बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देते हैं। इसमें तीन भाषाओं (कम से कम दो भारतीय मूल की भाषाएँ) सहित विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा एवं कल्याण और व्यावसायिक शिक्षा सम्मिलित हैं।

ऐसी परिवर्तनकारी शिक्षण-संस्कृति के लिए अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए विभिन्न विषयों की उपयुक्त पाठ्यपुस्तकें भी होनी चाहिए। पाठ्य-सामग्री और पढ़ने-पढ़ाने के उपागमों के मध्य इन पाठ्यपुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। यह निर्णायक भूमिका बच्चों की जिज्ञासा और अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति के बीच एक विवेकपूर्ण संतुलन बनाएगी। कक्षा-नियोजन और विषयों की पढ़ाई के मध्य उचित संतुलन बनाने हेतु शिक्षकों का प्रशिक्षण एवं तैयारी भी आवश्यक है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् निरंतर गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए एक प्रतिबद्ध संस्था है। विभिन्न विषयों में पाठ्यचर्या समूहों का गठन किया गया है। इनमें सम्मिलित संबंधित विषय-विशेषज्ञों, शिक्षाशास्त्रियों और अध्यापकों ने ऐसी गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें तैयार करने हेतु हर संभव प्रयास किया है। सामाजिक विज्ञान की यह पाठ्यपुस्तक *समाज का अध्ययन : भारत और उसके आगे, भाग 1,* मध्य स्तर के द्वितीय वर्ष के लिए तैयार की गई है। यह कक्षा 6 के विषयों और दृष्टिकोणों को ही आगे बढ़ाते हुए मुख्यत: मूल अवधारणाओं और प्रमुख घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करती है। यह पाठ्यपुस्तक रोचक ढँग से तैयार किए गए चित्रों, मानचित्रों और चित्रणों के माध्यम से विद्यार्थियों को सिखाने का प्रयास करती है। पाठ्यपुस्तक में अन्वेषण, खोज और अर्थ-निर्माण में सहायक

चिंतन-मनन को बढ़ावा देने वाले अनेकानेक अभ्यास और गतिविधियाँ सम्मिलित हैं। विद्यार्थियों को विचारों और अवधारणाओं को समग्र रूप से समझने में सहायता प्रदान करने हेतु बहुविषयी परिप्रेक्ष्य के साथ विषयगत दृष्टिकोण की निरंतरता रखी गई है।

पाठ्यपुस्तक उन मूल्यों को समेकित करती है जिन्हें हम अपने विद्यार्थियों में विकसित करना चाहते हैं। यह भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ में निहित होने के साथ ही आयु के अनुसार वैश्विक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करती है। मेरे विचार से, सभी व्यावहारिक उद्देश्यों की दृष्टि से यह पाठ्यपुस्तक अपने पाठ्यचर्या लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल रही है, जैसे – सामग्री के उचित चयन के माध्यम से एक ओर यह विद्यार्थियों में स्वाभाविक जिज्ञासा को बढ़ावा देती है, वहीं दूसरी ओर यह राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 की संस्तुतियों के अनुरूप शैक्षणिक दृष्टिकोण अपनाने की दिशा में भी सफल सिद्ध हुई है।

इस पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त, इस स्तर पर विद्यार्थियों को विभिन्न अन्य शिक्षण संसाधनों का अन्वेषण करने हेतु भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ऐसे संसाधन उपलब्ध कराने में विद्यालय के पुस्तकालय की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। इसके साथ ही, विद्यार्थियों को ऐसे प्रयासों हेतु मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देने में अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होगी।

मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी व्यक्तियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी हितधारकों की अपेक्षाओं को पूर्ण करेगी। इसके साथ ही, हम आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करते हैं, जिनसे भावी संस्करणों को और भी उत्कृष्ट बनाया जा सकेगा।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
जून 2025

विद्यार्थी के नाम पत्र

प्रिय विद्यार्थी,

अब आप मध्य स्तर के दूसरे वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। इस वर्ष सामाजिक विज्ञान विषय में हम अपने देश भारत के विषय में और अधिक जानेंगे। यह अध्ययन पाँच विषयों के माध्यम से होगा, जिनकी शुरुआत हमने पिछले वर्ष की थी। इनमें आप न केवल वर्तमान में, बल्कि अतीत में भी भारत के दुनिया के शेष भागों के साथ पारस्परिक संपर्क की झलक पाएँगे। अब जबकि आप पहले से थोड़े बड़े हो गए हैं, इस बार आपको अधिक स्वतंत्र रूप से पढ़ने, लिखने और कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया है। हमने पाठ्यपुस्तक को संक्षिप्त रखने का प्रयास किया है। पुस्तक में रंगीन मानचित्रों, चित्रों और चित्रांकनों की बहुतायत है।

अच्छी शिक्षा का उद्देश्य समझ और आत्मचिंतन को बढ़ावा देना होता है। इस उद्देश्य से हमने आपको खोजने, सोचने, सृजन करने, प्रश्न पूछने और उत्तर प्रस्तावित करने के अनेक अवसर प्रदान किए हैं।

आप देखेंगे कि प्रत्येक विषयवस्तु में कई विषयों, जैसे – इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान या अर्थशास्त्र से सामग्री को एकत्र किया गया है। इससे आपको वास्तविक जीवन की घटनाओं को बेहतर ढँग से समझने में सहायता मिलेगी और आप आज की दुनिया को भी अधिक स्पष्टता से देख सकेंगे।

अंततः हम उन व्यक्तियों, स्थानों और विचारों की पहचान करना आरंभ करेंगे, जिन्होंने भारत की नींव को सशक्त किया और आज के समाज के विभिन्न पहलुओं में झाँकने की कोशिश करेंगे। आप देखेंगे कि अतीत की अनेक बातें, आज के समाज की रचना में अब भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं और भविष्य को सुदृढ़ करने की दिशा दिखा रही हैं।

इस पाठ्यपुस्तक को बहुत से लोगों ने मन से और अथक परिश्रम के साथ तैयार किया है। हमें इसे तैयार करने में अत्यंत आनंद प्राप्त हुआ और हम इसे आपके समक्ष इस आशा के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं कि आप भी इस यात्रा में उतना ही आनंद प्राप्त करेंगे। जब आप नए क्षितिजों की खोज करेंगे या किसी कठिन प्रश्न का कोई मौलिक उत्तर देंगे, तब आप भी उसी आनंद का अनुभव कर सकेंगे।

हम यहाँ कुछ महत्वपूर्ण जानकारी भी दे रहे हैं। इस पाठ्यपुस्तक का प्रत्येक भाग — पाठ्यसामग्री, पार्श्व प्रकोष्ठ (साइड बॉक्स), चित्र अथवा मानचित्र — मूल्यांकन एवं आकलन का विषय हो सकता है। इसके अपवाद हैं —

- सूक्ति/सूक्तियाँ अध्याय के पहले पृष्ठ पर दी गई हैं। कुछ सूक्तियाँ सीधी-सरल हैं, तो कुछ गहन विचार लिए हैं। यदि ये आपको पहली बार पढ़ने पर समझ में नहीं आएँ, तो कोई बात नहीं। ये आपको प्रेरणा या प्रोत्साहन देने के लिए हैं।
- अगले कुछ पृष्ठों में दी गई 'इस पुस्तक के साथ आपकी यात्रा' संबंधित सामग्री।
- शब्दावली (पाठ्यपुस्तक के अंत में)।

उपरोक्त का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

इस पुस्तक के साथ आपकी यात्रा

मध्य स्तर में आपका यह दूसरा वर्ष है। अब आप सामाजिक विज्ञान के अध्ययन के दृष्टिकोण से भलीभाँति परिचित हो चुके हैं। इस वर्ष हम भारत की खोज की अपनी यात्रा को और आगे बढ़ाएँगे। हम प्रश्न पूछते रहेंगे और उनके उत्तर तलाशेंगे— लोग अतीत में कैसे रहते थे? हमारा देश भारत या इंडिया, कैसा दिखता है? इसके पहाड़, नदियाँ और मैदान कैसे हैं? मौसम जैसा व्यवहार करता है, वैसा क्यों करता है?... और इसी तरह और भी बहुत कुछ। कुछ अध्यायों में हमारे मित्र भविषा और ध्रुव (हमें उम्मीद है कि आप भी उनके मित्र बनेंगे) अपने काल-यंत्र के साथ हमारी यात्रा में साथ रहेंगे।

इस नई पाठ्यपुस्तक की अनेक रोचक विशेषताएँ हैं। जैसे ही आप पृष्ठों को पलटेंगे, विभिन्न प्रकार के रंगीन आरेख, चित्र, मानचित्र और चित्रांकन देखेंगे। आइए, आपको पुस्तक और इसकी विशेषताओं की झलक दिखाते हैं। आपके शिक्षक भी इस संदर्भ में आपका मार्गदर्शन करेंगे।

प्रत्येक अध्याय का आरंभ किसी प्रसिद्ध व्यक्ति अथवा ग्रंथों के सुविचार से होता है। उसे पढ़िए और स्मरण रखिए। इनमें से कुछ सूक्तियाँ गहन विचार प्रस्तुत करती हैं। यदि ये आपको समझ न आएँ, तो घबराइए नहीं। आप बाद में उन्हें पुन: पढ़कर कक्षा में उन पर चर्चा कर सकते हैं। यहाँ कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं —

साम्राज्यों का उदय

अध्याय 5

जनविहीन देश नहीं हो सकता और देशविहीन राज्य नहीं होता।

—कौटिल्य (अर्थशास्त्र)

मूल पाठ सरल भाषा में लिखा गया है। आप भारत और अन्य स्थानों के लोगों एवं स्थलों के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।

तकनीकी शब्दों को पाठ के हाशिए में समझाया गया है। इन शब्दों को पुस्तक के अंत में दी गई **शब्दावली** (लघु शब्दकोश) में भी सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त हमने कुछ ऐसे शब्द सम्मिलित किए हैं जिनसे हो सकता है कि आप परिचित न हों। शब्दावली को प्राय: देखते रहें।

मूलभूत आवश्यकताएँ
अर्थशास्त्र में मूलभूत आवश्यकताओं से तात्पर्य उन बुनियादी वस्तुओं से होता है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवित रहने के लिए आवश्यक हैं, जैसे – भोजन, पानी, वस्त्र और आवास।

आवश्यकताएँ
अर्थशास्त्र में आवश्यकता से तात्पर्य किसी भी व्यक्ति की उन इच्छाओं से होता है, जो जीवित रहने के लिए आवश्यक नहीं हैं।

बाजार क्या है?

वह स्थान जहाँ लोगों द्वारा विभिन्न वस्तुओं का क्रय और विक्रय किया जाता है, उसे बाजार कहते हैं। इसे हिन्दी में हाट और कन्नड़ में 'मारुकट्टे' कहा जाता है। आपके क्षेत्र में इसे क्या कहा जाता है? बाजार कहीं भी हो सकता है और वर्तमान में ऑनलाइन बाजार बहुत ही ज्यादा प्रचलित हो रहा है। वस्तुएँ और सेवाएँ बाजार के माध्यम से व्यक्तियों, **परिवारों** और **व्यापारियों** के लिए उपलब्ध हो रही हैं। लंबे समय से व्यक्ति वस्तुओं और सेवाओं की **मूलभूत आवश्यकताओं** एवं अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बाजारों पर निर्भर रहे हैं। इसके अलावा बाजार लोगों, परंपराओं और विचारों को जोड़ते हैं।

आइए, 16वीं शताब्दी के भारत से एक बाजार का उदाहरण देखते हैं।

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *भारतीय जलवायु को कौन-कौन से तत्व विविध बनाते हैं?*
2. *मानसून क्या है? यह कैसे बनते हैं?*
3. *जलवायु का समाज, संस्कृति और आर्थिक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ता है?*
4. *जलवायु की समझ हमें प्राकृतिक आपदा के लिए तैयार रहने में किस प्रकार सहायता करती है?*
5. *जलवायु परिवर्तन क्या है? इसके परिणाम क्या-क्या होते हैं?*

0783CH03

महत्वपूर्ण प्रश्न अनुभाग में केवल दो या तीन प्रश्नों के माध्यम से आपको यह अनुमान हो जाएगा कि इस अध्याय में आप क्या-क्या जानने और समझने वाले हैं।

हमें अध्याय को पढ़ते हुए **'आइए पता लगाएँ' 'आइए विचार करें'** और **'पुनरावलोकन करें'** जैसे कुछ खंड मिलेंगे। इनमें गतिविधियाँ, पाठगत अभ्यास या वह विषय दिए गए हैं, जो आगे गहन चिंतन के अवसर प्रदान करते हैं।

आइए पता लगाएँ

आपके विचार से शासकों ने अपने साम्राज्य विस्तार के लिए युद्ध के अतिरिक्त दूसरे और कौन-कौन से उपाय अपनाए होंगे? अपने विचार लिखिए और अपनी कक्षा में साझा कीजिए।

आइए विचार करें

यदि कोई राजा स्वयं को ईश्वरीय शक्तियों से युक्त मानने लगे, तो क्या हो सकता है? वह अपनी प्रजा पर किस प्रकार शासन करेगा?

पुनरावलोकन करें

कक्षा छह की विज्ञान की पाठ्यपुस्तक *जिज्ञासा* में आपने तापमान को मापने वाले विभिन्न तापमापी यंत्रों के बारे में पढ़ा है, जैसे – ज्वरमापी (क्लीनिकल थर्मामीटर) और प्रयोगशाला तापमापी (लेबोरेटरी थर्मामीटर)। आपने तापमान के पैमानों के बारे में भी सीखा है। उनमें से एक सेल्सियस पैमाना है और दूसरा फॉरेनहाइट पैमाना। उदाहरण के लिए, यदि हमारे पास 15 डिग्री सेल्सियस (जो 15°C के रूप में लिखा जाता है) का ठंडा तापमान है, तो वह 59 डिग्री फॉरेनहाइट (जो 59°F के रूप में लिखा जाता है) के बराबर होता है।

इसे अनदेखा न करें खंड में कुछ रोचक या मजेदार तथ्य दिए गए हैं, जो आपकी जिज्ञासा को जगाते हैं।

इसे अनदेखा न करें

प्रसिद्ध संस्कृत व्याकरणाचार्य पाणिनि का समय भी लगभग 5वीं शताब्दी सा.सं.पू. में ही माना जाता है, जब नंदों का राज्य था। उन्हें एक प्राचीन संस्कृत ग्रंथ *अष्टाध्यायी* की रचना के लिए जाना जाता है, जिसमें 3996 सूत्रों के माध्यम से संस्कृत व्याकरण के नियमों को संकलित किया गया है।

चित्र 5.8 — पाणिनि की स्मृति में जारी एक भारतीय डाक टिकट

आगे बढ़ने से पहले...

- भारत के सभी धर्मों के अपने-अपने पावन स्थल हैं, जिन्हें बिंदुओं के द्वारा स्थलाकृति पर प्रस्तुत किया गया है। बौद्ध, जैन और सिख धर्म में ऐसे पावन स्थल सामान्य रूप से किसी महान व्यक्ति से संबंधित हैं।
- हिंदू धर्म में तीर्थस्थलों का वृहत जाल है, जो संपूर्ण भारत को आपस में जोड़ता है। तीर्थयात्रा की परंपरा लोगों के जीवन में गहराई से जुड़ी हुई है। यह न केवल व्यक्तिगत एवं आध्यात्मिक विकास को पोषित करती है, अपितु व्यापार और अखिल भारतीय सांस्कृतिक एकीकरण के सामाजिक-आर्थिक उद्देश्य को भी समर्थन देती है।
- हिंदुओं, जनजातियों एवं लोक-परंपराओं में भूमि को पावन माना जाता है।
- उपेक्षा और देखभाल की कमी के कारण हमारे पावन स्थल प्रदूषित होते जा रहे हैं। हमारी राष्ट्रीय धरोहर की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। हमारा संविधान भी हमें इसकी याद दिलाता है।

प्रत्येक पाठ के अंत में **'आगे बढ़ने से पहले...'** दिया गया है, जो पाठ के मूल विचारों को संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत करता है। तत्पश्चात अभ्यास, प्रश्न अथवा परियोजनाएँ दी गई हैं।

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर एक **क्यू.आर.कोड** दिया गया है, जो आपको पाठ की विषयवस्तु से संबंधित रोचक वीडियो, पहेली, खेल, कहानियों आदि तक ले जाएँगे। यह आपको आगे की खोज के लिए प्रेरित भी करेंगे। इनको स्वयं अथवा किसी वयस्क की सहायता लेकर स्कैन कीजिए और सामग्री का अवलोकन कीजिए।

इस पाठ्यपुस्तक के अध्ययन में आपके शिक्षक आपके साथ होंगे। हम आशा करते हैं कि आप इस पुस्तक के कुछ अंशों का अध्ययन अपने माता-पिता या अभिभावकों के साथ भी करेंगे। संभवतः कुछ गतिविधियों को उनके साथ करना आपको अच्छा लगेगा।

हम सामाजिक विज्ञान के अध्ययन द्वारा मानव-जीवन एवं समाज पर गहरी अंतर्दृष्टि विकसित करने की आपकी इस यात्रा के आनंदप्रद होने की कामना करते हैं।

भारत का संविधान

भाग-3 (अनुच्छेद 12-35)
(अनिवार्य शर्तों, कुछ अपवादों और युक्तियुक्त निर्बंधन के अधीन)
द्वारा प्रदत्त

मूल अधिकार

समता का अधिकार

- विधि के समक्ष एवं विधियों के समान संरक्षण;
- धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर;
- लोक नियोजन के विषय में;
- अस्पृश्यता और उपाधियों का अंत।

स्वातंत्र्य-अधिकार

- अभिव्यक्ति, सम्मेलन, संघ, संचरण, निवास और वृत्ति का स्वातंत्र्य;
- अपराधों के लिए दोष सिद्धि के संबंध में संरक्षण;
- प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण;
- छः से चौदह वर्ष की आयु के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा;
- कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण।

शोषण के विरुद्ध अधिकार

- मानव के दुर्व्यापार और बलात श्रम का प्रतिषेध;
- परिसंकटमय कार्यों में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध।

धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार

- अंतःकरण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार की स्वतंत्रता;
- धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता;
- किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के संबंध में स्वतंत्रता;
- राज्य निधि से पूर्णतः पोषित शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के संबंध में स्वतंत्रता।

संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार

- अल्पसंख्यक-वर्गों को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति विषयक हितों का संरक्षण;
- अल्पसंख्यक-वर्गों द्वारा अपनी शिक्षा संस्थाओं का स्थापन और प्रशासन।

सांविधानिक उपचारों का अधिकार

- उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के निर्देश या आदेश या रिट द्वारा प्रदत्त अधिकारों को प्रवर्तित कराने का उपचार।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शिक्षण अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

1. एम.सी.पंत., *कुलाधिपति,* राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (**अध्यक्ष**)
2. मञ्जुल भार्गव, *आचार्य*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी (**सह-अध्यक्ष**)
3. सुधा मूर्ति, *प्रतिष्ठित लेखिका* एवं शिक्षाविद्
4. स्व. बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.–पी.एम.)
5. शेखर मांडे, *पूर्व-महानिदेशक*, *सी.एस.आई.आर. एवं प्रतिष्ठित आचार्य,* सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
6. सुजाता रामदोरई, *आचार्य*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा
7. शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई
8. यू. विमल कुमार, *निदेशक,* प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरु
9. मिशेल डैनिनो, *अतिथि आचार्य*, आई.आई.टी. गाँधीनगर
10. सुरीना राजन, *आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त),* हरियाणा एवं पूर्व महानिदेशक, एच.आई.पी.ए.
11. चमू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय
12. संजीव सान्याल, *सदस्य,* प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.– पी.एम.)
13. एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज, चेन्नई
14. गजानन लोंढे, *प्रमुख*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.
15. राबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम
16. प्रत्यूष कुमार मंडल, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
17. दिनेश कुमार, *आचार्य,* विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
18. कीर्ति कपूर, *आचार्य*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
19. रंजना अरोड़ा, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष,* पाठ्यक्रम अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली **(सदस्य-सचिव)**

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

सी.ए.जी. सामाजिक विज्ञान (सी.ए.जी-एस.एस) अध्यक्ष
मिशेल डैनिनो, अतिथि *आचार्य*, आई.आई.टी. गाँधीनगर

सी.ए.जी. (अर्थशास्त्र) अध्यक्ष
संजीव सान्याल, *सदस्य*, ई.ए.सी – पी.एम.

सहयोग
अंकुर कक्कड़, *सह-आचार्य*, सेंटर फॉर इंडिक स्टडीज, इंडस यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

अजीज महदी, फारसी *अध्येता* एवं *पूर्व फैलो*, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला; तथा सदस्य, सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान)

अल्का सिंह, *सहायक आचार्य* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल, रा.शै.अ.प्र.प.

आशीर्वाद द्विवेदी, *फैकल्टी* ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय

कीर्ति कौल, हेड, रिसर्च एंड रिर्सोसेज, शिव नादर स्कूल, नोएडा

जावेद इकबाल भट, *सहायक आचार्य*, पोस्ट ग्रेजुएट डिपार्टमेंट ऑफ इंग्लिश, कश्मीर विश्वविद्यालय

जॉनसन ओडाक्कल, *कोमोडोर* (*सेवानिवृत्त*) एवं *पूर्व निदेशक*, मैरिटाइम हिस्ट्री सोसाइटी; तथा *फैकल्टी*, आदित्य बिड़ला वर्ल्ड एकेडमी

दिव्या इंद्रा चटर्जी, *चार्टर्ड अकाउंटेंट*, *सीनियर कंसल्टेंट*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

नबज्योति डेका, *सहायक आचार्य*, फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय

निखिल बेल्लारिकर, *इतिहासकार*, *लेखक* एवं *अनुवादक*

पवन कुमार, *सहायक आचार्य* एवं *प्रभारी*, भूगोल विभाग, फैकल्टी ऑफ अर्थ, एनवायरमेंट एंड स्पेस साइंसेज, चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, प्रेम नगर, भिवानी

पायल मुखर्जी, *संकाय सदस्य*, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी विभाग, इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली; तथा *सहायक संकाय सदस्य*, अंग्रेजी विभाग, कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, सस्केचवन विश्वविद्यालय, कनाडा

प्राची लाहिरी, *शिक्षक* (इतिहास), नेशनल पब्लिक स्कूल, बेंगलुरु

प्रोबल रॉय चौधरी, *निदेशक*, न्यू इंडियन स्टडीज केंद्र; तथा *आचार्य*, अंग्रेजी विभाग, सिस्टर निवेदिता विश्वविद्यालय, कोलकाता

भावना पालीवाल, *एजुकेटर* एवं *सीनियर कंसल्टेंट*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

भैरू लाल यादव, *सह-आचार्य*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

पूर्वा भट्ट, *सीनियर कंसल्टेंट*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

मृणमयी रे, *सहायक आचार्य* (इतिहास), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

राधा नारायणन, *शोधकर्ता* एवं *लेखक*, इतिहास पाठ्यपुस्तक, चिन्मय मिशन, चेन्नई

रिद्धि गर्ग, *संपादक* एवं *सीनियर कंसल्टेंट*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

संदीपा मदान, *एजुकेटर*, शिव नादर स्कूल, गुरुग्राम

सृष्टि चौहान, *यंग प्रोफेशनल*, (ई.ए.सी.–पी.एम.) नीति आयोग

सुपर्णा दिवाकर, *एजुकेटर* एवं *डेवलपमेंट सेक्टर प्रोफेशनल*; तथा *चीफ कंसल्टेंट*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

सुमन गौतम, *प्रधानाचार्य*, शिवा इंटरनेशनल रेजिडेंशियल स्कूल, बिलासपुर, हिमाचल

सुरेन्द्र सी. ठाकुर देसाई, *आचार्य* एवं *विभागाध्यक्ष*, भूगोल और ग्रामीण विकास विभाग, गोगटे जोगलेकर कॉलेज, रत्नागिरि

सदस्य समन्वयक

सीमा शुक्ला ओझा, *आचार्य* (इतिहास), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली, सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान)

एम.वी. श्रीनिवासन, *आचार्य* (अर्थशास्त्र), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली, सी.ए.जी. (अर्थशास्त्र)

समीक्षक

अदिति मिश्रा, *निदेशक प्रधानाचार्य*, दिल्ली पब्लिक स्कूल, गुरुग्राम; और शिक्षक – कनु चोपड़ा, लीजा दत्ता, अवनी मेहता, ममता कुमार, सुपर्णा शर्मा

अनुराग बेहर, *सदस्य*, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा परिवेक्षण समिति एवं *सी.ई.ओ.*, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, बेंगलुरु

अर्नब भट्टाचार्य, *सेंटर डायरेक्टर*, होमी भाभा सेंटर फॉर साइंस एजुकेशन, टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (टी.आई.एफ.आर.), मुंबई; तथा *आचार्य*, डिपार्टमेंट ऑफ कंडेंस्ड मैटर फिजिक्स एंड मटेरियल साइंस, टी.आइ.एफ.आर.

अपर्णा पांडे, *आचार्य* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कुमारी रोहिणी, *सहायक आचार्य* (इतिहास), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

गौरी श्रीवास्तव, *आचार्य* (इतिहास), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

जगबीर सिंह, *अध्यक्ष*, एन.ओ.सी. एवं *कुलाधिपति*, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय

जया सिंह, *आचार्य* (अर्थशास्त्र), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

तनु मलिक, *आचार्य* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

पी.के. मंडल, *आचार्य* (इतिहास) एवं *विभागाध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रतिमा कुमारी, *आचार्य* (अर्थशास्त्र), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रियदर्शनी सामंतराय, *सहायक आचार्य* (समाजशास्त्र), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

बीरबल लूनीवाल, *सहायक आचार्य* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रश्मि, *सह-आचार्य* (वाणिज्य, व्यवसाय अध्ययन), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रुचिका सिंह, आई.के.एस. डिवीजन, शिक्षा मंत्रालय

वांगथांग खोबुंग, *सहायक आचार्य* (राजनीति विज्ञान), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

शंकर शरण, *आचार्य* (राजनीति विज्ञान), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

शिप्रा वैद्या, *आचार्य* (वाणिज्य), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सविता सागर, *सहायक आचार्य* (राजनीति विज्ञान), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

साईनाथ शंकरराव कबाड़े, *सहायक आचार्य* (इतिहास), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सुभाष सिंह, *सहायक आचार्य* (राजनीति विज्ञान), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

हिंदी अनुवाद

आनंद राजन पाल, *टी.जी.टी.,* सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रामबाग, बस्ती (उ.प्र.)

अंकित जोशी, *प्रवक्ता,* राजनीति विज्ञान, रा.इ.का. बुरांसखंडा, रायपुर, देहरादून, उत्तराखंड

ऋषि बाजपेई, *टी.जी.टी.,* सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, वी.आई.पी. रोड, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश

जितेंद्र सिंह नागर, *सहायक आचार्य*, अंग्रेजी विभाग, लाजपत राय कॉलेज, साहिबाबाद, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

बीरबल लूनीवाल, *सहायक आचार्य*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

भैरू लाल यादव, *सह-आचार्य* (जनसंख्या अध्ययन) सा.वि.शि.वि., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रवि नौटियाल, *सहायक आचार्य*, केंद्रीय शैक्षिक प्रोद्योगिकी संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रश्मि, *सह-आचार्य* (वाणिज्य, व्यवसाय अध्ययन), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

राम नाथ झा, *आचार्य*, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, जे.एन.यू., नई दिल्ली

सविता सागर, *सहायक आचार्य* (राजनीति विज्ञान), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सौरभ कुमार सुमन, *रिसर्च एसोसिएट*, डॉ. अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

हिंदी अनुवाद समीक्षा

अपर्णा पांडे, *आचार्य* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कुमारी रोहिणी, *सहायक आचार्य* (इतिहास), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

जया सिंह, *आचार्य* (अर्थशास्त्र), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

तनु मलिक, *आचार्य* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

तरुण मिश्रा, *टी.जी.टी.* (सामाजिक विज्ञान), राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मुकंदपुर; तथा *सदस्य*, कोर अकादमिक यूनिट, परीक्षा विभाग, शिक्षा निदेशालय, नई दिल्ली

तौसीफ अहमद, *सीनियर कंसल्टेंट*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

दिव्या इंद्रा चटर्जी, *चार्टर्ड अकाउंटेंट* एवं *सीनियर कंसल्टेंट*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

नीरजा रश्मि, *आचार्य* (सेवानिवृत्त), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

पी.के. मंडल, *आचार्य* (इतिहास) एवं विभागाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रतिमा कुमारी, *आचार्य* (अर्थशास्त्र), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

बलबीर सिंह बुटोला, क्षेत्रीय विकास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

बीरबल लूनीवाल, *सहायक आचार्य* (भूगोल), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

भावना पालीवाल, *एजुकेटर* एवं *सीनियर कंसल्टेंट*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

लीना सिंह, *प्राचार्य* (सेवानिवृत्त), केंद्रीय विद्यालय संगठन

शंकर शरण, *आचार्य* (राजनीति विज्ञान), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

शिप्रा वैद्या, *आचार्य* (वाणिज्य), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

शुचि दयाल, *स्वतंत्र शोधकर्ता*

संगीता श्रीवास्तव, *पी.जी.टी.* (इतिहास) (सेवानिवृत्त), केंद्रीय विद्यालय संगठन

साईनाथ शंकरराव कबाड़े, *सहायक आचार्य* (इतिहास), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सारिका चंद्रवंशी साजू, *आचार्य* (समाजशास्त्र), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सीमा शुक्ला ओझा, *आचार्य* (इतिहास), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली, सी.ए.जी. (सामाजिक विज्ञान)

सुभाष सिंह, *सहायक आचार्य* (राजनीति विज्ञान), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

हरीश मीणा, *सहायक आचार्य* (जनसंख्या अध्ययन), सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर
अनुकूलन समूह

संयोजक:

कौस्तभ चटर्जी, डॉ.डी.के.बोदले

संपादन सहयोग:

दानीराम वर्मा (से.नि.प्राचार्य), डॉ.आर.एस.चौहान (से.नि.प्राचार्य),

बी.आर.साहू (पूर्व फैकल्टी एस.सी.ई.आर.टी. भाषाविद्)

विषय समन्वयक:

डॉ.सीमा श्रीवास्तव, लीना नेमपाण्डे

सहयोग:

डॉ.खिलेश्वरी साव, डॉ.सरिता साहू, अमृत लाल साहू, मनीष मुखर्जी, डॉ.सुष्मिता मुखर्जी, भारती दुबे, डॉ.मीनाक्षी बाजपेयी, ललित कुमार साहू

राज्य शिक्षा स्थायी समिति, छतीसगढ़

क्रं	नाम व पदनाम	
1.	श्री आलोक चक्रवाल, कुलपति गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर	**अध्यक्ष**
2.	संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर	**सदस्य सचिव**
3.	संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
4.	मिशन संचालक, समग्र शिक्षा, रायपुर, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
5.	डॉ. वासुदेव साहसी, सहा.प्रा., शा.जे. योगानंदम छ.ग. महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
6.	डॉ. सुभाष चन्द्राकर, प्राध्या., दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
7.	श्री मनीष देवांगन, वि.खं. शिक्षा अधिकारी, कार्या. धरसींवा, जिला-रायपुर	**सदस्य**
8.	श्री नरेन्द्र सिंह राजपूत, सहा. शिक्षक, प्राथ. विद्या. सिवनी खुर्द (बोडला), जिला-कबीरधाम	**सदस्य**
9.	श्री मनोज सिंह, शा. शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर	**सदस्य**
10.	श्री दिलीप केसरवानी, पूर्व प्राचार्य, कबीर नगर, रायपुर	**सदस्य**

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति के अध्यक्ष, सह-अध्यक्ष एवं सदस्यों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* के दृष्टिकोणों को पाठ्यपुस्तक में समाहित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। साथ ही, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री निर्माण समिति के अध्यक्ष, सह-अध्यक्ष एवं सदस्यों का भी धन्यवाद ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक की गहन समीक्षा एवं मार्गदर्शन प्रदान किया। इसके अतिरिक्त, रा.शै.अ.प्र.प. सामाजिक विज्ञान और अर्थशास्त्र के पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों एवं अन्य संबंधित समूहों का आभार प्रकट करती है, जिन्होंने पार-अनुशासनिक विषयों (क्रॉस-कटिंग थीम्स) को पुस्तक में समाहित करने में सहयोग और मार्गदर्शन दिया।

पाठ्यपुस्तक निर्माण में सामाजिक विज्ञान और अर्थशास्त्र के पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के सदस्यों की सहभागिता और योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इस पाठ्यपुस्तक में पार-अनुशासनिक विषयों के समेकन में योगदान देने वाले अन्य पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के अध्यक्षों और सदस्यों को भी विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित किया जाता है।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण के प्रत्येक चरण में सहयोग प्रदान करने वाले प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी. के सामाजिक विज्ञान दल के सदस्यों— सुपर्णा दिवाकर, भावना पालीवाल, दिव्या इंद्रा चटर्जी, रिद्धि गर्ग और पूर्वा भट्ट की अथक मेहनत एवं समर्पण विशेष उल्लेखनीय रहा है। हम बैनियन ट्री की श्वेता राव के भी विशेष आभारी हैं, जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक के आकर्षक डिजाइन, रूप-सज्जा और दृश्य गुणवत्ता में अत्युत्तम योगदान दिया तथा संपूर्ण प्रक्रिया में निरंतर निष्ठापूर्वक कार्य किया। हमें यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि नीति आयोग की *यंग प्रोफेशनल* (ई.ए.सी.-पी.एम.) सृष्टि चौहान का निरंतर सहयोग अत्यंत सराहनीय रहा।

परिषद, अन्य सदस्यों— अंजू गाँधी, एम. प्रमोद कुमार, फणीन्द्र शर्मा, निधि एम. शास्त्री, श्रवण एस.के., सिद्धार्थ ए. भार्गव, स्वस्ति शर्मा, तरुण चौबीसा तथा प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.के अन्य सदस्यों के योगदान के लिए भी आभारी है।

चित्रांकन कार्य में अल्बर्ट श्रीवास्तव, आशुतोष कांबली, अत्रि चेतन और प्रशांत सिंह अपने अभिनव डिजाइनों, रेखाचित्रों और रचनात्मकता के लिए प्रशंसा के पात्र हैं, जिन्होंने पुस्तक की दृश्य गुणवत्ता को समृद्ध किया। मानचित्रों को सजीव बनाने के लिए हम अर्काप्रोवो दास, एकता गुप्ता और पवन कुमार के कार्य की प्रशंसा करते हैं, विशेष रूप से जिस प्रकार हमारे बार-बार बदलाव के अनुरोधों को धैर्यपूर्वक स्वीकार करते हुए विद्यार्थियों के लिए मानचित्रों को जीवंत बनाया है। वी.एन. प्रभाकर द्वारा ऐतिहासिक स्थलों से संबंधित चित्रों को उनके व्यक्तिगत संग्रह से उदारतापूर्वक साझा करने के लिए परिषद् उनके

प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है। पाठ्यपुस्तक निर्माण में विभिन्न स्तरों पर सहयोग के लिए हम वेदिका पुंडीर, *जे.पी.एफ.*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग की सराहाना करते हैं।

परिषद्, इस पुस्तक के प्रकाशन और इसे अंतिम रूप देने के लिए प्रकाशन प्रभाग की आभारी है। इस प्रक्रिया में भाषा संपादन हेतु अतुल मिश्रा, *संपादक* (संविदा); राहुल सेमवाल, *सहायक संपादक* (संविदा); श्रेया गुप्ता, प्रज्ञा दूबे, प्रियंका एवं अब्दुल मजीद, *प्रूफरीडर* (संविदा); तथा पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, *डी.टी.पी. प्रकोष्ठ*; एवं बिट्टू कुमार महतो, नरेश कुमार, विपन कुमार शर्मा, सौरभ कुमार, मो. रिजवान एवं वकार युनिस, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) के प्रति भी परिषद् आभार व्यक्त करती है।

विषय-सूची

प्राक्कथन *iii*
आमुख *v*
विद्यार्थी के नाम पत्र *vii*
इस पुस्तक के साथ आपकी यात्रा *ix*

विषय (क) — भारत एवं विश्व : भूभाग एवं उनके निवासी

1. भारत की भौगोलिक विविधता 1
2. मौसम को समझना 27
3. भारत की जलवायु 45

विषय (ख) — अतीत के चित्रपट

4. नवारंभ— नगर एवं राज्य 67
5. साम्राज्यों का उदय 83
6. पुनर्गठन का काल 117
7. गुप्त काल— अथक सृजनशीलता का युग 145

विषय (ग) — हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं ज्ञान परंपराएँ

8. भौगोलिक क्षेत्र कैसे पावन होते हैं? 167

विषय (घ) — शासन प्रणाली और लोकतंत्र

9. शासक से शासित तक— सरकार के प्रकार 185
10. भारत का संविधान— एक परिचय 209

विषय (ङ) — हमारे आस-पास का आर्थिक जीवन

11. वस्तु विनिमय से मुद्रा तक 229
12. बाजारों की समझ 247

सामान्य चेतना

1. आओ प्राथमिक उपचार को जाने *274*
2. नशे के दुष्प्रभाव से बचपन बचायें 279

भारत का राजनैतिक मानचित्र *282*
भारत का भौतिक मानचित्र *283*
शब्दावली *284*
बाह्य स्रोतों से प्राप्त चित्र और मानचित्र *294*

वसुधैव कुटुम्बकुम
संपूर्ण विश्व एक परिवार है

भारत की भौगोलिक विविधता

अध्याय 1

यह देश (भारत) अपने भूगोल के कारण ही अन्य देशों से सर्वथा भिन्न प्रतीत होता है और यही इसके राष्ट्रीय चरित्र निर्माण में विशिष्ट योगदान देता है।

—श्री अरविंद

चित्र 1.1 — कर्नाटक में स्थित जोग जलप्रपात। पठार और जलप्रपात पर ध्यान दीजिए। जलप्रपात की शक्ति को विशेष टरबाइनों के माध्यम से जलविद्युत में बदला जाता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *भारत की कुछ प्रमुख भौगोलिक विशेषताएँ क्या हैं?*
2. *भारत की भौगोलिक विविधताएँ हमारे जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?*

0783CH01

1984 में अंतरिक्ष में जाने वाले प्रथम भारतीय अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी से बात की थी। जब इंदिरा गांधी ने उनसे यह प्रश्न किया कि "अंतरिक्ष से भारत कैसा दिखता है?" तब उन्होंने उत्तर दिया था, "सारे जहाँ से अच्छा" (यह 20वीं शताब्दी के आरंभ की एक प्रसिद्ध कविता की प्रारंभिक पंक्ति है।)

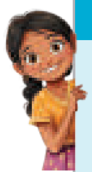

आइए पता लगाएँ

इस पुस्तक के अंत में दिए गए भारत के मानचित्र का अवलोकन कीजिए। आपको इसमें क्या-क्या दिखाई दे रहा है? क्या आपको पिछली कक्षा में पढ़ाई गई विभिन्न प्रकार की भू-आकृतियाँ— पर्वत, पठार और मैदान स्मरण हैं? आप मानचित्र पर कौन-कौन सी भू-आकृतियों को पहचान सकते हैं? मानचित्र पर अलग-अलग रंगों का क्या तात्पर्य है? (संकेत— मानचित्र पर अंकित संकेत सूची प्रत्येक क्षेत्र की ऊँचाई को दर्शाती है।)

इस अध्याय को पढ़ते समय, बीच-बीच में भौतिक मानचित्र को देखते रहिए।

क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व का सातवाँ बड़ा देश है और एशिया महाद्वीप का भाग है। अपने पड़ोसी देशों— पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका और म्यांमार के साथ मिलकर यह एक बड़े भूभाग का निर्माण करता है, जिसे भारतीय उपमहाद्वीप के नाम से भी जाना जाता है। सामान्यत: हम भारत को पाँच प्रमुख भागों में विभाजित करते हैं— महान पर्वतीय क्षेत्र, गंगा और सिंधु का मैदान, मरुस्थलीय भूभाग, दक्षिणी प्रायद्वीपीय और द्वीपसमूह। इस अध्याय में हम इन भूभागों के विषय में संक्षिप्त चर्चा करेंगे तथा इनकी प्रमुख विशेषताओं पर एक विहंगम दृष्टि डालेंगे। साथ ही यह भी देखेंगे कि इन भू-आकृतियों की कुछ विशेषताएँ समीप से देखने पर कैसी प्रतीत होती हैं। अभी इन सभी बिंदुओं का विस्तारपूर्वक वर्णन कठिन है, क्योंकि भारत एक विशाल तथा अत्यंत विविधतापूर्ण देश है (इसका अनुभव शीघ्र ही आपको भी होगा)।

हिमालय पर्वत शृंखला उत्तर दिशा में एक प्राकृतिक प्राचीर के रूप में खड़ी है, जबकि थार मरुस्थल और अरब सागर भारत की पश्चिमी सीमा बनाते हैं। दक्षिण में हिंद महासागर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी एक प्राकृतिक सीमा के रूप में उपस्थित हैं। ये भौगोलिक विशेषताएँ भारत और महाद्वीप के अन्य भागों के मध्य विभाजक की भूमिका निभाने के साथ-साथ भारत की जलवायु, संस्कृति और इतिहास को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

आइए पता लगाएँ

→ क्या आपको अक्षांश और देशांतर रेखाओं पर अपना पाठ याद है? मानचित्र को देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि भारत लगभग किन अक्षांशों और देशांतर रेखाओं के मध्य स्थित है?

→ भारत के भौतिक मानचित्र पर उपर्युक्त विशेषताओं की पहचान कीजिए।

आइए, अब हम भारत के उत्तर में स्थित हिमालय से लेकर दक्षिण में हिंद महासागर के द्वीपों तक और फिर पूर्व की ओर एक साथ यात्रा करें। मानचित्र पर विभिन्न रंग हमें पहले से ही भौगोलिक विविधता का आभास कराते हैं। मानचित्र की संकेत-सूची से स्वयं को परिचित कीजिए और देखिए कि किस प्रकार विभिन्न रंग पृथ्वी की अलग-अलग ऊँचाई को दर्शाते हैं।

हिमालय पर्वत शृंखला

मानचित्र पर हिमालय पर्वत शृंखला की लंबाई को देखिए। यह एक विशाल प्राकृतिक प्राचीर के समान प्रतीत होती है। क्या आप मानचित्र की संकेत-सूची के माध्यम से हिमालय के विभिन्न स्थानों की ऊँचाई का अनुमान लगा सकते हैं?

चित्र 1.2 — हिमालय पर्वत शृंखला का उपग्रह से लिया गया चित्र। इस पर्वत शृंखला की कुल लंबाई लगभग 2500 कि.मी. है।

पुनरावलोकन करें

हिमालय पर्वत शृंखला आकाश को छूती हुई प्रतीत होती है। वास्तव में, इसकी कई चोटियाँ 8000 मीटर से भी अधिक ऊँची हैं और इन्हें सामूहिक रूप से 'आठ हजारी' कहा जाता है। यह पर्वत शृंखला एशिया के छह देशों— भारत, नेपाल, भूटान, चीन, पाकिस्तान और अफगानिस्तान में फैली हुई है। क्या आप विश्व के सर्वाधिक ऊँचाई वाले पर्वत का नाम बता सकते हैं?

गर्मियों में पर्वतों पर जमी बर्फ पिघलती है और यही सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी प्रमुख नदियों का प्रमुख जलस्रोत बनती है। ये नदियाँ और इनकी सहायक नदियाँ लोगों को पीने योग्य जल तथा कृषि एवं औद्योगिक उपयोग के लिए जल उपलब्ध कराती हैं और करोड़ों लोगों के जीवन को सुगम बनाती हैं। इसलिए कभी-कभी हिमालय पर्वत शृंखला को 'एशिया का जल शिखर' भी कहा जाता है। हिमालय अनेक संस्कृतियों और आस्थाओं का केंद्र भी है। इन पर्वतों को पावन माना जाता है। यहाँ अनेक मठों और मंदिरों का निर्माण हुआ है, जिसके कारण ये तीर्थ स्थल आज भी संपूर्ण विश्व से संतों, महात्माओं तथा अन्य आध्यात्मिक साधकों को ध्यान, अर्चना एवं साधना के लिए आकर्षित करते हैं।

इसे अनदेखा न करें

भागीरथी नदी, गंगा की एक प्रमुख सहायक नदी है, जो उत्तराखंड में गोमुख (गाय का मुँह) से निकलती है। यह गंगोत्री हिमनद का मुहाना है। यह हिमनद भारतीय हिमालय के सबसे बड़े हिमनदों में से एक है। इसे पवित्र माना जाता है और यह असंख्य तीर्थयात्रियों

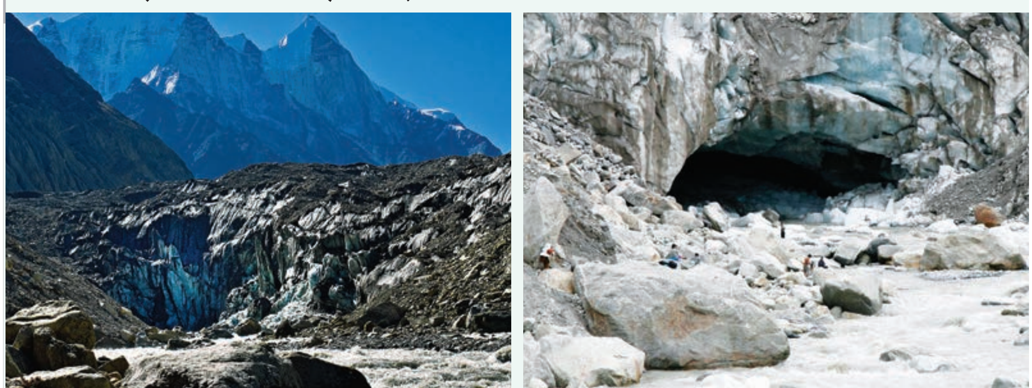

चित्र 1.3 — गोमुख

को आकर्षित करता है। गोमुख एक लोकप्रिय पहाड़ी यात्रा-पथ (ट्रेकिंग) भी है। अगली बार जब आप गंगा को देखें, तो याद रखें— इसकी यात्रा वहीं से आरंभ होती है।

हिमालय का निर्माण कैसे हुआ...

एक रोचक कथा

बहुत समय पहले, भारत 'गोंडवाना' नामक एक बहुत बड़े भूभाग का हिस्सा था, जहाँ उसका पड़ोसी अफ्रीका था! कालांतर में, यह भूभाग अलग हो गया और धीरे-धीरे उत्तर की ओर अग्रसर होने लगा। लगभग पाँच करोड़ वर्ष पूर्व, यह यूरेशिया नामक भूभाग तक पहुँच गया और उससे टकरा गया। जैसे ही भारतीय भूभाग ने यूरेशिया को धकेला, उनके बीच की भूमि अनिवलित (सिलवटदार) हो गई और ऊपर उठने लगी— ठीक वैसे ही जैसे कालीन को धकेलने पर उसमें सिलवटें पड़ जाती हैं। इसी प्रकार विशाल हिमालय पर्वतों का निर्माण हुआ।

आश्चर्यजनक रूप से, भारत आज भी बहुत धीमी गति से, प्रतिवर्ष लगभग पाँच सेंटीमीटर एशिया की ओर बढ़ रहा है, जो आपके बालों के बढ़ने की दर से बहुत धीमी है। इसका मतलब है कि हिमालय प्रतिवर्ष धीरे-धीरे, लगभग पाँच मिलीमीटर की दर से ऊँचा हो रहा है और एक सहस्राब्दी में, इसकी ऊँचाई लगभग पाँच मीटर तक बढ़ जाती है।

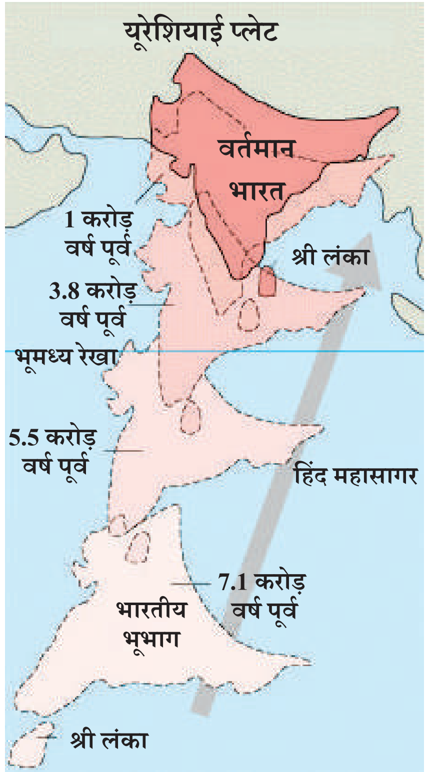

चित्र 1.4 — भारत की यूरेशिया की ओर यात्रा

चित्र 1.5 — हिमालयी शैलों में मुड़ी हुई परतें

इसे अनदेखा न करें

'हिमालय' शब्द संस्कृत के दो शब्दों हिम अर्थात 'बर्फ' और आलय अर्थात 'निवास' या 'गृह' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है— 'बर्फ का घर'।

हिमालय को तीन मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है—

- **हिमाद्री** (वृहद हिमालय) पर्वत शृंखला सर्वाधिक ऊँची और सर्वाधिक विकट है, जहाँ माउंट एवरेस्ट और कंचनजंगा जैसे गगनचुंबी पर्वत शिखर स्थित हैं। यह क्षेत्र संपूर्ण वर्ष हिमाच्छादित रहता है। यहाँ जीवन अत्यंत कठिन है तथा यहाँ मानव बस्तियाँ अधिक नहीं हैं।
- **हिमाचल** (लघु हिमालय) वृहद हिमालय के दक्षिण में स्थित है और इसकी जलवायु समशीतोष्ण है, जो समृद्ध जैव विविधता और मानव निवास के लिए उपयुक्त है। नैनीताल और मसूरी (उत्तराखंड), दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल), शिमला (हिमाचल प्रदेश) जैसे लोकप्रिय पर्वतीय पर्यटन स्थल इसी क्षेत्र में स्थित हैं।
- **शिवालिक पहाड़ियाँ** (बाह्य हिमालय) हिमालय की सबसे निचली शृंखला बनाती हैं, जिसमें घुमावदार पहाड़ियाँ और घने जंगल सम्मिलित हैं। ये गिरिपाद वन्यजीवों से समृद्ध हैं, जो हिमालय और गंगा के मैदानों (जिसे उत्तरी मैदान भी कहा जाता है) के बीच एक संक्रमण क्षेत्र के रूप में कार्य करती हैं।

आइए पता लगाएँ

क्या आप हिमालय के विभिन्न भागों में स्थित राज्यों के नाम ज्ञात कर सकते हैं? इस अभ्यास के लिए भौतिक और राजनीतिक दोनों मानचित्रों की सहायता लीजिए।

इसे अनदेखा न करें

चित्र 1.6 — हिमाचल प्रदेश में काठ-कुनी घर

पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में पारंपरिक गृह निर्माण की पद्धति को 'काठ-कुनी' अथवा 'धज्जी-देवरी' शैली के रूप में जाना जाता है। इसमें स्थानीय रूप से उपलब्ध पत्थर और लकड़ी के संयोजन का उपयोग किया जाता है, जो न केवल घर को गर्म रखता है, बल्कि हल्के भूकंप की स्थिति में क्षति से भी बचाता है।

इसे अनदेखा न करें

हिमाचल प्रदेश में स्थित 'ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान' में वनस्पतियों और जीवों की अत्यधिक विविधता पाई जाती है। इस उद्यान को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है। उद्यान की जैव विविधता को सरकार के साथ-साथ उद्यान में रहने वाले ग्रामीण समुदायों द्वारा भी संरक्षित किया जा रहा है।

चित्र 1.7. 1 — ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान संरक्षण क्षेत्र 2. हिमालयी मोनल (नर पक्षी), 3. लद्दाख स्थित एक बौद्ध मठ, 4. हिमाचल प्रदेश में प्रवाहित होती ब्यास नदी 5. हिम तेंदुआ 6. हिमालय क्षेत्र के एक स्थानीय बाजार में प्रदर्शित कृषि उपज 7. बुरांश (रोडोडेंड्रोन) — इस पुष्प से एक विशेष प्रकार का शीतल पेय बनाया जाता है।

भारत का शीत मरुस्थल

'मरुस्थल' शब्द सुनते ही मन में उष्ण प्रदेश की छवि उभरती है। हालाँकि, मरुस्थल शीत भी होते हैं और भारत में भी एक ऐसा शीत मरुस्थल है। लद्दाख एक शीत मरुस्थल है जहाँ सर्दियों में तापमान –30 डिग्री सेल्सियस से नीचे चला जाता है। यहाँ बहुत कम वर्षा होती है और भूभाग ऊबड़-खाबड़ है, जिसमें चट्टानी क्षेत्र, गहरी घाटियाँ और पैंगोंग त्सो (त्सो का अर्थ है झील) जैसी झीलें सम्मिलित हैं।

चित्र 1.8 — लद्दाख की चंद्रभूमि

यहाँ की भूमि चंद्रमा की सतह जैसी दिखाई देती है। इसलिए इसे 'चंद्रभूमि' कहा जाता है। भूगर्भशास्त्री इस भूभाग के निर्माण की व्याख्या इस तथ्य से करते हैं, जैसा हमने पहले पढ़ा, कि जब भारतीय भूभाग यूरेशिया से टकराया तो पहाड़ 'मुड़' गए थे। यह मुड़ा हुआ भाग कभी एक महासागर का हिस्सा था और इसलिए इस क्षेत्र की चट्टानें मुख्य रूप से रेत और चिकनी मिट्टी से बनी हुई हैं।

चित्र 1.9 — हिमालयी लोगों के जीवन में याक बहुत महत्वपूर्ण है। उन्हें दूध, मांस, ऊन और गोबर के लिए पाला जाता है और परिवहन के लिए भी उपयोग में लाया जाता है।

चित्र 1.10 — लद्दाख में पैगोंग त्सो झील। खारे पानी के कारण यह अन्य झीलों से भिन्न है। इसके जल में खारापन आस-पास के पहाड़ी क्षेत्रों से घुले खनिजों के कारण है।

समय के साथ पवन और वर्षा ने पहाड़ों का अपरदन कर इसे जिस आकार में बदल दिया है, उसे आप चित्र में देख सकते हैं।

कठिन परिस्थितियों के होते हुए भी लद्दाख हिम तेंदुए, आइबेक्स और तिब्बती मृग जैसे अद्वितीय वन्यजीवों का घर है। लद्दाखी लोग सादा जीवन जीते हैं। यह क्षेत्र अपने प्राचीन बौद्ध मठों तथा लोसर और हेमिस महोत्सव जैसे रंग-बिरंगे त्योहारों के लिए प्रसिद्ध है।

गंगा के मैदान

जैसे ही हम हिमालय से दक्षिण की ओर बढ़ते हैं, गंगा के विशाल और उपजाऊ मैदानों में पहुँचते हैं। ये मैदान भारत के इतिहास और सभ्यता का एक महत्वपूर्ण भाग रहे हैं। इन मैदानों को हिमालय से निकलने वाली विशाल नदियाँ पोषित करती हैं जो इस क्षेत्र के लिए जल के रूप में एक महत्वपूर्ण जीवन रेखा हैं। सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी प्रणालियाँ अपनी सहायक नदियों के व्यापक जाल से इस क्षेत्र की मिट्टी को खनिजों से समृद्ध करती हैं, जिससे यह क्षेत्र अत्यधिक उपजाऊ और कृषि के लिए आदर्श बन जाता है। नदियाँ अपने साथ अनेक खनिज लाती हैं जो मिट्टी को उपजाऊ करते हैं और जिससे प्रचुर मात्रा में कृषि संभव होती है। नदियाँ जल-विद्युत उत्पादन का भी एक स्रोत हैं। भारत की जनसंख्या का एक बड़ा भाग इन मैदानी क्षेत्रों में रहता है।

चित्र 1.11 — मैदानों में आधुनिक कृषि पद्धतियाँ

चित्र 1.12 — दिल्ली का हवाई दृश्य, जिसमें ऊपर दाईं ओर यमुना नदी दिखाई दे रही है।

चित्र 1.13 — उत्तर प्रदेश में बहुफसलीय कृषि

चित्र 1.14 — छत्तीसगढ़ में धान के खेतों में काम करती हुई ग्रामीण महिलाएँ

भारत के उत्तरी मैदानों की समतल भूमि में एक विस्तृत परिवहन तंत्र विकसित हुआ है। सड़क और रेलवे तंत्र लंबी दूरी तक लोगों और माल की आवाजाही को सुविधाजनक बनाते हैं। जैसा कि आप 'अतीत के चित्रपट' से संबंधित अध्याय में देखेंगे, गंगा, ब्रह्मपुत्र और अन्य नदियों का उपयोग यात्रा और व्यापार के लिए सहस्राब्दियों से किया जाता रहा है।

चित्र 1.15 — गंगा के मैदानों में परिवहन के विविध साधन

इसे अनदेखा न करें

भारत में अधिकांश नदियों के नाम देवियों के नाम पर रखे गए हैं, जैसे– गंगा, यमुना, कावेरी, आदि। जबकि ब्रह्मपुत्र के नाम का अर्थ है 'ब्रह्मा का पुत्र'। गर्मियों में सूखने की अपेक्षा इस नदी में जल की मात्रा बढ़ जाती है! क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि ऐसा क्यों होता है?

संकेंद्रण का अर्थ

किसी वस्तु, शक्ति या क्रिया को एक ही बिंदु या स्थान पर केन्द्रित करना।

आइए पता लगाएँ

मैदानी क्षेत्रों में प्रकाश के संकेंद्रण पर ध्यान दीजिए। इस संकेंद्रण का क्या कारण हो सकता है?

चित्र 1.16 — गंगा के मैदान का उपग्रह द्वारा लिया गया चित्र

चित्र 1.17 — मध्य प्रदेश के बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान में लकड़ी की डाली पर बैठा उत्तरी मैदानी ग्रे लंगूर

चित्र 1.18 — बाघ, जो विलुप्ति के कगार पर थे, बाघ परियोजना (प्रोजक्ट टाइगर) ने इनके पुनर्वास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

चित्र 1.19 — एक वयस्क भारतीय घड़ियाल की लंबाई 2.5 से 4.5 मीटर होती है। यह सरीसृप विलुप्ति के कगार पर है। कानूनी रूप से इसका शिकार अथवा इसे क्षति पहुँचाना निषिद्ध घोषित किया गया है।

चित्र 1.20 — मोर और मोरनी भारतीय मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है।

विशाल भारतीय मरुस्थल या थार मरुस्थल

अगर हम भारत के मानचित्र पर पश्चिम की ओर बढ़ें, तो आपको एक पीलापन लिए क्षेत्र दिखाई देगा। यह क्षेत्र थार मरुस्थल है। आपको क्या दिखाई देता है? सुनहरी रेत के टीलों का एक विशाल विस्तार, ऊबड़-खाबड़ क्षेत्र और व्यापक खुला आसमान!

चित्र 1.21 — थार मरुस्थल के रेत के टीलों में एक यात्री

आइए पता लगाएँ

रेत के टीले का आकार कैसा होता है? पर्वत चट्टानों से बने होते हैं और उनका आकार स्थिर होता है। आपको क्यों लगता है कि रेत के टीलों का आकार भी इनके समान होता है, जबकि वे केवल रेत से बने होते हैं?

चित्र 1.22 — जैसलमेर 'स्वर्ण नगरी' जो भारत के थार मरुस्थल के मध्य स्थित है। जैसलमेर किला एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।

रेत के टीले तब बनते हैं जब हवा की दिशा रेत को स्थानांतरित कर पहाड़ी जैसी आकृति प्रदान करती है। कभी-कभी ये टीले 150 मीटर तक ऊँचे हो जाते हैं।

थार मरुस्थल एक विशाल शुष्क क्षेत्र है। इसका अधिकांश भाग भारत में स्थित है, जो राजस्थान, गुजरात, पंजाब और हरियाणा राज्यों में फैला हुआ है। मरुस्थल कठोर परिस्थितियों के कारण एक प्राकृतिक अवरोध के रूप में कार्य करता है जो मानव और पशु आवागमन को बाधित करता है, क्योंकि यहाँ दिन के समय अत्यधिक तापमान, रातें अत्यधिक ठंडी और जल की उपलब्धता का अभाव होता है।

थार में रहने वाले लोगों ने अपनी जीवन-शैली को उस स्थान और वहाँ की परिस्थितियों के अनुरूप ढाल लिया है। उनका खान-पान, वेशभूषा और जीवन-शैली इन कठोर परिस्थितियों के अनुकूल है।

चित्र 1.23 — पुष्कर मेले में ऊँट विक्रेता (थार मरुस्थल की सीमा पर)

इसे अनदेखा न करें

चित्र 1.24 — घर से दूर जल स्रोतों से जल लाती हुई महिलाएँ (बाएँ)। एक ग्राम में वर्षा जल संचयन की संरचना (दाएँ)।

मरुस्थल में जल का अभाव होता है। महिलाओं को प्राय: अपने परिवार के लिए जल लाने हेतु प्रतिदिन लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। इसलिए बर्तनों को स्वच्छ करने की पारंपरिक विधि यह है कि उन्हें रेत से तब तक रगड़ा जाए जब तक वे साफ न हो जाएँ। धोने के लिए जल की थोड़ी मात्रा का उपयोग किया जा सकता है। धोने के लिए उपयोग किए गए जल का पुनः उपयोग, किसी पौधे को सींचने जैसे कार्यों के लिए किया जा सकता है। इसलिए अगली बार जब भी आप नल खुला छोड़ें, तो थार रेगिस्तान के लोगों को याद अवश्य करें। राजस्थान अपने पारंपरिक जल-संरक्षण के उपायों, जिसमें टांका या कुंड सम्मिलित हैं, के लिए भी प्रसिद्ध है। ये विशेष जल-संग्रह विधियाँ वर्षा के जल को प्राय: पीने के उद्देश्य से संचयित करती हैं।

अरावली की पहाड़ियाँ

आइए पता लगाएँ

आइए, मानचित्र पर वापस चलते हैं। थार मरुस्थल से पूर्व की ओर धीरे-धीरे अपने रास्ते को देखिए। क्या आपको अरावली की पहाड़ियाँ दिख रही हैं?

अरावली पर्वत श्रृंखला विश्व की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है, जो लगभग 2.5 अरब वर्ष पुरानी है! इस पर्वतमाला में अनेक चोटियाँ और पहाड़ियाँ हैं। हालाँकि, इसकी सबसे ऊँची चोटी माउंट आबू की ऊँचाई 1722 मीटर है, लेकिन इसकी अधिकांश पहाड़ियाँ 300 से 900 मीटर तक ऊँची हैं। क्या यह रोचक नहीं है कि अरावली में स्थित

चित्र 1.25 — अरावली का एक भाग। इस शृंखला से आगे थार मरुस्थल आरंभ होता है (बाएँ)। अंतरिक्ष से दिखने वाला अरावली का एक भाग (दाएँ)।

माउंट आबू से थार मरुस्थल में स्थित जोधपुर की लगभग साढ़े चार घंटे की गाड़ी से यात्रा आपको एक पूर्ण रूप से भिन्न भौगोलिक परिदृश्य में ले जाती है?

आइए पता लगाएँ

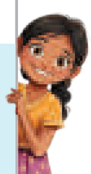

पाठ्यपुस्तक में दिए गए राजनीतिक मानचित्र को देखिए और उन राज्यों की पहचान कीजिए, जिनमें अरावली पर्वत शृंखला फैली हुई है। क्या आप इसमें दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा और गुजरात को देख सकते हैं?

अरावली पर्वत शृंखला उत्तर-पश्चिम भारत के भूभाग और जलवायु को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह एक प्राकृतिक प्राचीर के रूप में मरुस्थल का पूर्व की ओर विस्तार होने से रोकती है। आप इस विषय में आगे विस्तार से पढ़ेंगे।

संगमरमर, ग्रेनाइट, जस्ता और ताँबा जैसे खनिजों से भरपूर होने के कारण अरावली की पहाड़ियों ने सदियों से खनन और निर्माण क्रियाकलापों को आकर्षित किया है। जावर में स्थित प्राचीन खदानों से प्राप्त प्रमाणों से पता चलता है कि आठवीं शताब्दी पूर्व जस्ता निकालने के कौशल में महारत हासिल करने में भारतीय विश्व में अग्रणी थे। चितौड़गढ़, कुंभलगढ़ और रणथंभौर जैसे ऐतिहासिक किले भी यहाँ स्थित हैं।

चित्र 1.26 — अरावली से घिरा हुआ कुंभलगढ़ किला। पहाड़ियों में स्थित यह स्थान शत्रुओं को रोकने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ।

प्रायद्वीपीय पठार

पुनरावलोकन करें

पठार वह स्थल रूप है, जो अपने चारों ओर की भूमि से ऊँचा होता है तथा इसकी सतह प्राय: समतल होती है। इसके कुछ किनारे प्राय: खड़ी ढाल वाले होते हैं।

भारत में अनेक पठार हैं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण पठार देश के मध्य और दक्षिण में स्थित त्रिकोणीय प्रायद्वीपीय क्षेत्र है।

यह एक बहुत पुरानी भूमि संरचना भी है। यह क्षेत्र **प्रायद्वीप** कहलाता है, क्योंकि यह तीन ओर से— अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर द्वारा जल से घिरा है। इसे प्रायद्वीपीय पठार कहा जाता हैं।

प्रायद्वीप
वह भूभाग है, जो तीन ओर से जल से घिरा होता है।

यह पठार दो पर्वत शृंखलाओं— पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट से घिरा हुआ है। पश्चिमी घाट अधिक ऊँचे हैं और प्राचीर की भाँति पश्चिमी तट के साथ फैले हुए हैं। यहाँ कई सुंदर झरने हैं, जो मानसून के मौसम में इसकी खड़ी ढालों पर बहते हैं।

इसे अनदेखा न करें

पश्चिमी घाट को यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल घोषित किया है। यहाँ अनेक नदियाँ प्रवाहित होती हैं तथा यह क्षेत्र जैव विविधता से परिपूर्ण है। पश्चिमी घाट के उत्तरी भाग को सह्याद्रि पहाड़ियों के नाम से भी जाना जाता है।

पूर्वी घाट अपेक्षाकृत निम्न और छोटे-छोटे पवर्त-खंडों में विभाजित हैं, जो पूर्वी तट के साथ फैले हुए हैं। इन दोनों पर्वत शृंखलाओं के बीच उच्च समतल भूमि का एक विशाल क्षेत्र दक्कन का पठार है।

गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी नदियाँ इस पठार में पश्चिम से पूर्व की ओर प्रवाहित होती हैं। ये नदियाँ कृषि कार्यों के लिए महत्वपूर्ण हैं और लाखों लोगों को जल प्रदान करती हैं।

आइए पता लगाएँ

पुस्तक के अंत में दिए गए भारत के भौतिक मानचित्र को देखिए और नदियों के प्रवाह की दिशा पर ध्यान दीजिए।

यह पठार खनिजों, वनों तथा उपजाऊ भूमि से समृद्ध है, जो इसे भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण बनाता है। इस पठार का हल्का ढाल पश्चिम से पूर्व

चित्र 1.27 — छत्तीसगढ़ के घने जंगल अनेक आदिवासी समुदायों के लिए आवास प्रदान करते हैं।

की ओर है, इसलिए इस क्षेत्र की कुछ नदियाँ बंगाल की खाड़ी की ओर बहती हैं। पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ जैसे – गोदावरी, कृष्णा और महानदी का यहाँ से उद्गम होता है, जो कृषि, उद्योगों और पनबिजली के लिए जल उत्पादन करती हैं। यहाँ पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ (नर्मदा, ताप्ती) भी हैं, जो अरब सागर में गिरती हैं।

पठार पर स्थित घने जंगल आदिवासी समुदायों की आवास स्थली हैं, जिनमें संथाल, गोंड, बैगा, भील, कोरकु आदि सम्मिलित हैं। इन जनजातियों की विशिष्ट भाषाएँ, परंपराएँ और जीवन-शैलियाँ हैं, जो प्रकृति से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं।

आइए पता लगाएँ

आदिवासी समुदाय मुख्य रूप से झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, असम, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, तेलंगाना और गुजरात राज्यों में बड़े पैमाने पर फैले हुए हैं। इस पुस्तक के अंत में दिए गए राजनीतिक मानचित्र में इन राज्यों की स्थिति का पता लगाइए और इन्हें भौतिक मानचित्र से जोड़ने का प्रयास कीजिए।

भारत में पठारों पर अनेक सुंदर जलप्रपात हैं, क्योंकि यहाँ नदियाँ असमान और चट्टानी सतहों पर प्रवाहित होती हैं। ये जलप्रपात न केवल पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, अपितु जलविद्युत उत्पादन में सहायक होने के साथ-साथ सिंचाई के लिए भी जल उपलब्ध कराते हैं।

चित्र 1.28 — पेरियाकानल, मुन्नार (केरल) के समीप स्थित पावरहाउस जलप्रपात

चित्र 1.29 — पश्चिमी घाट में सिंह के समान पूँछ वाला वानर (मकाक)

चित्र 1.30 — पश्चिमी घाट में किंग कोबरा

चित्र 1.31 — पश्चिमी घाट में पाया जाने वाला यह कीटभक्षी पौधा, जो कीट-पतंगो को खाता है। यह चिपचिपे जाल का प्रयोग कर छोटे-छोटे कीट-पतंगों को पकड़ता है और उन्हें खा लेता है।

चित्र 1.32 — पठारी क्षेत्र की कोयले की खदानें। यह मुख्यत: ताप विद्युत उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण संसाधन हैं। कोयला एक जीवाश्म ईंधन है जिसका उपयोग वैश्विक तापमान में वृद्धि करता है।

चित्र 1.33 — पश्चिमी तट पर स्थित भारत का वित्तीय केंद्र, मुंबई

भारत की अद्वितीय तटरेखाएँ

भारत की तटरेखाओं पर अनेक सुंदर तट (पुलिन),चट्टानी टीले और हरे-भरे जंगल पाए जाते हैं। कुछ तटों में सुनहरी रेत पाई जाती है, तो कुछ पर काली शैलें पाई जाती हैं। कई द्वीपों पर प्रवाल भित्तियाँ (कोरल रीफ) हैं, तो कई द्वीप घने जंगलों से ढँके हुए हैं। भारत के तट बहुत ही विस्मयकारी हैं। भारतीय तटरेखा 11098.81 कि.मी. से भी अधिक लंबी है।

आइए पता लगाएँ

→ अपने विद्यालय की मानचित्रावली (स्कूल एटलस) अथवा 'भित्ति-मानचित्र' को देखकर बंगाल की खाड़ी की ओर बहने वाली पाँच नदियों के नाम लिखिए। भारत के तटीय राज्यों का पता लगाइए और भारत के पश्चिमी तथा पूर्वी तटीय मैदानों के मध्य क्या-क्या अंतर हैं, इन पर चर्चा कीजिए।

→ क्या आप जानते हैं कि जब ये नदियाँ तटों के निकट अनेक धाराओं में विभाजित हो जाती हैं, तो इन्हें क्या कहा जाता है? कक्षा में अपने शिक्षक के साथ चर्चा करके पता लगाइए?

भारत का पश्चिमी तट

भारत का पश्चिमी तट गुजरात से लेकर केरल तक विस्तृत है, जो महाराष्ट्र, गोवा और कर्नाटक से होकर गुजरता है। यहाँ की अधिकांश नदियाँ पश्चिमी घाट से निकलकर तेजी से बहते हुए पश्चिमी तटों पर मुहानों (एस्चुरी) का निर्माण करती हैं। यह तटरेखा छोटी-छोटी नदियों और जलोढ़ निक्षेपों द्वारा जमा की गई जलोढ़ मिट्टी तथा अन्य भू-आकृतियों जैसे – सँकरी खाड़ियों (क्रीक्स), मुहाने एस्चुरी आदि से बनी है। इस तट पर नर्मदा और ताप्ती नदियों के मुहाने सबसे बड़े हैं।

चित्र 1.34 — पश्चिमी तट के एक भाग का हवाई दृश्य। पश्चिमी घाट की पहाड़ियाँ अरब सागर के कितने समीप हैं, ध्यान दीजिए।

पश्चिमी तट पर अनेक महत्वपूर्ण पत्तन और नगर हैं। वे सहस्त्राब्दियों से भारत की आर्थिक गतिविधियों के केंद्र रहे हैं।

पूर्वी तट

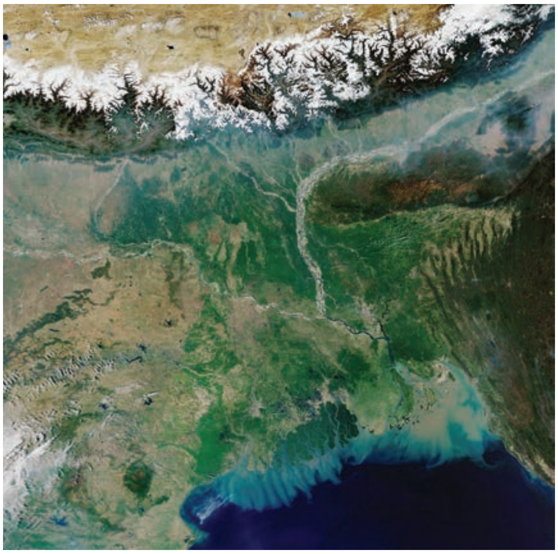

चित्र 1.35. — भारत के पूर्वी तट का उपग्रह दृश्य

पूर्वी तट, पूर्वी घाट और बंगाल की खाड़ी के मध्य स्थित है। यह गंगा के डेल्टा से कन्याकुमारी तक विस्तृत है। इसमें विस्तृत मैदान और नदियों के डेल्टा हैं, जिनमें महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी आदि प्रमुख हैं। यहाँ चिल्का झील (ओडिशा में) और पुलिकट झील (आंध्र प्रदेश में) जैसी महत्वपूर्ण लैगून पाई जाती हैं। लैगून एक प्राकृतिक अवरोधक द्वारा बड़े जलाशय से अलग हुई झील होती है।

जब नदियाँ अपने अवसादों को किसी बड़े जलाशय, जैसे – महासागर, झील अथवा अपने मुहाने पर जमा करती हैं, तब बनने वाली भू-आकृति डेल्टा कहलाती है। कालांतर में ये अवसाद एकत्र होकर त्रिभुजाकार अथवा पंखाकार क्षेत्र का निर्माण करते हैं। गोदावरी, कृष्णा, कावेरी और महानदी आदि जैसी नदियाँ उपजाऊ डेल्टा का निर्माण करती हैं, जिससे यह भूमि कृषि कार्यों के लिए अत्यंत उपयुक्त बन जाती है।

भारतीय द्वीपसमूह

हिंद महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में स्थित द्वीपों के समूह को भारतीय द्वीपसमूह कहते हैं, जो भारतीय भू-भाग का क्षेत्र हैं। भारत में दो प्रमुख

द्वीपसमूह हैं— अरब सागर में लक्षद्वीप द्वीपसमूह और बंगाल की खाड़ी में अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह। इन द्वीपों में अनेक अद्वितीय वन्यजीव, सुंदर तट (पुलिन), प्रवाल भित्तियाँ और ज्वालामुखी पाए जाते हैं। कई प्राचीन जनजातियों ने हजारों वर्ष पूर्व इन द्वीपों को अपना आवास बनाया था।

लक्षद्वीप द्वीपसमूह

लक्षद्वीप द्वीपसमूह (द्वीपों का समूह) है, जो केरल के मालाबार तट के पास अरब सागर में स्थित है। यह मूँगे (कोरल) से बने 36 बड़े द्वीपों का समूह है। सभी द्वीपों पर मानव का निवास नहीं है। भारत का एक विस्तृत समुद्रीय जलक्षेत्र पर नियंत्रण है, जिससे उसे मछली पकड़ने, संसाधनों की खोज और पर्यावरण संरक्षण का भी अवसर मिलता है।

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह

इस द्वीपसमूह में लगभग 500 से अधिक छोटे-बड़े ज्वालामुखी द्वारा निर्मित द्वीप सम्मिलित हैं, जिन्हें दो अलग-अलग समूहों में विभाजित किया जाता है — अंडमान द्वीपसमूह और निकोबार द्वीपसमूह। इनकी भौगोलिक स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है।

चित्र 1.36 — लक्षद्वीप द्वीपसमूह में प्रवाल भित्ति

चित्र 1.37 — अंडमान द्वीपसमूह में प्रवाल भित्ति

चित्र 1.38 — अंडमान द्वीपसमूह के पास भारतीय नौसेना की एक तैरती हुई गोदी (एक छोटा पत्तन)

चित्र 1.39 — बैरन द्वीप पर स्थित भारत के एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी का हवाई दृश्य

ये द्वीपसमूह भारत की निगरानी चौकियों की तरह हैं, जो समुद्र पर निगरानी रखते हैं। यहाँ विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ और जीव-जंतु पाए जाते है। अंडमान द्वीपसमूह ऐतिहासिक रूप से भी महत्वपूर्ण है— हमारे अनेक स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को यहाँ सबसे कठोर परिस्थितियों में 'सेल्युलर जेल' नामक कारावास में रखा गया था। इसे उनके महान बलिदानों को याद दिलाने के लिए आज भी संरक्षित रखा गया है। यह बलिदान हमारे पूर्वजों ने हमको स्वतंत्र करवाने के लिए दिए थे। हम इसके बारे में उच्च कक्षाओं में और चर्चा करेंगे।

इसे अनदेखा न करें

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूहों मे बैरन द्वीप (चित्र 1.39) भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी है। यह कभी-कभी सक्रिय होता है जिससे आकाश में धुआँ और लावा फैल जाता है।

पश्चिम बंगाल और सुंदरवन में डेल्टा

चित्र 1.40 — पश्चिम बंगाल के सुंदरवन डेल्टा में मैंग्रोव

जब हम द्वीपों से वापस हिमालय के पूर्वी भाग की ओर बंगाल की खाड़ी से यात्रा करते हैं, तो हमें रास्ते में सुंदरवन दिखाई पड़ते हैं। यह गंगा, ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक नदियों (आपने पूर्व में इस अध्याय में पढ़ा है) के डेल्टा में स्थित है। इस डेल्टा में नदी, सागर और भूमि का अद्वितीय सम्मिश्रण है। इसका लगभग आधा भाग भारत में और शेष भाग बांग्लादेश में है। यह भी एक यूनेस्को धरोहर स्थल है। सुंदरवन रॉयल बंगाल टाइगर सहित अनेक जीव प्रजातियों का आवास है।

नोट— भारत के भौतिक मानचित्र में डेल्टा को चिह्नित कीजिए।

चित्र 1.41— सेवन सिस्टर्स जलप्रपात, मेघालय, शाद सुक मिनेसिम उत्सव जो खासी लोगों द्वारा प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करने के रूप में मनाया जाता है, जीवित जड़ों से बना पुल, नोंग्रियाट गाँव के समीप, चेरापूंजी, मेघालय (बाएँ से दाएँ और ऊपर से नीचे)

पूर्वोत्तर की पहाड़ियाँ

मानचित्र को देखिए और अब हम पूर्वोत्तर की पहाड़ियों की तरफ बढ़ रहे हैं, जो हमारी यात्रा का अंतिम गंतव्य है। क्या आप मानचित्र पर दिखाई गई गारो, खासी और जयंतिया पहाड़ियों को देख सकते हैं? मेघालय पठार की ये पहाड़ियाँ अपनी हरियाली, भारी वर्षा और लुभावने जलप्रपातों के लिए जानी जाती हैं। यह विश्व के सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में से एक है जो इसे जंगल, अद्वितीय वन्यजीवों और उपजाऊ भूमि से समृद्ध बनाता है।

इसे अनदेखा न करें

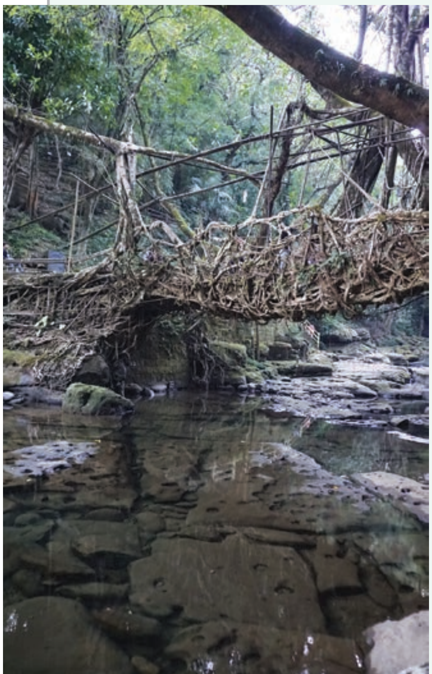

मेघालय के पूर्वी खासी पहाड़ियों में स्थित मौलिन्नोंग गाँव 'एशिया के सबसे स्वच्छ गाँव' के रूप में प्रसिद्ध है। यह रमणीय गाँव अपनी स्वच्छता, बाँस के कूड़ेदान, पर्यावरणीय अनुकूल जीवनशैली के लिए प्रसिद्ध है। यह गाँव अपनी जीवित जड़ों से बने पुलों (लिविंग रूट्स पुल) के लिए भी जाना जाता है, जो कई वर्षों के दौरान पेड़ों की जड़ों को मिलाकर बनाए जाते हैं।

चित्र 1.42 — पूर्वोत्तर की जनजातियों के शिल्प कौशल को प्रदर्शित करता जीवित जड़ों का एक पुल (लिविंग रूट्स पुल)

आगे बढ़ने से पहले...

- भारत, जिस उपमहाद्वीप का अंग है, उसे अपना नाम प्रदान करता है।
- इसमें विविध भौगोलिक विशेषताएँ हैं, जिनमें बर्फीले हिमालय से लेकर गर्म थार मरुस्थल सम्मिलित हैं। मैदानी क्षेत्रों को अनेक नदियों द्वारा सींचा जाता है। यहाँ एक प्रायद्वीपीय पठार भी है, जिसके पश्चिम में अरब सागर तथा पूर्व में बंगाल की खाड़ी स्थित है।
- इन विविध भौगोलिक विशेषताओं ने मिट्टी, वनस्पतियों, जीव-जंतुओं, जीवन और आर्थिक अवसरों से संबंधित अनेक परिस्थितियों का सृजन किया है और एक समृद्ध संस्कृति का निर्माण किया है।
- इन भौगोलिक विशेषताओं ने हमारी सभ्यता को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रश्न और क्रियाकलाप

1. आपकी राय में भारत की दो महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषताएँ क्या हैं? आपके विचार में वे क्यों महत्वपूर्ण हैं?

2. आपके विचार में यदि हिमालय नहीं होता तो भारत का स्वरूप कैसा होता? अपनी कल्पना को व्यक्त करने के लिए एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए अथवा चित्र द्वारा अभिव्यक्त कीजिए।।

3. अध्याय में दी गई जानकारी के आधार पर बताइए कि भारत को 'लघु महाद्वीप' क्यों कहा जाता है?

4. भारत की किसी प्रमुख नदी को मानचित्र में देखिए। इसका उद्गम कहाँ है और यह समुद्र में कहाँ मिलती है? इसकी यात्रा के दौरान लोग इस नदी का विभिन्न प्रकार से कैसे उपयोग करते हैं? अपनी कक्षा में इस पर चर्चा कीजिए।

5. भारत के दक्षिणी भाग को प्रायद्वीपीय पठार क्यों कहा जाता है?

6. इस अध्याय में वर्णित यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त कौन-से धरोहर स्थल आपको अधिक रूचिकर लगे? इसके रोचक तथ्यों का संक्षिप्त में वर्णन कीजिए।

7. इस पुस्तक के अंत में दिए गए भारत के भौतिक और राजनीतिक मानचित्रों को देखिए। आप अभी जिस क्षेत्र में हैं, उसकी पहचान कीजिए। आप भारत की किस भौतिक विशेषता का उपयोग इस स्थान का वर्णन करने के लिए करेंगे?

8. भारत में खाद्य संरक्षण के उपाय जगह-जगह पर भिन्न हैं, जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप होते हैं। 'कक्षा परियोजना' के अंतर्गत खाद्य संरक्षण के विभिन्न उपायों के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए। (संकेत – मौसमी (ऋतु विशेष में उपलब्ध) सब्जियों को सुखाकर उन्हें अन्य ऋतुओं में उपयोग हेतु सुरक्षित रखना।)

9. इतने अलग-अलग भौतिक स्वरूपों (पर्वतीय, मरुस्थलीय, मैदानी, तटीय इत्यादि) के साथ भारत एक विशाल देश है। भारत की भौगोलिक स्थिति ने लोगों को एकजुट रहने में किस प्रकार सहायता की है। इसके बारे में आपका क्या विचार है?

मेरी अभिव्यक्ति

इस स्थान का उपयोग टिप्पणी और चित्रांकन हेतु कीजिए।

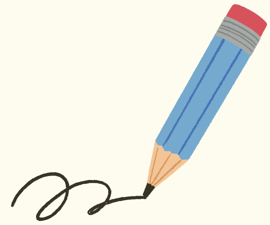

अध्याय 2

मौसम को समझना

मौसम में परिवर्तन ही स्वयं एवं विश्व के नवीनीकरण के लिए पर्याप्त है।

—मार्सेल प्रूस्ट, फ्रांसीसी उपन्यासकार

चित्र 2.1

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *हम अपने आस-पास के मौसम का आकलन एवं निरीक्षण किस प्रकार कर सकते हैं?*
2. *भारी वर्षा, तूफान, सूखा और ताप लहर (हीट वेव) जैसी घटनाओं के लिए तैयार रहने में मौसम की भविष्यवाणियाँ किस प्रकार हमारी सहायता करती हैं?*

0783CH02

मौसम और इसके तत्व

आप सर्दी की एक सुबह उठते हैं और ठंड से काँपने लगते हैं। ठंड से बचने के लिए आप भारी कपड़े पहनते हैं। गर्मियों में आप ऐसे कपड़ों का चयन करते हैं, जो आपको ठंडा रखने में सहायक होते हैं और आरामदायक लगते हैं। आपका शरीर मौसम का अनुभव करता है और आप अपने शरीर के संकेतों के अनुसार प्रतिक्रिया करते हैं।

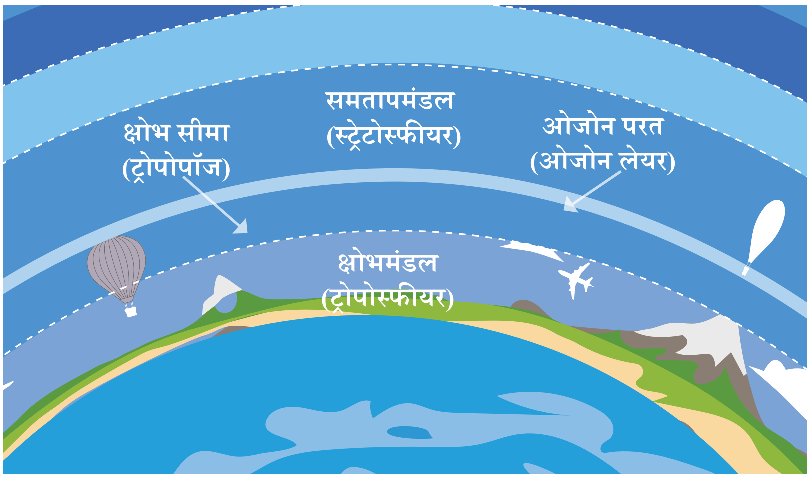

चित्र 2.2

मौसम क्या है?

किसी समय और स्थान विशेष पर पृथ्वी की वायुमंडलीय दशाओं को **मौसम** कहते हैं। किंतु वायुमंडल क्या है? सरल शब्दों में कहें तो यह एक गैसीय परत है, जो कुछ ग्रहों को घेरे रहती है। पृथ्वी के संदर्भ में इन गैसों को हम 'वायु' कहते हैं। पृथ्वी के वायुमंडल की तुलना अनेक परतों वाले केक से की जा सकती हैं। पृथ्वी की सतह के सबसे निकट वाली परत को क्षोभमंडल (ट्रोपोस्फीयर) कहते हैं और यही वह क्षेत्र है, जहाँ सभी स्थलीय वनस्पतियाँ एवं प्राणी (मानव सहित) निवास करते है और श्वास लेते हैं। इसी परत में लगभग सभी प्रकार की मौसम संबंधी घटनाएँ घटित होती हैं, जिनका अध्ययन हम इस अध्याय में करेंगे। क्षोभमंडल पृथ्वी की सतह से 6 से 18 किमी तक विस्तृत है। ध्रुवों (जहाँ ठंडी वायु सिकुड़ती है) पर यह परत पतली होती है और उष्णकटिबंधीय (ट्रॉपिकल) क्षेत्र पर (जहाँ गर्म वायु फैलती है) यह परत मोटी होती है। अन्य परतों के बारे में आप अपनी विज्ञान की कक्षाओं में अध्ययन करेंगे।

मौसम का वर्णन करने के लिए हम अनेक शब्दों का उपयोग करते हैं, जैसे – गर्म, ठंडा, वर्षा, मेघाच्छादित, आर्द्र, बर्फीला, तूफानी इत्यादि। इनके माध्यम से हम मौसम के विभिन्न तत्वों को परिभाषित एवं अनुभव कर सकते हैं।

आइए पता लगाएँ

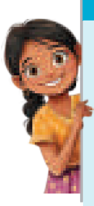

आप अपनी स्थानीय भाषा में मौसम का वर्णन करने के लिए किन-किन शब्दों का प्रयोग करते हैं? हॉट, कोल्ड, वॉर्म, चिली, क्रिस्प, प्लेजेंट आदि सामान्यत: अंग्रेजी भाषा में उपयोग किए जाने वाले शब्द हैं।

मौसम के तत्व

- **तापमान (टेंप्रेचर)** – वायुमंडल कितना गर्म अथवा ठंडा है।
- **वर्षण (प्रेसिपिटेशन)** – जल के वे सभी रूप, जैसे – वर्षा, हिम, **सहिमवृष्टि** या **ओले**, जो आकाश से पृथ्वी पर गिरते हैं।
- **वायुमंडलीय दबाव (एट्मॉस्फेरिक प्रेशर)** – वायु का वह दबाव जिसे हम पृथ्वी की सतह पर अनुभव करते हैं।
- **पवन (विंड)** – वायु का संचलन जिसमें इसकी गति और दिशा सम्मिलित हैं।
- **आर्द्रता (ह्यूमीडिटी)** – वायु में उपस्थित **जलवाष्प** की मात्रा।

सहिमवृष्टि
जमी हुई अथवा आंशिक रूप से जमी हुई वर्षा।

ओला
आकाश से वर्षा के साथ गिरने वाले बर्फ के छोटे-छोटे ठोस टुकड़े।

जलवाष्प
जल का तरल रूप से गैसीय रूप में परिवर्तन।

आइए विचार करें

कल्पना कीजिए कि चेन्नई का कृष्णन कश्मीर में रहने वाले आमिर से वार्तालाप कर रहा है। कृष्णन कह रहा है कि पिछली रात की वर्षा के बाद चेन्नई में ठिठुरन हो गई है। आमिर पूछता है कि वहाँ कितनी ठंड है। कृष्णन आमिर को कैसे बताएगा कि चेन्नई में कितनी ठंड है? आखिरकार, कृष्णन के लिए जो मौसम ठंडा है, वह आमिर के लिए बहुत सुहावना हो सकता है!

जैसा कि आप देख सकते हैं, कृष्णन के लिए अपनी ठंडक की अनुभूति आमिर को समझाना तब तक कठिन है, जब तक तापमान को मापने का कोई सर्वमान्य साधन न हो। यह बात मौसम के अन्य तत्वों पर भी लागू होती है। इस अध्याय में हम सामान्य मानकों का उपयोग करते हुए मौसम को मापने और समझने का प्रयास करेंगे।

आइए पता लगाएँ

आपके अनुसार मौसम के अधिक सटीक आकलन के क्या लाभ हो सकते हैं? (संकेत – कुछ घंटे अथवा कुछ दिन पहले मौसम के विषय में पूर्व जानकारी आपको कुछ गतिविधियों की योजना बनाने में किस प्रकार सहायता करेगी?)

- प्राचीनकाल से ही मनुष्य ने प्रकृति का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया है और मौसम के **पूर्वानुमान** हेतु इसके संकेतों को पढ़ना सीखा है। पक्षियों को कम ऊँचाई पर उड़ते हुए देखना, अंडे ले जाती हुई चींटियाँ, काष्ठफल या मेवें एकत्रित करती हुई गिलहरियाँ, मेढ़कों की तेज टरटराहट अथवा यहाँ तक कि चीड़ के शंकुओं का खुलना और बंद होना आदि भी आने वाली वर्षा या तूफान के बारे में संकेत प्रदान करते हैं। यह ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता गया है। आज भी भारत के अनेक भागों में लोग मौसम का पूर्वानुमान, विशेषकर मानसून के आगमन के लिए, पारंपरिक तरीकों का उपयोग करके लगाते हैं।

पूर्वानुमान
पहले से अनुमान या पता लगाना, जैसे – मौसम के विषय में।

प्रकृति के संकेतों का अवलोकन

चित्र 2.3.1 — चींटियों द्वारा अपने अंडों को ऊँचे स्थानों पर ले जाना उनका एक स्वाभाविक व्यवहार है, जो मौसम में अपेक्षित परिवर्तन विशेषकर भारी वर्षा का संकेत है।

चित्र 2.3.2 — पश्चिमी घाट के जंगल में वर्षा की संभावना में टरटराता हुआ एक मेंढक।

चित्र 2.3.3 — चीड़ के शंकुओं का खुलना और बंद होना प्राकृतिक प्रक्रिया है, जो वातावरणीय आर्द्रता से प्रभावित होती है। चीड़ के शंकु अपने बीजों की सुरक्षा हेतु आर्द्र परिस्थितियों में बंद हो जाते हैं और शुष्क परिस्थितियों में बीजों को बाहर फैलाने के लिए खुल जाते हैं। इससे यह सुनिश्चित होता है कि बीज अनुकूल मौसम में फलते-फूलते हैं।

मौसम विज्ञान मौसम और इसके विकास का व्यवस्थित अध्ययन है। यही अध्ययन मौसम के पूर्वानुमान का आधार है।

आइए पता लगाएँ

अपने आस-पड़ोस के बुजुर्गों से बात कीजिए और उनसे पूछिए कि वे मौसम का पूर्वानुमान कैसे लगाते हैं। वे किन संकेतकों का अवलोकन करते हैं? अपनी क्षेत्रीय भाषा में प्रचलित कुछ कहावतें, जो मौसम के पूर्वानुमान से संबंधित हों, उन्हें लिखिए।

पिछली कुछ शताब्दियों में वैज्ञानिकों ने मौसम के तत्वों को बहुत ही सटीकता के साथ मापने और निरीक्षण करने के तरीकों पर कार्य किया है। विभिन्न जानकारियों के आधार पर **मौसम विज्ञानी** यह अनुमान लगाने का प्रयास करते हैं कि मौसम किसी प्रदेश विशेष में कुछ घंटों, कुछ दिन अथवा यहाँ तक कि कुछ सप्ताह बाद कैसा होगा? वे यह कैसे करते हैं? क्या वे केवल आकाश को देखकर अनुमान लगाते हैं? नहीं, उनके पास कुछ आधुनिक उपकरण होते हैं। अब हम उनमें से कुछ का अध्ययन करेंगे।

मौसम मापन के उपकरण

क) तापमान

पुनरावलोकन करें

कक्षा 6 की विज्ञान की पाठ्यपुस्तक *जिज्ञासा* में आपने तापमान को मापने वाले विभिन्न तापमापी यंत्रों के बारे में पढ़ा है, जैसे – ज्वरमापी (क्लीनिकल थर्मामीटर) और प्रयोगशाला तापमापी (लेबोरेटरी थर्मामीटर)। आपने तापमान मापने के पैमानों के बारे में भी सीखा है। उनमें से एक सेल्सियस पैमाना है और दूसरा फॉरेनहाइट पैमाना। उदाहरण के लिए, यदि हमारे पास 15 डिग्री सेल्सियस (जो 15°C के रूप में लिखा जाता है) का ठंडा तापमान है, तो वह 59 डिग्री फॉरेनहाइट (जो 59°F के रूप में लिखा जाता है) के बराबर होता है।

चित्र 2.4.1 — गर्मी में बर्फ शीघ्र पिघलती है।

चित्र 2.4.2 — मेघाच्छादित मौसम — ठंड हो रही है।

चित्र 2.4.3 — सर्दियों में नारियल का तेल जम जाता है।

चित्र 2.4.4 — ठंडे मौसम में दही जमने में अधिक समय लगता है।

परिवेश
हमारे आस पास का वातावरण

सांख्यिकी
प्रतिरूपों को पहचानने, घटनाओं को समझने अथवा भविष्यवाणियाँ करने के लिए सूचनाओं अथवा आँकड़ों के संग्रहण और विश्लेषण की तकनीक।

तापमापी कई प्रकार के होते हैं, कुछ सामान्य रूप से हमारे आस-पास के **परिवेश** के तापमान को मापते हैं, जबकि अन्य तापमापी दिन के अधिकतम और न्यूनतम तापमान को मापते हैं। तापमापी में प्रायः रंगीन द्रव का उपयोग करते हैं, जो तापमान बढ़ने पर फैलता है। हालाँकि, अंकीय (डिजिटल) तापमापी को अधिक पसंद किया जाता है, क्योंकि वे ज्यादा सटीक होते हैं और अधिक आँकड़े दर्ज कर सकते हैं।

वास्तव में तापमान के रिकॉर्ड का उपयोग कुछ अन्य महत्वपूर्ण **सांख्यिकीय** आँकड़ों का संग्रह करने में भी किया जा सकता है, जिसमें सम्मिलित हैं—

- **ताप सीमा** अथवा एक विशेष अवधि (सामान्यतः 24 घंटे) के दौरान अधिकतम तापमान से न्यूनतम तापमान को घटाना।
- **औसत दैनिक तापमान** अथवा दिन के अधिकतम तापमान और न्यूनतम तापमान को जोड़कर प्राप्त संख्या को दो से विभाजित करने पर प्राप्त मान।

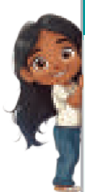

इसे अनदेखा न करें

→ भारत मौसम विज्ञान विभाग की स्थापना 1875 में की गई थी। इसका आदर्श वाक्य '*आदित्यात् जायते वृष्टि*' है, जिसका अर्थ 'सूर्य से वर्षा होती है'। यह वाक्यांश प्राचीन ग्रंथ *मनुस्मृति* से लिया गया है और इस पूर्ण वाक्य का अर्थ है— 'सूर्य से वर्षा होती है, वर्षा से भोजन या अन्न प्राप्त होता है और भोजन या अन्न से जीव उत्पन्न होते हैं'।

→ सूर्य से वर्षा क्यों होती है? क्या आप इसका कारण सोच सकते हैं?

चित्र. 2.5

आइए पता लगाएँ

→ यहाँ छत्तीसगढ़ में एक नगर के तापमान को एक तालिका द्वारा प्रस्तुत किया गया है। सप्ताह में अधिकतम और न्यूनतम तापमान कितना है? ताप सीमा (रेंज) का आकलन कीजिए।

दिनांक	अधिकतम तापमान (सेल्सियस)	न्यूनतम तापमान (सेल्सियस)
28.02.2025	29	16
01.03.2025	30	15
02.03.2025	31	17
03.03.2025	32	18
04.03.2025	30	17
05.03.2025	28	14
06.03.2025	29	15

→ कृष्णन और आमिर के बीच हुए वार्तालाप को याद करें। अगर कृष्णन कहता है कि चेन्नई में तापमान 20 डिग्री सेल्सियस है और उसे थोड़ी ठंड लग रही है, तो उसके और आमिर के पास कोई साधन होगा जिससे वे दोनों इसे समझ सकते हों। आमिर द्वारा कृष्णन के कथन पर दी गई प्रतिक्रिया के बारे में आप क्या सोचते हैं?

ख) वर्षण

यदि यह समाचार मिलता है कि किसी स्थान विशेष पर 30 मि.मी. वर्षा हुई, तो इसका क्या तात्पर्य है? वर्षा को कैसे मापा जाता है?

वर्षा की मात्रा को मापने के लिए एक यंत्र का उपयोग किया जाता है, जिसे **वर्षामापी** (रेन गेज) कहते हैं (चित्र 2.6)। जब वर्षा होती है, तब जल संग्राहक कीप में गिरता है और उसे बेलनाकार नली (सिलेंडर) में एकत्रित कर लिया जाता है। एकत्रित किए गए वर्षा जल की गहराई को मापने के लिए नली पर एक मापक अंकित रहता है। जब एकत्रित किए गए जल की ऊँचाई 5 मि.मी. होती हैं, तो हम कहते है कि क्षेत्र में 5 मि.मी. वर्षा हुई है।

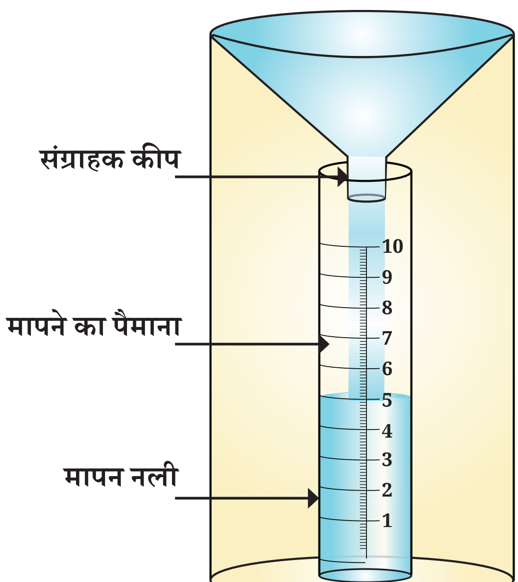

चित्र 2.6 — वर्षामापी

आइए पता लगाएँ

ऊपर दर्शाए गए चित्रानुसार एक वर्षामापी बनाइए। वर्षामापी को खुले स्थान में रखिए और ऐसी वस्तुओं से दूर रखिए, जो वर्षा के जल संग्रहण में बाधक हो सकती हैं। यह भी सुनिश्चित कीजिए कि वर्षामापी समतल सतह पर हो और हवा से झुके अथवा गिरे नहीं। मापक की सहायता से वर्षा की मात्रा को प्रतिदिन एक ही समय पर एक महीने तक अभिलेखित कीजिए (यदि हिमपात होता है, तो उसे मापने से पहले पिघलने दीजिए)। उस महीने के प्रत्येक सप्ताह में होने वाली औसत वर्षा की गणना कीजिए तथा सप्ताह दर सप्ताह में होने वाली वर्षा के अंतर पर टिप्पणी कीजिए।

ग) वायुमंडलीय दाब

हमारा शरीर तापमान और वर्षा से भली-भाँति परिचित है। किंतु आपने यह भी अनुभव किया होगा कि आँधी-तूफान से पहले मौसम 'भारी' सा लगता है। यह वायुमंडलीय दबाव से संबंधित है, जो वायु के भार के द्वारा, हमारे ऊपर और आस-पास लगाया जाता है।

वायुमंडलीय दबाव समुद्र तट के पास अधिक होता है और जैसे-जैसे हम पहाड़ों की ओर ऊँचाई पर जाते हैं, यह कम होता जाता है। जब आप पहाड़ों पर चढ़ाई करते हैं, तो नीचे के मैदानों की तुलना में पहाड़ों पर वायु हल्की हो जाती है। परिणामस्वरूप, वायु का दबाव कम हो जाता है और हमारे फेफड़ों के लिए उपलब्ध ऑक्सीजन की मात्रा भी घट जाती है। रक्त में कम ऑक्सीजन जाने के कारण, आपका शरीर आपको गतिशील रखने के लिए अधिक परिश्रम करता है। यही कारण है कि

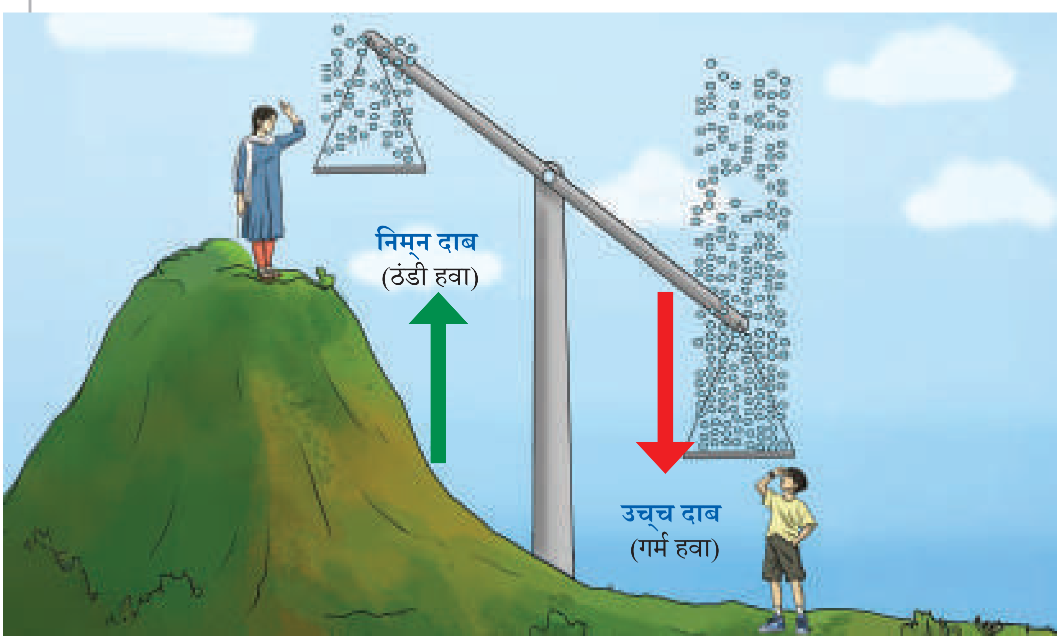

चित्र 2.7

लोग कभी-कभी उच्च स्थानों पर साँस फूलना, चक्कर आना अथवा थकावट आदि का अनुभव करते हैं।

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वायुमंडलीय दाब नीचे के मैदानों में अथवा तटों पर हमेशा अधिक होता है। यह कभी-कभी नाटकीय रूप से गिर जाता है और इसे मौसम-विज्ञानी गर्त (डीप्रेशन) अथवा निम्न दबाव तंत्र (लो प्रेशर सिस्टम) कहते हैं, जो कभी-कभी तूफान अथवा चक्रवात का रूप भी ले सकता हैं।

आइए विचार करें

आपके अनुसार वायुमंडलीय दाब को मापना क्यों महत्वपूर्ण है? वे कौन हैं जिन्हें इस प्रकार के मापनों की सर्वाधिक आवश्यकता होती है?

वायुमंडलीय दाब को मापने के लिए उपयोग में आने वाले उपकरण को **वायुदाबमापी** (बैरोमीटर) कहा जाता है। तापमापी यंत्रों की तरह वायुदाबमापी यंत्र भी अनेक प्रकार के होते हैं। वे सामान्यतया जो इकाई प्रदर्शित करते हैं, वह **मिलीबार** (mb) है। समुद्रतट पर सामान्य वायुमंडलीय दाब लगभग 1013 मिलीबार होता है। 1000 मिलीबार से कम का वायुमंडलीय दाब निम्न दाब होने का संकेत देता है।

पर्यानुकूलन
नई जलवायु अथवा नई परिस्थितियों में स्वयं का समायोजन

आइए विचार करें

अधिक ऊँचाई वाले स्थानों की यात्रा करने वाले व्यक्तियों को यह सलाह दी जाती है कि वे शरीर के **पर्यानुकूलन** के लिए मार्ग में विश्राम करें। हमारे सैन्यकर्मी ऊँचाई वाले स्थानों पर सेवाएँ देते हैं, जैसे – लद्दाख में खार्दुंग-ला। यह स्थान समुद्रतल से 5600 मीटर से भी अधिक ऊँचाई पर है। यह कल्पना करना कठिन है कि वे ऐसे स्थानों पर कैसे रहते हैं और अनवरत सुरक्षा करते हैं। वहाँ ऑक्सीजन का स्तर इतना कम है कि वायुमंडलीय दाब लगभग 650 मिलीबार होता है!

चित्र 2.8

घ) पवन

उच्च दबाव वाले क्षेत्र से निम्न दबाव वाले क्षेत्र की ओर वायु का प्रवाह ही पवन कहलाता है। जब हम पवन का वर्णन करते हैं, तब गति और दिशा पवन के दो महत्वपूर्ण कारक होते हैं।

आइए विचार करें

क्या आपने बीजों को इस प्रकार से पवन में उड़ते देखा है? अगर पवन न होती तो इन बीजों का क्या होता?

चित्र 2.9

पवन मौसम का एक महत्वपूर्ण तत्व है। मौसम का पूर्वानुमान लगाने में इसकी गति और दिशा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके अतिरिक्त, वायुयान चालकों और नाविकों को पवन संबधी आँकड़ों की जानकारी की आवश्यकता होती है, क्योंकि पवन उड़ानों और नौकायन को बहुत प्रभावित करती है। कृषक भी पवन की दिशा का प्रयोग आने वाली वर्षा की दिशा का अनुमान लगाने के लिए करते हैं। साथ ही, तीव्र गति वाली पवन मिट्टी के जल्दी सूखने का कारण बनती है।

हम पवन की दिशा और गति को कैसे मापते हैं? वात दिक्सूचक यंत्र (विंड वेन) में एक घूमने वाला फलक होता है, जिसके एक छोर पर एक सूचक या पॉइंटर और दूसरे छोर पर पूँछ होती है। जब पवन बहती है, तो पूँछ पर धक्का मारती है और तब सूचक पवन की दिशा में मुड़ जाता है। यह यंत्र मंद पवन में भी प्रतिक्रिया देता है।

चित्र 2.10 — पक्की सड़क पर वात दिक्सूचक यंत्र (बाएँ), पवन वेगमापी (एनीमोमीटर) (दाएँ)

हवाई अड्डों पर वात दिक्सूचक यंत्र को वात शंकु (विंड सॉक) कहा जाता है। वायुयान चालकों को यह उड़ान भरते (टेक ऑफ) और उतरते (लैंडिंग) समय पवन की दिशा का संकेत देता है। इसी तरह वात शंकुओं का उपयोग राख अथवा गैस निस्तारित करने वाले उद्योगों में भी किया जाता है।

पवन की गति और दिशा को मापने के लिए सबसे सरल उपकरण **पवन वेगमापी** (एनीमोमीटर) है। इसमें तीन अथवा चार धातु के प्याले होते हैं, जो एक उर्ध्वाधर स्तंभ पर घूमते हैं। पवन जितनी तेज बहती है, घूर्णन उतना ही अधिक होता है। तल पर लगा हुआ मीटर यह गिनता है कि पवन वेगमापी एक निश्चित समय में कितनी बार घूमता है और पवन की गति किलोमीटर प्रति घंटा में मापता है।

ङ) आर्द्रता

हमारी सूची में मौसम का अंतिम तत्व आर्द्रता है जो वायु में जलवाष्प की मात्रा को प्रदर्शित करती है। यह तापमान, पवन, वायुदाब और स्थान जैसे कारकों पर निर्भर करती है।

आइए पता लगाएँ

कोच्चि और जयपुर में कहाँ अधिक आर्द्रता होने की संभावना है? इसके बारे में आप क्या सोचते हैं? आप अनुमान लगा सकते हैं कि समुद्र के निकट होने के कारण कोच्चि में जयपुर की तुलना में अधिक आर्द्रता होगी। किंतु हम निश्चित रूप से इसे कैसे जान सकते हैं? यदि हमे कोच्चि और मंगलुरू के बीच आर्द्रता की तुलना करनी हो, तो हम यह कैसे करेंगे? अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

आर्द्रता को मापने के तरीकों को सीखकर हम इन प्रश्नों के उत्तर अधिक सटीकता से दे सकते है।

आगे बढ़ने से पहले, हमें कक्षा 6 की विज्ञान (जिज्ञासा) की पाठ्यपुस्तक में दिए गए ‘जल की अवस्था’ वाले पाठ का स्मरण करना चाहिए। यह हमें ‘आर्द्रता को कैसे मापते हैं’ को समझने में सहायता करेगा।

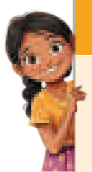

पुनरावलोकन करें

→ जब जल वाष्पित होता है, तो यह शीतलन प्रभाव उत्पन्न करता है।

→ यदि वायु में जल की मात्रा पहले से ही अधिक (उच्च आर्द्रता) है, तो जल धीरे-धीरे वाष्पित होगा। ऐसा सामान्यतया वर्षा के दिनों में होता है।

वायु की आर्द्रता को **सापेक्षिक आर्द्रता** के रूप में मापा जाता है। यदि वायु में बिल्कुल भी जलवाष्प नहीं होगी (जो प्राकृतिक परिस्थितियों में असंभव है) तो उसमें शून्य प्रतिशत आर्द्रता होगी। जबकि जलवाष्प से संतृप्त वायु में सापेक्षिक आर्द्रता 100 प्रतिशत होती है। व्यावहारिक रूप में शुष्क मौसम में आर्द्रता 20 प्रतिशत से 40 प्रतिशत के बीच होती है। जबकि आर्द्र मौसम में सापेक्षिक आर्द्रता 60 प्रतिशत से 80 प्रतिशत के बीच होती है।

आइए विचार करें

यदि दिल्ली में आर्द्रता 52 प्रतिशत और कोच्चि में 84 प्रतिशत हो, तो दोनों स्थानों में से कहाँ गीले कपड़ों के जल्दी सूखने की संभावना है? यदि दोनों स्थानों पर तापमान समान है, तो कहाँ आपको अधिक पसीना आने की संभावना है?

लेकिन हम ऐसी संख्याओं को कैसे मापते हैं? यह **आर्द्रतामापी** (हाइग्रोमीटर) नामक उपकरण की सहायता से किया जाता है। पुन: आर्द्रतामापी भी कई प्रकार के होते हैं, जो उनके सिद्धांत पर निर्भर करते हैं। खाद्य प्रसंस्करण जैसी अनेक औद्योगिक प्रक्रियाओं में आर्द्रता का मापन बहुत महत्वपूर्ण है। संग्रहालयों में भी आर्द्रता की निगरानी की जाती है, क्योंकि उन्हें अपनी प्रदर्शित की जाने वाली वस्तुओं को बचाने के लिए शुष्क वातावरण बनाए रखने की आवश्यकता होती है।

मौसम केंद्र (वेदर स्टेशन)

जैसा कि आप जानते हैं, हमें किसी विशेष स्थान और समय पर मौसम को मापने के लिए अनेक उपकरणों की आवश्यकता होती है। मौसम केंद्र में सभी उपकरण लगे हुए होते हैं, जिससे मौसम का आकलन और निगरानी (ट्रैक) करना सरल हो जाता है। सभी उपकरणों की मापों का अध्ययन नियमित अंतराल पर होता है, जो मौसम के मानचित्रण और पूर्वानुमान में सहायता करता है।

चित्र 2.11

स्वचालित मौसम केंद्र (आटोमेटिक वेदर स्टेशन)

स्वचालित मौसम केंद्र एक ऐसा स्वचालित तंत्र है, जो मौसम के आँकड़ों, जैसे– तापमान, आर्द्रता, वायु की गति और दिशा, वर्षा, वायुमंडलीय दाब आदि को मापने और दर्ज करने के लिए विभिन्न संवेदकों (सेंसरों) का उपयोग करता है। इन केंद्रों का उपयोग कृषि, विमानन, नौकायन, पर्यावरणीय निगरानी आदि में व्यापक रूप से किया जाता है, जिससे मानवीय हस्तक्षेप के बिना सटीक और समयबद्ध मौसम की जानकारी प्राप्त होती है।

इसे अनदेखा न करें

वर्ष 2023 में 'राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण' ने समुद्रतल से 4800 मीटर से अधिक ऊँचाई पर सिक्किम की एक हिम-झील (ग्लेशियल लेक) पर स्वचालित मौसम केंद्र स्थापित किया। यह केंद्र आने वाले मौसम की परिस्थितियों के बारे में पूर्व जानकारी प्रदान करता है।

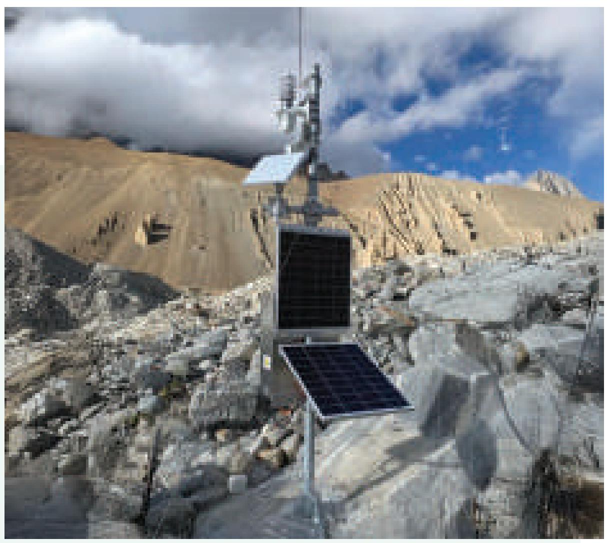

चित्र 2.12 — सिक्किम की एक हिम-झील में स्थापित स्वचालित मौसम केंद्र

मौसम का पूर्वानुमान

मौसम-विज्ञानी लंबे समय तक इन उपकरणों का उपयोग करके आँकड़े एकत्रित करते हैं। वे आँकड़ों का अध्ययन करते हैं और मौसम संबंधी पूर्वानुमान लगाने के लिए वैज्ञानिक

विधियों का उपयोग करते हैं। आजकल इस तरह की भविष्यवाणियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई हैं, क्योंकि जलवायु परिवर्तन के कारण सूखा, बाढ़, चक्रवात आदि जैसी गंभीर मौसमी घटनाएँ अधिक होती जा रही हैं।

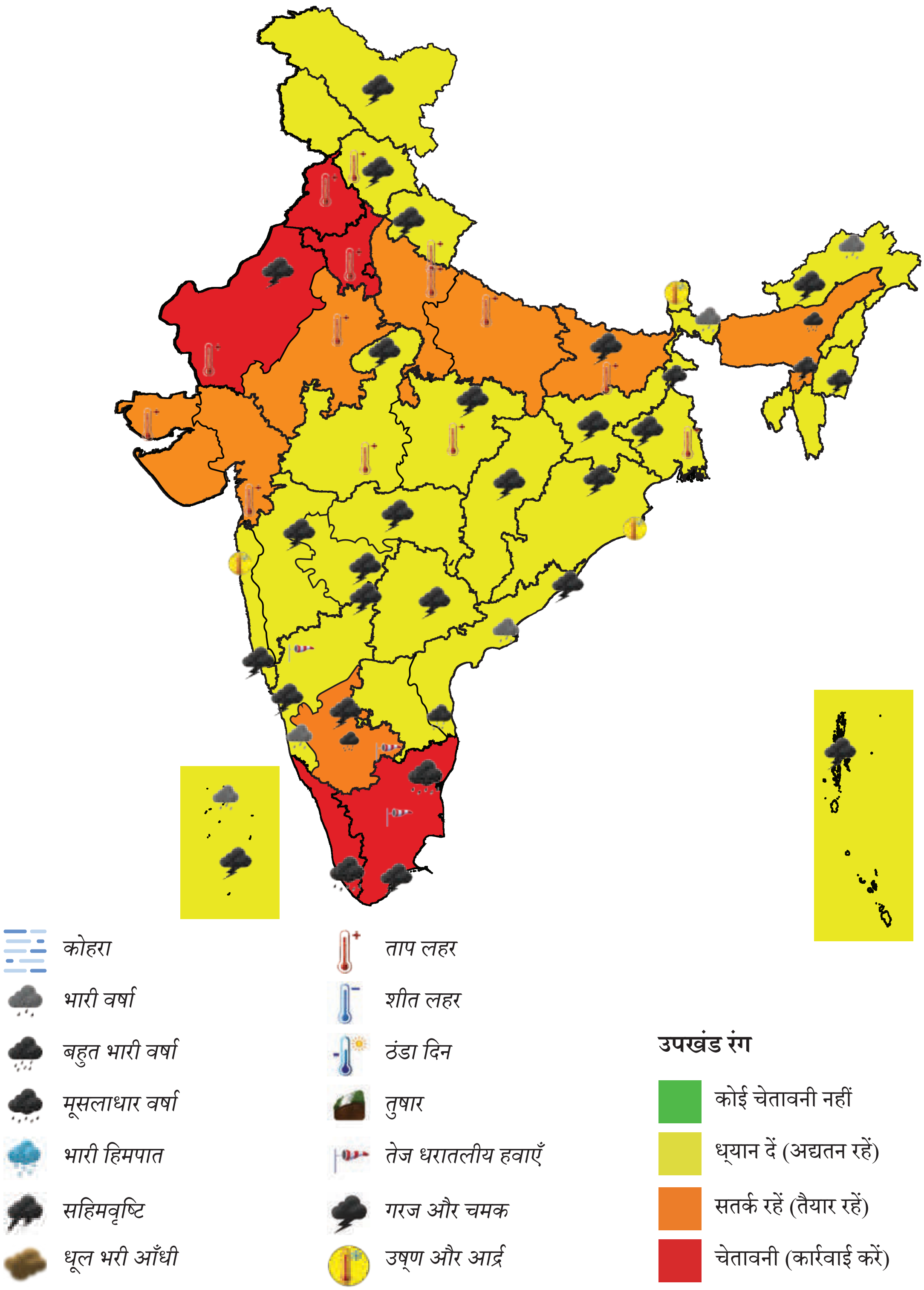

चित्र 2.13 — 19 मई 2024 को भारत में मौसम की चेतावनी

मौसम का सटीक पूर्वानुमान हमें ऐसी घटनाओं के लिए तैयार रहने में सहायता करता है। पूर्वानुमान स्थानीय सरकारों को संसाधन जुटाने और किसी भी आपदा के लिए तैयार रहने में सक्षम बनाता है। उदाहरण के लिए, यदि समुद्र में तूफानी मौसम की आशंका है तो मछुआरों को अपनी नावों को बाहर निकालने के बारे में चेतावनी दी जाती है या चक्रवात की आशंका है तो पूरे तटीय क्षेत्र को खाली कराना पड़ सकता है।

आइए पता लगाएँ

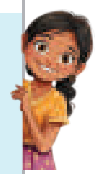

विभिन्न परिस्थितियों में मौसम का पूर्वानुमान किस प्रकार सहायक हैं, इसकी चर्चा समूह में कीजिए। एक सूची बनाइए और बनाने के बाद अपने निकट बैठे समूह के साथ इसे साझा कर चर्चा कीजिए। आप अलग-अलग परिस्थितियों की कितनी श्रेणियों की पहचान कर सकते हैं?

चित्र 2.13 में दिए गए भारत के मानचित्र को ध्यान से देखिए। यह मानचित्र भारत के मौसम विज्ञान विभाग द्वारा 19 मई 2024 को जारी किया गया था। प्रतीकों का अध्ययन कीजिए और मानचित्र पर दर्शाई गई परिस्थितियों के साथ मिलान कीजिए।

आइए पता लगाएँ

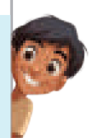

→ आप उस दिन क्या-क्या घटित होते हुए देखते हैं? वे कौन-कौन सी परिस्थितियाँ हैं, जिनके बारे में भारतीय मौसम विभाग लोगों को सचेत कर रहा है?

→ किन राज्यों में चेतावनी के संकेत हैं?

→ भारत के कौन-से भाग भीषण मौसमी घटनाओं से मुक्त हैं?

→ किन राज्यों में ताप लहर की संभावना है?

→ त्रिपुरा और लक्षद्वीप में चेतावनी के क्या कारण हैं?

→ छत्तीसगढ़ राज्य में मौसमी घटनाओं का पूर्व अनुमान स्थनीय स्तर पर किस प्रकार किया जाता है?

आगे बढ़ने से पहले...

→ तापमान, आर्द्रता, वर्षण, पवन और वायुमंडलीय दाब मिलकर किसी स्थान विशेष पर मौसम को परिभाषित करते हैं।

→ इन तत्वों की स्थिति को विशेष उपकरणों का उपयोग करके मापा जाता है। इनसे एकत्रित आँकड़े हमें मौसम की निगरानी और भविष्यवाणी करने में सहायता करते हैं।

→ अलग-अलग समय या परिस्थितियों में मौसम का कोई एक तत्व प्रमुख होता है, उदाहरण के लिए, जुलाई में वर्षा, मई और दिसंबर में तापमान, चक्रवात के

गतिशील होने पर वायुमंडलीय दाब, लू (गर्मियों में उत्तर भारत में चलने वाली तेज गर्म और धूल भरी हवाएँ) के चलते समय अथवा जंगल में आग के फैलते समय पवन।

→ मौसम का जलवायु से गहरा संबंध है। इसका अध्ययन हम अगले अध्याय में करेंगे।

प्रश्न और क्रियाकलाप

1. मौसम के तत्वों का उनको मापने वाले उपकरणों के साथ मिलान कीजिए।

प्रयुक्त उपकरण	मौसम के तत्व
(1) आर्द्रतामापी (हाइग्रोमीटर)	(क) वर्षण (प्रेसिपिटेशन)
(2) पवन वेगमापी (एनीमोमीटर)	(ख) वायुमंडलीय दबाव
(3) वायुदाबमापी (बैरोमीटर)	(ग) वायु की दिशा और गति
(4) तापमापी (थर्मामीटर)	(घ) आर्द्रता
(5) वर्षामापी (रेन गेज)	(ङ) तापमान

2. ज्योत्सना यह सोच रही है कि जून में मुंबई में अपनी विद्यालय यात्रा के समय कौन-से कपड़े साथ ले जाए। वह मौसम के पूर्वानुमान को देखती है, जो 29 डिग्री सेल्सियस और 84 प्रतिशत आर्द्रता की भविष्यवाणी करता है। आप उसको क्या सलाह देंगे?

3. कल्पना कीजिए कि आपका एक छोटा समूह वर्षामापी यंत्र स्थापित कर रहा है। यहाँ उसे स्थापित करने के स्थान के कुछ विकल्प दिए गए हैं—

    1. विद्यालय का सब्जी उद्यान।
    2. विद्यालय भवन की छत।
    3. ऊँचे चबूतरे के साथ खुला मैदान।
    4. विद्यालय परिसर की दीवार।
    5. विद्यालय प्रयोगशाला का बरामदा।

अपने समूह के साथ चर्चा कीजिए और सर्वाधिक उपयुक्त स्थान का निर्धारण कीजिए। अपने निर्णय के कारणों को लिखिए।

4. नीचे भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, जम्मू और कश्मीर से ली गई एक सारणी है। उपलब्ध आँकड़ों को देखते हुए, दिखाए गए दिन को, जम्मू और कश्मीर के विभिन्न भागों में मौसम की स्थिति को दर्ज करने हेतु एक लघु आलेख लिखिए। (संकेत – ताप सीमा, अधिकतम और न्यूनतम तापमान, आर्द्रता, वर्षा आदि को सम्मिलित करें।)

दैनिक मौसम मापदंड
जम्मू और कश्मीर (सायंकाल)
दिनांक – 01-02-2024

केंद्र	दिनांक का अधिकतम तापमान			दिनांक का न्यूनतम तापमान			8:30 बजे से 17:30 बजे तक (मि.मी./से.मी.)		24 घंटे में 8:30 बजे तक होने वाली वर्षा की मात्रा (मि.मी./से.मी.) दिनांक को		सापेक्षिक आर्द्रता	
	ACT (°C)	NOR (°C)	DEP (°C)	ACT (°C)	NOR (°C)	DEP (°C)	R/F (mm)	S/N (cm)	R/F	S/N	0830 (%)	1730 (%)
श्रीनगर	6.5	8.9	–2.4	0.2	–0.7	0.9	TR	0.0	13.4	2.4	89	89
काजीगुंड	3.2	8.5	–5.3	–0.4	–2.1	1.7	11.8	10.0	36.2	22.0	97	90
पहलगाम	1.1	5.6	–4.5	–4.1	–6.1	2.0	6.0	8.0	19.4	23.0	96	96
कुपवाड़ा	5.1	8.5	–3.4	–0.7	–2.3	1.6	0.5	0.0	21.9	10.0	97	94
कूकेरंग	2.6	6.6	–4.0	–1.4	–2.4	1.0	12.0	8.0	35.2	30.0	96	97
गुलमर्ग	–2.6	1.4	–4.0	–7.6	–7.6	0.0	8.2	6.35	35.2	35.0	76	100
मुजफ्फराबाद	8.5	–	–	5.6	–	–	–	–	25.8	–	93	–

ध्यान दें – ACT (एक्चुअल अर्थात वास्तविक), NOR (नॉर्मल अर्थात सामान्य), DEP (डिपार्चर अर्थात सामान्य से हटकर), R/F (रेनफॉल अर्थात वृष्टि), S/N (स्नोफॉल अर्थात हिमपात), TR (ट्रेस अमाउंट अर्थात वर्षण की माप)।

मेरी अभिव्यक्ति

इस स्थान का उपयोग टिप्पणी और चित्रांकन हेतु कीजिए।

अध्याय 3

भारत की जलवायु

काले वर्षतु पर्जन्यः। पृथिवी सस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहितः। ब्राह्मणास्सन्तु निर्भयाः।।
वर्षा समय पर हो, पृथ्वी अन्न से समृद्ध हो।
यह देश अशांति रहित हो, विद्वान लोग भय रहित हों।

— सुभाषितानि

चित्र 3.1

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *भारतीय जलवायु को कौन-कौन से तत्व विविध बनाते हैं?*
2. *मानसून क्या है? यह कैसे बनता हैं?*
3. *जलवायु का समाज, संस्कृति और आर्थिक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ता है?*
4. *जलवायु की समझ हमें प्राकृतिक आपदा के लिए तैयार रहने में किस प्रकार सहायता करती है?*
5. *जलवायु परिवर्तन क्या है? इसके परिणाम क्या-क्या होते हैं?*

0783CH03

मौसम, ऋतुएँ और जलवायु

'जलवायु' एक ऐसा शब्द है, जिसका प्रयोग लोग सामान्यत: दैनिक बातचीत में करते हैं। प्राय: इसका तात्पर्य मौसम से होता है, जलवायु से नहीं। दोनों में क्या अंतर है? मौसम वह है, जिसे हम प्रतिदिन या हर घंटे अनुभव करते है जैसे – वर्षा, तेज धूप या तेज हवा। यह समय-समय पर परिवर्तित होता रहता है। दूसरी ओर, जलवायु मौसम का वह प्रतिरूप है, जो किसी क्षेत्र या प्रदेश में लंबे समय तक कम से कम कई दशकों तक अनुभव किया जाता है। ये प्रतिरूप क्षेत्रानुसार अलग-अलग होते हैं।

इससे पहले कि हम विभिन्न प्रकार की जलवायु पर चर्चा करें, आइए संक्षेप में ऋतुओं के विषय में जान लें। पृथ्वी सूर्य का परिक्रमण करती है, जिससे ऋतुओं का निर्माण होता है। प्रत्येक ऋतु कुछ महीनों तक रहती है और प्रतिवर्ष पुन: आती है। जैसा कि हम जानते हैं, एक वर्ष में अनेक ऋतुएँ होती हैं, जैसे – बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद और शीत। ये ऋतुएँ क्रमश: एक चक्र के रूप में आती हैं। अब प्रश्न उठता है कि ऋतुओं का संबंध मौसम से है या जलवायु से? इसका उत्तर है, दोनों से।

मौसम ऋतुओं के अनुसार परिवर्तित होता है, जो गर्मी में शुष्क एवं गर्म और मानसून में आर्द्र और वर्षा वाला होता है। किसी भी क्षेत्र विशेष की ऋतुओं के प्रतिरूप का वहाँ की जलवायु से गहरा संबंध होता है। विश्व के अधिकतर क्षेत्रों में चार मुख्य ऋतुएँ होती हैं— बसंत, ग्रीष्म, शरद और शीत। यद्यपि इन चार ऋतुओं के साथ ही भारत में वर्षा ऋतु भी होती है, क्योंकि यहाँ वर्षा एक वर्ष में विशिष्ट समय में वर्षा ऋतु या 'मानसून' में ही होती है।

चित्र 3.2

पारंपरिक रूप से भारत के अनेक भागों में संपूर्ण वर्ष को छह ऋतुओं— वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत (शीत-पूर्व) और शिशिर (शीत ऋतु) में विभाजित किया गया है। विशिष्ट त्योहार एवं रीति-रिवाज इन छह ऋतुओं से संबंधित हैं जैसे – वसंत पंचमी और शरद पूर्णिमा।

यदि हम अपने आस-पास की दुनिया का अवलोकन करें, तो हम पाएँगे कि मानव, पौधे और पशु जीवन ऋतुओं के साथ सामंजस्य में हैं। हम जो फसलें उगाते हैं, भोजन करते हैं, वस्त्र पहनते हैं, ये सभी मौसम के अनुसार बदलते रहते हैं। क्षेत्रानुसार, वसंत की शुरुआत में कुछ पेड़ और झाड़ियाँ खिलती हैं। कुछ स्थानों पर वृक्ष अपने पत्ते गिरा देते हैं या शरद ऋतु के आते ही अपना रंग बदल लेते हैं और कुछ पशुओं के शरीर पर ठंड के महीनों में घने बाल विकसित हो जाते हैं।

आइए पता लगाएँ

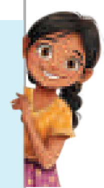

→ आपकी प्रिय ऋतुएँ कौन-सी हैं? अपने कारणों सहित इस पर एक संक्षिप्त निबंध लिखिए।

→ आपके क्षेत्र में ऋतुओं से जुड़ी विशेष घटनाओं का पता लगाने के लिए तीन या चार विद्यार्थियों के समूह में चर्चा कीजिए। इनसे संबंधित गीत, उत्सवों से संबंधित भोजन, विभिन्न ऋतुओं से संबंधित प्रचलित प्रथाएँ आदि को लिखिए और कक्षा के साथ साझा कीजिए।

→ क्या आप जानते हैं कि आपके क्षेत्र में कौन-से वृक्ष शीत ऋतु के आगमन से पूर्व अपना रंग बदलते हैं? क्या ऐसे वृक्ष हैं, जो इस समय अपने पत्ते गिरा देते हैं? आपके विचार में ऐसा क्यों होता है? इन वृक्षों के स्थानीय नामों का पता लगाइए और उनके विषय में लिखिए।

सामान्यतया, जलवायु लंबे समय तक स्थिर बनी रहती है। हालाँकि वैज्ञानिक हाल के दशकों में विश्व की जलवायु में परिवर्तन का अंकन कर रहे हैं। अध्ययनों से ज्ञात होता है कि इनमें से कई परिवर्तन मानवीय क्रियाकलापों के परिणामस्वरूप हो रहे हैं।

आइए पुनरावलोकन करें—

- मौसम वह है जिसे हम दिन-प्रतिदिन अनुभव करते हैं, जैसे – तेज हवाएँ, वर्षा, गर्मी, सूखा, आदि।
- ऋतुएँ प्रतिवर्ष आती हैं और प्रत्येक ऋतु में किसी स्थान का मौसम भिन्न होता है।
- जलवायु किसी विशेष क्षेत्र में दीर्घकालिक मौसमी प्रतिरूप है। विश्व में विविध प्रकार की जलवायु पाई जाती हैं। अब हम भारत में पाई जाने वाली जलवायु के प्रमुख प्रकारों के बारे में जानेंगे।

भारत में जलवायु के प्रकार

जैसा कि हम जानते हैं, भारत विविधताओं का देश है। यह बात इसकी जलवायु के बारे में भी उतनी ही सत्य है—

- उत्तर में हिमालय पर्वतों में अल्पाइन जलवायु मिलती है, जहाँ शीत ऋतु अत्यधिक ठंडी और बर्फीली होती है तथा ग्रीष्म ऋतु शीतल होती है (अल्पाइन शब्द 'आल्प्स' से आया है, जो यूरोप की एक पर्वत श्रृंखला है)। संभवतः यहीं पर आपको भारत में सबसे अधिक मोटे कपड़े पहने लोग देखने को मिलेंगे।
- हिमालय के निचले क्षेत्रों और भारत के अन्य पहाड़ी क्षेत्रों में जलवायु प्रायः समशीतोष्ण (टेंपरेट) कही जाती है, क्योंकि सर्दियाँ कम ठंडी होती हैं और गर्मियाँ बहुत अधिक गर्म नहीं होती हैं। यहीं पर हमें कई 'पर्वतीय पर्यटन स्थल' मिलते हैं जहाँ मैदानी क्षेत्रों की गर्मी से राहत पाने के लिए प्रायः लोग आते हैं।

चित्र 3.3

- उत्तरी मैदानों में जलवायु उपोष्ण कटिबंधीय (सब-ट्रॉपिकल) है, जहाँ ग्रीष्मकाल अत्यधिक गर्म और शीत ऋतु ठंडी होती हैं। यहीं पर भारत का अधिकांश गेहूँ उगाया जाता है।
- पश्चिम में थार मरूस्थल की जलवायु शुष्क होती है, जहाँ दिन अत्यधिक गर्म, रातें ठंडी और वर्षा बहुत कम होती है। वहाँ के लोगों ने जल संग्रह करने और बचाने के लिए अनोखे उपाय विकसित किए हैं।
- पश्चिमी तटीय पट्टी में मानसून के महीनों में भारी वर्षा होती है, जिससे उष्णकटिबंधीय आर्द्र जलवायु बनती है, जो चावल और मसालों की खेती के अनुकूल है।
- मध्य दक्कन पठार की जलवायु अर्ध-शुष्क है, जिसमें ग्रीष्मकाल गर्म, सर्दियाँ हल्की ठंडी और वर्षा ऋतु में सामान्य वर्षा होती है।
- पूर्वी भारत और दक्षिणी प्रायद्वीप में हल्की सर्दी और मानसूनी हवाओं द्वारा नियंत्रित अलग-अलग आर्द्र और शुष्क अवधियों के साथ उष्णकटिबंधीय (ट्रॉपिकल) जलवायु का अनुभव होता है। आप इनके विषय में आगे पढ़ेंगे।

नोट— आप उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय शब्दों का अर्थ आगे समझेंगे, जो उष्णकटिबंधीय कहे जाने वाली दो विशेष समांतर अक्षांश रेखाओं से संबंधित हैं।

जलवायु निर्धारित करने वाले कारक

विभिन्न प्रकार की जलवायु का निर्माण किन कारणों से होता है? अनेक कारक इसके लिए उत्तरदायी होते हैं। वैश्विक स्तर पर कुछ सामान्य कारक हैं जबकि कुछ कारक क्षेत्रीय या स्थानीय होते हैं। आइए कुछ मुख्य कारकों को समझे—

क) अक्षांश

पुनरावलोकन करें

हमने कक्षा 6 में अक्षांशों के विषय में पढ़ा था। क्या आपको याद है कि अक्षांश भूमध्य रेखा की दूरी से मापे जाते हैं और जैसे-जैसे हम इससे दूर (या तो उत्तर की ओर या दक्षिण की ओर) जाते हैं, ये बढ़ते जाते हैं? विषुवत रेखा के आस-पास की जलवायु बहुत गर्म होती है लेकिन अक्षांश बढ़ने के साथ-साथ यह समशीतोष्ण और फिर ठंडी या बर्फीली हो जाती है। ऐसा क्यों होता है?

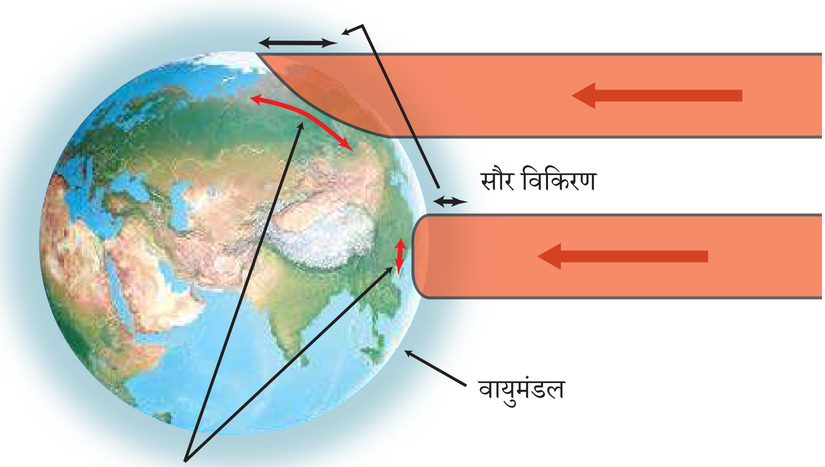

भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं, लेकिन ध्रुवों के पास यह व्यापक क्षेत्र में फैल जाती हैं।

चित्र 3.4

भूमध्य रेखा के पास स्थित स्थान जो निम्न अक्षांशों पर हैं, वे गर्म रहते हैं, जबकि ध्रुवों (उच्च अक्षांशों) के पास स्थित स्थान ठंडे होते हैं। ऐसा उस कोण के कारण होता है जिस पर सूर्य की किरणें किसी क्षेत्र विशेष पर पड़ती हैं। भूमध्य रेखा पर किरणें लगभग लंबवत होती हैं, जिससे उनकी संपूर्ण ऊर्जा पृथ्वी की सतह के एक छोटे-से क्षेत्र पर केंद्रित होती है। ध्रुवीय क्षेत्रों में किरणें झुकी हुई या तिरछी होती हैं और ऊर्जा एक बड़ी सतह पर वितरित होती है। इसके अतिरिक्त उन्हें पृथ्वी के वायुमंडल के बहुत बड़े भाग से लंबी दूरी पार करके गुजरना पड़ता है, जैसा कि चित्र 3.4 में दिखाया गया है, जिससे उनकी ऊर्जा और भी अधिक नष्ट हो जाती है। परिणामस्वरूप, ध्रुवीय क्षेत्रों को विषुवत रेखीय क्षेत्रों की तुलना में कम ताप मिलता है। हम इसे भारत में भी देख सकते हैं— कन्याकुमारी और निकोबार द्वीपसमूह भूमध्य रेखा के निकट होने के कारण लगभग पूरे वर्ष गर्म रहते हैं, जबकि उत्तर में स्थित श्रीनगर जैसे स्थान बहुत ठंडे होते हैं।

ख) ऊँचाई (एल्टीट्यूड)

हमने पाठ में पर्वतीय पर्यटक स्थलों के विषय में पढ़ा है, जो अपनी ठंडी जलवायु के कारण लोकप्रिय पर्यटन केंद्र हैं। भारत में ऐसे कई स्थान हैं जिनमें मुन्नार, थेनी, उधगमंडलम (ऊटी), मदिकेरी, महाबलेश्वर, माउंट आबू, शिमला, नैनीताल, दार्जिलिंग, तवांग, शिलांग आदि प्रमुख हैं। हम जानते हैं कि ये स्थान मैदानों की तुलना में अधिक ऊँचाई पर स्थित हैं, लेकिन यह उनके ठंडे तापमान की व्याख्या कैसे करता है? आप इसका पूर्ण उत्तर बाद में अपनी विज्ञान की कक्षाओं में जानेंगे।

सरल रूप में कह सकते हैं कि जैसे-जैसे ऊँचाई बढ़ती है, साथ-साथ तापमान भी कम होता जाता है क्योंकि —

चित्र 3.5

1. ऊँचाई बढ़ने के साथ वायुमंडलीय दबाव और उसके परिणामस्वरूप वायु का घनत्व कम हो जाता है और जैसे-जैसे वायु का घनत्व कम होता जाता है, वायु ठंडी होती जाती है (जैसा कि हमने 'मौसम को समझना' वाले अध्याय में पढ़ा था)।

2. सूर्य पृथ्वी की सतह को गर्म करता है। इसलिए सतह से जितनी अधिक दूरी होगी, हवा उतनी ही कम गर्म होगी। हिमालय इतना ऊँचा है कि इसके कई शिखरों पर तापमान जल के हिमांक से नीचे रहता हैं, जिससे वे हिम से ढँके रहते हैं।

आइए पता लगाएँ

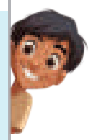

उधगमंडलम (ऊटी) एवं कोयंबटूर लगभग समान अक्षांशों पर स्थित हैं। ऊटी में गर्मी का तापमान 10–25 डिग्री सेल्सियस जबकि कोयंबटूर में 25–38 डिग्री सेल्सियस होता है। इन दो स्थानों पर तापमान में यह अंतर क्यों है? इस बारे में आप क्या सोचते हैं?

ग) समुद्र से निकटता

तटीय क्षेत्रों में तापमान में बहुत अधिक परिवर्तन नहीं होता, गर्मियाँ बहुत अधिक गर्म नहीं होतीं और सर्दियाँ बहुत अधिक ठंडी नहीं होतीं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि समुद्र तापमान को नियंत्रित करता है। यह चित्र इस घटना का विवरण प्रस्तुत करता है। आपकी विज्ञान की पाठ्यपुस्तक भी तटीय क्षेत्रों में भूमि और जल के गर्म होने एवं ठंडा होने पर चर्चा करते हुए इसे और विस्तार से समझाती है। परिणामस्वरूप यह क्षेत्र समशीतोष्ण रहता है। किंतु जैसे-जैसे आप तट से स्थल की ओर बढ़ते हैं, तापमान अधिक होता जाता है— ग्रीष्म काल में तापमान अधिक और सर्दियों में तापमान कम हो जाता है। उदाहरण के लिए, मुंबई और नागपुर एक समान अक्षांश पर स्थित हैं, लेकिन मुंबई, समुद्र के पास होने के कारण, ग्रीष्म काल में ठंडा रहता है (लगभग 32 डिग्री सेल्सियस) और यहाँ हल्की सर्दी (लगभग 18 डिग्री सेल्सियस) होती है। जबकि तट से दूर होने के कारण नागपुर में ग्रीष्म काल में तापमान लगभग 44 डिग्री सेल्सियस और शीत काल में लगभग 10 डिग्री सेल्सियस तक होता है। आप देख सकते हैं कि मुंबई में ताप परिसर (अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान के बीच का अंतर) लगभग 14 डिग्री सेल्सियस होता है और जबकि नागपुर में यह अंतर 34 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है।

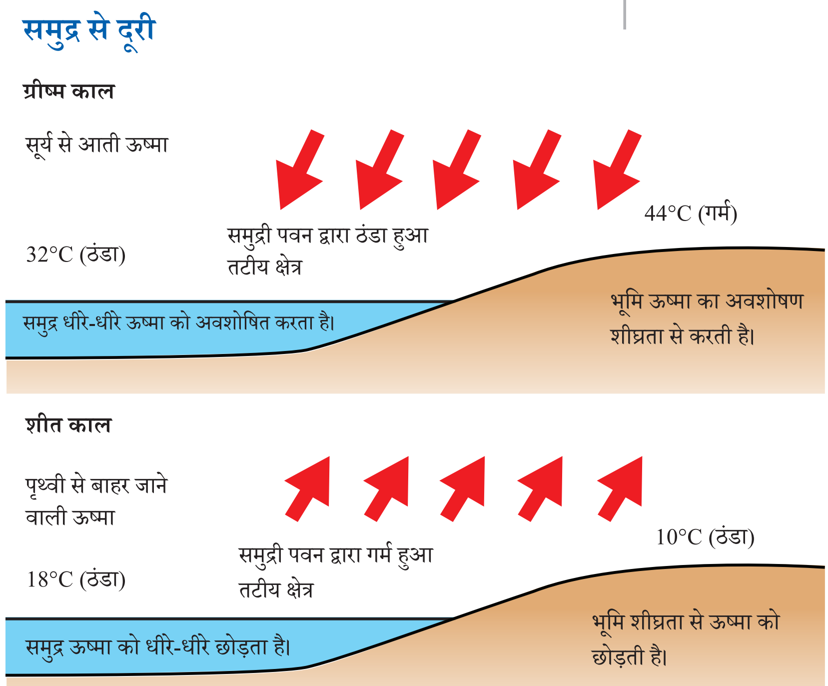

चित्र 3.6

घ) पवनें

पवन गर्म या ठंडी वायुराशियों को संचालित करती हैं। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में प्रायः पवनें पश्चिम से चलती हैं। ये पवनें अरब के रेगिस्तान से चलकर अफगानिस्तान होते हुए, शुष्क और गर्म पवनें लेकर आती हैं जो ग्रीष्म काल में भयंकर ताप लहर (हीट वेव) का कारण बनती हैं। सर्दियों में, हिमालय से ठंडी पवनें हिमालय के गिरिपाद (फूट हिल्स) में नीचे की ओर प्रवेश कर जाती हैं, जिससे शीत लहरें पैदा होती हैं।

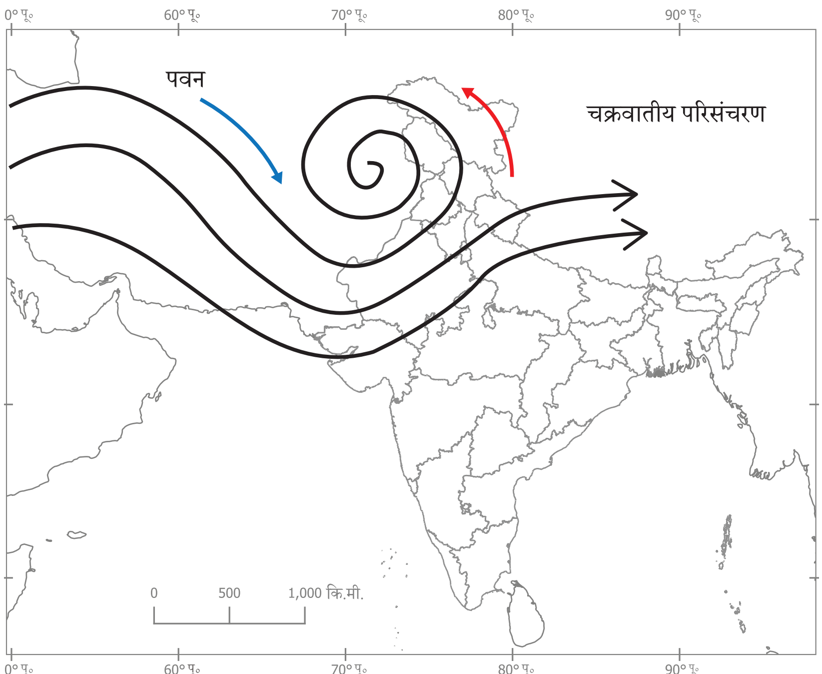

चित्र 3.7

पवनें न केवल तापमान को प्रभावित करती हैं, बल्कि आर्द्रता और उसके परिणामस्वरूप होने वाले वर्षण को भी प्रभावित करती हैं। जैसा कि हमने देखा, मरुस्थलों से आने वाली हवाएँ शुष्क होती हैं, इसके विपरीत, समुद्र से आने वाली पवनें धरातल पर नमी लाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप वर्षा हो सकती है। हम शीघ्र ही मानसूनी पवनों के बारे में भी जानेंगे।

पुनरावलोकन करें

कक्षा 6 की विज्ञान की पाठ्यपुस्तक *जिज्ञासा* में आप जल-चक्र के बारे में पढ़ चुके हैं! "महासागर और पृथ्वी की सतह से पानी वाष्प के रूप में वायुमंडल में चला जाता है और वर्षा, ओले या हिम के रूप में वापस पृथ्वी पर लौटता है..."

स्थलाकृति किसी क्षेत्र के धरातल पर अभिलक्षणों की समग्रता जिसमें पहाड़, पहाड़ियाँ,घाटियाँ, ढलान, तट आदि सम्मिलित होते हैं।

ङ) स्थलाकृति (टोपोग्राफी)

किसी क्षेत्र की **स्थलाकृति** भी वहाँ की जलवायु को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरण के लिए, हिमालय और काराकोरम पर्वतमालाएँ भारतीय

उपमहाद्वीप को मध्य एशिया के ठंडे रेगिस्तानों की पवनों से बचाती हैं। दूसरी ओर, थार मरुस्थल की लगभग समतल स्थलाकृति के कारण गर्म और शुष्क हवाओं से बचाव के लिए कोई अवरोध नहीं है। अगले भाग में हम भारत के दक्षिण-पश्चिमी मानसून में पश्चिम घाट की भूमिका को समझेंगे।

अब यह सब एक साथ देखें...

किसी भी क्षेत्र की जलवायु उपर्युक्त सभी कारकों द्वारा सामूहिक रूप से निर्धारित होती है। जलवायु में तीन दशक या उससे अधिक समय में किसी क्षेत्र में तापमान, वर्षण (वर्षा या हिमपात, कोहरा या धुंध की घटना) और पवन की दशा के प्रतिरूप का वर्णन सम्मिलित होता है।

सूक्ष्म जलवायु से तात्पर्य एक छोटे से क्षेत्र में स्थानीयकृत जलवायु से है जो आस-पास के क्षेत्र की जलवायु से अलग होती है। इसमें एक छोटे भौगोलिक क्षेत्र में तापमान, आर्द्रता, वर्षा आदि का एक अनूठा प्रतिरूप होता है।

चित्र 3.8 — अरावली और नगरीय ऊष्मा द्वीप (अर्बन हीट आईलैंड)

उदाहरण के लिए, संकीर्ण घाटियों और कुछ जंगलों की अपनी सूक्ष्म जलवायु होती है। इसी प्रकार 'नगरीय ऊष्मा द्वीप' में भी ऐसा ही होता है। ऐसे शहर, जिनमें बड़ी संख्या में इमारतें और अन्य कंक्रीट संरचनाएँ होती हैं और वनस्पति बहुत कम होती है, ये सभी वहाँ से ऊष्मा को बाहर जाने से रोकते हैं। ऐसे स्थान प्राय: आस-पास के क्षेत्र की तुलना में बहुत गर्म हो जाते हैं।

सूक्ष्म जलवायु स्थानीय वनस्पतियों और जीव-जंतुओं, उगाई जाने वाली फसलों तथा मानव स्वास्थ्य और कल्याण पर प्रभाव डाल सकती है।

मानसून

मानसून भारत में जीवन का केंद्र है। मानसून के महीनों के दौरान नदियाँ जल से भर जाती हैं, मिट्टी में नमी आ जाती है, फसलें उगती हैं और जीवन फलता-फूलता है। शाब्दिक रूप से, 'मानसून' शब्द अरबी भाषा के शब्द 'मौसिम' से आया है, जिसका अर्थ है ऋतु— यह शब्द हिंद महासागर, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका और दक्षिण एशिया सहित आस-पास के क्षेत्रों में मौसमी पवनों के संदर्भ में प्रयुक्त होता है।

मानसून का एक वार्षिक प्रतिरूप होता है। मानसून की क्रिया-विधि जटिल होती है, परंतु यह इस साधारण तथ्य पर आधारित है कि भूमि समुद्र की तुलना में शीघ्रता से गर्म या ठंडी होती है। मानसून तापमान, वायुदाब और पवन की गति के बीच मूलभूत संबंधों को सामने लाता है।

सरल शब्दों में कहें तो जैसे ही ग्रीष्म ऋतु आरंभ होती है, एशियाई भूभाग गर्म हो जाता है जिससे उस पर एक शक्तिशाली निम्न-दबाव क्षेत्र बन जाता है। चूँकि पवन हमेशा उच्च दाब से निम्न दाब की ओर बहती है, इसलिए पवनें ठंडे, उच्च दाब वाले महासागर से गर्म भूभाग की ओर चलती हैं। ये समुद्री पवनें नमी लेकर आती हैं, जो गर्म भूभाग पर संघनित होती हैं और फिर भारी मानसूनी वर्षा होती है। इसलिए मानसून का अर्थ सामान्यतया पवनों की अपेक्षा मौसमी वर्षा से होता है।

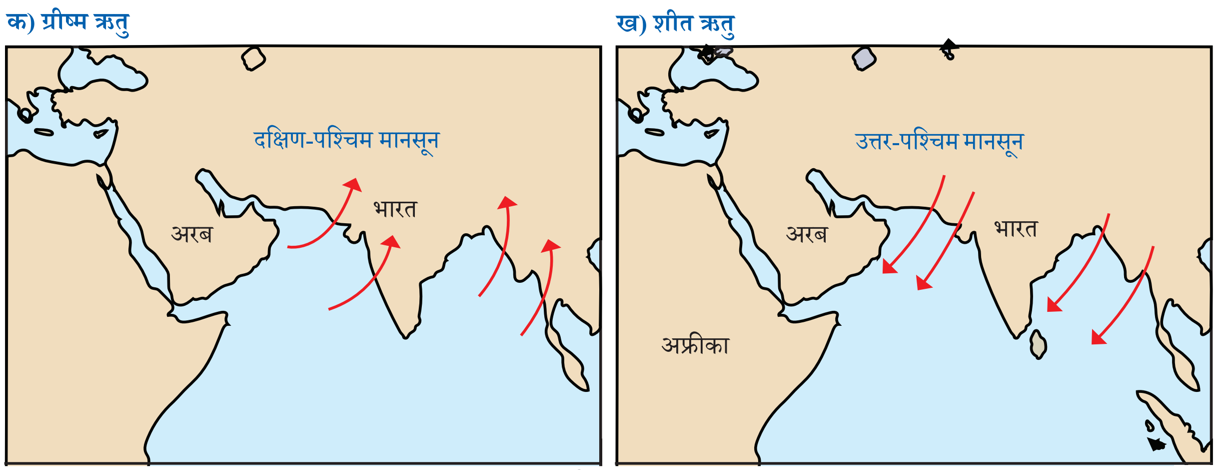

चित्र 3.9

सर्दियों में यह प्रतिरूप विपरीत हो जाता है, जब स्थलभाग समुद्र की तुलना में शीघ्रता से ठंडा होता है। अब स्थलभाग पर उच्च दबाव क्षेत्र विकसित होता है जबकि समुद्र अपेक्षाकृत कम दबाव के कारण गर्म रहता है। इससे पवनें विपरीत दिशा में चलती हैं अर्थात भूमि से समुद्र की ओर, जिससे एशिया के अधिकांश भाग में शुष्क परिस्थितियाँ बन जाती हैं।

भारत की बात करें तो मानसून की वर्षा सामान्यतया जून की शुरुआत में भारत के दक्षिणी सिरे से प्रवेश करती हैं और कुछ सप्ताह में उत्तर की ओर बढ़ती है। जुलाई के मध्य तक यह संपूर्ण उपमहाद्वीप पर फैल जाती है। हालाँकि, यह सरलता से आगे नहीं बढ़ती है। पश्चिमी घाट (स्थलाकृति के हमारे संक्षिप्त सर्वेक्षण को याद रखें) एक प्राकृतिक अवरोध के रूप में कार्य करता है। फलस्वरूप उनके पश्चिमी ढलानों पर बहुत अधिक वर्षा होती है जबकि पूर्वी ढलान में दक्कन पठार पर कम और प्रायः अंतरालों के साथ वर्षा होती है। इसे सामान्यतया ग्रीष्मकालीन या दक्षिण-पश्चिम मानसून कहा जाता है। यह 'दक्षिण-पश्चिम' पवनों की दिशा को दर्शाता है।

शीत ऋतु के आगमन पर पवनों की दिशा में परिवर्तन हो जाता है। इस समय हवाएँ भूभाग से समुद्र की ओर प्रवाहित होती है। शुष्क हवाएँ दक्षिण भारत में ठंड प्रारंभ कर देती हैं लेकिन इनका एक भाग बंगाल की खाड़ी से गुजरते हुए कुछ नमी ग्रहण कर दक्षिण-पूर्व भारत के कुछ भागों में वर्षा करने में सक्षम होता है। इसे शीत या उत्तर-पूर्व मानसून कहा जाता है।

इसे अनदेखा न करें

→ मेघालय स्थित मौसिनराम विश्व की सर्वाधिक, लगभग 11000 मि.मी. (11 मीटर) औसत वार्षिक वर्षा प्राप्त करता है।

चित्र 3.10

→ मानसून ने कर्नाटक और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में अनेक रागों को प्रेरित किया है। 'मेघमल्हार' और 'अमृतवर्षिणी' उनमें से कुछ प्रमुख हैं।

आइए पता लगाएँ

भारत में मानसूनी वर्षा का पूर्वानुमान सदैव से ही जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष रहा है। हमारे पूर्वजों ने अपने आस-पास की प्रकृति के संकेतों को ध्यान से देखा और अपने अनुभवों से स्थानीय पारंपरिक ज्ञान विकसित किया। यह पारंपरिक ज्ञान एक महत्वपूर्ण विरासत है, जिसे हमें संरक्षित करना चाहिए। उदाहरण के लिए, कोंकण तट पर मछुआरे मानसून के आगमन की भविष्यवाणी करते हैं, जब जल के नीचे रहने वाली मछलियाँ सतह पर दिखाई देने लगती हैं। दक्षिण भारत के कुछ भागों में यह माना जाता है कि मानसून गोल्डन शॉवर ट्री या अमलतास (कैसिया फिस्टुला) के खिलने के 50 दिनों के भीतर आ जाता है। कुछ समुदायों का यह भी मानना है कि जब कौए अपने घोंसले पेड़ की चोटी पर बनाते हैं तो यह कम वर्षा का संकेत देता है, जबकि अगर घोंसले नीचे हैं तो भारी वर्षा होने की संभावना होती है। अपने क्षेत्र में वर्षा, कोहरे, हिम या सहिमवृष्टि के बारे में ऐसे स्थानीय ज्ञान की एक सूची बनाइए।

जलवायु और हमारा जीवन

हमारे जीवन का जलवायु से गहन संबंध है और हम इस पर निर्भर हैं। उदाहरण के लिए, जलवायु का प्रभाव स्थानीय संस्कृतियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भारत में ऋतुओं और कृषि गतिविधियों से संबंधित अनेक त्यौहार मनाए जाते हैं।

आइए पता लगाएँ

अपने दादाजी-दादीजी या पड़ोस के वृद्धजनों से संपर्क कीजिए। उनसे उनके बचपन और युवावस्था में मनाए जाने वाले पारंपरिक त्यौहारों और नृत्यों के बारे में पूछिए, जो उन्हें याद हैं, विशेषकर जो कृषि और वर्षा से संबंधित थे। वे किन रीति-रिवाजों में भाग लेते थे? फिर अपने साथियों के साथ एक सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन कीजिए। आप अपने वयोवृद्धों द्वारा साझा किए गए कुछ नृत्यों, गीतों और गतिविधियों को वहाँ प्रदर्शित कर सकते हैं— चाहे वह फसल की रस्म हो या वर्षा के देवताओं की प्रार्थना के बारे में एक सरल कहानी या कोई नृत्य हो। अपने सहपाठियों के लिए इन परंपराओं को जीवंत करने का प्रयास कीजिए।

जलवायु का प्रत्यक्ष प्रभाव अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। प्रायः आपने यह सुना होगा कि 'मानसून फेलियर' हो गया, जिसका अर्थ है— मानसून के मौसम में वर्षा का कम होना। ऐसे समय में कृषि प्रभावित होती है, लोगों (सामान्यत: महिलाओं) को जल की तलाश में लंबी दूरी तय करनी पड़ती है और कृषि श्रमिकों के नगरों की ओर

बिहू
छठ पूजा
मकर संक्राति
बैसाखी
पोंगल
अवि शीतकालीन महोत्सव
हेमिस
लोसुंग उत्सव
गुडी पड़वा
लोहड़ी
ओणम

चित्र 3.11

मुद्रास्फीति

"एक ऐसी स्थिति है जिसमें वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य बढ़ जाता है एवं मुद्रा का मूल्य कम हो जाता है।"

पलायन की संभावना होती है। खाद्यान्न (बड़े पैमाने पर अनाज, सब्जियाँ और फल) महँगे हो जाते हैं जिससे मुद्रास्फीति बढ़ जाती है। औद्योगिक गतिविधि भी प्रायः पूर्वानुमानित मौसम और जल की उपलब्धता पर निर्भर करती है। विश्व भर में हम जलवायु और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के बीच ऐसे संबंधों को सरलता से पहचान सकते हैं। जब जलवायुजन्य आपदाएँ आती हैं, तो ये स्थितियाँ विशेष रूप से तनावपूर्ण हो जाती हैं।

जलवायु और आपदाएँ

भारत में मौसम के विविध स्वरूप चरम स्थितियों, जैसे – चक्रवात, बाढ़, भूस्खलन और जलवायु संबंधी विकट आपदाओं को जन्म दे सकते हैं। ये घटनाएँ लोगों के जीवन को प्रभावित करती हैं, कृषि को बाधित करती हैं, आधारभूत ढाँचे को क्षति पहुँचाती हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित करती हैं।

क) चक्रवात

प्रतिवर्ष भारतीय तटरेखा, विशेष रूप से पूर्वी तट, कई चक्रवातों का सामना करता है। गत वर्षों में इनमें से कुछ अत्यधिक विनाशकारी रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप मानव और पशु जीवन की हानि हुई, संपत्ति और आधारभूत ढाँचे को नुकसान पहुँचा, पेड़ उखड़ गए और मृदा अपरदन (मिट्टी का कटाव) हुआ। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग आने वाले चक्रवातों पर नजर रखता है और उनके बनने, विकास और प्रभावित होने वाले क्षेत्र आदि के बारे में पूर्व जानकारी प्रदान करता है।

इसे अनदेखा न करें

चित्र 3.12

राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (नेशनल डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स — एन.डी.आर.एफ.) को प्राकृतिक और मानव-निर्मित आपदाओं से निपटने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है। एन.डी.आर.एफ. बटालियन भारत में 12 अलग-अलग स्थानों पर स्थित हैं। एन.डी.आर.एफ. ने चक्रवात, भूस्खलन और बाढ़ जैसी आपदाओं के दौरान बचाव एवं राहत कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

चक्रवात कैसे बनते हैं? हमने देखा कि कुछ विशेष परिस्थितियों में समुद्र के पास वायुमंडलीय दबाव आस-पास के क्षेत्रों की तुलना में कम हो जाता है, जिससे निम्न दबाव तंत्र बनता है। यह स्थिति आस-पास के क्षेत्रों से पवन को निम्न दबाव क्षेत्रों की ओर खींचती है और धीरे-धीरे यह निम्न दबाव का क्षेत्र समुद्र से स्थल की ओर बढ़ता जाता है।

यह पवन अपने साथ नमी और वर्षा लाती है। जब निम्न दबाव तंत्र तीव्र होता है और पवन की गति अधिक होती है, तो इसका परिणाम चक्रवात हो सकता है।

जैसे ही पवन नमी एकत्र करती हैं, वे बादल बनाती हैं और बाहर से अवदाब केंद्र की ओर घूमती हैं। यह केंद्र जो कि बादलरहित होता है, उसे 'चक्रवात की आँख' कहा जाता है।

आइए विचार करें

बादल क्या हैं? आप कह सकते हैं कि ये आकाश में सफेद गुच्छे हैं। लेकिन ये किससे बने हैं? इसका उत्तर सरल है— जल। लेकिन ये केवल जल नहीं हैं। बादल जल की बूँदें और हिम के टुकड़े या दोनों का मिश्रण होते हैं, जो वायुमंडल में लटके रहते हैं।

ख) बाढ़

सामान्य रूप से जब शुष्क भूमि पर जल का अति प्रवाह होने लगता है, तो बाढ़ आती है। ऐसा भारी वर्षा के कारण हो सकता है जिससे सतह पर अत्यधिक जल बहने लगता है, जिसे भूमि सोख नहीं पाती। नदियों और झीलों जैसे निकायों में जल का अत्यधिक संचय हो जाता है, जिससे जल बाहर बहने लगता है और किनारे टूट जाते हैं। प्रायः बाढ़ मानसून के दौरान आती है। असम, बिहार, उत्तर प्रदेश, केरल और आंध्र प्रदेश जैसे राज्य बाढ़ के लिए विशेष रूप से संवेदनशील हैं।

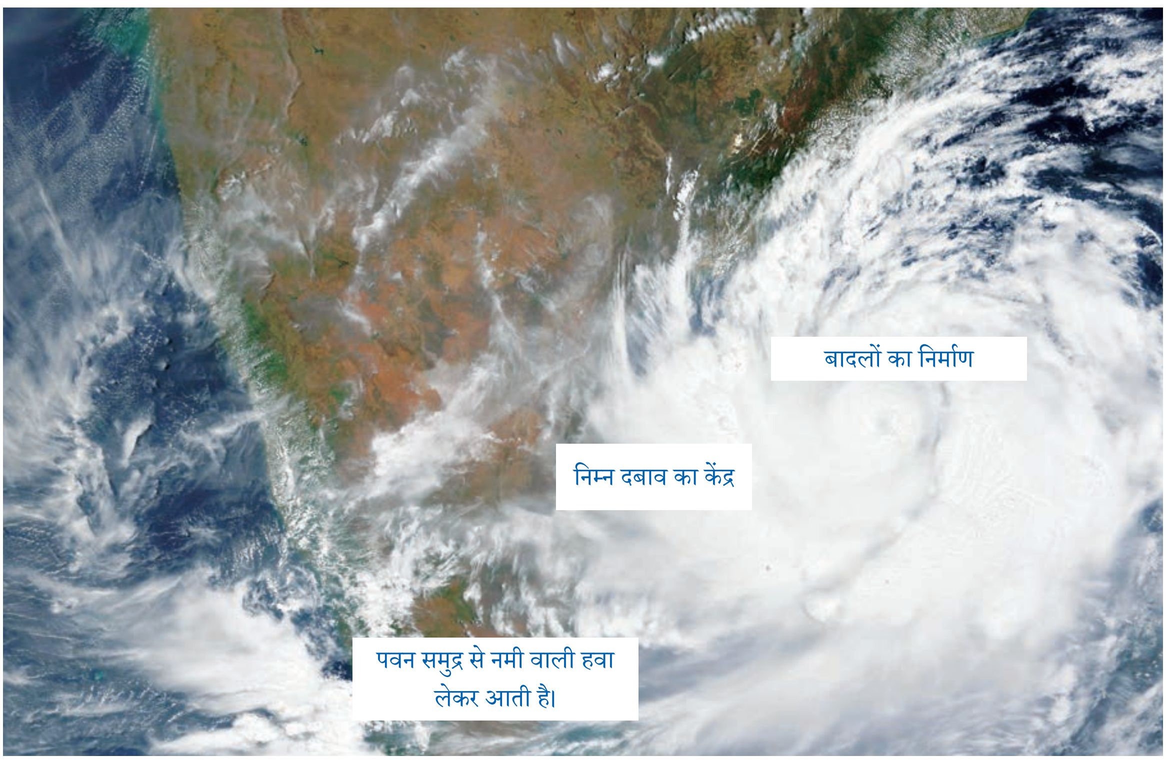

चित्र 3.13 — चक्रवात फानी

चित्र 3.14 — चक्रवात की आँख

आइए पता लगाएँ

क्या आपने कभी बाढ़ देखी है अथवा इसके विषय में पढ़ा है? भारत के भौतिक मानचित्र को देखिए। समूह में चर्चा कीजिए कि बताए गए राज्यों में बाढ़ क्यों आती है?

दूसरी ओर, हिमालय क्षेत्र में बाढ़ तब आती है जब हिमनदीय झीलें सामान्य से अधिक मात्रा में जल निकास करने लगती हैं। हिमनदीय झीलें अपने जल को रोकने के लिए चट्टानों और हिम का एक अवरोध बनाती हैं जो प्रायः पिघलते हिमनदों से आता है। यदि हिमनद बहुत तेजी से पिघलते हैं (जैसा कि प्रायः होता है) या यदि बहुत अधिक वर्षा होती है तो दबाव के कारण जल अवरोध को तोड़ सकता है। इसे हिमनदीय विस्फोट (ग्लेशियल बर्स्ट) कहा जाता है। लोगों और संपत्ति के लिए यह विनाशकारी होता है।

इसे अनदेखा न करें

2013 में उत्तराखंड में कई दिनों तक लगातार भारी वर्षा के कारण अचानक हिमनदीय विस्फोट हो गया। इसके बाद कई भूस्खलन हुए। भारत के महत्वपूर्ण पवित्र स्थलों में से एक केदारनाथ मंदिर के आस-पास का क्षेत्र पूरी तरह से नष्ट हो गया। बाढ़ में कई गाँव बह गए। साथ ही कई सड़कें और पुल भी बह गए। कुल मिलाकर लगभग 6000 लोगों की मृत्यु हुई, जिनमें से अधिकतर तीर्थयात्री थे।

चित्र 3.15

भारी वर्षा होने पर कई शहरों में बाढ़ आ जाती है। ऐसा जल निकासी व्यवस्था पर अत्यधिक बोझ या अनियोजित निर्माण के कारण हो सकता है। बहुधा यह जलमार्गों पर अतिक्रमण और जल प्रवाह के अवरुद्ध होने के कारण होता है। इसके अतिरिक्त शहरों में कंक्रीट या डामर की सतहें जल को भूमि द्वारा अवशोषित नहीं होने देती हैं।

ग) भूस्खलन

भूस्खलन शैल (रॉक), मिट्‌टी या मलबे का अचानक ढहना है, जो प्राय: भारी वर्षा, भूकंप या ज्वालामुखी सक्रियता के कारण होता है। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी और पर्वतीय क्षेत्रों के साथ-साथ पश्चिमी घाट और अन्य पहाड़ी क्षेत्रों में भूस्खलन आम बात है। ये घटनाएँ प्रायः मानसून के दौरान होती हैं।

मानवीय गतिविधियों जैसे वनों की कटाई, स्वीकृत विधियों का पालन किए बिना आधारभूत ढाँचे का निर्माण तथा जल के प्राकृतिक प्रवाह को अवरुद्ध करने वाली अत्यधिक इमारतों के निर्माण के कारण इन क्षेत्रों में भूस्खलन की संभावना बढ़ गई है।

घ) दावानल (जंगल की आग)

दावानल एक अनियंत्रित आग है जो जंगलों में तीव्र गति से फैलती है। प्रायः वे शुष्क जलवायुजन्य परिस्थितियों, सूखा या तेज हवाओं के कारण फैलती है। मानवीय लापरवाही भी इसका एक और आम कारण है। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ जैसे घने वन प्रदेशों या घास के मैदान वाले राज्यों के साथ ही पश्चिमी घाट जैसी पर्वत श्रृंखला में दावानल एक आम बात है। आग जंगल के बड़े क्षेत्रों को नष्ट करने के अलावा, वन्यजीवों, पारिस्थितिकी तंत्र को हानि पहुँचाती है, हवा की गुणवत्ता को खराब करती है और स्थानीय समुदायों को विस्थापित होने पर विवश करती है। इसलिए इसके परिणाम पर्यावरणीय और आर्थिक दोनों होते हैं।

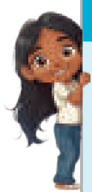

आइए पता लगाएँ

→ चित्र 3.15 को देखिए। आपदा के प्रकार को पहचानिए और लोगों, पेड़-पौधों, जानवरों और आर्थिक जीवन पर पड़ने वाले इसके प्रभावों का वर्णन कीजिए।

→ चार या पाँच के समूहों में ऊपर वर्णित प्रत्येक आपदा में प्राकृतिक और मानवीय कारणों की पहचान कीजिए। अपने निष्कर्षों की तुलना कीजिए।

→ इन्हीं समूहों में उन उपायों पर भी चर्चा कीजिए जो उपर्युक्त आपदाओं से बचने में सहायता कर सकते हैं।

→ आपके क्षेत्र विशेष में आई प्राकृतिक आपदा पर चर्चा करें एवं उसके समाधान के उपाय बताइए।

जीवाश्म ईंधन

ऊर्जा के वे स्रोत जो लाखों वर्ष पहले मृत पौधों और जानवरों के अवशेषों से बने थे। ये लाखों वर्षों से मिट्टी एवं शैल की परतों या समुद्र के नीचे दबे हुए थे जहाँ गर्मी और दबाव ने उन्हें धीरे-धीरे कोयला, पेट्रोलियम तेल और प्राकृतिक गैस में बदल दिया।

जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य जलवायु में महत्वपूर्ण एवं दीर्घकालिक परिवर्तन है। यह संपूर्ण पृथ्वी पर या क्षेत्रीय स्तर पर हो सकता है और इसमें तापमान, वर्षा और मौसम की घटनाओं में परिवर्तन सम्मिलित हैं। पिछली सहस्राब्दियों में प्राकृतिक प्रक्रियाओं ने जलवायु परिवर्तन को प्रेरित किया, जिसे समझने के लिए हम पिछले लाखों वर्षों को देख सकते हैं। हालाँकि, 19वीं शताब्दी के बाद से जलवायु परिवर्तन मुख्यत: मानवीय गतिविधियों, विशेष रूप से **जीवाश्म ईंधन** के जलने, वनों की कटाई, पर्यावरण के लिए हानिकारक औद्योगिक उत्पादन एवं अत्यधिक या अनावश्यक खपत के प्रतिरूप द्वारा प्रेरित रहा है।

जीवाश्म ईंधन के जलने से जलवायु क्यों प्रभावित होती है? पृथ्वी के प्राकृतिक कार्बन चक्र में कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) और अन्य गैसें धीरे-धीरे वायुमंडल में उत्सर्जित होती हैं जो कि सूर्य से प्राप्त गर्मी को रोकती हैं। यह प्राकृतिक हरितगृह प्रभाव (ग्रीन हाउस प्रभाव) पृथ्वी को जीवन के लिए आवश्यकतानुसार गर्म रखता है। हालाँकि, मानवीय

गतिविधियाँ जैसे – उद्योग, परिवहन और कृषि ने कुछ ही शताब्दियों में इन हरितगृह गैसों (ग्रीन हाउस गैसों) का भारी मात्रा में उत्सर्जन किया है। यह तीव्र वृद्धि अतिरिक्त गर्मी को रोकती है, जिससे तेजी से वैश्विक तापन (ग्लोबल वार्मिंग) होता है यह जलवायु प्रतिरूप को बाधित करता है, जिस पर हजारों वर्षों से पेड़-पौधों, जानवरों और मानव समाजों ने स्वयं को अनुकूलित किया है।

भारत में अनेक क्षेत्रों में तापमान में वृद्धि स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। उदाहरण के लिए, 2025 के आरंभ में देश का औसत तापमान सामान्य से 1 से 3 डिग्री सेल्सियस

चित्र 3.16

अधिक था। जिसके परिणामस्वरूप सर्दी सामान्य से बहुत कम और हल्की थी। इसका असर न केवल कृषि उत्पादन पर, बल्कि अनेक लघु उद्योगों पर भी पड़ता है। यह मात्र एक उदाहरण है जो दिखाता है कि कैसे गर्म होती पृथ्वी हमारे लिए बढ़ती चुनौतियों को सामने लाती है।

जलवायु परिवर्तन और आपदा के कारणों के बीच के संबंधों को समझना हमें इन चुनौतियों के लिए बेहतर तरीके से तैयार होने में सहायता कर सकता है। यह समुदायों में अधिक पर्यावरण-अनुकूल आचरणों और **लचीलेपन** एवं अनुकूलन के निर्माण की आवश्यकता का भी समर्थन करता है। भारत सहित विश्व भर की सरकारें **जलवायु परिवर्तन में न्यूनीकरण** के उपायों को बढ़ावा देने का प्रयास करती हैं जैसे– हरितगृह गैसों के उत्सर्जन में कटौती, वृक्षारोपण, नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देना, ऊर्जा दक्षता में सुधार करना और **सतत** जीवन-शैली को बढ़ावा देना आदि। किंतु ये प्रयास प्राय: आर्थिक विकास और उपभोग की बढ़ती आकांक्षाओं से टकराते हैं।

लचीलापन
आपदाओं का सामना करने या उनसे शीघ्र उबरने की क्षमता।

जलवायु परिवर्तन में न्यूनीकरण
वैश्विक तापमान वृद्धि को धीमा करने और जलवायु परिवर्तन के कारणों को कम करने में सहायता करने वाले उपायों को अपनाना।

सतत
जिसे लंबे समय तक बनाए रखा जा सके।

आगे बढ़ने से पहले...

- भारत की विविधतापूर्ण जलवायु इसकी भौगोलिक स्थिति से प्रभावित होती है, जिसमें पहाड़, पठार और मरुस्थल सम्मिलित हैं।
- मौसम अल्पकालिक होता है। ऋतुएँ प्रतिवर्ष आती हैं तथा जलवायु दशकों तक दीर्घकालिक प्रतिरूप को प्रतिबिंबित करती है।
- अक्षांश, ऊँचाई, समुद्र से निकटता, पवन और स्थलाकृति जैसे कारक जलवायु को निर्धारित करते हैं।
- मानसून कृषि के लिए महत्वपूर्ण है। यह फसल-चक्र और आजीविका को प्रभावित करता है।
- जलवायु सांस्कृतिक परंपराओं, त्योहारों, कृषि और आर्थिक क्रियाकलापों से जुड़ी होती है।
- जलवायु की समझ प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़ और चक्रवातों के लिए तैयार रहने में सहायता करती है।
- जलवायु परिवर्तन मौसम अथवा तापमान को अति की ओर ले जाता है। यह प्राकृतिक और मानवीय जीवन के लिए गंभीर परिणाम ला सकता है।

प्रश्न और क्रियाकलाप

1. जलवायु के कारकों का उनके प्रभावों के साथ निम्नलिखित सूची में मिलान कीजिए—

अ		ब	
(1)	अक्षांश	(क)	भारत में गर्मी के दौरान नमीयुक्त पवन को लाता है।
(2)	ऊँचाई	(ख)	उत्तर एवं दक्षिण में अलग-अलग जलवायु बनाता है।
(3)	समुद्र से निकटता	(ग)	ऊँचे स्थानों को अधिक ठंडा रखता है।
(4)	मानसूनी पवन	(घ)	तापमान को प्रभावित करता है।

2. नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए—
   - क) मौसम और जलवायु में क्या अंतर है?
   - ख) समुद्र के निकट स्थित स्थानों का तापमान समुद्र से दूर स्थित स्थानों की तुलना में कम क्यों होता है?
   - ग) भारतीय जलवायु को प्रभावित करने में मानसूनी पवन की क्या भूमिका है?
   - घ) चेन्नई पूरे वर्ष गर्म क्यों रहता है, जबकि लेह ठंडा रहता है?
   - ङ) छत्तीसगढ़ के मैनपाट की जलवायु अन्य मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षाकृत शीतल क्यों हैं?

3. इस पुस्तक के अंत में दिए गए भारत के मानचित्र को देखिए। लेह, चेन्नई, दिल्ली, पणजी, इन शहरों की जलवायु को पहचानिए।
   - क्या यह स्थान समुद्र के समीप हैं, पर्वत पर हैं या रेगिस्तान में हैं?
   - ये कारक वहाँ की जलवायु को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

4. भारत के मानचित्र पर गर्मी और सर्दी के मानसून चक्र को प्रदर्शित कीजिए।
   - गर्मियों और सर्दियों में पवनें कहाँ चलती हैं, इसके प्रतीक लगाइए।
   - मानसून के दौरान पवनों की दिशा दिखाइए।

5. भारत में कृषि और मौसम से जुड़े त्योहारों (जैसे – बैसाखी, ओणम) को दिखाते हुए एक रंगीन पोस्टर बनाइए। इन त्योहारों की तस्वीरें या रेखाचित्र लगाइए।

6. कल्पना कीजिए कि आप भारत में एक किसान हैं। बरसात के मौसम के लिए आप कैसे तैयारी करेंगे? इस बारे में डायरी में संक्षेप में लिखिए।

7. किसी प्राकृतिक आपदा (जैसे – चक्रवात, बाढ़, भूस्खलन या दावानल) की पहचान कीजिए और एक छोटा निबंध लिखिए, जिसमें इसके कारण और प्रभाव सम्मिलित हों। ऐसे सुझाव दीजिए जो व्यक्ति, समुदाय और सरकार को इस आपदा के प्रभाव को कम करने में सहायक हो सकते हैं।

नवारंभ— नगर एवं राज्य

अध्याय 4

राज्य की रक्षा के लिए राजधानी तथा सीमांत नगरों की दुर्गबंदी आवश्यक है। भूमि ऐसी होनी चाहिए जो न केवल जनसामान्य का पोषण कर सके, अपितु आपदाओं के समय आगंतुकों का भी निर्वाह कर सके।... राज्य-क्षेत्र रमणीय होना चाहिए जिसमें कृषियोग्य क्षेत्र, खनिजयुक्त प्रदेश, काष्ठवन, गजवन तथा गोधन संपन्न चारागाह विद्यमान हों। जल के लिए केवल वर्षा पर निर्भरता नहीं होनी चाहिए अपितु राज्य में नदियाँ, जलाशय तथा अन्य स्रोत भी हों। सड़कें तथा जलमार्ग सुगम व सुव्यवस्थित होने चाहिए। राज्य में उत्पादक अर्थव्यवस्था होनी चाहिए, जो विविध प्रकार की वस्तुओं से परिपूर्ण हो...।

— कौटिल्य (अर्थशास्त्र)

चित्र 4.1 — मगध महाजनपद की राजधानी राजगृह (आधुनिक राजगीर, बिहार) में एक प्रमुख संरचना के अवशेष।

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *भारत में 'द्वितीय नगरीकरण' से क्या अभिप्राय है?*
2. *जनपदों और महाजनपदों का भारत के प्रारंभिक इतिहास में क्या महत्व है?*
3. *इन जनपदों और महाजनपदों ने किस प्रकार की शासन प्रणाली का विकास किया?*

0783CH04

याद करें कि द्वितीय सहस्राब्दी सामान्य संवत पूर्व (सा.सं.पू.) के आरंभिक काल में (अर्थात 2000 सा.सं.पू. के कुछ शताब्दियों पश्चात) भारत की प्रथम नगरीय सभ्यता कही जाने वाली सिंधु अथवा हड़प्पा या सिंधु-सरस्वती सभ्यता का विघटन हो गया था। उसके अनेक नगर परित्यक्त हो गए। कुछ स्थानों पर लोग जीवन-यापन करते रहे, परंतु उन्हें ग्राम्य जीवन-शैली की ओर लौटना पड़ा। ऐसा इस कारण हुआ क्योंकि हड़प्पाकालीन नगरों के समस्त घटक लुप्त हो गए थे, जैसे – भव्य निजी एवं सार्वजनिक भवन, भीड़-भाड़ वाले मार्ग एवं व्यस्त बाजार, विभिन्न शिल्पकारों के समूह (धातुकार, कुम्हार, स्थापत्यकार, बुनकर, हस्तशिल्पी इत्यादि), लेखन-प्रणाली, उन्नत स्वच्छता व्यवस्था, एक व्यवस्थित शासन तंत्र तथा इनके पीछे विद्यमान एक वृहत शासकीय संरचना जिसमें शासक वर्ग नेतृत्व करता था। इस प्रकार, प्रथम सहस्राब्दी सा.सं.पू. तक भारत से नगरीय जीवन लुप्तप्राय रहा। यद्यपि उत्तर भारत के कुछ भागों में कहीं-कहीं नगरीय सभ्यता के अवशेष विद्यमान रहे होंगे।

चित्र 4.2 — गंगा के उपजाऊ मैदानी भाग ने महाजनपदों के फलने-फूलने तथा समृद्ध होने में अहम भूमिका निभाई।

निःसंदेह, भारत के प्राचीन इतिहास में कई महत्वपूर्ण क्षेत्रीय संस्कृतियाँ विद्यमान थीं, जिनका अध्ययन हम यहाँ नहीं कर रहे हैं।

इसके उपरांत, प्रथम सहस्राब्दी सा.सं.पू. में, विशेषत: गंगा के मैदानी भाग, सिंधु घाटी के कुछ क्षेत्रों तथा इसके निकटवर्ती क्षेत्रों में एक नवीन तथा जीवंत नगरीकरण का चरण प्रारंभ हुआ, जिसका क्रमशः संपूर्ण उपमहाद्वीप में विस्तार हुआ। इस नवीन नगरीकरण के साक्ष्य हमें दो प्रमुख स्रोतों से प्राप्त होते हैं —

(1) पुरातात्विक उत्खनन, जिनसे इन प्राचीन नगरों के अस्तित्व की पुष्टि होती है।

(2) प्राचीन साहित्य, जैसे – उत्तर वैदिक, बौद्ध तथा जैन साहित्य जिनमें इन नवीन नगरों का विशेष उल्लेख प्राप्त होता है।

नगरीकरण के इस नए चरण को प्राय: भारत का 'द्वितीय नगरीकरण' कहा जाता है, जो आश्चर्यजनक रूप से आज तक अनवरत चलता आ रहा है। आइए देखें, नगरीकरण का यह चरण कैसे विकसित हुआ?

जनपद एवं महाजनपद

द्वितीय सहस्राब्दी सा.सं.पू. के उत्तरार्ध में उत्तर भारत की विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियाँ धीरे-धीरे स्वयं को पुनर्संगठित करने लगीं। लोग स्वयं को कुलों अथवा वंशों के रूप में संगठित करने लगे, जो संभवतः समान भाषा एवं सांस्कृतिक परंपराओं को साझा करते थे। प्रत्येक कुल या वंश एक नियत भूभाग से जुड़ गया, जिसे 'जनपद' कहा गया जो एक राजा या शासक द्वारा शासित होता था। संस्कृत में जनपद का अर्थ है— "जहाँ 'जन' ने अपने पद (पग या चरण) रखे हों", अर्थात जहाँ लोग निवास करने लगे।

जैसे-जैसे व्यापारिक मार्गों तथा वाणिज्यिक तंत्रों का विस्तार हुआ और वे विभिन्न जनपदों को आपस में जोड़ने लगे, वैसे-वैसे ये जनपद भी विकसित होने लगे। 8वीं या 7वीं शताब्दी सा.सं.पू. तक कुछ प्रारंभिक जनपद मिलकर विशाल राजकीय इकाइयों में परिवर्तित हो गए, जिन्हें 'महाजनपद' कहा गया। प्राचीन ग्रंथों में इन महाजनपदों की अलग-अलग सूचियाँ मिलती हैं परंतु एक प्रमुख प्रचलित सूची के अनुसार 16 महाजनपदों के नाम प्राप्त होते हैं। ये महाजनपद उत्तर-पश्चिम में गांधार से लेकर पूर्व में अंग तक तथा मध्य भारत में अश्मक (गोदावरी नदी के निकट) तक विस्तृत थे (मानचित्र देखें)। संभवतः इनके अतिरिक्त अन्य महाजनपद एवं छोटे-छोटे स्वतंत्र जनपद भी रहे होंगे।

आइए विचार करें

ध्यान दीजिए कि अधिकांश महाजनपद गंगा के मैदानी भाग में केंद्रित थे। इसके अनेक कारण हो सकते हैं, जैसे – गंगा के उर्वर मैदान जिसके कारण कृषि कार्यों का विकास संभव हुआ, समीपवर्ती पहाड़ियों में लौह की उपलब्धता (जिसका आगे 'लौह' शीर्षक में वर्णन है) और नवीन वाणिज्यिक पथों का विकास एवं विस्तार।

आइए पता लगाएँ

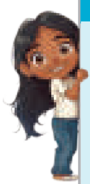

- इन नवीन राजकीय इकाइयों में सर्वाधिक शक्तिशाली महाजनपद थे— मगध, कोसल, वत्स तथा अवंति। मानचित्र को देखकर क्या आप इनकी राजधानियों की पहचान कर सकते हैं? साथ ही, इनमें से कितने नगरों की पहचान वर्तमान भारतीय नगरों से की जा सकती है?
- इस मानचित्र की तुलना कक्षा 6 के अध्याय 'भारत अर्थात इंडिया' में महाभारत में उल्लिखित प्रदेशों के मानचित्र (चित्र 5.4) से कीजिए और उन नामों को सूचीबद्ध कीजिए जो दोनों में समान हैं। आपके अनुसार यह समानता क्या संकेत करती है?

परिखा (खाई) किले या किलेबंद शहर के चारों ओर एक गहरा तथा चौड़ा गड्ढा जिसमें पानी भरा होता था।

मानचित्र (चित्र 4.3) में महाजनपदों की राजधानियों को दर्शाया गया है। इनमें से अधिकांश नगर विशाल तथा सुदृढ़ प्राचीरों (किलों) से युक्त थे, जिनके बाहर सुरक्षा हेतु एक गहरी **परिखा (खाई)** बनाई जाती थी। प्रायः दुर्ग की प्राचीरों के प्रवेश द्वार जान-बूझकर सँकरे बनाए जाते थे जिससे नगर में प्रवेश और निकास करने वाले जनों एवं वस्तुओं का प्रहरियों द्वारा नियंत्रण किया जा सके। विचारणीय तथ्य यह है कि प्राचीन राजधानियाँ आज भी नगरों के रूप में विद्यमान हैं। ये 'आधुनिक' नगर वस्तुतः 2500 वर्ष प्राचीन हैं!

प्रारंभिक लोकतांत्रिक परंपराएँ

प्रत्येक जनपद में एक सभा या परिषद होती थी जिसे 'सभा' या 'समिति' कहा जाता था। इस परिषद में कुल से संबंधित विषयों पर विचार-विमर्श होता था। (स्मरण कीजिए, 'भारत की सांस्कृतिक जड़ें' नामक अध्याय में बताया गया है कि ये शब्द 'सभा' एवं 'समिति' सर्वप्रथम वेदों में मिलते हैं, जो भारत के प्राचीनतम ग्रंथ हैं।) संभावना है कि इन सभाओं के अधिकांश सदस्य कुल के वरिष्ठजन होते थे। राजा से यह अपेक्षा नहीं की जाती थी कि वह स्वेच्छाचारी शासन करे। एक सदाचारी राजा वह माना जाता था जो मंत्रियों, प्रशासकों तथा सभा-समिति से परामर्श लेकर निर्णय ले। कुछ ग्रंथों के अनुसार

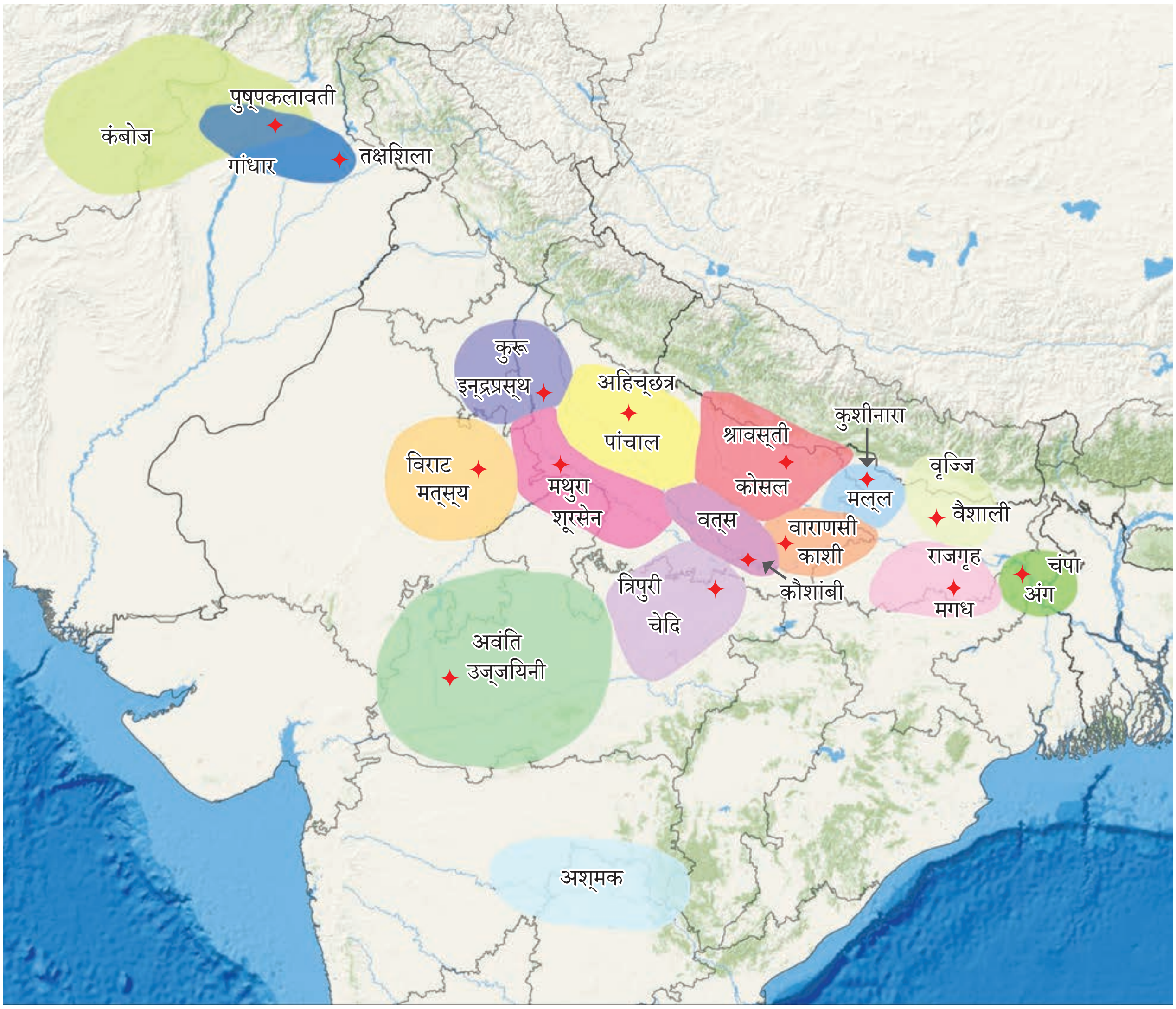

चित्र 4.3 — 16 महाजनपदों का मानचित्र। ध्यान रखें कि इनकी सीमाएँ अनुमानित हैं।

यदि कोई राजा अयोग्य होता है, तो सभा द्वारा उसे पदच्युत भी किया जा सकता था। यद्यपि ऐसे उल्लेख महत्वपूर्ण हैं, परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि यह कोई विधिसम्मत परंपरा थी, क्योंकि हमारे पास उस कालखंड के पूर्ण साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं।

अपनी राजनीतिक प्रणाली के अंतर्गत महाजनपदों ने जनपदों के मूल सिद्धांतों का विस्तार एवं परिष्कार किया। कुछ महाजनपदों में राजतंत्रात्मक शासन प्रणाली थी अर्थात राजा सर्वोच्च अधिकारयुक्त होता था जिसे मंत्रियों तथा वरिष्ठजनों की सभा या समिति का समर्थन प्राप्त होता था। राजा का पद सामान्यतः वंशानुगत होता था, अर्थात वर्तमान राजा साधारणत: पूर्ववर्ती राजा का पुत्र होता था। राजा के प्रमुख उत्तरदायित्व होते थे— कर (राजस्व) संग्रह करना, शासन व विधि व्यवस्था बनाए रखना, राजधानी में सुदृढ़ प्राचीरें (दुर्ग) और परिखाएँ बनवाना तथा अपने राज्य की रक्षा हेतु सैन्य-बल का संचालन

करना या परिस्थिति अनुसार समीपवर्ती राज्यों से युद्ध करना। मगध (जो वर्तमान बिहार में स्थित था), कोसल (वर्तमान उत्तर प्रदेश का भाग) तथा अवंति (वर्तमान मध्य प्रदेश का भाग), ये सब उस काल के शक्तिशाली महाजनपद थे।

हालाँकि, दो महाजनपदों, वज्जि (वृज्जि) एवं उसके समीपवर्ती राज्य मल्ल की शासन पद्धति भिन्न थी। इन महाजनपदों में *सभा* अथवा समिति को अधिक शक्तियाँ प्राप्त थीं तथा यहाँ सभी महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श एवं आवश्यकतानुसार मतदान द्वारा निर्णय लिए जाते थे। आश्चर्य की बात यह थी कि इन महाजनपदों में राजा का चयन भी सभा अथवा समिति द्वारा किया जाता था। इसका तात्पर्य यह है कि ये महाजनपद राजतंत्र नहीं, बल्कि गण अथवा संघ के रूप में कार्य करते थे। इनकी शासन-प्रणाली को गणतांत्रिक प्रणाली कहा जा सकता है, क्योंकि इनमें सभा के सदस्य ही राजा का चयन करते थे तथा प्रमुख निर्णयों का निर्धारण करते थे। वास्तव में विद्वानों ने इन महाजनपदों (वज्जि और मल्ल) को प्राय: 'प्रारंभिक गणराज्य' कहा है, क्योंकि ये विश्व की सर्वप्रथम गणतांत्रिक प्रणालियों में से एक थे।

चित्र 4.4 — वत्स महाजनपद की राजधानी कौशांबी में एक भवन समूह के अवशेष

कुछ अन्य नवीन प्रयोग

जनपदों तथा महाजनपदों का यह युग गंभीर परिवर्तनों का काल था, जो वर्तमान समय तक भारतीय सभ्यता को प्रभावित करता रहा है। कक्षा 6 के 'भारत की सांस्कृतिक जड़ें' नामक अध्याय में हमने देखा कि इस काल में उत्तर वैदिक, बौद्ध, जैन इत्यादि अनेक नवीन विचारधाराओं का उदय हुआ तथा उनसे संबंधित अनेक ग्रंथों की रचना भी हुई। इन विचारों को विद्वानों, भिक्षुओं और भिक्षुणियों के द्वारा संपूर्ण भारतवर्ष में यात्रा करते हुए अथवा तीर्थ यात्राओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया गया। इस समय भारतीय कला का भी नवीनीकरण हुआ, जो आगे चल कर साम्राज्य काल में पुष्पित-पल्लवित हुआ।

नगरीकरण तकनीकी के बिना संभव नहीं है। हमने पूर्व में देखा कि हड़प्पा सभ्यता के लोग ताम्र और कांस्य की धातु कला में दक्ष थे। अब इस द्वितीय नगरीकरण की प्रक्रिया में लौह धातुकर्म की तकनीक का प्रयोग एक महत्वपूर्ण परिवर्तन था। भारत के अनेक क्षेत्रों में द्वितीय सहस्राब्दी सा.सं.पू. के प्रारंभ में ही लौह निष्कर्षण एवं उसे आकार देने की विधियाँ विकसित हो चुकी थीं, परंतु दैनिक-जीवन में लोहे का उपयोग कुछ शताब्दियों बाद व्यापक हुआ। द्वितीय सहस्राब्दी सा.सं.पू. के अंत तक लोहे के उपकरण कृषि में प्रयुक्त होने लगे, जिससे कृषि का विस्तार हुआ। साथ ही, लोहे के बने हथियार, जैसे – तलवार, भाले, तीर, ढाल इत्यादि कांस्य की तुलना में अधिक हल्के, तीव्र और प्रभावशाली सिद्ध हुए। इस काल में युद्धों के भी कुछ प्रमाण मिलते हैं, जो संभवत: विभिन्न महाजनपदों के मध्य हुए होंगे, यद्यपि उनकी बारंबारता या भीषणता स्पष्ट नहीं है। इन युद्धों और कभी-कभी होने वाले गठबंधनों के कारण नए राज्य और साम्राज्य अस्तित्व में आए, जिनकी चर्चा हम आगे करेंगे।

भारत में प्रथम बार सिक्कों का प्रयोग एक अन्य नवाचार था। व्यापार के विस्तार ने मुद्रा (सिक्का) की आवश्यकता को जन्म दिया। शीघ्र ही ये सिक्के भारत के विभिन्न भागों, यहाँ तक कि विदेशों में भी विनिमय हेतु प्रयुक्त होने लगे। भारत के प्रारंभिक सिक्के चाँदी के बने होते थे, जो एक नरम धातु है। इसमें प्रतीकों या चिह्नों को 'आहत' कर अंकित किया जाता था, अतः इन्हें 'आहत सिक्के' भी कहा जाता है। कालांतर में तांबा, सोना तथा अन्य धातुओं के भी सिक्के बनने लगे। सामान्यतः प्रत्येक महाजनपद अपनी स्वतंत्र मुद्रा जारी करता था, परंतु व्यापार में समीपवर्ती राज्यों की मुद्राएँ भी प्रचलित थीं तथा परस्पर विनिमय में प्रयुक्त होती थीं।

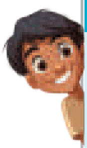

आइए पता लगाएँ

निम्नलिखित तालिका में प्रत्येक वर्ग में 'हाँ' (सही का चिह्न) या 'नहीं' (काटने का चिह्न) भरें, जो भारतीय सभ्यता के दोनों चरणों की एक रोचक तुलना करती है।

	प्रथम नगरीकरण	द्वितीय नगरीकरण
गंगा का मैदान		
बौद्ध मठ		
साहित्य		
व्यापार		
युद्धकला		
ताम्र/कांस्य		
लोहा		

वर्ण-जाति व्यवस्था

हमने पहले देखा कि कैसे सभ्यता के उदय के साथ-साथ मानव समाज और अधिक जटिल होता गया। जब कभी भी ऐसा होता है, समाज स्वयं को विभिन्न समूहों में संगठित कर लेता है, जैसे – वर्ग, व्यवसाय या अन्य किसी आधार पर। उदाहरण के लिए शासन, प्रशासन, धर्म, शिक्षा, व्यापार, नगर-नियोजन, कृषि, शिल्प, कला इत्यादि से संबंधित अनेक प्रकार के कार्य के लिए अलग-अलग समूह हो सकते थे।

चित्र 4.5 — साँची स्तूप का एक पैनल जिसमें लौह धातु कार्यशाला दर्शाई गई है। इसमें श्रमिकों को जलावन की लकड़ी एवं जल लेकर आते, आग जलाते और लोहा पीटते हुए दिखाया गया है।

चित्र 4.6 — उत्तर भारत के विभिन्न प्राचीन नगरों से प्राप्त कुछ आहत सिक्के

आइए पता लगाएँ

→ एक विकसित समाज अपने आप को विभिन्न समूहों में क्यों विभाजित करता है? ऐसा क्यों होता हैं, इसके संभावित कारणों पर विचार करें।

→ आप प्रथम सहस्राब्दी सा.सं.पू. के एक विकसित समाज में ऐसे और कौन-कौन से व्यवसायों की कल्पना कर सकते हैं?

एक आदर्श समाज में ये सभी समूह एक-दूसरे के पूरक होते हैं तथा समरसता से कार्य करते हैं। परंतु अधिकांशतः ये विभाजन असमानताओं को भी जन्म देते हैं, जैसे – कुछ समूह दूसरों की तुलना में अधिक संपत्ति, शक्ति या प्रभाव प्राप्त कर लेते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो, 'समानता' एक ऐसा आदर्श है जिसकी प्रायः मानव ने कल्पना की है, परंतु शायद ही कोई समाज इसे पूरी तरह प्राप्त कर सका हो।

भारतीय समाज दो प्रकार की व्यवस्थाओं में संगठित था। पहला वर्ग था 'जाति'। जाति एक ऐसा समुदाय या समूह था जिसके सदस्य किसी विशेष पेशे या जीविका से जुड़े होते थे, जैसे – कृषि, धातुकर्म, वाणिज्य या किसी हस्तकला में दक्षता। यह कौशल पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता था। प्राय: एक जाति के भीतर और भी उप-जातियाँ होती थीं जिनके अपने रीति-रिवाज, जैसे – विवाह के नियम, धार्मिक अनुष्ठान या भोजन की परंपराएँ अलग-अलग होती थीं।

दूसरी श्रेणी थी 'वर्ण' जो वैदिक ग्रंथों से उद्भूत एक अवधारणा थी। वर्ण चार प्रकार के माने गए — ब्राह्मण, जो ज्ञान को सुरक्षित रखने, उसका प्रचार-प्रसार करने और यज्ञ आदि धार्मिक कृत्य करने में लगे रहते थे; क्षत्रिय, जिनका कार्य समाज और देश की रक्षा करना और आवश्यकता पड़ने पर युद्ध करना था; वैश्य, जिनका कार्य समाज की समृद्धि बढ़ाना था, जैसे – व्यापार, व्यवसाय या कृषि; और शूद्र, जो शिल्पकला, निर्माण, सेवा या अन्य कार्यों में संलग्न रहते थे।

इसे अनदेखा न करें

आपने अंग्रेजी शब्द 'कास्ट' सुना होगा। यह शब्द पुर्तगाली भाषा के शब्द 'कास्टा' से आया है। 16वीं शताब्दी में जब पुर्तगाली यात्री भारत आए तो उन्होंने भारत की सामाजिक संरचना को समझने के लिए इस शब्द का प्रयोग किया। कुछ विद्वान 'कास्ट' का प्रयोग वर्ण के संदर्भ में करते हैं। जबकि अधिकांश इसे जातियों के लिए उपयुक्त मानते हैं। कुछ दूसरे विद्वान 'कास्ट' शब्द का प्रयोग संपूर्ण वर्ण-जाति व्यवस्था को इंगित करने के लिए करते हैं।

ग्रंथों और अभिलेखों से मिले ऐतिहासिक प्रमाणों से यह ज्ञात होता है कि प्रारंभिक काल में व्यक्ति और समुदाय अपनी परिस्थितियों के अनुसार अपने व्यवसाय को बदल लेते थे। उदाहरण के लिए, लंबे समय तक पड़े अकाल या प्राकृतिक आपदा के कारण किसी कृषक समुदाय को अपने क्षेत्र से नगर की ओर पलायन करना पड़ता था और उन्हें अन्य व्यवसाय अपनाने पड़ते थे। कुछ ब्राह्मण व्यापार या यहाँ तक कि सैनिक कार्यों में भी प्रवृत्त हो जाते थे। यह जटिल प्रणाली भारतीय समाज की रचना में सहायक रही, जो समाज की गतिविधियों विशेषतः आर्थिक गतिविधियों को संगठित करने में उपयोगी रही और इसने समाज को कुछ हद तक स्थिरता प्रदान की। किंतु समय के साथ यह प्रणाली कठोर होती चली गई, जिससे निम्न जातियों या उन समुदायों के प्रति असमानता और भेदभाव बढ़ा, जो वर्ण-जाति व्यवस्था से बाहर माने गए। इस प्रक्रिया का अध्ययन आगे की कक्षा में किया जाएगा।

वर्ण-जाति व्यवस्था ने भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव डाला है। पीढ़ियों से अनेक विद्वानों ने इसके असंख्य पहलुओं का अध्ययन किया है। यह आम सहमति है कि प्राचीन काल में यह व्यवस्था अपेक्षाकृत भिन्न थी (विशेष रूप से अधिक लचीली थी) लेकिन समय के साथ विशेषत: ब्रिटिश शासनकाल में यह अत्यधिक कठोर हो गई। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वर्ण-जाति व्यवस्था भारतीय समाज में कार्यरत एक प्रमुख व्यवस्था रही है, परंतु यह एकमात्र सामाजिक व्यवस्था नहीं रही है। अन्य अनेक व्यवस्थाएँ भी अस्तित्व में थीं, जिनका अध्ययन हम आगे के अध्यायों में विशेषकर 'हमारी सांस्कृतिक धरोहर और ज्ञान परंपराएँ' में करेंगे।

आइए विचार करें

समाज में असमानताएँ अनेक रूपों में पाई जाती हैं। क्या आपने कभी ऐसी कोई घटना देखी या अनुभव की है जब आपको या आपके किसी परिचित को दूसरों से भिन्न समझा गया हो? क्या आप मानते हैं कि समाज में समानता आवश्यक है? यदि हाँ, तो क्यों? क्या आपने किसी ऐसे व्यक्ति या किसी ऐसी पहल को देखा है, जिनके द्वारा समाज में असमानता को कम करने का प्रयास किया गया हो?

भारत के अन्य भागों में विकास

प्रथम सहस्राब्दी सा.सं.पू. में व्यापार, तीर्थयात्रा तथा सैन्य अभियान आदि के उद्देश्य से महत्वपूर्ण संचार मार्ग विकसित हुए। इनमें दो मार्ग उत्तरापथ तथा दक्षिणापथ विशेष रूप से प्रसिद्ध रहे, जिनका उल्लेख साहित्य में भी मिलता है। प्रथम मार्ग उत्तर-पश्चिम

क्षेत्रों से गंगा के मैदानों और वहाँ से पूर्वोत्तर भारत को जोड़ता था। दूसरा मार्ग, कौशांबी (प्रयागराज के समीप), जो उस समय महाजनपदों में से एक की राजधानी थी, वहाँ से प्रारंभ होकर विंध्य पर्वत श्रृंखला को पार करते हुए दक्षिण भारत की ओर जाता था। जब हम भारत में साम्राज्य-निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे, तब इन मार्गों पर और विस्तार से चर्चा करेंगे।

इसके अतिरिक्त अनेक समानांतर मार्ग भी भारत के अन्य भागों को जोड़ते थे, विशेषकर पश्चिमी और पूर्वी समुद्री तटों के महत्वपूर्ण बंदरगाहों को, जो व्यापार के सक्रिय केंद्र थे। पूर्वी क्षेत्र में कई प्रमुख नगर उभरे, जैसे – शिशुपालगढ़ (वर्तमान भुवनेश्वर, ओडिशा), जो कलिंग क्षेत्र की राजधानी थी। यह नगर एक सुनियोजित वर्गाकार आधार-रचना पर बना था, जिसमें सुदृढ़ दुर्ग और चौड़ी सड़कें थीं।

भारतीय उपमहाद्वीप के दक्षिणी क्षेत्रों में नगर-निर्माण की प्रक्रिया 400 सा.सं.पू. के आस-पास हुई। यद्यपि नवीनतम पुरातात्विक उत्खननों में यह संकेत मिलते हैं कि

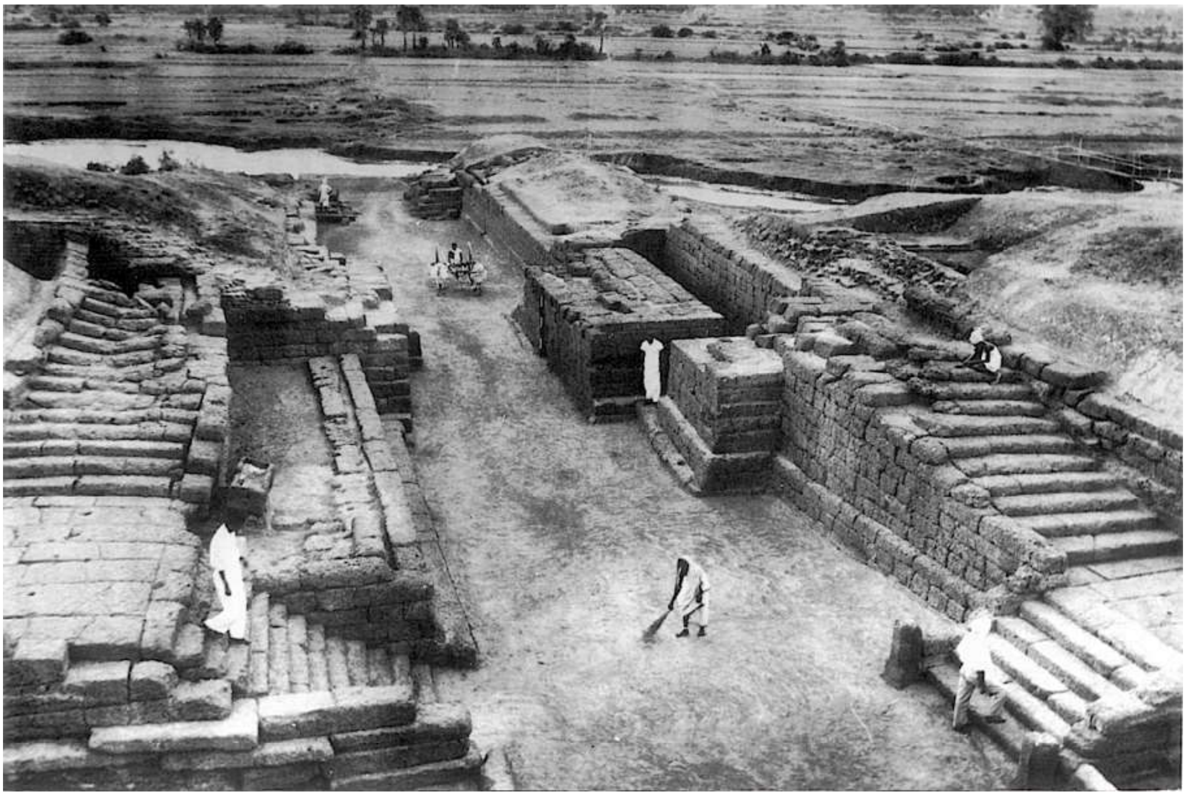

चित्र 4.7 — शिशुपालगढ़ (आधुनिक भुवनेश्वर, ओडिशा का एक उपनगर, 1948 में प्रथम बार उत्खनित) नगर में प्रवेश करने वाले द्वारों में से एक, जो दुर्ग की प्राचीरों के मध्य स्थित है। द्वार के बाहर जल से भरी हुई परिखा (खाई) देखी जा सकती है। ध्यान दें कि द्वार सोच-समझकर संकरा बनाया गया था, जिससे लोगों और सामान की आवाजाही पर नियंत्रण रखा जा सके।

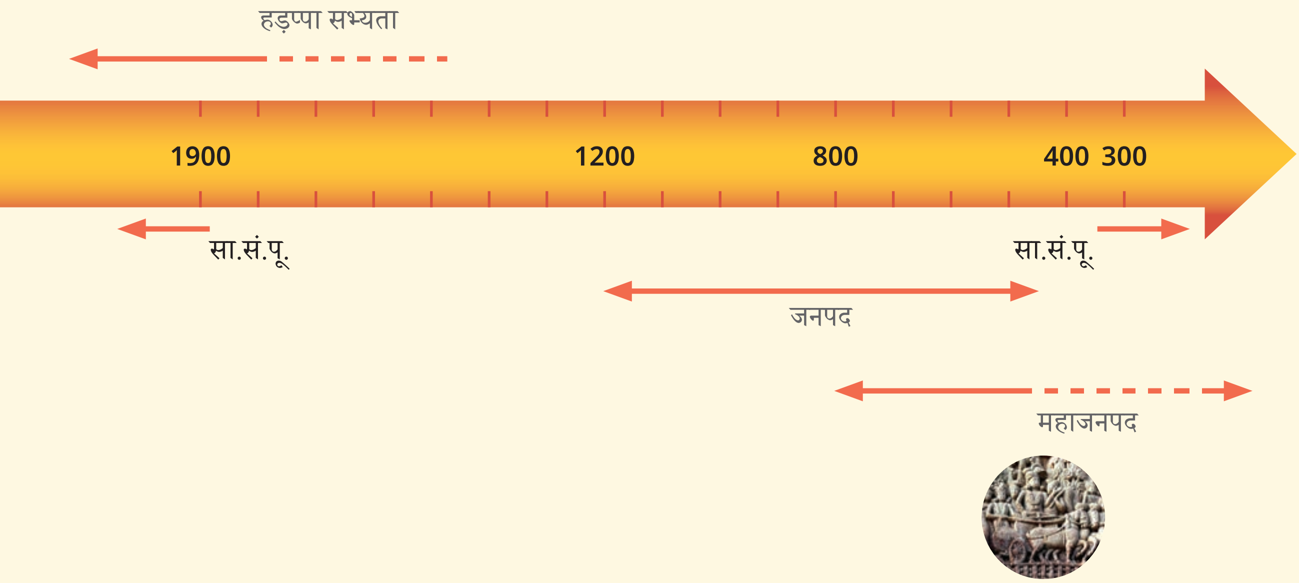

चित्र 4.8 — 1900 से 300 सा.सं.पू. तक की समय-रेखा

चित्र 4.9 — इरोड के निकट कोडुमनाल, तमिलनाडु में शंख तथा रत्न उद्योग

व्यापारिक गतिविधियाँ इस काल से पूर्व भी विद्यमान थीं। इसी कालखंड में दक्षिण भारत में तीन प्रमुख राज्यों— चोल, चेर और पांड्य का उदय हुआ।

पुरातात्विक साक्ष्यों के अतिरिक्त प्राचीनतम तमिल साहित्य में इन राज्यों तथा उनके राजाओं का उल्लेख मिलता है।

दक्षिणी क्षेत्र बहुमूल्य तथा अर्ध-बहुमूल्य रत्नों, स्वर्ण तथा सुगंधित मसालों जैसे संसाधनों से समृद्ध थे। अतः उन्होंने न केवल संपूर्ण भारत बल्कि विदेशी राज्यों व साम्राज्यों के साथ भी लाभप्रद व्यापार किया।

300 या 200 सा.सं.पू. के लगभग उत्तर-पूर्वी प्रदेश समेत संपूर्ण उपमहाद्वीप एक परस्पर जुड़ा हुआ जीवंत भूभाग बन चुका था। वस्तुएँ और संस्कृति एक से दूसरे क्षेत्र में तथा कई बार भारत से बाहर मध्य एशिया एवं दक्षिण-पूर्व एशिया तक भी पहुँचीं।

इसी समय महाजनपदों का अस्तित्व समाप्त हो गया और उनके स्थान पर ऐसे नवीन परिवर्तन आए, जिन्होंने भारत को पुनः आकार देना प्रारंभ किया।

आगे बढ़ने से पहले...

→ दूसरी सहस्राब्दी सा.सं.पू. के अंत से उत्तर और मध्य भारत के कुछ भागों में जनपदों का उदय हुआ। ये छोटे राज्य थे जिनका शासक एक राजा होता था, जो वरिष्ठजनों की परिषद से परामर्श लेकर निर्णय करता था।

→ प्रथम सहस्राब्दी सा.सं.पू. में 16 महाजनपद प्रथम संगठित राज्य के रूप में स्थापित हुए। इसी कालखंड में भारत में द्वितीय नगरीकरण प्रारंभ हुआ, जो गंगा क्षेत्र से दक्षिण भारत तक सभी दिशाओं में विस्तृत हो गया। लगभग 300 सा.सं.पू. तक महाजनपदों का अस्तित्व समाप्त हो गया।

→ इसी अवधि में उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम तथा संपूर्ण उपमहाद्वीप को जोड़ने वाला एक विशाल सड़क मार्ग बना। इन मार्गों के माध्यम से लोगों, वस्तुओं, विचारों एवं शिक्षाओं का आदान-प्रदान हुआ।

प्रश्न और क्रियाकलाप

1. अध्याय के आरंभ में दिए गए उद्धरण पर विचार करें और समूह में चर्चा करें। अपने निरीक्षणों तथा निष्कर्षों की तुलना करें कि कौटिल्य ने एक राज्य के लिए क्या अनुशंसा की थी? क्या यह आज की परिस्थिति से भिन्न है?
2. पाठ के अनुसार प्रारंभिक वैदिक समाज में शासकों का चयन कैसे किया जाता था?
3. कल्पना कीजिए कि आप प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन करने वाले एक इतिहासकार हैं। महाजनपदों के विषय में अधिक जानकारी हेतु आप कौन-कौन से स्रोतों (पुरातात्विक, साहित्यिक इत्यादि) का उपयोग करेंगे? प्रत्येक स्रोत से आपको क्या जानकारी प्राप्त हो सकती है, वर्णन करें।
4. प्रथम सहस्राब्दी सा.सं.पू. में नगरीकरण हेतु लौह धातु-विज्ञान का विकास इतना महत्वपूर्ण क्यों था? उत्तर देने हेतु आप पाठ में दिए गए तथ्यों के साथ-साथ अपनी जानकारी या कल्पना का भी उपयोग कर सकते हैं।
5. महाजनपद काल में छत्तीसगढ़ की राजनितिक स्थिति क्या रही होगी? अपने शिक्षक के सहयोग से चर्चा कीजिए।

1.छत्तीसगढ़ में महाजनपद काल के रीवा नगर (तहसील- आरंग, जिला- रायपुर, छत्तीसगढ़) के पुरावशेष

गढ़ रीवा उत्खनन स्थल का हवाई दृश्य

2.लौह उपकरण निर्माण के साक्ष्य (ग्राम -रीवा, तहसील -आरंग जिला-रायपुर, छत्तीसगढ़)

लौह स्लेग

लौह उपकरण

3.मनका उद्योग के साक्ष्य (ग्राम -रीवा, तहसील-आरंग,जिला-रायपुर, छत्तीसगढ़)

कांच के मनके

टेराकोटा के मनके

पत्थर के मनके

अध्याय 5

साम्राज्यों का उदय

जनविहीन देश नहीं हो सकता और देशविहीन राज्य नहीं होता।

— कौटिल्य (अर्थशास्त्र)

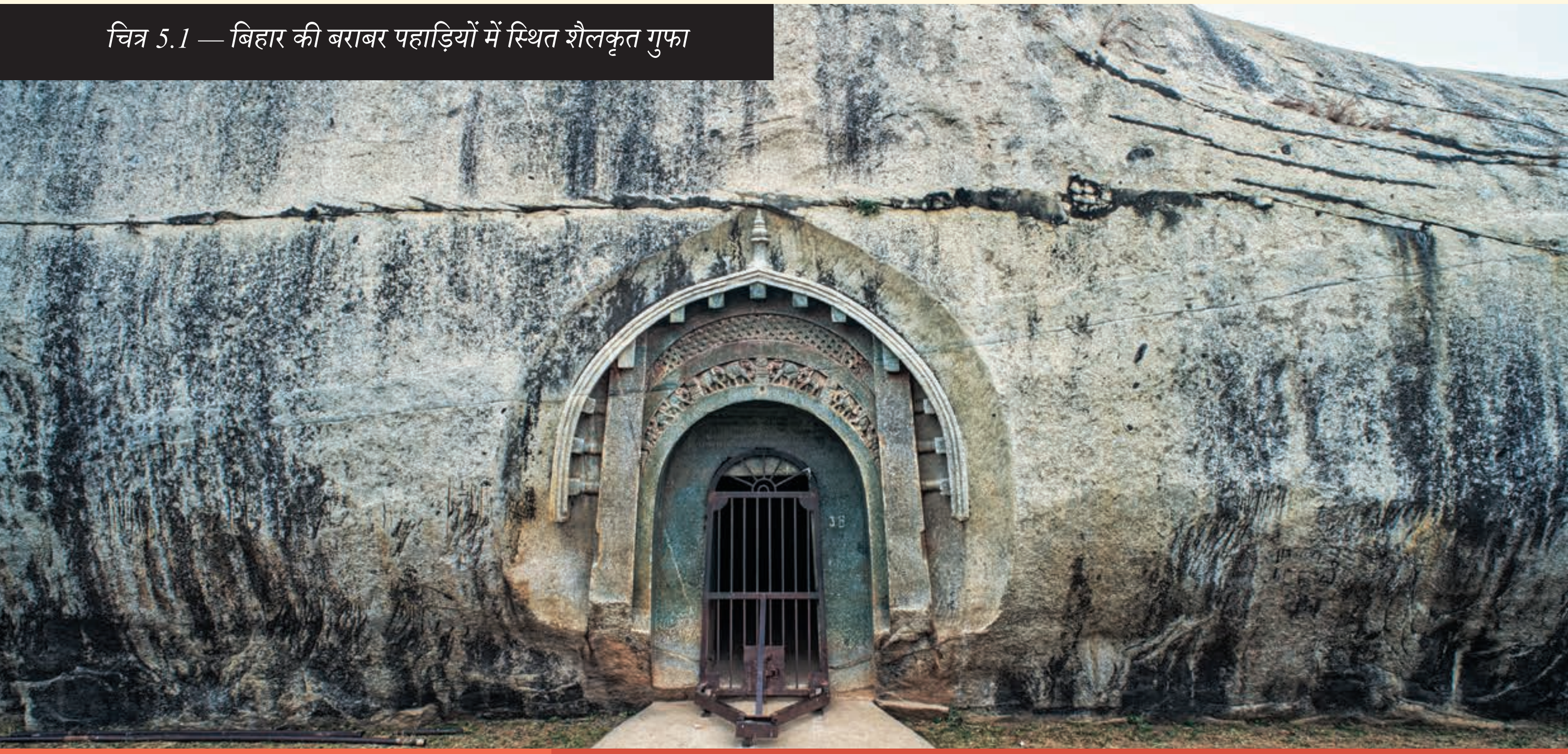

चित्र 5.1 — बिहार की बराबर पहाड़ियों में स्थित शैलकृत गुफा

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *साम्राज्य क्या होता है?*
2. *साम्राज्यों का उदय कैसे हुआ और उन्होंने भारतीय सभ्यता को कैसे आकार दिया?*
3. *राज्य से साम्राज्य बनने में कौन-कौन से तत्व सहायक हुए?*
4. *छठी शताब्दी सा.सं.पू. से दूसरी शताब्दी सा.सं.पू. तक का जीवन कैसा था?*

0783CH05

चित्र 5.2 — पाटलिपुत्र का एक कलात्मक चित्रण, जो वर्तमान पटना के समीप स्थित था।

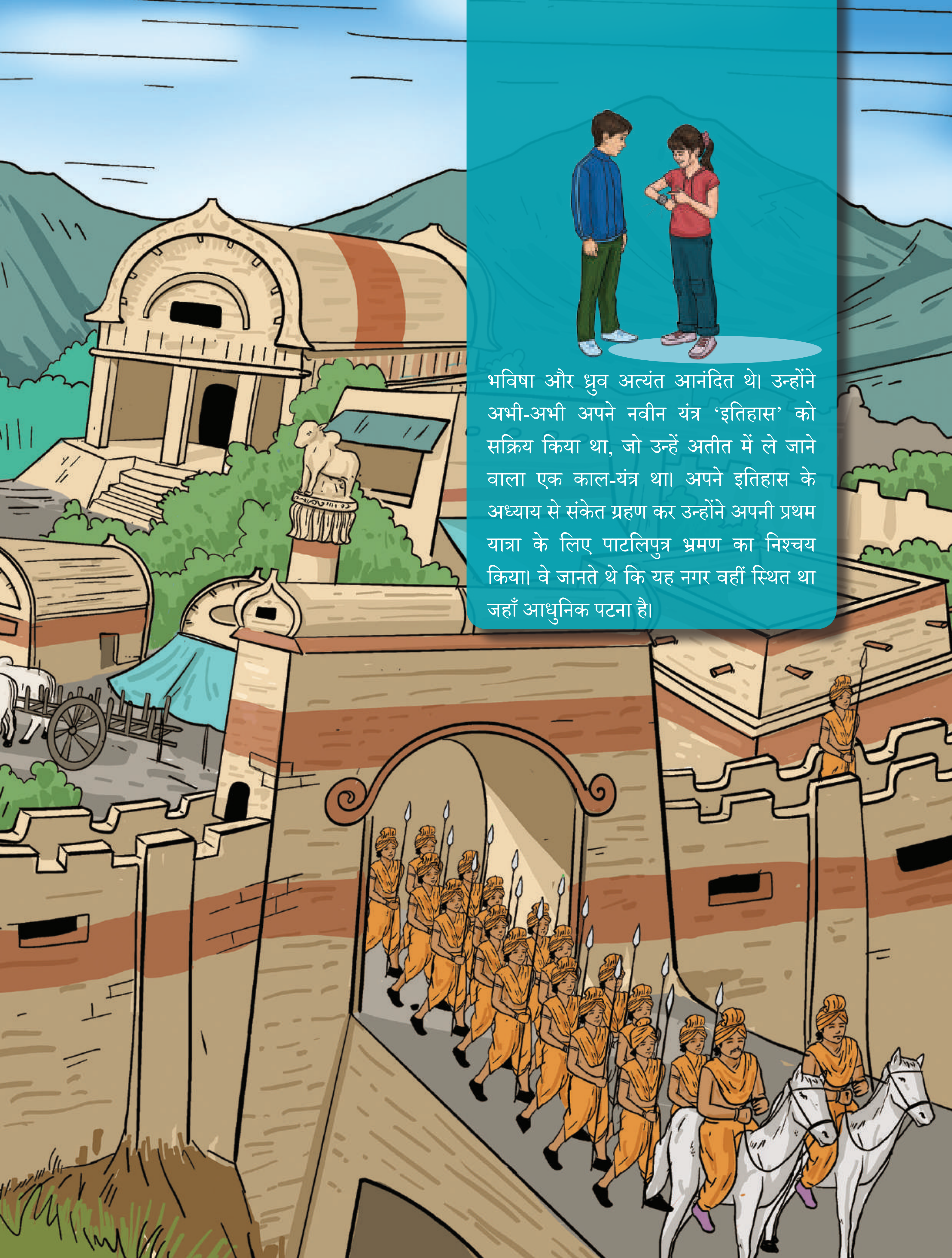

भविषा और ध्रुव अत्यंत आनंदित थे। उन्होंने अभी-अभी अपने नवीन यंत्र 'इतिहास' को सक्रिय किया था, जो उन्हें अतीत में ले जाने वाला एक काल-यंत्र था। अपने इतिहास के अध्याय से संकेत ग्रहण कर उन्होंने अपनी प्रथम यात्रा के लिए पाटलिपुत्र भ्रमण का निश्चय किया। वे जानते थे कि यह नगर वहीं स्थित था जहाँ आधुनिक पटना है।

महानगर की सीमा पर उतरते ही कुछ विस्मय से उन्होंने एक बालिका को एक घुड़सवार से वार्तालाप करते देखा, जो विचित्र वस्त्रों में था। घुड़सवार के चले जाने के बाद बालिका इनकी ओर मुड़ी और इन्होंने उसका नाम पूछा।

"मेरा नाम इरा है, मैं कान्हादास की पुत्री हूँ, जो एक लोहार हैं। पाटलिपुत्र में आपका स्वागत है।"

"आपसे मिलकर प्रसन्नता हुई। इरा, हमारे नाम भविषा और ध्रुव हैं।"

"धीरे बोलो! क्या तुम उन सैनिकों को देख रहे हो, जो आगे बढ़ रहे हैं? वे पड़ोसी राज्य के विरुद्ध युद्ध लड़ने जा रहे हैं, जो हमें निरंतर संकट में डालता है। हमारे राजा जब तक संभव हो, युद्ध से बचते हैं, परंतु आवश्यकता होने पर अपनी प्रजा की रक्षा भी करते हैं। जिन तलवारों को ये सैनिक ले जा रहे हैं, उनमें से कई तलवारों को गढ़ने में मेरे पिता ने सहायता की है और मेरे काका उन सैनिकों में से एक हैं। मैं तो उन्हें विदा करने आई थी... मुझे नहीं ज्ञात कि वे कब लौटेंगे?"

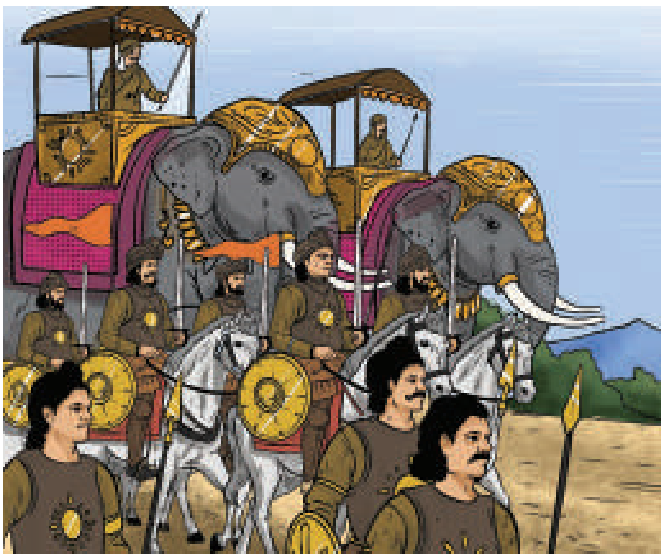

चित्र 5.3

(वे तीनों उस सेतु की ओर देखते हैं, जिसमें से होकर सैनिकों का एक विशाल समूह नगर से बाहर जा रहा है। कुछ सैनिक अश्वों पर सवार हैं और सेना के प्रमुख हाथियों पर विराजमान हैं। इसके पश्चात, तीनों बच्चे उसी सेतु से नगर में प्रवेश करते हैं।)

"यह किस प्रकार का सेतु है"? भविषा ने पूछा, "क्या इसके नीचे नदी है?"

"यह सेतु हमारी सुरक्षा करता है", इरा ने समझाया। "जब भी नगर पर आक्रमण का संकट होता है, तब इसे ऊपर उठा लिया जाता है। यह नदी नहीं है, बल्कि एक गहरी खाई है। जब यह चलसेतु (ड्रॉब्रिज) उठा लिया जाता है, तब दुर्ग तक पहुँचना अत्यंत कठिन हो जाता है। क्या तुम दूर स्थित पर्वतों और वनों को देख रहे हो? ये हमें इमारती लकड़ियाँ औषधियाँ और बहुमूल्य संसाधन प्रदान करते हैं। सेना के लिए हाथी भी वहीं से पकड़े जाते हैं और प्रशिक्षित किए जाते हैं।"

"उस पर्वत में वह खुला हुआ भाग क्या है?" ध्रुव ने पूछा।

"वह एक गुफा है। हमारे राजा उसे भिक्षुओं के लिए बनवा रहे हैं। मुझे आशा है कि जब इसका निर्माण कार्य पूर्ण हो जाएगा, हम वहाँ जा सकेंगे!"

(वे पाटलिपुत्र में घूमते हुए उसकी भव्यता निहारते हैं— ऊँची काष्ठ-प्राचीरें, जिन पर प्रहरी मीनारें, भव्य राजमहल, भवन और जीवंत सड़कें हैं। इरा एक चहल-पहल वाले बाजार की ओर संकेत करती है जहाँ दूर देशों से व्यापारी आए हुए हैं।)

"प्रस्थान से पूर्व आपको हमारे मुख्य बाजार का भ्रमण अवश्य करना चाहिए! हमारे महाराज समस्त दिशाओं से आने वाले यात्रियों का स्वागत करते हैं। अतः यहाँ आपको चीन के रेशमी वस्त्र, दक्षिण भारत से आए मसाले एवं बहुमूल्य रत्न तथा विभिन्न क्षेत्रों के उत्तम वस्त्र, सब कुछ मिलेगा। पाटलिपुत्र में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है।"

"वे लोग वहाँ क्या कर रहे हैं"? ध्रुव ने पूछा।

"ओह, वे सड़कों पर कला दिखाने वाले नट (ऐक्रोबेट) हैं। ये लोग मानव-स्तंभ बनाते हैं, गीत गाते हैं, नृत्य करते हैं या लघु नाटक प्रस्तुत करते हैं ताकि जनसामान्य का मनोरंजन हो सके। कभी-कभी ये हमारे राजा के समक्ष भी प्रदर्शन करते हैं।"

"तुम्हारे महाराज अत्यंत शक्तिशाली प्रतीत होते हैं!" भविषा ने कहा। "क्या वे केवल पाटलिपुत्र के आस-पास के क्षेत्र पर शासन करते हैं"?

"उससे भी कहीं अधिक!" इरा ने उत्तर दिया। "वे नगर से बाहर बहुत दूर तक, एक व्यापक क्षेत्र पर शासन करते हैं। असंख्य ग्राम, नगर और जनपद उनके अधीन हैं। मेरे काका ने मुझे बताया था कि घोड़े पर यात्रा करके राज्य की सीमा तक पहुँचने में लगभग दो माह का समय लग जाता है।"

"यह तो केवल एक राज्य से कहीं अधिक विशाल प्रतीत होता है...आप इसे क्या कहती हैं?"

"इसे साम्राज्य कहा जाता है" इरा ने गर्व से कहा।

साम्राज्य क्या होता है?

'एंपायर' (साम्राज्य) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'इंपेरियम' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है सर्वोच्च सत्ता। साम्राज्य अनेक छोटे-छोटे राज्यों अथवा क्षेत्रों का एक संघ होता था। प्रायः इन छोटे-छोटे राज्यों को जीतकर, उन पर एक शक्तिशाली शासक या शासक-समूह शासन करता था। यद्यपि इन छोटे क्षेत्रों में अपने-अपने राजा होते थे, किंतु वे सभी सम्राट के **अधीन** होते थे। सम्राट अपनी राजधानी से, जो सामान्यतः आर्थिक तथा प्रशासनिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होती थी, संपूर्ण साम्राज्य का शासन चलाता था।

प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में सम्राट के लिए प्रयुक्त शब्द इस बात को स्पष्ट करते हैं, जैसे 'समराज' जिसका अर्थ है 'सर्वोच्च शासक', अधिराज या 'अधिपति' तथा राजाधिराज अर्थात 'राजाओं का राजा।'

अधीन
अधीन, वह शासक या राज्य होता था, जिसने सम्राट के समक्ष समर्पण कर दिया हो। ये राजा या राज्य सम्राट को भेंट स्वरूप मुद्रा, स्वर्ण (या अन्य बहुमूल्य धातु), अनाज, पशु, हाथी या अपने राज्य में उत्पन्न होने वाली अन्य बहुमूल्य वस्तुएँ देते थे। ये भेंटें उनके समर्पण, निष्ठा तथा सम्मान का प्रतीक होती थीं। अधीन राजा या राज्य का एक समानार्थी शब्द 'सामंत' भी है। यह कहना उचित होगा कि अधीन राज्य या सामंत सम्राट के आधिपत्य को स्वीकार कर लेते थे।

भारतीय इतिहास साम्राज्यों से परिपूर्ण रहा है। वे अस्तित्व में आए, विस्तृत हुए, कुछ समय तक बने रहे, फिर उनका पतन हुआ और अंतत: वे लुप्त हो गए। वस्तुत: अंतिम साम्राज्य, जिसने इस उपमहाद्वीप पर शासन किया, वह एक शताब्दी पूर्व तक अस्तित्व में था। परंतु यह समय उस पर चर्चा करने का नहीं है। हम अतीत से आरंभ करते हैं जिससे यह समझ सकें कि प्राचीन काल में साम्राज्य किस प्रकार कार्य करते थे और उन्होंने भारत की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक उन्नति को कितनी गहराई से प्रभावित किया।

आइए पता लगाएँ

→ साम्राज्य विस्तृत भूभागों में फैले हुए होते थे, जिनमें अनेक प्रकार की भाषाएँ, परंपराएँ और संस्कृतियों वाले जन रहते थे। आपके विचार में सभी लोग सौहार्द्रपूर्वक रहें, यह सम्राटों ने कैसे सुनिश्चित किया होगा? समूह में विचार-विमर्श करें एवं कक्षा में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

→ एक विशाल साम्राज्य का संचालन करना अनेक प्रकार की कठिनाइयों से भरा होता है, फिर भी कोई राजा अपना राज्य बढ़ाकर सम्राट क्यों बनना चाहता होगा? नीचे कुछ संभावित उत्तर दिए गए हैं, आप चाहें तो इसमें और भी उत्तर जोड़ सकते हैं।

- 'संपूर्ण विश्व पर शासन' करने की महत्वाकांक्षा अर्थात् एक बड़े प्रदेश को नियंत्रण में रखना एक ऐसा रूपक है, जिससे संकेत मिलता है कि वह विशाल क्षेत्र पर अधिकार करना चाहता था तथा यह सुनिश्चित करना चाहता था कि **भावी पीढ़ियाँ** उन्हें याद रखेंगी।
- एक विशाल भू-प्रदेश को अपने अधीन कर, वहाँ के संसाधनों का प्रयोग कर अपनी आर्थिक एवं सैन्य शक्ति बढ़ाने की इच्छा।
- स्वयं एवं अपने साम्राज्य के लिए वृहद संपदा प्राप्त करने की उत्कंठा।

भावी पीढ़ियाँ
आने वाली पीढ़ियाँ।

सामान्यतः सम्राट स्थानीय राजाओं या प्रमुखों को अपने प्रति निष्ठा तथा भेंट के बदले अपने क्षेत्रों का प्रशासन करने की अनुमति देते थे।

चित्र 5.4.1 — प्रशिक्षित सेनाएँ पड़ोसी राज्यों को जीतने, उन पर नियंत्रण स्थापित करने तथा साम्राज्य की सीमाओं की सुरक्षा करने हेतु भेजी जाती थीं।

चित्र 5.4.2 — सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों, जैसे साम्राज्य की सीमाओं पर दुर्गयुक्त नगर (बस्तियाँ) निर्मित किए जाते थे।

चित्र 5.4.3 — साम्राज्य विस्तार हेतु कोई राज्य सर्वप्रथम अपने सीमावर्ती क्षेत्रों पर आक्रमण कर उन्हें विजित करने का प्रयास करता था।

चित्र 5.4.4 — शासक नदियों तथा व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण करने का प्रयास करते थे, क्योंकि इससे उन्हें मूल्यवान संसाधनों पर अधिकार के साथ-साथ व्यापार से कर-राजस्व भी प्राप्त होता था।

चित्र 5.4.5 — जब अनेक लघु राज्यों में प्रभुत्व के लिए संघर्ष होता था, तब जिस राज्य के पास प्रबल सैन्य बल तथा अधिशेष संसाधन होते थे, वह अंततः सार्वभौम अधिपति बनता था।

आइए पता लगाएँ

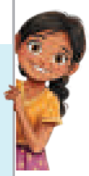

आपके विचार से शासकों ने अपने साम्राज्य विस्तार के लिए युद्ध के अतिरिक्त दूसरे और कौन-कौन से उपाय अपनाए होंगे? अपने विचार लिखिए और अपनी कक्षा में साझा कीजिए।

व्यापार, व्यापारिक मार्ग तथा श्रेणियाँ (गिल्ड्स)

दूरस्थ क्षेत्रों में सैन्य अभियान संचालित करना जितना सरल प्रतीत होता है, वास्तव में उतना सरल नहीं होता। एक सेना का संचालन अत्यंत व्ययसाध्य होता है। सैनिकों को भोजन, वस्त्र, शस्त्र तथा वेतन देने की आवश्यकता होती है, हाथियों तथा घोड़ों का पालन-पोषण करना पड़ता है, सड़कों तथा नौकाओं का निर्माण करना पड़ता है इत्यादि। इन सभी कार्यों को संपन्न करने हेतु पर्याप्त आर्थिक सामर्थ्य, श्रमिकों पर नियंत्रण तथा संसाधनों तक पहुँच आवश्यक होती है।

अब हम यह बात समझ सकते हैं कि आर्थिक गतिविधियाँ विशेषकर उत्पादन तथा व्यापार किसी साम्राज्य को बनाए रखने के लिए एवं प्रजा की समृद्धि और जीवन की गुणवत्ता के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। यह प्रत्येक सुशासक के चिंतन का विषय होना चाहिए। अतः संपूर्ण साम्राज्य में तथा इसके बाहर भी **व्यापारिक मार्गों** की स्थापना एवं नियंत्रण अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। इससे व्यापार की जाने वाली वस्तुओं की मात्रा तथा विविधता में वृद्धि होती है, जिससे उत्पादकों की आय तथा शासकों के राजस्व में वृद्धि होती है।

प्राचीन भारत के संदर्भ में विचार करें, तो उस काल में व्यापार की प्रमुख वस्तुएँ क्या रही होंगी? साहित्यिक ग्रंथों एवं पुरातात्विक उत्खननों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि वस्त्र, सुगंधित पदार्थ, कृषि उत्पाद, रत्न, हस्तशिल्प की वस्तुएँ एवं विविध पशु प्रमुख व्यापारिक वस्तुएँ थीं। यह व्यापार केवल भारत तक सीमित नहीं था। अनेक भारतीय वस्तुएँ स्थल-मार्ग एवं जलमार्ग से दूरस्थ देशों तक जाती थीं।

अधिकांश स्थितियों में व्यापारी पृथक रहकर अपना व्यापार नहीं करते थे। उन्होंने शीघ्र ही यह अनुभव किया कि सामूहिक रूप से कार्य करना अधिक लाभकारी होता है और इसी से **श्रेणियों** (गिल्ड्स) का विकास हुआ। श्रेणियाँ व्यापारियों, शिल्पकारों, साहूकारों तथा कृषकों के प्रभावशाली संगठन होते थे। उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार प्रत्येक श्रेणी में एक प्रमुख (जो सामान्यतः निर्वाचित होता था) तथा कुछ कार्यकारी अधिकारी होते थे, जिनमें सभी प्रकार के नैतिक गुण अपेक्षित थे। दो कारणों से व्यापारी

श्रेणियाँ एक विशिष्ट संस्था के रूप में मानी जाती थीं। प्रथम, वे ऐसे लोगों को एकत्र करती थीं, जो परस्पर प्रतिद्वंद्वी नहीं अपितु सहकर्मी बन जाते थे। उन्होंने यह समझ लिया था कि संसाधनों, बाजार की सूचनाओं, माँग-आपूर्ति की स्थिति, श्रमिक व्यवस्था आदि का

चित्र 5.5 — लगभग 500 सा.सं.पू. के पश्चात कुछ महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग तथा उन पर अंकित महत्वपूर्ण नगर। उत्तरापथ व दक्षिणापथ पर विशेष ध्यान दें।

परस्पर साझाकरण सभी के लिए लाभकारी होता है। द्वितीय, जैसा कि एक प्राचीन ग्रंथ में कहा गया है, "कृषक, व्यापारी, पशुपालक, साहूकार एवं शिल्पकार सभी अपने-अपने वर्ग हेतु नियम बनाने में स्वतंत्र होते थे।" दूसरे शब्दों में, श्रेणियों को अपने आंतरिक नियमों का निर्माण करने की स्वतंत्रता प्राप्त थी और राजा इसमें हस्तक्षेप नहीं करता था (और वह ऐसा करता भी क्यों, जब व्यापार फल-फूल रहा हो)।

श्रेणियाँ भारत के विशाल भूभाग पर विस्तृत थीं और अनेक शताब्दियों तक विद्यमान रहीं। जब वे औपचारिक रूप से समाप्त हो गईं, तब भी वे भारतीय व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों को प्रभावित करती रहीं और यह प्रभाव आज भी भारत के व्यापार और व्यवसाय में देखा जा सकता है। यह संस्था भारतीय समाज के **स्व-संगठित** होने की अद्भुत क्षमता का उत्कृष्ट उदाहरण है। प्राचीन ग्रामीण इकाई, जिसमें विविध समितियाँ एवं परिषदें होती थीं, इस व्यवस्था का अन्य उदाहरण है। वस्तुतः कोई भी प्रबुद्ध शासक तभी श्रेष्ठ कहलाता था, जब वह स्थानीय संस्थाओं को स्वायत्त रूप से कार्य करने दे और यदि ये संस्थाएँ संतोषजनक रूप से कार्य कर रही हों, तो उसमें हस्तक्षेप न करें।

आइए पता लगाएँ

→ व्यापारिक मार्गों के मानचित्र का अवलोकन करें। उन भौगोलिक विशेषताओं की पहचान करें, जिन्होंने व्यापारियों को उपमहाद्वीप में यात्रा करने में सहायता की।

→ उन सड़कों पर तत्कालीन समय में परिवहन के कौन-कौन से साधन उपलब्ध रहे होंगे? अनुमान लगाएँ।

→ छत्तीसगढ़ में स्थित सिरपुर, सिरकट्टी, अरौद (लीलर), शिवरीनारायण और मल्हार व्यापारिक केंद्र रहे हैं। इनके सांस्कृतिक महत्व का पता लगाइए।

मगध का उदय

छठी से चौथी शताब्दी सा.सं.पू. का काल उत्तर भारत में परिवर्तन का समय था। इससे पूर्व हम महाजनपदों, उत्तर तथा मध्य भारत के बड़े गणराज्यों और उनकी सभा-व्यवस्थाओं का संक्षेप में अध्ययन कर चुके हैं। इन्हीं में से एक था मगध (आधुनिक दक्षिण बिहार और उसके आस-पास का क्षेत्र), जो एक महत्वपूर्ण राज्य के रूप में उभरा और कई राज्यों का विलय कर भारत के प्रथम साम्राज्य की नींव का आधार बना। प्रारंभिक शक्तिशाली राजाओं में अजातशत्रु का नाम उल्लेखनीय है, जिसने मगध को शक्ति के केंद्र के रूप में स्थापित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसे अनदेखा न करें

विश्व के दो महान धार्मिक व्यक्तित्व सिद्धार्थ गौतम जो आगे चलकर 'बुद्ध' तथा वर्धमान जो 'महावीर' के नाम से प्रसिद्ध हुए, दोनों ही मगध सम्राट अजातशत्रु के समकालीन थे। इनकी शिक्षाओं को पुनः पढ़ने हेतु कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक के 'भारत की सांस्कृतिक जड़ें' अध्याय का पुनरावलोकन करें।

मगध साम्राज्य संसाधनों से समृद्ध गंगा के उपजाऊ मैदानों में स्थित था, जहाँ उपजाऊ भूमि, प्रचुर मात्रा में इमारती लकड़ी प्रदान करने वाले वन तथा हाथी जैसे महत्वपूर्ण पशु थे। यह भी ध्यान रखने वाली बात है कि लौह धातु का उपयोग कृषि एवं युद्ध कलाओं सहित अन्य तकनीकी परिवर्तनों का प्रमुख कारण बना। निकट के पर्वतीय क्षेत्रों से प्राप्त लौह अयस्क एवं अन्य खनिज संसाधन मगध साम्राज्य के विस्तार में अत्यंत सहायक सिद्ध हुए। लोहे के हल द्वारा भूमि की जुताई से कृषि उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुई और हल्के व तेज धार वाले लोहे के शस्त्रों ने सेना की युद्ध क्षमता को अधिक सशक्त बनाया।

चित्र 5.6 — उत्तर भारत के नगर कुशीनारा (आधुनिक कुशीनगर) की घेराबंदी करते तथा युद्ध करते हुए पैदल, घुड़सवार और हाथियों पर सैनिकों को दर्शाती साँची के स्तूप की विस्तृत पट्टिका। इसका उद्देश्य बुद्ध के अवशेषों को पुनः प्राप्त करना था। पट्टिका के बाएँ भाग में एक हाथी पर इन्हें ले जाते हुए दिखाया गया है।

आइए पता लगाएँ

→ उपर्युक्त शिल्प-पट्टिका का सूक्ष्म अवलोकन करें। आप इनमें कितने प्रकार के शस्त्रों की पहचान कर सकते हैं? आपको लोहे के कौन-कौन से उपयोग दिखाई देते हैं?

→ शिल्प-पट्टिका के बाएँ भाग में कलश के ऊपर एक छत्र रखा हुआ है, जिसमें बुद्ध के अवशेष रखे हैं। आपके विचार में ऐसा क्यों किया गया होगा?

अधिशेष (सरप्लस) अन्न उत्पादन ने अधिक लोगों को कला एवं शिल्प की ओर उन्मुख होने का अवसर प्रदान किया, जिनकी माँग साम्राज्य के भीतर और बाहर दोनों ही जगह थी। गंगा तथा सोन नदियों से व्यापार को भौगोलिक लाभ मिलता था, क्योंकि इनका उपयोग यातायात के लिए किया जा सकता था। फलते-फूलते व्यापार ने राज्य की आय में वृद्धि की तथा मगध के उत्थान में योगदान दिया।

चित्र 5.7 — महापद्मनंद का चाँदी का एक आहत सिक्का

5वीं शताब्दी सा.सं.पू के लगभग महापद्मनंद मगध में प्रमुखता से उभरे और उन्होंने नंद वंश की स्थापना की। उन्होंने छोटे-छोटे राज्यों को सफलतापूर्वक संगठित किया तथा अपने साम्राज्य का विस्तार उत्तरी तथा पूर्वी भारत में किया। जैसे-जैसे उनकी अर्थव्यवस्था समृद्ध हुई, उन्होंने अपनी आर्थिक शक्ति के प्रदर्शन हेतु सिक्कों का प्रचलन आरंभ किया। ग्रीक विवरणों से यह भी ज्ञात होता है कि नंद वंश के पास एक विशाल सेना थी।

नंद वंश के विभिन्न लेखों से ऐसा प्रतीत होता है कि इस वंश का अंतिम शासक धनानंद अत्यधिक धनवान होने के बावजूद, अत्यंत अलोकप्रिय हो गया था, क्योंकि वह अपनी प्रजा का उत्पीड़न व शोषण करता था। इससे नंद वंश की पराजय तथा विशालतम साम्राज्यों में से एक मौर्य साम्राज्य में इसके समाहित होने का मार्ग प्रशस्त हो गया।

सूत्र
सूत्र ऐसे संक्षिप्त एवं सुव्यवस्थित वाक्यांश होते हैं जिनमें ज्ञान और महत्वपूर्ण विचारों (प्राचीन भारतीय ग्रंथों से) का इस प्रकार संचय होता है कि उनका सहजता से स्मरण किया जा सके तथा अगली पीढ़ियों तक पहुँचाया जा सके।

इसे अनदेखा न करें

प्रसिद्ध संस्कृत व्याकरणाचार्य पाणिनि का समय भी लगभग 5वीं शताब्दी सा.सं.पू. में ही माना जाता है, जब नंदों का राज्य था। उन्हें एक प्राचीन संस्कृत ग्रंथ *अष्टाध्यायी* की रचना के लिए जाना जाता है, जिसमें 3996 **सूत्रों** के माध्यम से संस्कृत व्याकरण के नियमों को संकलित किया गया है।

चित्र 5.8 — पाणिनि की स्मृति में जारी एक भारतीय डाक टिकट

यवनों (ग्रीक) का आगमन

जब भारतीय उपमहाद्वीप के पूर्वी भाग में स्थित मगध में विविध घटनाएँ घटित हो रही थीं, उस समय उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में क्या हो रहा था? यह भाग एक प्राचीन मार्ग के निकट स्थित था, जो भूमध्यसागरीय क्षेत्र को भारत से जोड़ता था और यहाँ अनेक लघु राज्य विद्यमान थे। ग्रीक वृत्तांतों के अनुसार, उन राज्यों में पौरव वंश प्रमुख था, जिसके शासक राजा पुरु (पोरस) थे।

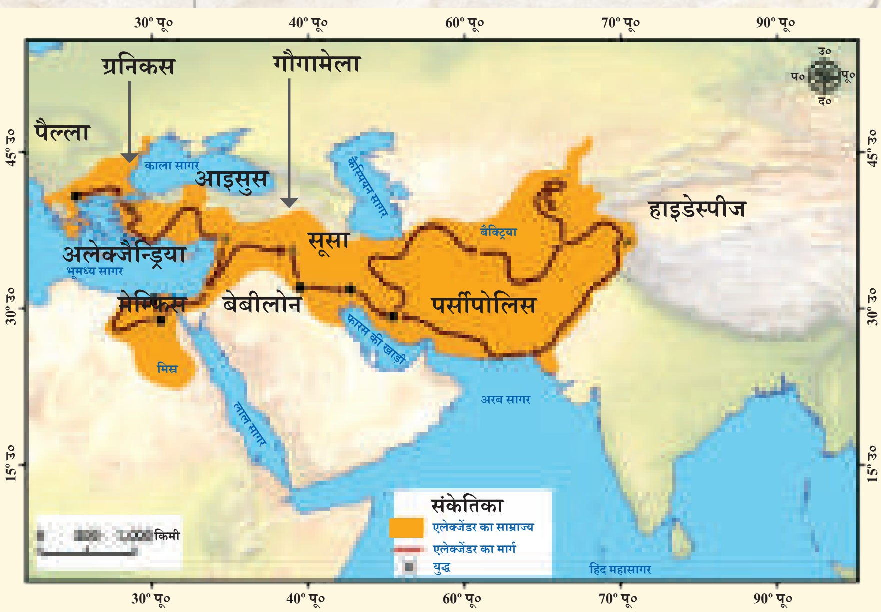

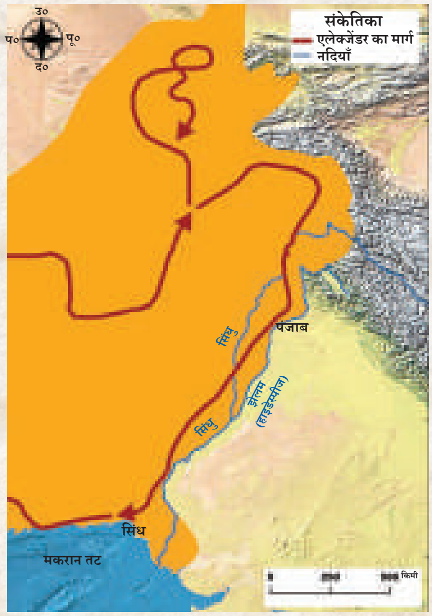

चित्र 5.9

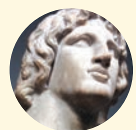

334 – 331

सा.सं.पू.

मैसीडोनिया के एक युवा और शक्तिशाली ग्रीक शासक एलेक्जेंडर ने ग्रीस पर पूर्व में हुए फारसी आक्रमणों का बदला लेने के लिए फारसी साम्राज्य के विरुद्ध अभियान चलाया (उस समय फारसशासित भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र के कुछ भारतीय सैनिकों ने ग्रीक सेना के विरुद्ध लड़ाइयाँ लड़ीं)। एलेक्जेंडर ने फारसी साम्राज्य पर विजय प्राप्त की जिसके परिणामस्वरूप वहाँ ग्रीक संस्कृति का प्रभाव व्यापक रूप से फैला। उसका साम्राज्य अब तीन महाद्वीपों में विस्तृत हो गया था, जो विश्व इतिहास के सबसे बड़े साम्राज्यों में से एक था।

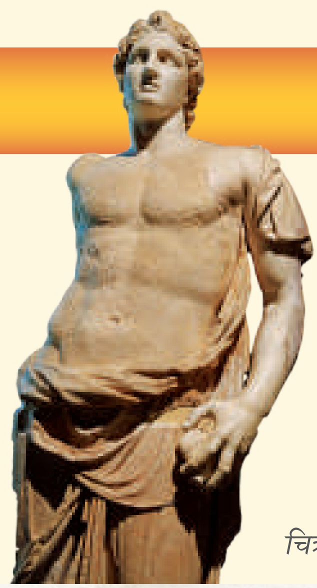

चित्र 5.10

इसे अनदेखा न करें

फारसी और ग्रीक साम्राज्यों में प्रांतों के शासक **क्षत्रप** थे, जिन्हें सम्राट (जैसे – एलेक्जेंडर) ने सुदूर प्रदेशों का प्रबंधन करने के लिए पीछे छोड़ दिया था। मात्र अधिकारी होने के बावजूद इन क्षत्रपों के पास महत्वपूर्ण शक्ति और स्वतंत्रता थी। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि उनके लिए इतनी शक्ति का प्रयोग करना कैसे संभव था?

आइए विचार करें

आपके विचार में एलेक्जेंडर संपूर्ण विश्व पर राज क्यों करना चाहता था? इससे वह क्या प्राप्त करना चाहता था?

आइए पता लगाएँ

जब युद्ध के उपरांत एलेक्जेंडर ने राजा पुरु से पूछा कि उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाए, तब पुरु ने उत्तर दिया— "एक राजा की तरह"। इस उत्तर से प्रभावित होकर एलेक्जेंडर ने उन्हें उनके ही राज्य का क्षत्रप नियुक्त कर दिया। अपने शिक्षकों की सहायता से राजा पुरु और एलेक्जेंडर के मध्य हुए युद्ध के विषय में और अधिक विवरण प्राप्त करें। अपने शोध के साथ-साथ अपनी कल्पनाशक्ति का उपयोग करते हुए इस युद्ध दृश्य का नाट्य मंचन करें।

327–325 सा.सं.पू.

दुनिया के अंतिम छोर तक पहुँचने के लिए उत्सुक एलेक्जेंडर ने आगे पूर्व की ओर बढ़ते हुए भारत में अपना अभियान प्रारंभ किया। पंजाब में राजा पोरस को पराजित किया और स्थानीय जनजातियों एवं शासकों के भीषण प्रतिरोध का सामना करते हुए कई नगरों में नरसंहार किया। ग्रीक अभिलेखों में उल्लेख है कि कुछ लड़ाइयों में महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर युद्ध किया। एलेक्जेंडर स्वयं एक युद्ध में गंभीर रूप से घायल हो गया था। थके हुए और घर की याद में उसके सैनिकों ने लड़ने की इच्छा खो दी और भारत में गंगा नदी की ओर जाने से इनकार कर दिया। अत: एलेक्जेंडर और उसकी सेना का एक भाग फारस की ओर पीछे हट गया, लेकिन दक्षिण में तटीय मार्ग और ईरान के सघन रेगिस्तानी क्षेत्रों से की गई यात्राओं के परिणामस्वरूप प्यास, भूख और बीमारी के कारण उसके सैनिकों को भारी क्षति हुई।

324–323 सा.सं.पू.

फारस वापस आकर एलेक्जेंडर को विद्रोह तथा राजनीतिक उथल-पुथल का सामना करना पड़ा। बेबीलोन में बीमार पड़ने और मात्र 32 वर्ष की आयु में निधन के बाद, उसका विशाल साम्राज्य शीघ्र ही उसके सेनापतियों और क्षत्रपों के बीच विभाजित हो गया, जिन्होंने अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिए।

एलेक्जेंडर का जिम्नोसोफिस्टों के साथ संवाद

एलेक्जेंडर ने भारतीय ऋषियों के एक समूह के बारे में सुना था, जिन्हें ग्रीक लोग 'जिम्नोसोफिस्ट' या 'नग्न दार्शनिक' (शायद इसलिए कि वे बहुत कम कपड़े पहनते थे) कहते थे और जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध थे। एलेक्जेंडर ने पहेलियों के रूप में कठिन प्रश्नों के साथ उन्हें चुनौती दी तथा यह चेतावनी दी कि वह गलत उत्तर देने वालों को मृत्युदंड देगा। जिम्नोसोफिस्टों ने एलेक्जेंडर के प्रश्नों का शांति और बुद्धिमत्ता से उत्तर दिया। एलेक्जेंडर दार्शनिकों के उत्तर से प्रभावित हुआ और अंत में सभी दार्शनिकों को मुक्त कर दिया। सदियों से इस घटना के अनेक संस्करण प्रचलित हैं, जो इसे इतिहास की सबसे रोचक दार्शनिक घटनाओं में से एक बनाता है।

चित्र 5.11 — एक ग्रीक सिक्का, जिसमें संभवतः घोड़े पर सवार एलेक्जेंडर को हाथी पर सवार पोरस पर आक्रमण करते हुए दिखाया गया है।

एक विवरण के अनुसार एलेक्जेंडर ने पूछा, "जीवन या मृत्यु में कौन अधिक शक्तिशाली है?" एक ऋषि ने उत्तर दिया, "जीवन, क्योंकि वह लंबा है, जबकि मृत्यु नहीं।" एलेक्जेंडर ने फिर प्रश्न किया "कोई व्यक्ति सबसे अधिक प्रिय कैसे हो सकता है?" उत्तर आया, "यदि वह सबसे अधिक शक्तिशाली है और फिर भी भय उत्पन्न नहीं करता है।" संभवतः यह शक्तिशाली शासक के लिए एक संकेत था।

इतिहासकार इस प्रकार के वैचारिक संवादों को ग्रीक और भारतीय दर्शन परंपराओं के मध्य एक महान बौद्धिक संगम के रूप में देखते हैं।

शक्तिशाली मौर्य साम्राज्य

उत्तर-पश्चिम की संक्षिप्त यात्रा के उपरांत, आइए हम पुनः मगध लौटें जहाँ हमने नंद साम्राज्य का अंत देखा था। जब एलेक्जेंडर अपनी सेना के साथ भारत से लौट गया, उसके कुछ वर्षों बाद लगभग 321 सा.सं.पू. में, एक नए वंश और साम्राज्य का उदय हुआ— मौर्य साम्राज्य, जिसकी स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य ने की थी। इस प्रतापी राजा ने शीघ्र ही नंद साम्राज्य के क्षेत्रों को अपने अधीन कर लिया और मगध साम्राज्य का निरंतर विस्तार किया।

कई विवरणों के अनुसार, चंद्रगुप्त ने यह कार्य एक कुशल व योग्य मार्गदर्शक कौटिल्य की सहायता से पूरा किया, जिन्होंने राजनीति, शासन और अर्थव्यवस्था के अपने ज्ञान का उपयोग करके एक ऐसा साम्राज्य स्थापित किया, जो भारतीय इतिहास के महानतम साम्राज्यों में से एक है।

कौटिल्य की कहानी

बौद्ध ग्रंथों के अनुसार, कौटिल्य जिन्हें कभी-कभी चाणक्य या विष्णुगुप्त भी कहा जाता है, विश्वविख्यात तक्षशिला (वर्तमान तक्षिला) विश्वविद्यालय के आचार्य थे। उनकी प्रसिद्ध कथा की शुरुआत अत्यंत अलोकप्रिय शासक धनानंद के दरबार से होती है।

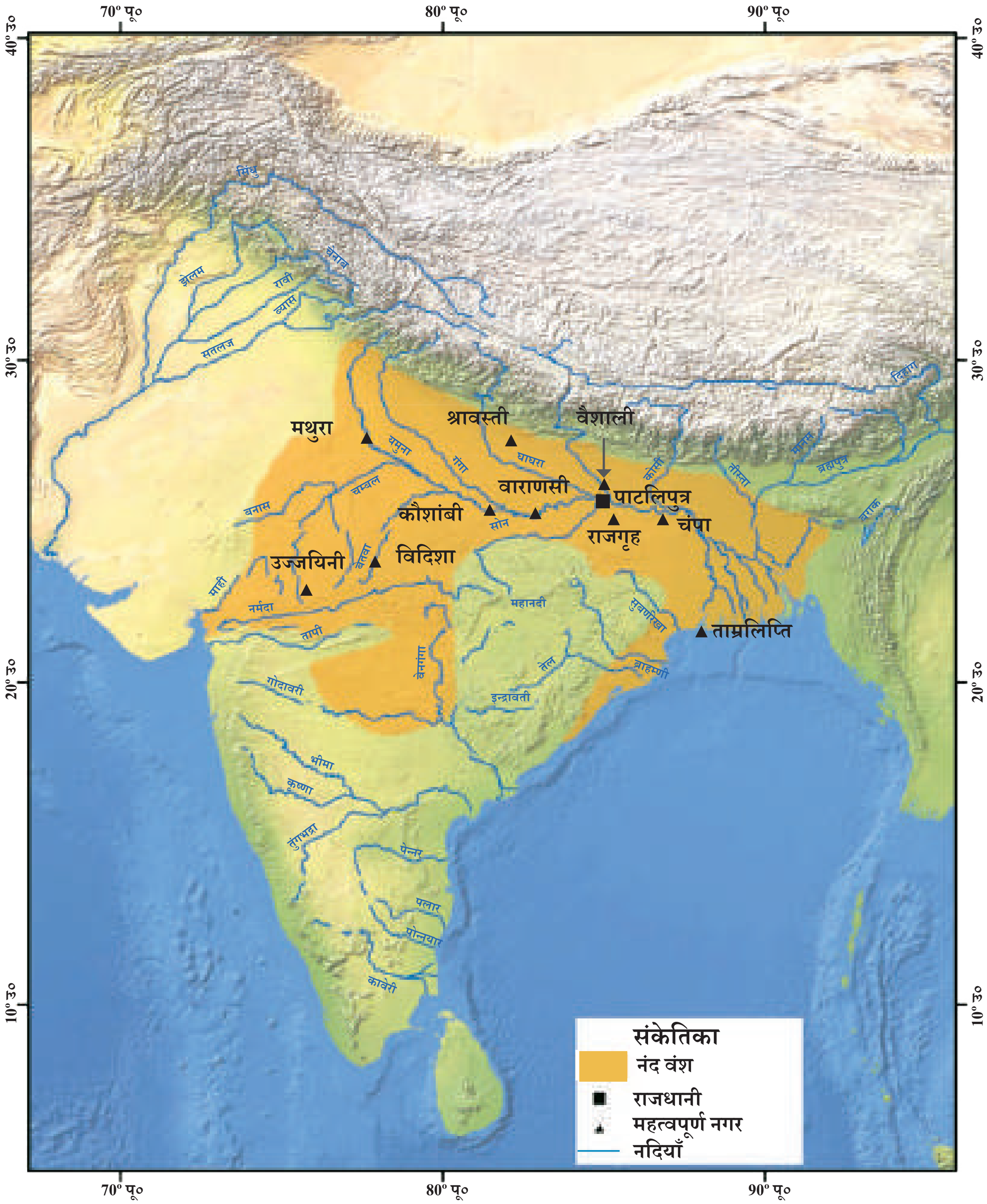

मानचित्र 5.12 — नंद साम्राज्य

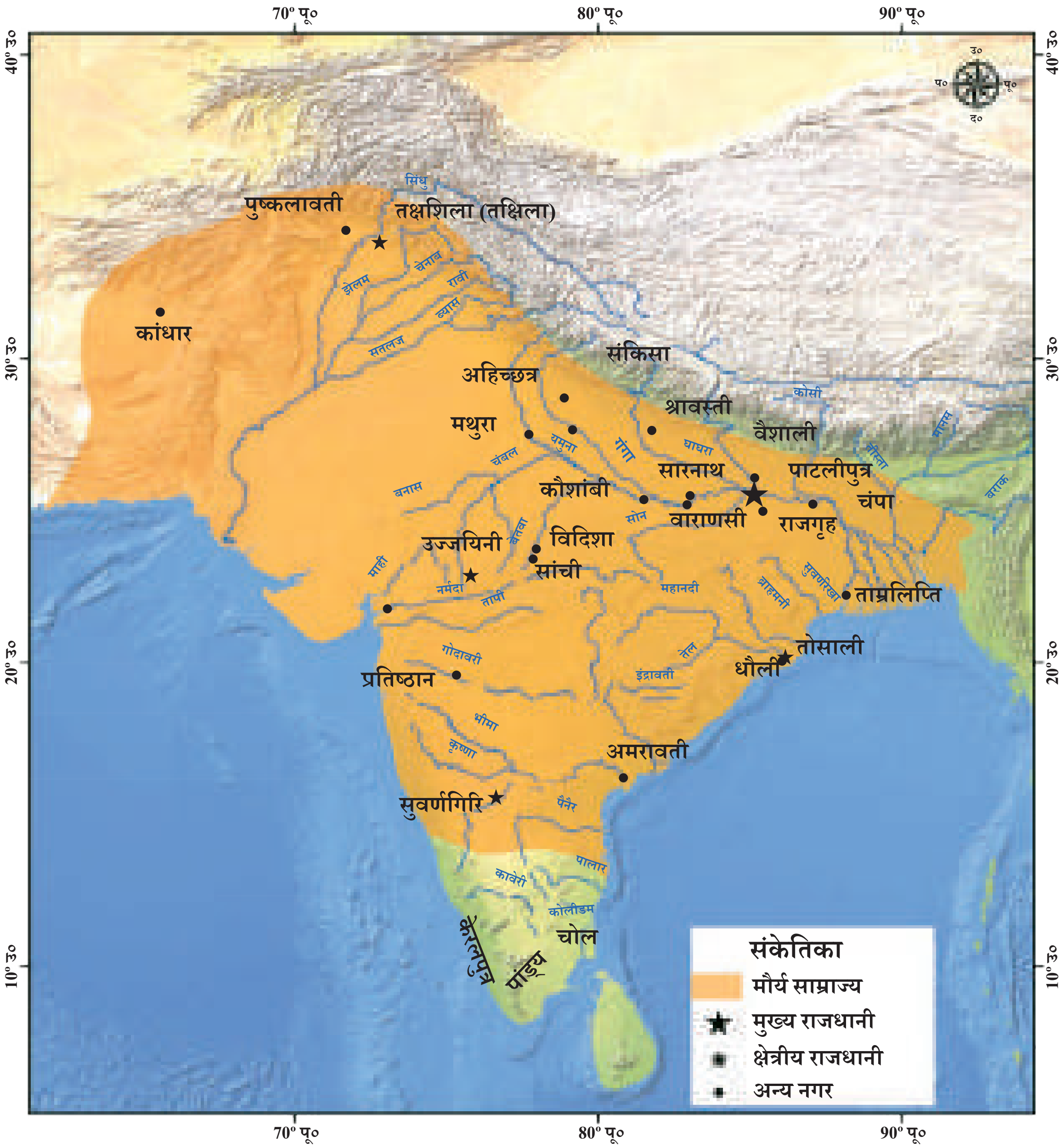

मानचित्र 5.13 — मौर्य साम्राज्य

कौटिल्य ने धनानंद को परामर्श दिया कि वह अपने शासन के तौर-तरीके बदल ले, अन्यथा अपने साम्राज्य का पतन देखने को तैयार हो जाए। परंतु क्रोधित धनानंद ने कौटिल्य का अपमान किया और उन्हें अपने दरबार से बाहर निकाल दिया। तब कौटिल्य ने नंद शासन का अंत करने की शपथ ली।

चंद्रगुप्त मौर्य का उदय

चंद्रगुप्त मौर्य की उत्पत्ति और साहसिक कार्यों के विषय में कई कहानियाँ विख्यात हैं, लेकिन उनका सामान्य परिचय यह है कि उन्होंने नंद वंश का अंत किया, मगध पर अपने

चित्र 5.14 — चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में मेगस्थनीज (असित कुमार हलधर द्वारा 20वीं सदी का एक चित्रांकन)

शासन की नींव रखी और पाटिलपुत्र को अपनी राजधानी बनाया। क्या आपको स्मरण है कि मगध को अपनी भौगोलिक स्थिति, सुदृढ़ आर्थिक प्रणाली और समृद्ध व्यापार के कारण कई लाभ थे? इन सबके साथ ही कुशल रणनीतिकार कौटिल्य की सलाह ने चंद्रगुप्त मौर्य को धीरे-धीरे अपने साम्राज्य का विस्तार करने में सहायता की। चंद्रगुप्त मौर्य ने उत्तर-पश्चिम में एलेक्जेंडर द्वारा नियुक्त ग्रीक क्षत्रपों को हराया और इस क्षेत्र को एक ऐसे साम्राज्य के रूप में एकीकृत किया, जो उत्तर के मैदानी भाग से लेकर दक्षिण के पठार तक फैला हुआ था।

चंद्रगुप्त मौर्य ने ग्रीकों को पराजित करने के बाद भी उनके साथ राजनयिक संबंध बनाए रखे और अपने दरबार में एक ग्रीक इतिहासकार और राजनयिक मेगस्थनीज का स्वागत किया, जिसने अपनी पुस्तक *इंडिका* में भारत की अपनी यात्राओं के बारे में लिखा। यह अपनी तरह का पहला लिखित विवरण था, जो दुर्भाग्यवश आज पूर्णरूप में उपलब्ध नहीं है। इसके कुछ अंश बाद के ग्रीक विद्वानों द्वारा उद्धृत किए गए हैं।

कौटिल्य की राज्य संबंधित अवधारणा

कौटिल्य के पास एक स्पष्ट दृष्टिकोण था कि एक राज्य की स्थापना, प्रबंधन और सुदृढ़ीकरण कैसे किया जाना चाहिए? अपनी प्रसिद्ध रचना *अर्थशास्त्र* (जिसका शाब्दिक अर्थ है शासन और अर्थशास्त्र का विज्ञान) में उन्होंने रक्षा, अर्थशास्त्र, प्रशासन, न्याय,

कौटिल्य का सप्तांग सिद्धांत

राजा *(स्वामी)*

पार्षदों, मंत्रियों और अन्य उच्च अधिकारियों का समूह *(अमात्य)*

राज्य क्षेत्र तथा उसमें निवास करने वाली जनसंख्या *(जनपद)*

किलेबंद कस्बे और नगर *(दुर्ग)*

राजकोष या राज्य की संपत्ति *(कोष)*

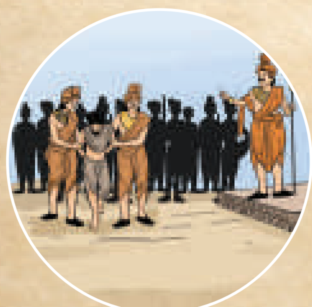

रक्षा एवं कानून और व्यवस्था की शक्तियाँ *(दंड)*

सहयोगी *(मित्र)*

चित्र 5.15

नगर-नियोजन, कृषि व्यवस्था तथा लोक-कल्याण जैसे कई विषयों में दिशा-निर्देशों का वर्णन किया है। उनकी प्रमुख राजनीतिक अवधारणाओं में एक 'सप्तांग' सिद्धांत (चित्र 5.15 देखें) है, जिसके अनुसार राज्य सात भागों से निर्मित होता है।

कौटिल्य के अनुसार, सप्तांग को एक साथ मिलकर एक व्यवस्थित, सुसंरक्षित और समृद्ध राज्य की स्थापना करनी चाहिए, ताकि राज्य के समक्ष जैसी भी परिस्थितियाँ आएँ, उसे युद्ध और शांति के लिए गठबंधन के माध्यम से बनाए रखा जा सके। उन्होंने समाज में कानून और व्यवस्था के महत्व पर बल दिया, जिसके लिए एक सशक्त प्रशासन की आवश्यकता है। उन्होंने भ्रष्टाचार से निपटने के लिए अनेक कानूनों का भी विवरण दिया और लोगों की भलाई के विरुद्ध जाने वाले किसी भी कार्य के लिए दंड-विधान भी निर्दिष्ट किया।

आइए विचार करें

- कौटिल्य कहते हैं, "एक राजा को अपनी प्रजा के कल्याण को बढ़ावा देकर अपनी शक्ति मे वृद्धि करनी चाहिए, क्योंकि शक्ति ग्राम-क्षेत्र से आती है, जो समस्त आर्थिक गतिविधियों का स्रोत है। (राजा को) ग्रामीण क्षेत्र में उन लोगों पर विशेष अनुग्रह करना चाहिए, जो लोगों को लाभ पहुँचाने वाले कार्य करते हैं, जैसे – तटबंध या सड़क-पुल बनाना, गाँवों का सौंदर्यीकरण करना अथवा उनकी रक्षा करने में सहायता प्रदान करना।"
- आपके अनुसार ग्रामीण क्षेत्र का विशेष ध्यान रखना क्यों महत्वपूर्ण था? (संकेत – इस अध्याय के आरंभ में आपने जो पढ़ा है, उस पर पुनः विचार कीजिए।)

कौटिल्य के शासन का मूल दर्शन भारतीय मूल्यों के अनुरूप है— "अपनी प्रजा की प्रसन्नता में राजा की प्रसन्नता निहित है, प्रजा की भलाई में उसकी भलाई है। राजा को केवल वही अच्छा नहीं मानना चाहिए जो उसे प्रसन्न करे, बल्कि जो उसकी प्रजा को अच्छा लगे, उसे अपने लिए भी वही लाभदायक मानना चाहिए।" दूसरे शब्दों में, राजा चाहे कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, उसे सदैव प्रजा के हितों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

आइए पता लगाएँ

अपनी कक्षा में एक सामूहिक चर्चा आयोजित करें और कौटिल्य के साम्राज्य के प्रति विचारों की विशेषताओं की तुलना आधुनिक राष्ट्र से करें।

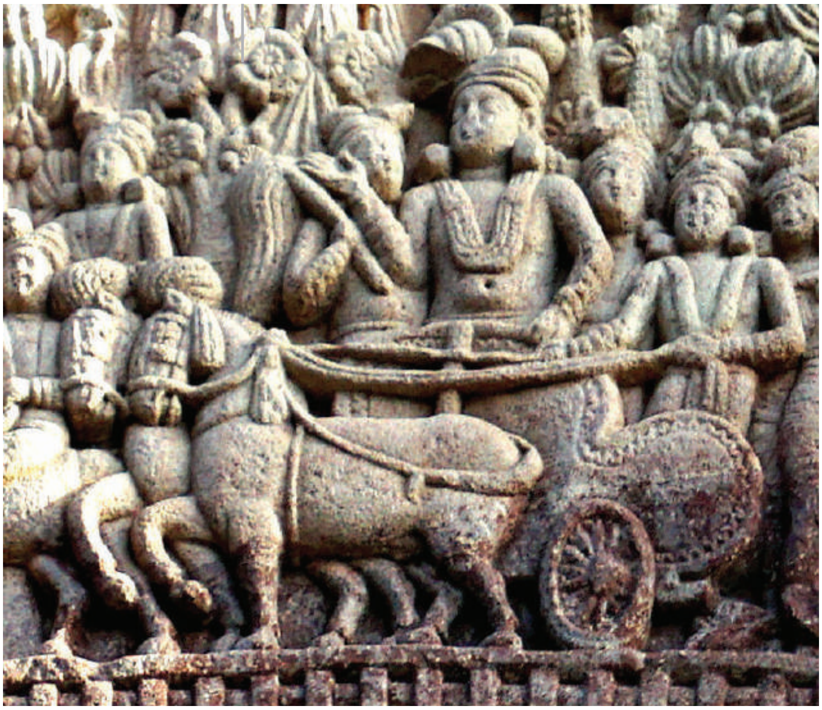

चित्र 5.16 — नेपाल में रामग्राम स्तूप का भ्रमण करते हुए अशोक का साँची स्तूप की एक पट्टिका से लिया गया दृश्य

शांति का चयन करने वाला राजा

मौर्य वंश के एक और राजा अशोक (268–232 सा.सं.पू.) थे। चंद्रगुप्त के पौत्र अशोक को प्रशासनिक और धार्मिक दृष्टि से अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियों का श्रेय दिया जाता है।

अपने शासन के आरंभिक काल में अशोक अत्यंत महत्वाकांक्षी थे। उन्हें विरासत में एक विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ था, जिसे उन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप के दक्षिणी भाग को छोड़कर संपूर्ण भूभाग में विस्तृत किया। इसमें वर्तमान बांग्लादेश, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के कुछ भाग भी सम्मिलित थे। हालाँकि, राज्य विस्तार की प्रक्रिया में घटित एक युद्ध ने अशोक के जीवन की दिशा ही बदल दी। उनके एक **शिलालेख** के अनुसार, उन्होंने एक बार कलिंग (आधुनिक ओडिशा) पर आक्रमण किया तथा भयंकर युद्ध लड़ा। युद्ध क्षेत्र में भारी विनाश और मृत्यु को देखकर अशोक ने हिंसा का परित्याग कर यथासंभव शांति और अहिंसा के मार्ग को अपनाने का निर्णय लिया, जो महात्मा बुद्ध की शिक्षा के अनुरूप था।

शिलालेख वर्तमान संदर्भ में एक राजा या अधिकारियों द्वारा जनहित के लिए निर्देशित एक आधिकारिक घोषणा

दूत प्रायः कूटनीतिक प्रकृति के विशेष कार्य के लिए भेजा गया व्यक्ति।

आइए विचार करें

अशोक ने अपने शिलालेखों में कलिंग युद्ध का उल्लेख किया है। वे चाहते तो इसका उल्लेख न करके भविष्य की पीढ़ियों के समक्ष स्वयं को एक शांतिपूर्ण, परोपकारी राजा के रूप में प्रस्तुत कर सकते थे। आपके विचार में उन्होंने इस विनाशकारी युद्ध का उल्लेख अपने शिलालेखों में क्यों किया?

बुद्ध की शिक्षाओं को अपनाने के उपरांत अशोक ने बुद्ध के संदेश को दूर-दूर तक प्रसारित करने के लिए श्रीलंका, थाईलैंड, मध्य एशिया और उससे भी आगे तक अपने **दूत** भेजे।

अशोक ने अपने साम्राज्य के कई स्थानों पर चट्टानों या स्तंभों पर शिलालेख उत्कीर्ण करवाए थे। इसलिए इतिहासकारों ने कभी-कभी अशोक को 'महान संचारक' भी कहा है। इन शिलाालेखों में जनसामान्य के लिए संदेश थे और उन्हें धर्म का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। अधिकांश शिलालेख भारत के कई भागों में लोकप्रिय प्राकृत भाषा में उत्कीर्ण थे। ये शिलालेख ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे (ब्राह्मी भारत की सभी क्षेत्रीय लिपियों की जननी मानी जाती है)।

हमने ब्राह्मी लिपि में लिखी प्राकृत भाषा का उल्लेख किया है। इसका क्या अर्थ है? सरल शब्दों में, भाषा वह है जो हम बोलते हैं, जबकि लिपि वह है जिसमें हम एक भाषा को लिखते हैं। क्या आप हमारे दैनिक जीवन में इसके उदाहरण सोच सकते हैं?

मानचित्र 5.17 — उपमहाद्वीप में अशोक के शिलालेखों में से कुछ प्रमुख शिलालेख

अपने शिलालेखों में अशोक ने स्वयं को 'देवानामपिय पियदसि' या देवानामप्रिय प्रियदर्शी कहा है। पहले शब्द का अर्थ है 'देवताओं के प्रिय' और दूसरे का अर्थ है, 'दूसरों के प्रति दयालुता से व्यवहार करने वाला'। वास्तव में, शिलालेखों की भाषा से यह स्पष्ट होता है कि वह स्वयं को एक परोपकारी और दयालु शासक के रूप में चित्रित करने में रुचि रखते थे। आइए, इससे संबंधित उदाहरण देखें।

हालाँकि, कुछ दक्षिणी राज्य मौर्य साम्राज्य का भाग नहीं थे, लेकिन अशोक ने उनके समग्र कल्याण का समर्थन किया। उन्होंने अपने साम्राज्य से बाहर भी मनुष्यों और पशुओं के लिए चिकित्सकीय सुविधाएँ उपलब्ध करवाने की बात कही। पशुओं के शिकार और उन पर क्रूरता पर प्रतिबंध लगाया और आवश्यक होने पर उनके लिए उपचार का आदेश दिया। इस प्रकार, यदि विचार किया जाए तो सम्राट अशोक प्रकृति और वन्यजीव संरक्षण

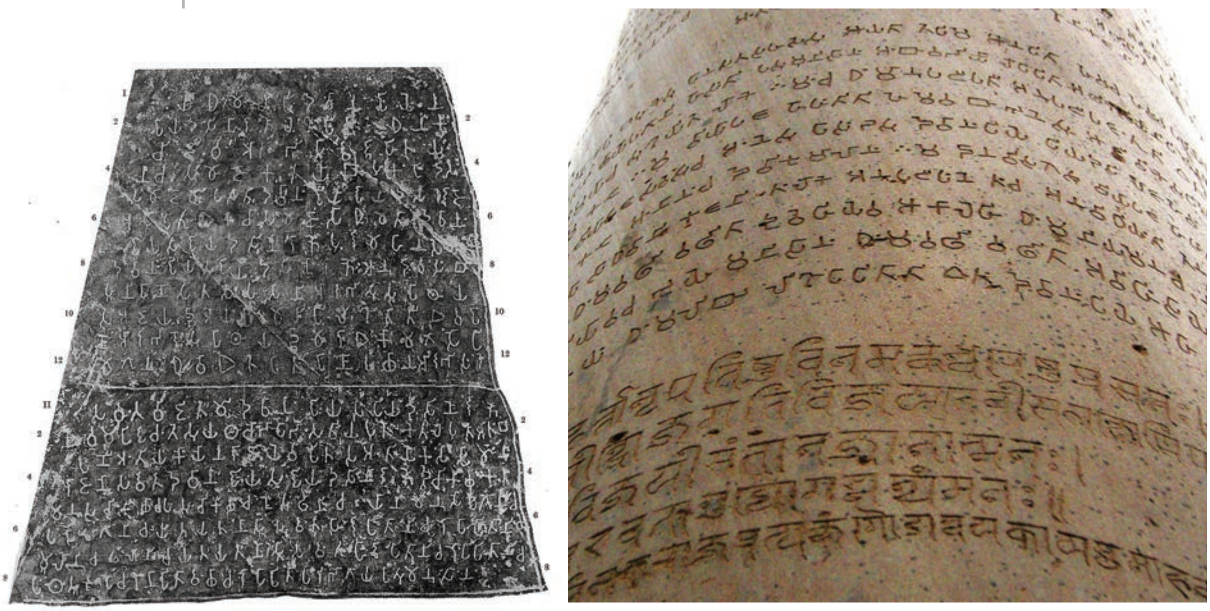

चित्र 5.18 — गुजरात के गिरनार में स्थित अशोक के शिलालेख के एक अंश का चित्र (बाईं ओर देखें)। दिल्ली में स्थित फिरोज शाह कोटला के टोपरा स्तंभ का विवरण (दाईं ओर देखें)।

के संदर्भ में इस प्रकार के प्रथम राजा थे। उन्होंने अपने साम्राज्य की मुख्य सड़कों के किनारे नियमित अंतराल पर विश्रामगृहों के निर्माण, कुएँ बनवाने और फलदार एवं छायादार वृक्षों को लगवाने के बारे में अपने अभिलेखों में उल्लेख किया है। उन्होंने सभी संप्रदायों (उनके समय में प्रचलित विभिन्न विचारधाराएँ) को एक-दूसरे की उचित शिक्षाओं को स्वीकार करने और उनका अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया।

हालाँकि, हमें अशोक के सभी अभिलेखों को शाब्दिक रूप से स्वीकारने की आवश्यकता नहीं है, तथापि यह स्पष्ट है कि कौटिल्य के शासन-दर्शन के अनुरूप उन्होंने अपनी प्रजा के कल्याण हेतु निरंतर प्रयास किया और उन तक अपने विचार पहुँचाने का प्रयास किया।

इसे अनदेखा न करें

आपने कक्षा 6 में धर्म (प्राकृत में '*धम्म*') शब्द के बारे में पढ़ा है। इसका भाव सहजता से नहीं समझा जा सकता। सरल शब्दों में धर्म का अर्थ है — नैतिक नियम या परिवार, समुदाय या राष्ट्र के प्रति किसी व्यक्ति का 'नैतिक' अथवा 'धार्मिक' कर्तव्य। यद्यपि, गहन रूप से 'धर्म' का अर्थ है — ब्रह्मांड या '*ऋतम*' के अनुसार जीवन-यापन की पद्धति। इसमें अपने कर्तव्य का सत्यनिष्ठा से निर्वहन, 'धर्म' के अनुसार नियमों का पालन करना एवं ब्रह्मांडीय व्यवस्था के साथ सामंजस्य स्थापित कर जीवन-यापन सम्मिलित है। इसलिए 'धर्म' का अर्थ कर्तव्य, नियमों का पालन, सत्य, व्यवस्था और नैतिकता आदि में निहित है।

आइए पता लगाएँ

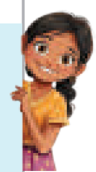

अशोक ने अपने एक अभिलेख में अपने अधिकारियों के आचरण संबंधित विस्तृत निर्देश दिए हैं। उन्होंने यह सुनिश्चित करने की व्यवस्था की कि अधिकारी निष्पक्षता से कार्य करें। निम्नलिखित अनुवाद को पढ़िए और बताइए कि क्या ये उपाय साम्राज्य के प्रबंधन में सहायक सिद्ध हुए होंगे? यदि हाँ, तो कैसे?

'देवानामपिय' के आदेशानुसार— अधिकारियों और नगर न्यायाध्यक्षों को यह निर्देश दिया गया है— (...) तुम लोग अनेक सहस्र प्राणियों के ऊपर नियुक्त किए गए हो। तुम्हें मनुष्यों का स्नेह अर्जित करना चाहिए। सब मनुष्य मेरी संतान के समान हैं। जिस तरह मैं चाहता हूँ कि मेरी संतान इस लोक और परलोक दोनों में मंगल और सुख प्राप्त करे, उसी तरह मैं सब मनुष्यों के लिए कामना करता हूँ। (...) तुम्हें निष्पक्षता से न्याय करना चाहिए। (...) इन सबका मूल क्रोध का त्याग और धैर्य का पालन है। (...) यह लेख यहाँ इसलिए लिखवाया गया है कि नगर के न्याय शासक हमेशा सावधान रहें कि मनुष्यों को कभी अकारण कैद या यातना न दी जाए। (...) और इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु मैं प्रत्येक पाँचवें वर्ष एक नम्र और दयालु महामात्र भेजूँगा जो इसकी खोज करने के बाद ..., यह देखेगा कि मेरे आदेशों का पालन किया जाता है या नहीं।''

अशोक की मृत्यु के बाद मौर्य साम्राज्य लगभग आधी शताब्दी तक चलता रहा। हालाँकि, उनके उत्तराधिकारी साम्राज्य को एकजुट रखने में असमर्थ रहे और कई छोटे राज्य टूट गए और स्वतंत्र हो गए। लगभग 185 सा.सं.पू. भारत ने अपनी यात्रा के दूसरे चरण की शुरुआत की। अगले अध्याय में, इस यात्रा में भविषा और ध्रुव पुनः हमारे साथ जुड़ेंगे।

मौर्य काल में जीवन

पाटलिपुत्र जैसे नगर, शासन और वाणिज्यिक गतिविधि के प्रमुख केंद्र थे। नगर के पास प्रासाद, सार्वजनिक भवन और सुनियोजित सड़कें थीं। एक सुव्यवस्थित कराधान प्रणाली और संगठित व्यापार के साथ, राजकोषीय तंत्र भी था जिसने साम्राज्य के विकास और समृद्धि को बढ़ावा दिया। साम्राज्य के प्रशासनिक अधिकारी, व्यापारी और कारीगर नगरीय जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

इसे अनदेखा न करें

चित्र 5.19

सोहगौरा ताम्रपत्र अभिलेख, जो चौथी-तीसरी शताब्दी सा.सं.पू. का है, भारत के सबसे प्राचीन प्रशासनिक अभिलेखों में से एक है। उत्तर प्रदेश के सोहगौरा में खोजे गए इस अभिलेख पर प्राकृत भाषा में ब्राह्मी लिपि में लिखा गया है। यह माना जाता है कि इसे चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में जारी किया गया था। इस अभिलेख में दुर्भिक्ष से राहत एवं बचाव हेतु एक अन्नागार की स्थापना का उल्लेख है। यह राज्य द्वारा खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और संकट के समय अपने लोगों को सहारा देने के प्रयासों पर प्रकाश डालता है।

मेगस्थनीज के विवरण से भी उस समय के समाज पर कुछ प्रकाश पड़ता है। जनसंख्या का एक बड़ा भाग कृषि में संलग्न था, जो मगध साम्राज्य के लिए राजस्व का एक महत्वपूर्ण स्रोत था। एक वर्ष में दो फसलें बोई जाती थीं क्योंकि गर्मी और सर्दी दोनों में वर्षा होती थी। इससे स्पष्ट होता है कि दुर्भिक्ष की संभावना कम थी और लोगों को पर्याप्त भोजन उपलब्ध था। किसी भी संभावित स्थिति के लिए अन्न भंडारों में पर्याप्त अन्न होता था। अगर आस-पास युद्ध छिड़ भी जाए, तो भी किसानों को इससे बचाया जाता था और कृषि कार्य को क्षति नहीं पहुँचाई जाती थी।

लोहार, कुम्हार, बढ़ई, जौहरी और अन्य कारीगर नगरों में रहते थे। नगर भली-भाँति योजनाबद्ध थे और सड़कों पर पहचान सूचक लगे होते थे। संदेशवाहकों के माध्यम से संचार होता था जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर संदेश पहुँचाते थे। घर लकड़ी

के बने होते थे और दो-मंजिल तक ऊँचे हो सकते थे। आग लगने की स्थिति में सड़कों पर नियमित अंतराल पर पानी के बर्तन रखे जाते थे।

बाद के विवरणों में उल्लेख है कि लोग सूती कपड़े पहनते थे, जो घुटनों से नीचे टखनों तक पहुँचते थे और ऊपरी वस्त्र को वे अपने कंधों पर डालते थे। कुछ लोग अलंकृत चमड़े के जूते पहनते थे और उन जूतों के तलवे मोटे होते थे ताकि वे लंबे दिखें।

आइए पता लगाएँ

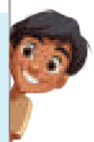

एक इतिहासकार के रूप में अगले पृष्ठ पर प्रस्तुत कलाकृतियों को ध्यान से देखें। मौर्य युग के लोगों और जीवन के बारे में आप इनसे क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं?

चित्र 5.20 में दर्शाई गई प्रतिकृति मूर्तिकला की सुंदरता और उत्कृष्टता के साथ-साथ कई महत्वपूर्ण संदेश देने वाला एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका शीर्ष भाग अशोक द्वारा वाराणसी के पास स्थित सारनाथ में बनवाया गया था। सारनाथ वह स्थान है जहाँ महात्मा बुद्ध ने अपना पहला प्रवचन दिया था और यह 'धर्मचक्र प्रवर्तन' के नाम से विख्यात है। इस कलाकृति के चार सिंह राजकीय शक्ति के प्रतीक हैं। कलाकृति के नीचे की चक्राकृति (वलयाकार) में चार शक्तिशाली पशुओं (हाथी, बैल, घोड़ा और सिंह) को दर्शाया गया है। इसके साथ ही धर्मचक्र, जो महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का प्रतीक है, वह भी इस पर अंकित है।

यह चित्र आपमें से कइयों को परिचित लग सकता है। वास्तव में, इस स्तंभ के शीर्ष को भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में चुना गया है। इसमें संस्कृत का आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' अर्थात 'सत्य की

चित्र 5.20 — मौर्य अपने अत्यधिक पॉलिश किए गए चमकदार स्तंभों के लिए प्रसिद्ध थे, जैसा सारनाथ स्तंभ के शीर्ष में देखा जा सकता है।

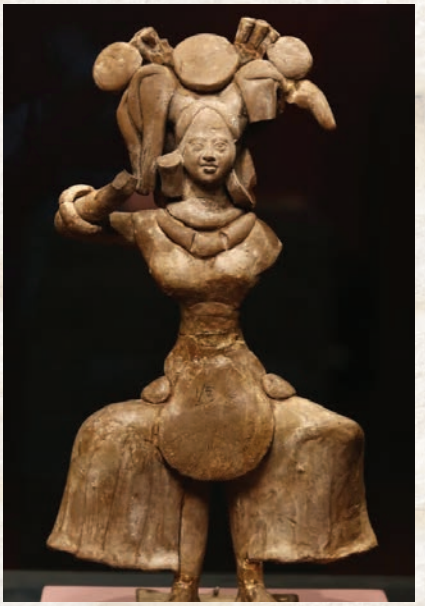

चित्र 5.21 — पकी हुई मिट्टी (टेराकोटा) से निर्मित नृत्य करती बालिका की कलाकृति (उसके शिरोवस्त्र, केश-विन्यास और आभूषण पर ध्यान दें)

चित्र 5.22 — पकी मिट्टी से निर्मित देवी की मूर्ति

चित्र 5.23 — देवी (यक्षी) चँवर धारण किए हुए

चित्र 5.24 — सप्तमातृकाओं या सात मातृ देवियों की पकी मिट्टी की कलाकृतियाँ (एक सतत परंपरा)

चित्र 5.25 — पकी मिट्टी की घोड़े के सिर की कलाकृति (लगाम की विस्तृत संरचना पर ध्यान दें)

चित्र 5.26 — भारत में पत्थर से बनी प्राचीन संरचनाओं में से एक साँची का महान स्तूप। यह भारतीय वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरणों में से एक है। इस बात पर ध्यान दें कि इसकी मूल संरचना ईंटों से बनी थी। बाद में इसमें पत्थर का उपयोग करके इसे विस्तृत किया गया। कहा जाता है कि अशोक ने ध्यान, आराधना और अध्ययन के लिए ऐसे कई स्तूप, चैत्य और विहार बनवाए थे।

चित्र 5.27 — धौली (वर्तमान ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर के समीप) में चट्टान पर उकेरी गई एक पूर्णकाय हाथी की मूर्ति। यह महात्मा बुद्ध (बुद्धिमान, शक्तिशाली, धैर्यवान और शांत) को प्रतीक के रूप में दर्शाता है। इसके निकट ही एक चट्टान पर अशोक का एक शिलालेख भी उत्कीर्ण किया गया है।

चित्र 5.28

ही विजय होती है' जोड़ा गया है (बाईं ओर राष्ट्रीय प्रतीक देखें)। इसके अतिरिक्त, हमारे राष्ट्रीय ध्वज के मध्य में एक धर्मचक्र भी अंकित है, जैसा कि आपने देखा होगा। यह आदर्श वाक्य *मुंडक उपनिषद* से लिया गया है। पूर्ण रूप से यह 'सत्यमेव जयते नानऋतम' के रूप में पढ़ा जाता है। इसका अर्थ है— 'सत्य की ही जीत होती है, असत्य की नहीं।'

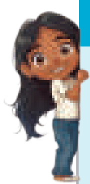

आइए पता लगाएँ

नीचे दर्शाए गए सिक्कों के अलग-अलग चिह्नों पर ध्यान दीजिए। इन चिह्नों का अर्थ क्या हो सकता है, क्या आप अनुमान लगा सकते हैं?

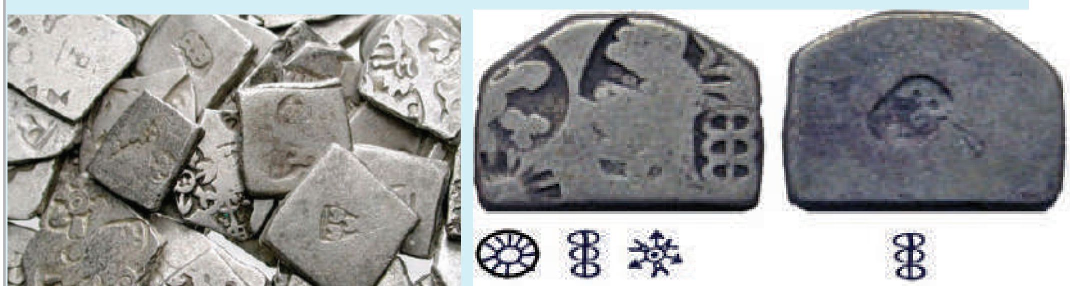

चित्र 5.29.1 — मौर्यकालीन आहत (पंचमार्क) सिक्कों का एक संग्रह
चित्र 5.29.2 — अशोक का एक आहत सिक्का

इसे अनदेखा न करें

स्तूप के केंद्र में स्थित बड़ी अर्धगोलाकार संरचना अंडाकार होती है। यह ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करती है और प्राय: पवित्र अवशेषों को रखने के लिए निर्मित की जाती है। उपासक इसके चारों ओर परिक्रमा करते हैं जिसे 'प्रदक्षिणा' कहा जाता है।

साम्राज्यों की दुर्बलताएँ

आप आगे की कक्षाओं में विश्व के अन्य स्थानों पर अतीत के शक्तिशाली साम्राज्यों के बारे में पढ़ेंगे जैसे – रोमन, फारसी, ऑटोमन, स्पैनिश, रूसी, ब्रिटिश, इत्यादि। वे सभी बहुत पहले ही समाप्त हो चुके हैं, परंतु इतिहासकार इन साम्राज्यों के पतन के कारणों पर निरंतर चर्चा करते रहते हैं।

जैसा कि हमने देखा, इन कारणों में से एक साम्राज्य के कुछ क्षेत्रों का स्वतंत्र होने का प्रयास है। ऐसा तब होता है जब सम्राट को युद्ध या सूखे के समय अधिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। इसके फलस्वरूप स्थानीय शासकों पर कर की माँग बढ़ जाती है। इससे उनमें असंतोष की स्थिति उत्पन्न होती है। यदि एक शक्तिशाली सम्राट के बाद एक दुर्बल सम्राट आता है, तो स्थानीय राजा या प्रमुख इस अवसर का लाभ उठाने का प्रयास करते हैं और सम्राट को कर देना बंद कर देते हैं। साथ ही, एक साम्राज्य जितना वृहत होता है, उसे एक साथ संगठित रखना उतना ही कठिन होता है, जैसा कि एलेक्जेंडर के साथ हुआ था। सुदूर क्षेत्र प्रायः साम्राज्य से अलग होने वाले पहले क्षेत्र होते हैं। अंत में, प्राकृतिक आपदाओं (जैसे – लंबे समय तक सूखा या बाढ़) के कारण होने वाले आर्थिक संकट भी साम्राज्य के पतन का कारण बन सकते हैं।

अतः साम्राज्य अपने आप में एक विरोधाभास की तरह है। एक ओर, वे राजनीतिक एकता स्थापित कर सकते हैं जैसे कि मौर्य साम्राज्य ने लगभग संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में किया था। वे छोटे-छोटे राज्यों के बीच में युद्ध को कम या समाप्त भी कर सकते हैं। वास्तव में, एक सुप्रबंधित साम्राज्य छोटे युद्धरत राज्यों की तुलना में अधिक समृद्धि ला सकता है। दूसरी ओर, साम्राज्य सामान्यतः निरंतर युद्ध के द्वारा स्थापित होते हैं और अपना अस्तित्व शक्ति और दंड के द्वारा बनाए रखते हैं, जिससे वे समय के साथ आंतरिक रूप से दुर्बल और अस्थिर हो जाते हैं।

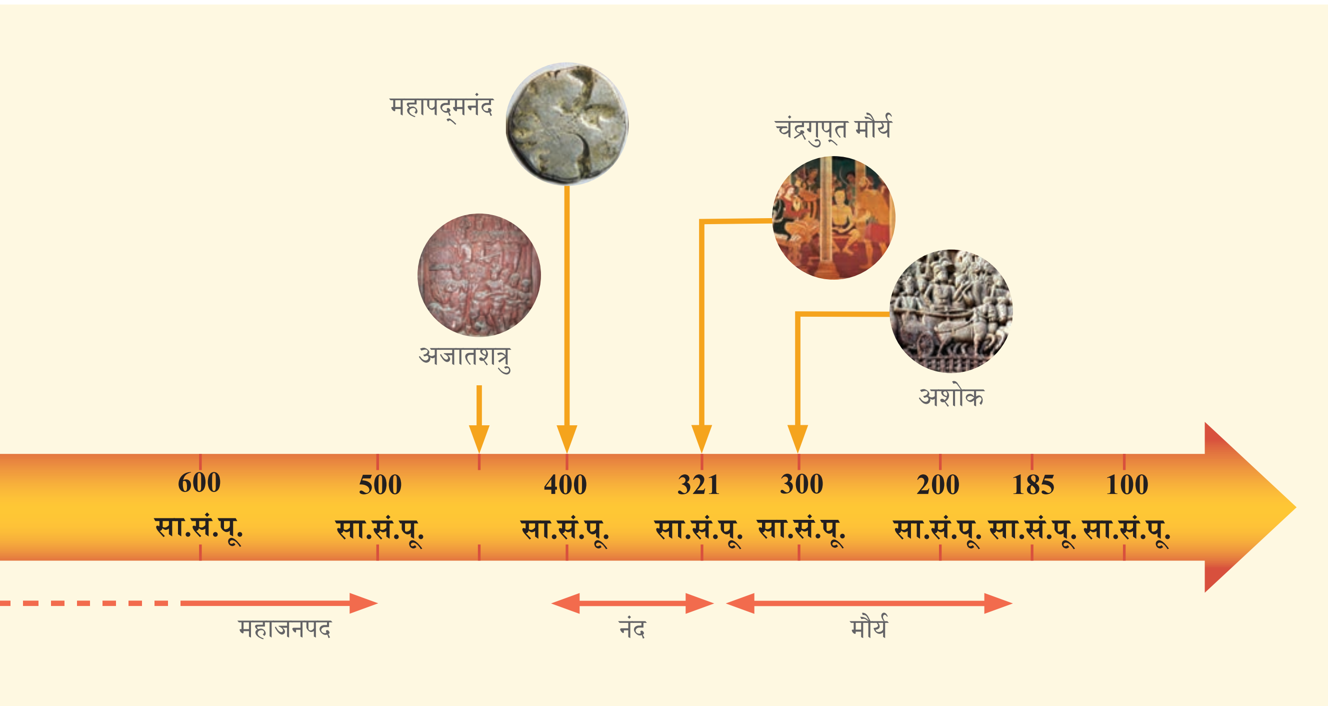

चित्र 5.30

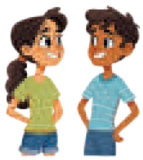

आगे बढ़ने से पहले...

- साम्राज्य अनेक छोटे राज्यों या क्षेत्रों से मिलकर बना एक बड़ा क्षेत्र होता है। सम्राट अपने साम्राज्य का विस्तार मुख्यत: प्रसिद्धि प्राप्त करने, शक्ति अर्जित करने, सैन्य शक्ति तथा संसाधनों और आर्थिक जीवन को नियंत्रित करने के लिए करते थे।
- भारत के प्रारंभिक साम्राज्य प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों, सिंचाई और परिवहन के लिए नदियों की उपस्थिति तथा व्यापार के लिए विभिन्न प्रकार के उत्पादों से संपन्न क्षेत्रों में उदित हुए।
- उत्तर-पश्चिम भारत में एलेक्जेंडर के अभियान का राजनीतिक प्रभाव सीमित था, लेकिन इसने भारतीय-ग्रीक सांस्कृतिक संपर्कों के द्वार खोल दिए।
- मौर्यों ने एक विशाल साम्राज्य बनाया जिसकी विरासत शताब्दियों तक चली। उनकी विरासत में व्यापारिक मार्गों और आर्थिक प्रणालियों को सुदृढ़ करना, व्यापार के लिए सिक्कों का व्यापक उपयोग, उत्कृष्ट रूप से संरचित की गई नगरीय बस्तियाँ और प्रशासन की एक विस्तृत प्रणाली सम्मिलित है। उन्होंने कला और वास्तुकला को भी प्रोत्साहन दिया।
- अशोक अपनी उपलब्धियों का प्रसार करने और एक दयालु सम्राट की छवि प्रस्तुत करने के लिए उत्सुक थे। उन्होंने अपनी प्रजा को धर्म का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रश्न और कार्यकलाप

1. साम्राज्य की विशेषताएँ क्या हैं और यह राज्य से किस प्रकार भिन्न है? इसकी व्याख्या कीजिए।
2. राज्यों से साम्राज्यों में परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण कारक क्या हैं?
3. एलेक्जेंडर को विश्व इतिहास में एक महान शासक माना जाता है, आपके विचार से ऐसा क्यों है?
4. प्रारंभिक भारतीय इतिहास में मौर्य वंश को महत्वपूर्ण माना जाता है। कारण बताएँ।
5. कौटिल्य के कुछ प्रमुख विचार क्या थे? इनमें से कौन-से विचार आप आज भी आस-पास देख सकते हैं?

6. अशोक और उसके साम्राज्य के बारे में असाधारण बातें क्या थीं? उनमें से कौन-सी बातें आज भी भारत को प्रभावित करती रही हैं और क्यों? अपने विचार लगभग 250 शब्दों में लिखिए।

देवताओं के प्रिय राजा पियदसी कहते हैं — मेरे धम्माधिकारी सार्वजनिक लाभ के लिए अनेक विषयों में व्यस्त हैं। वे सभी संप्रदाओं के सदस्यों, तपस्वियों और गृहस्थों दोनों के बीच व्यस्त हैं। मैंने कुछ को बौद्ध संघ, ब्राह्मणों और आजीवकों ..... जैनियों..... और विभिन्न संप्रदायों के लिए नियुक्त किया है। अधिकारियों की अनेक श्रेणियाँ हैं और उनके कई प्रकार के कर्तव्य है। मेरे धम्माधिकारी इन और अन्य संप्रदायों के विषयों में व्यस्त हैं।

7. अशोक के उपरोक्त शिलालेख को पढ़ने के उपरांत, क्या आपको लगता है कि वे अन्य धार्मिक विश्वासों और विचारधाराओं के प्रति सहिष्णु थे? अपने विचार कक्षा में साझा कीजिए।

8. ब्राह्मी लिपि एक लेखन प्रणाली थी जिसका प्राचीन भारत में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था। इस लिपि के बारे में अधिक जानने का प्रयास कीजिए। जहाँ भी आवश्यक हो, अपने शिक्षक से सहायता लीजिए। एक लघु कार्य परियोजना बनाएँ और इस दौरान आपने ब्राह्मी लिपि के बारे में जो कुछ भी सीखा, उसे संलग्न कीजिए।

9. मान लीजिए कि आपको तीसरी शताब्दी सा.सं.पू. में कौशांबी से कावेरीपट्टनम की यात्रा करनी है। आप यह यात्रा कैसे करेंगे? इस यात्रा के दौरान आप कहाँ-कहाँ ठहरेंगे और आपको इसमें कितना समय लगेगा?

10. छतीसगढ़ में विभिन्न स्थानों पर मिले ब्राह्मिलिपि के अभिलेखों के चित्रों को संकलित कर अभिलेखों के बारे में जानने का प्रयास कीजिए?

ब्राह्मी लिपि वर्णमाला के संकेतों का चित्र

अध्याय 6

पुनर्गठन का काल

> *सतत जीवंत परंपरा और नवजीवन की एक अद्भुत शक्ति के कारण इस भूमि ने असंख्य परिवर्तनों के माध्यम से स्वयं को समायोजित किया है।*
>
> *—जगदीश चंद्र बोस (1917)*

चित्र 6.1.1 — पुनर्गठन के काल से कला की एक झलक

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *मौर्योत्तर काल को कभी-कभी 'पुनर्गठन का काल' क्यों कहा जाता है?*
2. *वह कौन-से मूल्य और सिद्धांत थे जिन्होंने इस काल के सम्राटों का मार्गदर्शन किया?*
3. *विदेशी आक्रमणकारियों ने किस प्रकार भारतीय समाज में समाहित होकर सांस्कृतिक संगम में योगदान दिया?*

0783CH06

भविषा और ध्रुव मौर्य साम्राज्य की अपनी यात्रा से लौटकर विश्राम कर चुके थे और अब एक नवीन साहसिक यात्रा के लिए उत्सुक थे। उन्होंने पुनः इतिहास काल-यंत्र का उपयोग करने का निश्चय किया और एक नवीन ऐतिहासिक कालखंड में पहुँच गए। वहाँ उन्होंने विविध कलाकृतियों का एक संग्रह देखा, जिनमें से प्रत्येक एक-दूसरे से बिलकुल भिन्न थीं (चित्र 6.1.1 देखें)। वे सोचने लगे कि ये कलाकृतियाँ किसी एक ही साम्राज्य की हैं या अनेक साम्राज्यों की? उनका अनुमान सही था। इस अध्याय में हम एक लंबे कालखंड की यात्रा करेंगे। तो चलिए आरंभ करते हैं...

चित्र 6.1.2

अशोक के उत्तराधिकारियों के विषय में बहुत कम जानकारी मिलती है। सामान्यतः यह स्वीकार किया जाता है कि मौर्य साम्राज्य के अंतिम शासक की हत्या लगभग 185 सा.सं.पू. में उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग द्वारा की गई थी। यह घटना मौर्य साम्राज्य के विघटन का कारण बनी, जैसा कि पिछले अध्याय में बताया गया है। सम्राट अशोक के लगभग आधी शताब्दी पश्चात ही साम्राज्य का विघटन हो गया था। इस घटनाक्रम के उपरांत उपमहाद्वीप में अनेक नवीन राज्य उभरे, जो पहले मौर्य साम्राज्य की अधीनता में शासन कर रहे थे। उत्तर-पश्चिम का क्षेत्र दुर्बल हो गया जिससे भारतीय उपमहाद्वीप बाह्य आक्रमणों के लिए असुरक्षित हो गया।

कुछ विद्वानों के अनुसार, यह काल 'पुनर्गठन का युग' कहलाता है, क्योंकि इस काल में पूर्ववर्ती क्षेत्रों का पुनर्गठन कर नवीन राज्यों का निर्माण हुआ, जो निरंतर सत्ता की आकांक्षा में एक-दूसरे से स्पर्धा कर रहे थे। इस युग में भारत का मानचित्र विशेष रूप से परिवर्तित हुआ और जनसामान्य का जीवन भी।

आइए पता लगाएँ

एक पृष्ठ पर दूसरी शताब्दी सा.सं.पू. के प्रारंभिक वर्ष से लेकर तीसरी शताब्दी सा.सं. के अंतिम वर्ष तक की अवधि को चिह्नित करते हुए एक समय-रेखा बनाइए। यह अवधि कुल कितने वर्षों को सम्मिलित करती है? जैसे-जैसे हम अध्याय में आगे बढ़ेंगे, समय-रेखा पर प्रमुख व्यक्तियों, राज्यों और घटनाओं को चिह्नित कीजिए।

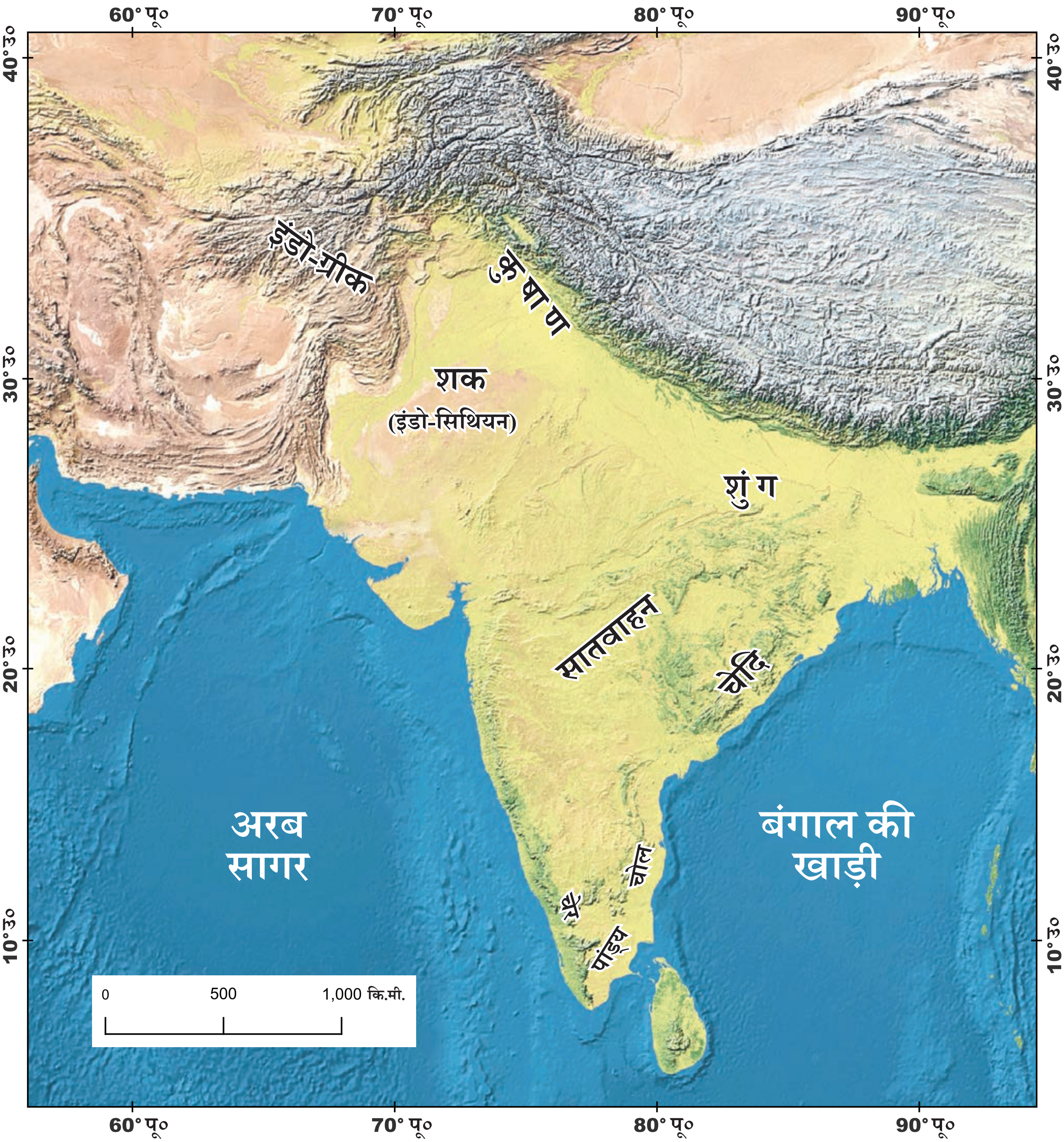

चित्र 6.2 — पुनर्गठन काल के दौरान भारत के प्रमुख राजवंश

पुनरावलोकन करें

समय-रेखा पर कार्य करते हुए क्या आपने सा.सं.पू. से सा.सं. तक के बदलाव पर ध्यान दिया है? याद कीजिए कि आपने कक्षा 6 के अध्याय 'इतिहास की समयरेखा एवं उसके स्रोत' के अंतर्गत इतिहास में समय को मापने के बारे में क्या पढ़ा था?

वैवाहिक गठबंधन
विवाह के द्वारा तय किया गया गठबंधन। सामान्यत: यह राज परिवारों के दो सदस्यों के बीच होता है। व्यवहार में इसका तात्पर्य यह होता है कि राजा प्रायः अपनी पुत्री का विवाह पड़ोसी राज्य के राजपरिवार से करता है, जिसका उद्देश्य दोनों राज्यों के बीच गठबंधन को सुदृढ़ करना होता था।

आइए पता लगाएँ

पिछले अध्याय में आपने मौर्य साम्राज्य का मानचित्र देखा (चित्र 5.13)। चित्र 6.2 मौर्योत्तर काल का मानचित्र है। आप उस क्षेत्र में कितने राजवंशों की गणना कर सकते हैं जो पूर्व में मौर्य शासन के अधीन थे?

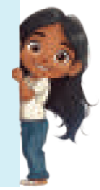

अब नए राज्य क्षेत्रीय नियंत्रण के लिए स्पर्द्धा कर रहे थे। इसके लिए कभी-कभी शांतिपूर्ण उपाय, जैसे – पड़ोसी साम्राज्य के साथ **वैवाहिक गठबंधन** या युद्ध के लिए सेना का प्रयोग जैसे साधनों का प्रयोग किया जा रहा था। याद रखें कि जो क्षेत्र साम्राज्य की सीमा के पास थे। उन पर अधिकार करने के लिए खींचतान मची थी, क्योंकि इन क्षेत्रों पर नियंत्रण का अर्थ था साम्राज्य को बाह्य आक्रमण से बचाना।

इन सभी राजनैतिक गतिविधियों के समानांतर कला, शिल्प और साहित्य के क्षेत्र में विकास में तेजी आई और सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी समृद्ध हुआ। इन सभी के बारे में हम आगे पढ़ेंगे।

चित्र 6.3

शुंगों का उत्कर्ष

पुष्यमित्र शुंग ने शुंग राजवंश की स्थापना की और उत्तर एवं मध्य भारत के कुछ भागों पर शासन किया। उन्होंने स्वयं को सबसे शक्तिशाली शासक के रूप में स्थापित करने के लिए अश्वमेध यज्ञ नामक वैदिक अनुष्ठान किया। यद्यपि उनका साम्राज्य पूर्ववर्ती मौर्य साम्राज्य की तुलना में छोटा था (उन दोनों के मानचित्र की तुलना कीजिए), फिर भी उन्होंने अपने साम्राज्य को बाहरी आक्रमणकारियों से सुरक्षित रखा तथा ग्रीकों के साथ कुछ सैनिक अभियानों के बाद मैत्रीपूर्ण संबंध रखे। परंतु तत्पश्चात शुंग साम्राज्य अधिक समय तक स्थायित्व नहीं पा सका और लगभग एक शताब्दी बाद ही इसका अस्तित्व समाप्त हो गया।

इस काल में वैदिक अनुष्ठानों और प्रथाओं का पुनरुत्थान हुआ, परंतु साथ ही अन्य दर्शनों और मतों का भी व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ।

इसे अनदेखा न करें

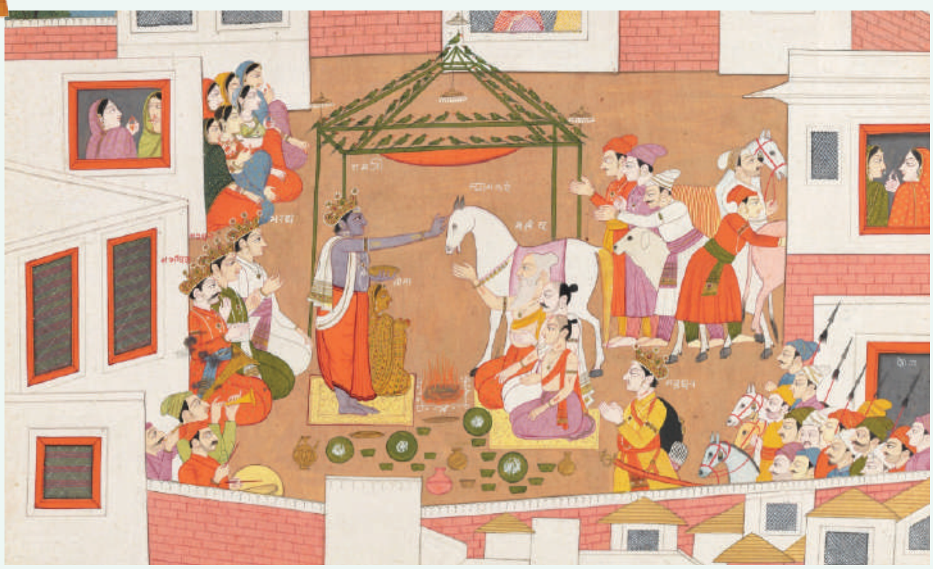

चित्र 6.4 — अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान करते हुए राजा राम, रामायण का एक दृश्य (स्रोत — 19वीं शताब्दी की चित्रकारी, राष्ट्रीय संग्रहालय)

अश्वमेध यज्ञ एक वैदिक अनुष्ठान है, जिसके द्वारा शासक स्वयं को एक शक्तिशाली राजा के रूप में स्थापित करता था। इस अनुष्ठान में एक घोड़ा सैनिकों के साथ स्वतंत्र विचरण करने के लिए छोड़ दिया जाता था। जिस क्षेत्र से वह घोड़ा बिना किसी चुनौती के पार हो जाता, वह क्षेत्र यज्ञकर्ता राजा के अधीन माना जाता था। अगर किसी क्षेत्र के राजा ने उस घोड़े को रोक लिया, तो यज्ञकर्ता राज्य को अपनी सर्वोच्चता सिद्ध करने के लिए उस राजा से युद्ध करना पड़ता था।

संस्कृत इस काल में दार्शनिक और साहित्यिक रचनाओं के लिए एक प्रमुख लोकप्रिय भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। क्या आपको कक्षा 6 की 'शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य' में योग सूत्रों के कुछ अंश याद हैं? ये योग सूत्र इस काल में महर्षि पतंजलि द्वारा संकलित किए गए थे।

शुंगों ने साहित्य, कला और वास्तुकला का संरक्षण किया। भरहुत स्तूप (मध्य प्रदेश), शुंगकालीन कला का एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है। संभवत: इसका मूल निर्माण सम्राट अशोक के काल में हुआ था, किंतु शुंगों ने इसमें अत्यंत सुंदर वेदिकाएँ तथा महात्मा बुद्ध के जीवन की कथाओं को दर्शाते हुए उत्कीर्णित शिल्प जोड़े। ये बौद्ध कला के प्रारंभिक उदाहरणों में गिने जाते हैं।

चित्र 6.5.1 — भरहुत स्तूप की वेदिकाएँ; चित्र 6.5.2 — वेदिका पर उत्कीर्ण लक्ष्मी की आकृति; चित्र 6.5.3 — गायकों और नर्तकों की मंडली; चित्र 6.5.4 — धर्म-चक्र को उठाए हुए हाथी

कला में शुंगों का योगदान

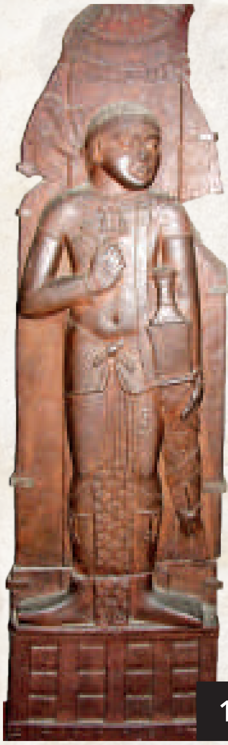
1

2

3

4

5

6

7

8

9

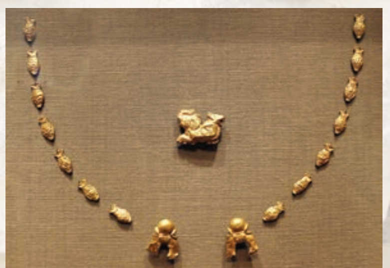
10

चित्र 6.6.1 — ग्रीक योद्धा को दर्शाता हुआ स्तंभ; चित्र 6.6.2 — पुरुष आकृति; चित्र 6.6.3 — छोटे बालक को गोद में लिए हुए स्त्री; चित्र 6.6.4 — पंखे के साथ स्त्री; चित्र 6.6.5 — गमला; चित्र 6.6.6 — बालों के आभूषण के साथ पकी मिट्टी से बनी स्त्री की आकृति; चित्र 6.6.7 — राजपरिवार; चित्र 6.6.8 — काँसे की चूड़ियाँ जिन पर सोने की पतली परत चढ़ी हुई है; चित्र 6.6.9 — हाथी दाँत से बना कंघा; चित्र 6.6.10 — हार के मनके

आइए पता लगाएँ

नीचे भरहुत स्तूप की एक पट्टिका का चित्र है। दाहिने तरफ की दोनों आकृतियों को ध्यानपूर्वक देखिए। वे क्या कर रही हैं? क्या आप उनके व्यवसाय का अनुमान लगा सकते हैं? उनके परिधानों पर ध्यान दीजिए। यह हमें उनके बारे में क्या बता रहे हैं? पट्टिका में आपको जो अन्य विवरण दिखे, उन्हें सूचीबद्ध कर कक्षा में उन पर चर्चा कीजिए।

चित्र 6.7 — भरहुत स्तूप की एक पट्टिका

आइए पता लगाएँ

चित्र 6.6 के कोलाज में चित्रों को ध्यान से देखिए। कपड़ों, आभूषणों और दैनिक उपयोग की अन्य वस्तुओं पर अपने विचार लिखिए।

सातवाहन

उपलब्ध सीमित साक्ष्यों से प्रतीत होता है कि शुंगों ने अपने पड़ोसी प्रदेशों से अनेक युद्ध किए। संभवतः इन में सातवाहन भी सम्मिलित थे, जिन्होंने दूसरी शताब्दी सा.सं.पू. से दक्षिण में दक्कन के विस्तृत भूभाग पर शासन किया। शुंग साम्राज्य के दक्षिण में स्थित इस शक्तिशाली वंश को कभी-कभी 'आंध्र' के रूप में भी जाना जाता है। सातवाहन एक शक्तिशाली राजवंश था और उसका साम्राज्य मुख्यतः वर्तमान आँध्र प्रदेश, तेलंगाना तथा महाराष्ट्र के प्रदेशों में विस्तृत था। भिन्न-भिन्न समय पर इसकी राजधानी अनेक स्थानों पर रही जिसमें अमरावती और प्रतिष्ठान विशेष रूप से प्रसिद्ध (पैठन) थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि सातवाहन साम्राज्य में व्यापार और वाणिज्य बहुत फला-फूला।

सातवाहन शासकों द्वारा जारी किए गए सिक्के भारत के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे – गुजरात से लेकर आंध्र प्रदेश तक अर्थात पश्चिमी एवं पूर्वी समुद्री तटों से प्राप्त हुए हैं। वास्तव में, अनेक सिक्कों पर जहाज के चित्र अंकित हैं, जो यह दर्शाते हैं कि समुद्री व्यापार तत्कालीन आर्थिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग था। यहाँ दिए गए सिक्के पर दर्शाए गए जहाज की बनावट से पता चलता है कि जहाज निर्माण और नौपरिवहन की तकनीक अत्यधिक उन्नत थी। कृष्णा-गोदावरी नदी घाटियों में कृषि फल-फूल रही थी, जिसने राज्य को आर्थिक स्थिरता प्रदान की। सातवाहनों के पास सक्रिय व्यापार तंत्र था जो रोमन साम्राज्य तक विस्तृत था। इस व्यापारिक गतिविधि में मसालों, वस्त्रों, चंदन और विलासिता की वस्तुएँ, जैसे – स्वर्णाभूषित मोती, हाथी दाँत इत्यादि का व्यापार होता था जबकि काँच और सुगंधित मलहम जैसे उत्पादों का आयात किया जाता था। व्यापार पर लगने वाले कर एवं शुल्क राज्य की आय में वृद्धि करते थे।

चित्र 6.8 — सातवाहन सिक्के पर अंकित दो मस्तूल वाले समुद्री जहाज की छवि। ध्यान दें कि जहाजों के मस्तूल किस प्रकार एक-दूसरे को काटती हुई रेखाओं से दर्शाए गए हैं, जो संभवत: पालों को दर्शाती हैं। नीचे की लहरदार रेखाएँ समुद्री जल को दर्शाती हैं।

इस प्रकार, आर्थिक समृद्धि और अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण राजनीतिक स्थिरता ने साहित्य, कला और संस्कृति के विकास को बल प्रदान किया। इसमें सातवाहनों का योगदान विशेष उल्लेखनीय रहा।

चित्र 6.9 — पुणे के पास नानेघाट गुफाएँ, जो एक प्रमुख व्यापार मार्ग के निकट स्थित हैं। इसका उपयोग व्यापार-कर और पथ-कर के संग्रह और व्यापारियों के लिए विश्राम स्थल के रूप में किया जाता था।

Rāño Gotamiputasa Siri-Sātakaṇisa

चित्र 6.10 — सातवाहनकालीन सिक्का, जिसमें ब्राह्मी लिपि में 'गौतमीपुत्र राजा शातकर्णी' लेख उत्कीर्ण है।

सातवाहन काल में जन-जीवन

सातवाहन परंपरा के अनुसार, राजकुमारों के नाम प्रायः उनकी माताओं के नाम पर रखे जाते थे। उदाहरण के लिए, गौतमीपुत्र शातकर्णी का नाम उनकी माता गौतमी बलश्री के नाम पर रखा गया था। गौतमी बलश्री एक शक्तिशाली रानी थीं, जिन्होंने बौद्ध भिक्षुओं को भूमि दान दी और नासिक में एक महत्वपूर्ण शिलालेख उत्कीर्ण करवाया, जो राज्य में उनके प्रभाव को दर्शाता है।

आइए विचार करें

आपके अनुसार राजा के नाम के आरंभ में उसकी माँ का नाम लिखने की परंपरा का क्या अर्थ है?

एक अन्य प्रमुख अभिलेख पुणे के निकट स्थित नानेघाट की गुफाओं में महाराष्ट्र से प्राप्त हुआ है (चित्र 6.9)। यह एक सातवाहन विधवा रानी पर केंद्रित है, जिन्होंने उल्लेखनीय रूप से अश्वमेध यज्ञ सहित अनेक वैदिक अनुष्ठान संपन्न किए। इस अभिलेख में हमें इंद्र, चंद्र और सूर्य जैसे वैदिक देवताओं का उल्लेख मिलता है। हमें रानी द्वारा दिए गए दान की भी सूची मिलती है जिनमें भूमि, गायें, घोड़े, हाथी, चाँदी के सिक्के एवं अन्य वस्तुएँ सम्मिलित थीं और जो पुरोहितों, अतिथियों, कर्मकारों, विद्वानों एवं भिक्षुओं को समर्पित की गई थीं।

ये अभिलेख 'ब्राह्मी लिपि' में लिखे गए हैं और इनमें कुछ अंक (संख्याओं के प्रतीक) भी मिलते हैं, जिनका स्वरूप आज के अंकों से मिलता-जुलता है, जैसा कि नीचे दर्शाया गया है। यह इस बात का एक साक्ष्य है कि आधुनिक अंकों की उत्पत्ति भारत में ही हुई।

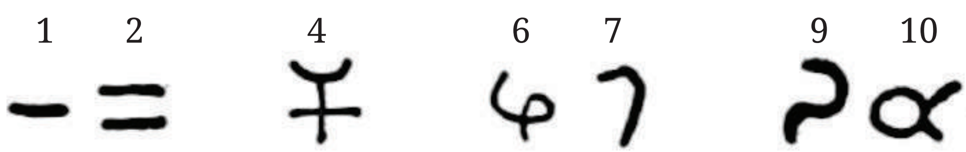

आइए विचार करें

उपर्युक्त अंकों की □ृखला में से कौन-से अंक कुछ-कुछ हमारे आधुनिक अंकों जैसे दिखते हैं? कौन-से नहीं?

सातवाहन वासुदेव (कृष्ण का ही एक नाम) के उपासक थे। यद्यपि उन्होंने अन्य दर्शन पद्धतियों का भी संरक्षण किया, जो उनके शासनकाल में समृद्ध हुइ□। उदाहरण के लिए, सातवाहन नरेशों ने प्रायः वैदिक विद्वानों, जैन मुनियों तथा बौद्ध भिक्षुओं को कर-मुक्त कृषि भूमि प्रदान की, जिससे वे अपने अध्ययन और साधना में संलग्न रह सकें।

चित्र 6.11 — कार्ले गुफाएँ (महाराष्ट्र में लोनावला के पास) जिनमें सातवाहनों ने अपने शासनकाल के दौरान योगदान दिया था। ये गुफाएँ बौद्ध भिक्षुओं के लिए बनाई गई थीं। इनमें सुदंर स्तंभों और मध्य में स्थित एक स्तूप की पत्थर की प्रतिकृति पर ध्यान दें। यह संपूर्ण निर्माण चट्टानी पहाड़ी को काटकर बनाया गया है।

चित्र 6.12 — महाराष्ट्र की पीतलखोरा गुफाओं से प्राप्त एक यक्ष की मूर्ति, जिसे सातवाहन काल में बनाया गया।

आइए विचार करें

पीतलखोरा से प्राप्त यक्ष की इस मूर्ति के हाथ पर एक लेख उत्कीर्ण है— 'कन्हणदासेन हीरामकारेना काट' जिसका अर्थ है— 'कन्हणदास नामक स्वर्णकार द्वारा निर्मित'। क्या यह रोचक नहीं है कि एक सुनार भी पत्थर की मूर्ति बना सकता था? आपके विचार में इससे हमें उस समय के लोगों के व्यवसायों के बारे में क्या पता चलता है?

तीसरी शताब्दी सा.सं. में सातवाहन साम्राज्य छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों में विखंडित हो गया। इसके विघटन के कई कारण रहे। इनमें सबसे प्रमुख था, केंद्रीय शासन की दुर्बलता और धीरे-धीरे होता हुआ आर्थिक पतन। इससे क्षेत्रीय शक्तियों को अपनी सत्ता स्थापित करने या पुनः प्रतिष्ठित करने का अवसर मिला और नए-नए राज्यों का उदय हुआ।

चेदियों का आगमन

अब हम थोड़ा पीछे लौटते हैं। क्या आपको पिछले अध्याय में वर्णित कलिंग युद्ध का स्मरण है? मौर्य साम्राज्य के पतन के उपरांत चेदि वंश के अधीन कलिंग एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरा।

खारवेल इस वंश के एक प्रमुख राजा थे। वे जैन दर्शन के अनुयायी थे और उन्हें कभी-कभी 'भिक्षु-राजा' कहा जाता था। यद्यपि वे सभी मतों के प्रति सम्मान-भाव रखते थे। भुवनेश्वर के समीप स्थित उदयगिरि-खंडगिरि गुफाएँ— जो संभवतः जैन मुनियों के लिए बनाई गई थीं— सुसज्जित चित्रपटों, प्रतिमाओं तथा पत्थरों को काटकर बनाए गए बड़े कक्षों से युक्त हैं और शिल्पकारों की अद्‌भुत कुशलता को प्रदर्शित करती हैं। ये गुफाएँ अपनी रचना और कलात्मकता के कारण शैलकृत स्थापत्य शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण बनती हैं, जिसकी विस्तृत चर्चा हम अगली कक्षाओं में करेंगे।

1

2

3

चित्र 6.13.1 — भुवनेश्वर के पास उदयगिरि की गुफाएँ चित्र 6.13.2 — हाथीगुंफा अभिलेख;
चित्र 6.13.3 — रामायण के एक दृश्य को दर्शाती उत्कीर्ण पट्टिका

उदयगिरि की एक प्रमुख गुफा में हाथीगुंफा अभिलेख उत्कीर्ण है, जो ब्राह्मी लिपि में लिखा गया है। यह अभिलेख राजा खारवेल के विजयी सैन्य अभियानों से लेकर

जनकल्याण हेतु किए गए पुण्य कार्यों तक की प्रतिवर्ष की उपलब्धियों का वर्णन करता है। खारवेल ने सौ प्रदेशों से 'मुनियों एवं ऋषियों की परिषद' की स्थापना का गौरवपूर्ण उल्लेख किया है तथा स्वयं को 'असामान्य सद्‌गुणों से युक्त, सर्वमतों का सम्मानकर्ता और समस्त देवालयों का पुनरुद्धारक' घोषित किया है। एक बार पुन: हम पाते हैं कि एक नरेश सभी दर्शनों एवं मतों को संरक्षण प्रदान करने में गौरव का अनुभव करता था। यह वही आधारभूत तत्व है जिसे हम 'भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि' कह सकते हैं।

आइए विचार करें

लगभग दो सहस्राब्दी पूर्व के इन शैलकृत कक्षों की समरूपता पर ध्यान दीजिए। शिल्पकारों को केवल छेनी और हथौड़ी से यह अद्‌भुत दक्षता कैसे प्राप्त हुई होगी? कल्पना कीजिए कि आप उस युग में एक शिल्पी हैं और अपने कौशल से पत्थर को कला में रूपांतरित कर रहे हैं। आप किन उपकरणों का प्रयोग करेंगे?

दक्षिण में साम्राज्य और जन-जीवन

भारत भूमि के दक्षिणी भाग में दूसरी या तीसरी शताब्दी सा.सं.पू. से लेकर तीसरी शताब्दी सा.सं. तक का कालखंड तीन महान शक्तिशाली राजवंशों के उत्कर्ष का साक्षी रहा— चेर, चोल, एवं पांड्य। ये वंश आपसी प्रतिद्वंद्विता के साथ-साथ व्यापार एवं संस्कृति की उन्नति में भी योगदान देते रहे। हमें स्मरण है कि सम्राट अशोक का साम्राज्य सुदूर दक्षिण तक नहीं पहुँचा था (जिसका उल्लेख उन्होंने अपने शिलालेखों में किया है)। इससे यह स्पष्ट होता है कि ये राज्य मौर्य साम्राज्य के चरमोत्कर्ष के समय भी स्वतंत्र रहे। यद्यपि खारवेल ने यह दावा किया था कि उन्होंने दक्षिण भारतीय राजाओं के एक महासंघ को पराजित किया, जो उनकी सीमाओं के लिए संकट थे। परंतु इस युद्ध का स्थान ज्ञात नहीं है और यह भी स्पष्ट नहीं है कि उन्होंने दक्षिण क्षेत्र पर आक्रमण किया था।

आइए विचार करें

चित्र 6.14 में दिए गए मानचित्र में आप विभिन्न राज्यों के नामों के साथ कुछ विशिष्ट चिह्न भी देख सकते हैं। ये चिह्न क्या दर्शाते हैं? विचार कीजिए कि ये प्रत्येक राज्य की विशिष्ट पहचान को किस प्रकार दर्शाते हैं?

उस काल में अनेक महान कवियों का प्रादुर्भाव हुआ, जिनकी रचनाएँ 'संगम साहित्य' में संग्रहित हैं। इसी कारण उस संपूर्ण युग को 'संगम युग' कहा जाता है। संगम

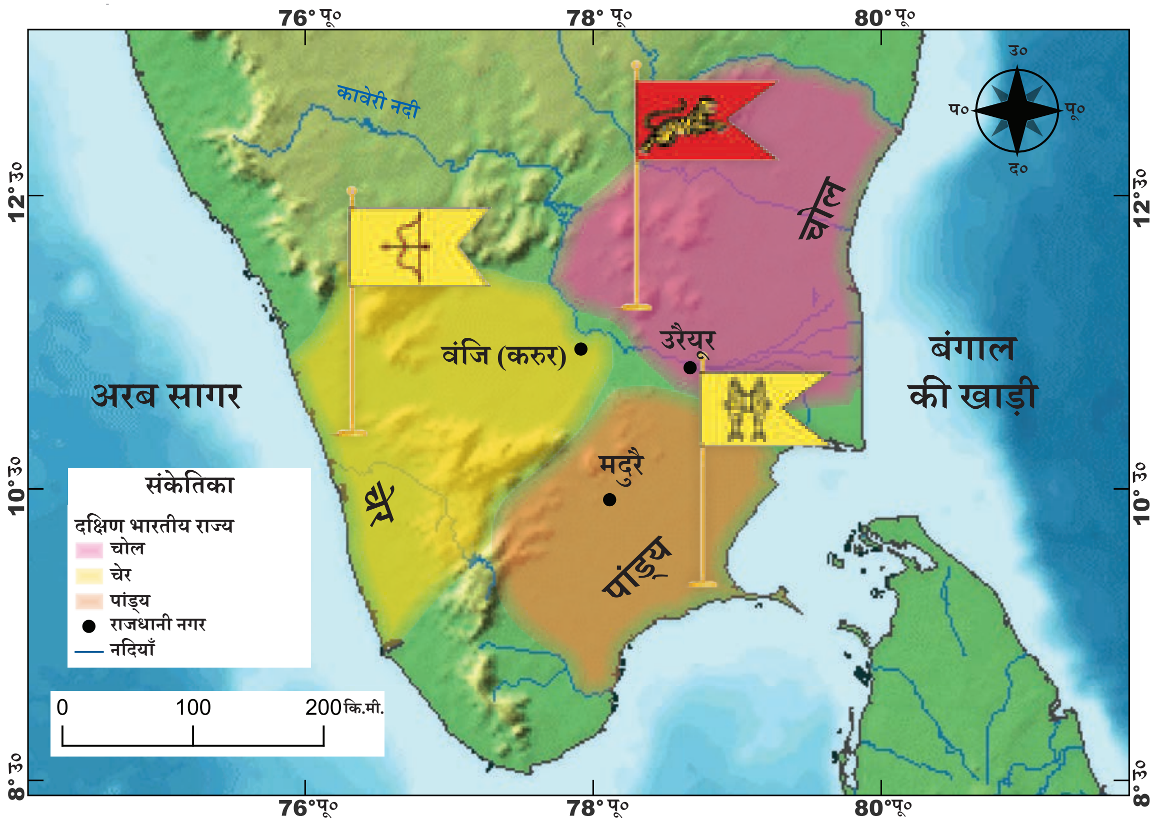

चित्र 6.14 — दक्षिण में राज्य (सीमाएँ अनुमानित हैं और समय के साथ बदलती रही हैं)

शब्द संस्कृत के 'संघ' से उत्पन्न है, जिसका अर्थ होता है 'समिति' या 'एकत्र होना'। इस संदर्भ में, यहाँ इसका तात्पर्य कवियों की सभाओं से है। संगम साहित्य दक्षिण भारत का प्राचीनतम साहित्य है, जिसमें विभिन्न काव्य-संग्रहों का समावेश है। ये रचनाएँ तत्कालीन युग की समाज-व्यवस्था और संस्कृति के अध्ययन में इतिहासकारों के लिए महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं। मुख्यतः संगम काव्य में अत्यंत कुशल एवं सरल भाषा-शैली में व्यक्तिगत भावनाएँ (जैसे– प्रेम) तथा सामाजिक मूल्य (जैसे– वीरता और उदारता) अभिव्यक्त किए गए हैं।

चोल वंश

संगम साहित्य में तीन राजाओं का उल्लेख मिलता है— चोल, चेर और पांड्य। इनमें चोल एक शक्तिशाली राजवंश था, जिसने तीसरी शताब्दी सा.सं.पू. से तेरहवीं शताब्दी सा.सं. तक दक्षिण भारत के विविध भागों पर शासन किया। चोल नरेश करिकाल के विषय में कहा जाता है कि उन्होंने चेर और पांड्य की संयुक्त सेना को पराजित कर अपनी सर्वोच्चता स्थापित की थी।

सिलप्पदिकारम् — पायल की कथा

इस प्रसिद्ध महाकाव्य की रचना संगम-संग्रह के तुरंत बाद की गई थी। इसमें कण्णगी की कथा वर्णित है। वह अपने पति कोवलन के साथ समृद्ध चोल राजधानी पुहार (जिसे आज के कावेरीपट्टनम् से जोड़ा जाता है) में सुखपूर्वक रहती थी। परंतु कोवलन एक नर्तकी पर आसक्त हो गया और उसके पीछे अपनी संपूर्ण संपत्ति नष्ट कर बैठा। कालांतर में जब उसे अपनी भूल का भान हुआ तो वह कण्णगी के पास लौटा। कण्णगी ने उसे क्षमा कर दिया। नए सिरे से जीवन प्रारंभ करने हेतु वे दोनों पांड्य राज्य की राजधानी मदुरै पहुँचे।

चित्र 6.15 — कण्णगी की मूर्ति, चेन्नई

वहाँ कण्णगी ने कोवलन को अपनी एक पायल दी, ताकि वह उसे बेचकर कुछ धन अर्जित कर सके। परंतु दुर्भाग्यवश, कोवलन पर चोरी का झूठा आरोप लगा और पांड्य नरेश ने उसे मृत्युदंड दे दिया। अत्यधिक व्यथित होकर कण्णगी ने अपनी दूसरी पायल दिखा कर कोवलन को निर्दोष सिद्ध किया। नरेश को अपनी भूल का एहसास हुआ और वह शोकवश मृत्यु को प्राप्त हुआ। कण्णगी ने तत्पश्चात मदुरै नगर को श्राप दिया और अग्नि देवता का आह्वान किया, जिन्होंने संपूर्ण नगर को जलाकर राख कर दिया। उसके पश्चात वह पश्चिम में चेर राज्य की ओर बढ़ीं, जहाँ उन्हें देवी के रूप में सम्मान प्राप्त हुआ। आज भी कण्णगी की तमिलनाडु और केरल में पूजा की जाती है।

'सिलप्पदिकारम्' की सरस एवं मार्मिक कविता न्याय के सिद्धांत तथा राजधर्म की महत्ता को उद्घटित करती है। यह महाकाव्य हमें उन समृद्ध व्यापारिक नगरों के माध्यम से तीन राजवंशों की यात्रा कराता है, साथ ही विविध दर्शनों की झलक भी प्रस्तुत करता है।

आइए विचार करें

राजा की मूर्ति देखिए। इस मूर्ति में राजा को कैसे दर्शाया गया है? उनकी देह-मुद्रा, वस्त्र और मुख-मुद्रा उनके सामर्थ्य एवं प्रतिष्ठा के विषय में क्या संकेत देते हैं?

चित्र 6.16 — तमिलनाडु के 'ग्रैंड एनीकट स्मृति उद्यान' में राजा करिकाल की प्रतिमा।

राजा करिकाल ने जनहित के लिए अनेक परियोजनाएँ प्रारंभ की। उन परियोजनाओं में सबसे प्रसिद्ध है 'कल्लनई' या 'ग्रैंड एनीकट'। यह एक संश्लिष्ट जल-वितरण प्रणाली है। यह कावेरी नदी के श्रीरंगम द्वीप से नीचे की ओर भौगोलिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान पर है। इसके द्वारा कावेरी नदी के जल को केंद्रीय एवं दक्षिण कावेरी डेल्टा क्षेत्रों की ओर मोड़ा गया, जिससे अधिकाधिक भूमि कृषि योग्य बन सकी। इस कारण यह क्षेत्र 'दक्षिण का अन्न भंडार' कहलाया। समय के साथ कई बार इसका जीर्णोद्धार होता रहा और यह आज भी प्रयोग में है। यह प्रणाली तमिलनाडु के लाखों लोगों को सिंचाई के लिए जल उपलब्ध कराकर कृषि को सुदृढ़ करती है।

चित्र 6.17 — कल्लनई या ग्रैंड एनीकट

चेर राजवंश

चेरों को 'केरलपुत्र' भी कहा जाता था। उन्होंने तमिलनाडु और केरल के पश्चिमी भागों पर शासन किया। उनकी राजधानी 'वंजि' थी, जो वर्तमान तमिलनाडु का करूर नगर है। उन्होंने इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और आर्थिक उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तमिल साहित्य के विकास को प्रोत्साहन दिया तथा संगम कवियों को आश्रय प्रदान किया।

चेर शासक रोमन साम्राज्य और पश्चिम एशिया के साथ अपने विस्तृत व्यापारिक संबंधों के लिए प्रसिद्ध थे। वे भारत से मसाले, लकड़ी, हाथीदाँत और मोती जैसी वस्तुओं का निर्यात करते थे, जिससे यह क्षेत्र वैश्विक व्यापार का केंद्र बन गया।

आइए विचार करें

क्या आपने कभी सोचा है कि इतिहासकार कई शताब्दियों पहले सुदूर स्थित दो राज्यों के बीच व्यापारिक संबंधों का पता कैसे लगाते हैं? आइए, इस पर विचार-विमर्श करें कि यह जानकारी कैसे प्राप्त की जाती होगी।

चेर राजाओं ने अपने शासनकाल में अनेक सिक्के निर्गत किए। क्या आप यहाँ दिए गए किसी एक सिक्के पर चेर राजवंश का राजचिह्न देख पा रहे हैं?

चित्र 6.18 — चेर राजाओं के सिक्के

पांड्य वंश

तमिलनाडु तथा उसके आस-पास के क्षेत्रों पर पांड्य नरेशों का शासन कई शताब्दियों सा.सं.पू. से चला आ रहा था। इनकी राजधानी वर्तमान 'मदुरै' थी। विभिन्न पांड्य नरेशों ने राज्य का विस्तार किया। ग्रीक लेखक मेगस्थनीज ने अपनी रचना *इंडिका* में इस राज्य का उल्लेख एक समृद्ध एवं सुशासित राज्य के रूप में किया है, जो आंतरिक व्यापार के साथ-साथ ग्रीस एवं रोम जैसी दूरस्थ शक्तियों से व्यापार में संलग्न था। उदाहरण के लिए, खारवेल ने उल्लेख किया है कि उन्हें पांड्य राज्य से सैकड़ों मोती प्राप्त हुए। पांड्य वंश भारतीय उपमहाद्वीप की एक महत्वपूर्ण नौसैनिक शक्ति भी था। उत्तरवर्ती पांड्य नरेशों ने कला, वास्तुकला और समग्र क्षेत्र की समृद्धि में विशेष योगदान दिया।

आइए विचार करें

पांड्य राज्य मोतियों के लिए प्रसिद्ध था। आपके विचार में मोती उस समय व्यापार की दृष्टि से क्यों महत्वपूर्ण था?

पांड्य नरेशों ने अनेक अभिलेखों में यह उल्लेख किया कि वे प्रजा के कल्याण के प्रति अत्यंत सजग थे तथा उन्होंने समस्त दर्शन-परंपराओं और आस्थाओं को संरक्षण एवं प्रोत्साहन प्रदान किया।

इंडो-ग्रीक आक्रमण

चित्र 6.19 — विदिशा के निकट स्थित हेलियोडोरस स्तंभ

दक्षिण भारत की अपनी संक्षिप्त यात्रा के उपरांत अब समय है, उत्तर भारत की ओर लौटने का जहाँ इस काल में एक बिल्कुल भिन्न प्रकार की घटना घटित होने जा रही थी। अब तक हमने कुछ देशी राजवंशों के विषय में अध्ययन किया, किंतु इसी समय में कुछ बाह्य आक्रमणकारियों का आगमन भी हुआ। इन्होंने उत्तर-पश्चिमी सीमा से प्रवेश कर उत्तर-पश्चिम, उत्तर एवं मध्य भारत के कुछ भूभागों पर अधिकार कर लिया।

सर्वप्रथम, आइए हम उस विरासत की चर्चा करें जो एलेक्जेंडर के सिंधु मैदानों में संक्षिप्त अभियान की स्मृति स्वरूप रही। एलेक्जेंडर द्वारा जीते गए क्षेत्रों से पीछे हटने के बाद इन पर क्षत्रपों का शासन रहा। समय के साथ इन क्षत्रपों ने अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित किए, जिन्हें इंडो-ग्रीक के रूप में जाना गया।

मौर्य वंश के बाद, उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र (वर्तमान पाकिस्तान और अफगानिस्तान के समीपवर्ती क्षेत्र) इंडो-ग्रीक आक्रमण हेतु सुगम क्षेत्र बन गया। यद्यपि, जब वे विजेता के रूप में आए, तो वे समृद्ध स्थानीय संस्कृति से बहुत प्रभावित हुए। इस सांस्कृतिक संपर्क ने शासन, कला, भाषा और दैनिक जीवन में ग्रीक और भारतीय तत्वों के मिश्रण से क्षेत्र के सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार दिया।

विदिशा (मध्य प्रदेश) के पास स्थित हेलियोडोरस स्तंभ ऐसे संबंधों का एक उल्लेखनीय उदाहरण है। इसका नाम एक इंडो-ग्रीक राजदूत पर पड़ा, जिसने अपने

अभिलेखों में वासुदेव की स्तुति 'देवताओं के देवता' के रूप में की है। इस अभिलेख में यह भी अंकित है— 'तीन अमर उपदेश (पदचिह्न) आत्म-संयम, दान, चेतना हैं [...] जिनका आचरण स्वर्ग की प्राप्ति कराता है।'

उत्तर भारत में उत्खनन के दौरान पुराविदों को अनेक इंडो-ग्रीक सिक्के प्राप्त हुए हैं, जिनसे हमें इन शासकों के बारे में अधिकांश जानकारी मिली है। ये सिक्के सोने, चाँदी, तांबे और गिलट धातु से बने थे, जिन पर प्रायः एक ओर राजा और दूसरी ओर ग्रीक देवता अंकित होते थे। हालाँकि, कुछ सिक्कों पर वासुदेव-कृष्ण और लक्ष्मी जैसे भारतीय देवी-देवता भी अंकित थे। इंडो-ग्रीक शासन इंडो-सीथियन या शकों के आक्रमणों के साथ समाप्त हो गया।

आइए पता लगाएँ

आपके विचार में कुछ इंडो-ग्रीक सिक्कों पर वासुदेव-कृष्ण या लक्ष्मी जैसे देवी-देवताओं के चित्र अंकित होने का क्या अर्थ रहा होगा?

चित्र 6.20 — एक इंडो-ग्रीक चाँदी का सिक्का, जिसके एक ओर वासुदेव-कृष्ण अंकित हैं।

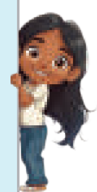

इसे अनदेखा न करें

शकों या इंडो-सीथियन ने भी उपमहाद्वीप के उत्तर पश्चिम भाग पर आक्रमण किया और दूसरी शताब्दी सा.सं.पू. से पाँचवी शताब्दी सा.सं. तक शासन किया। इनका उदय इंडो-ग्रीक के पतन के पश्चात हुआ और ये कुषाणों के आगमन तक सत्ता में रहे। इस अवधि के दौरान शक संवत पंचांग विकसित किया गया। यह ग्रेग्रोरियन कैलेंडर से 78 साल पीछे है (जनवरी से मार्च को छोड़कर, यह 79 साल पीछे होता है)। इसे 1957 में भारतीय राष्ट्रीय पंचांग के रूप में स्वीकार किया गया।

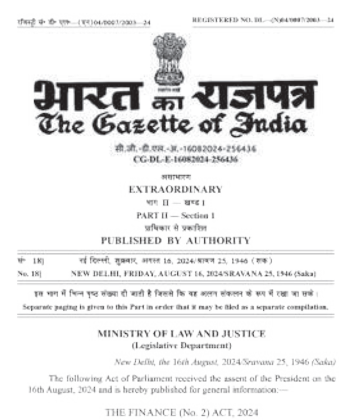

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

CG-DL-E-16082024-256436

EXTRAORDINARY

PART II — Section 1

PUBLISHED BY AUTHORITY

No. 18] NEW DELHI, FRIDAY, AUGUST 16, 2024/SRAVANA 25, 1946 (Saka)

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF LAW AND JUSTICE
(Legislative Department)

New Delhi, the 16th August, 2024/Sravana 25, 1946 (Saka)

The following Act of Parliament received the assent of the President on the 16th August, 2024 and is hereby published for general information:—

THE FINANCE (No. 2) ACT, 2024

चित्र 6.21 — ध्यान दें, भारत सरकार के राजकीय प्रकाशन में तिथियों को ग्रेग्रोरियन कैलेंडर तथा शक संवत के अनुसार दर्शाया गया है।

कुषाणों का उदय

कुषाण मूलतः मध्य एशिया के निवासी थे। संभवतः उन्होंने दूसरी शताब्दी सा.सं. में भारत में प्रवेश किया। अपने चरमोत्कर्ष के समय उनका साम्राज्य मध्य एशिया से लेकर उत्तर भारत के विशाल भूभाग तक विस्तृत था। उनके शासन में व्यापक सांस्कृतिक मेल-जोल देखने को मिलता है। इसका भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास पर गहरा प्रभाव पड़ा। जब कनिष्क अपने सैन्य अभियानों में व्यस्त नहीं रहते थे, तब वे कला और संस्कृति को प्रोत्साहित करते थे, जिससे नवीन कला शैलियों का विकास हुआ।

चित्र 6.22 — कनिष्क की सिरविहीन मूर्ति

आइए पता लगाएँ

इस विशाल मूर्ति (1.85 मीटर ऊँची) को ध्यान से देखिए। इसके वस्त्र, आयुध और जूतों को देखिए। इनसे इस आकृति के बारे में क्या पता चलता है?

यह प्रसिद्ध 'सिरविहीन' मूर्ति कनिष्क की है, जो संभवतः कुषाण वंश के सबसे शक्तिशाली शासक थे। इस मूर्ति पर ब्राह्मी लिपि में अंकित है— 'महाराजा राजाधिराज देवपुत्र कनिष्क'। इसका अर्थ है— 'राजाओं के राजा, महाराजा, देवपुत्र कनिष्क'।

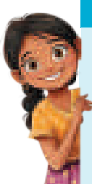

आइए पता लगाएँ

इन सिक्कों को ध्यान से देखिए। सम्राट के अतिरिक्त और कौन इस मुद्रा पर अंकित है?

चित्र 6.23 — कनिष्क के सिक्के

चित्र 6.23 में प्रदर्शित प्रथम सिक्के में, कनिष्क को भाले के साथ 'राजाधिराज' की उपाधि धारण करते हुए दर्शाया गया है। सिक्के के दूसरे भाग में महात्मा बुद्ध की मूर्ति अंकित है, जिस पर ग्रीक लिपि में बुद्ध (BO△△O) लिखा है। द्वितीय सिक्के में एक ओर सम्राट का चित्र है और दूसरी ओर शिवजी को नंदी के साथ दर्शाया गया है। आइए, निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार करें —

- क्यों एक शक्तिशाली शासक ने अपने सिक्कों पर महात्मा बुद्ध और शिवजी को अंकित किया होगा? यह उसके मूल्यों और प्राथमिकताओं के बारे में क्या दर्शाता है?
- क्या आप आज के कुछ आधुनिक उदाहरण जानते हैं, जहाँ मुद्राओं पर प्रतीकात्मक चित्र अंकित किए जाते हैं?

कुषाणों ने रेशम मार्ग (सिल्क रूट, चित्र 6.25) के महत्वपूर्ण भागों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था। इस कारण उनके शासनकाल में व्यापार में वृद्धि हुई, जिसने भारत को एशिया के अन्य भागों और पश्चिमी देशों से जोड़ दिया।

इंडो-ग्रीक शासकों के द्वारा स्थापित परंपरा को जारी रखते हुए, गांधार और मथुरा कला शैली द्वारा दर्शाई गई कुषाण कला और वास्तुकला भारतीय और ग्रीक शैलियों के सम्मिश्रण के लिए प्रसिद्ध है। मूर्तियों में विविध देवताओं का चित्रण मिलता है, जो विभिन्न विचारधाराओं के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को दर्शाता है। इस युग में सूर्य जैसे देवताओं के चित्रण का उदय हुआ, जो मनुष्यों के समान दिखते थे। इससे धार्मिक कला के विकास में वृद्धि हुई, जिसने उपमहाद्वीप में बाद की मंदिर वास्तुकला के लिए आधार तैयार किया।

गांधार कला शैली मुख्यतः पंजाब के पश्चिमी भागों में विकसित हुई। इसमें ग्रीक-रोमन एवं भारतीय तत्वों का समायोजन दिखाई देता है। इन शिल्पों को प्रायः स्लेटी-काले शिस्ट पत्थर पर अत्यंत सूक्ष्म विवरणों के साथ तराशा गया है। विशेष रूप से बुद्ध प्रतिमाओं में इस शैली का अद्भुत सौंदर्य देखा जा सकता है, जिसमें उनका शरीर और उड़ते हुए वस्त्र वास्तविक प्रतीत होते हैं।

चित्र 6.24 — गांधार कला शैली में निर्मित एक बोधिसत्व (भावी बुद्ध) का शिरोभाग। इसमें भारतीय और ग्रीक विशेषताओं के समन्वय पर ध्यान दीजिए।

आइए विचार करें

क्या आप जानते हैं कि गांधार कहाँ है? क्या यह आपको महाकाव्य *महाभारत* के किसी पात्र की याद दिलाता है?

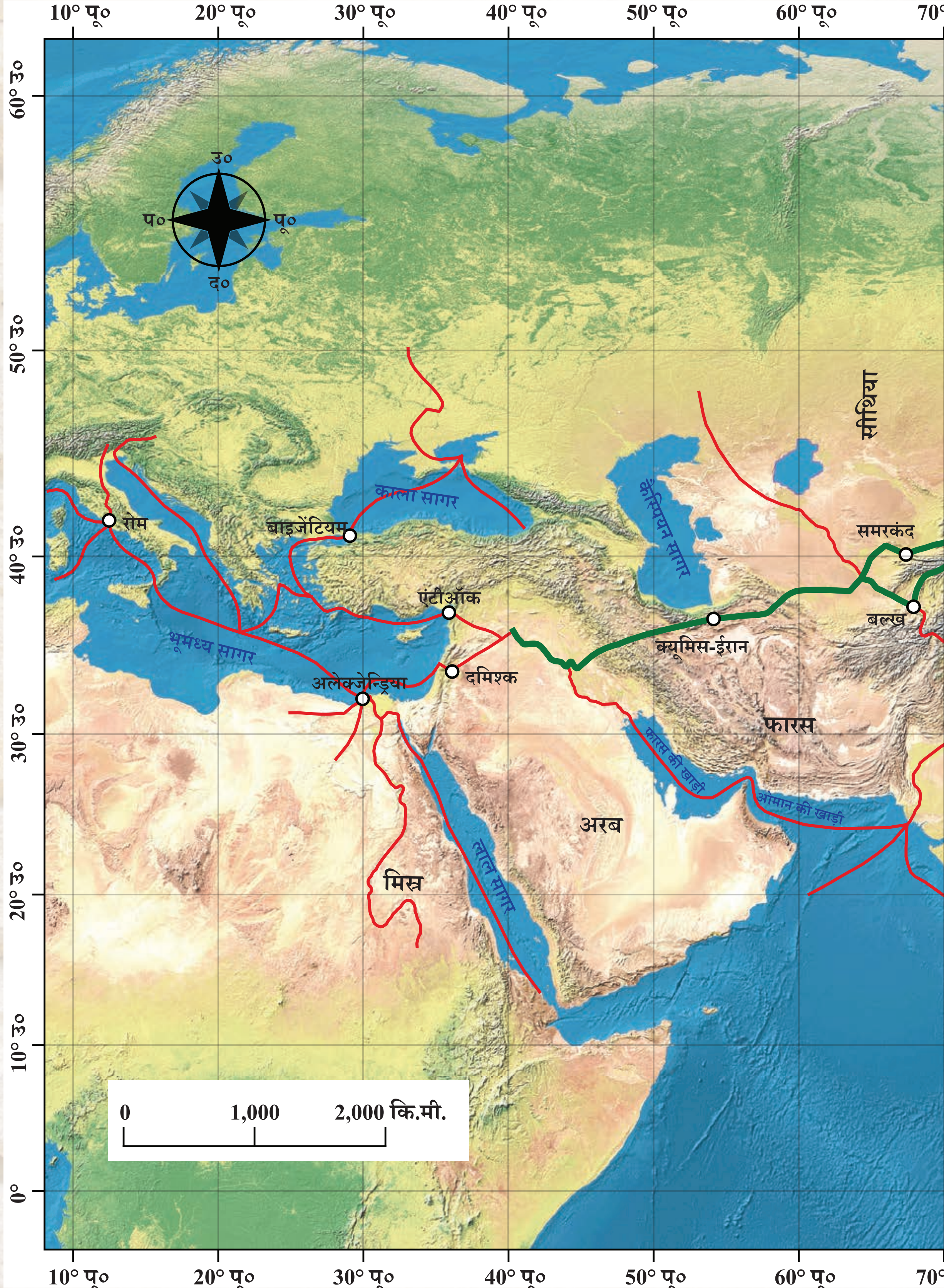

चित्र 6.25 — प्राचीन विश्व के कुछ प्रमुख व्यापारिक मार्ग। हरे रंग से चिह्नित मार्ग रेशम मार्ग को दर्शाता है जो चीन को भूमध्यसागरीय क्षेत्र से जोड़ता है और मध्य-एशिया और फारस से होकर गुजरता है।

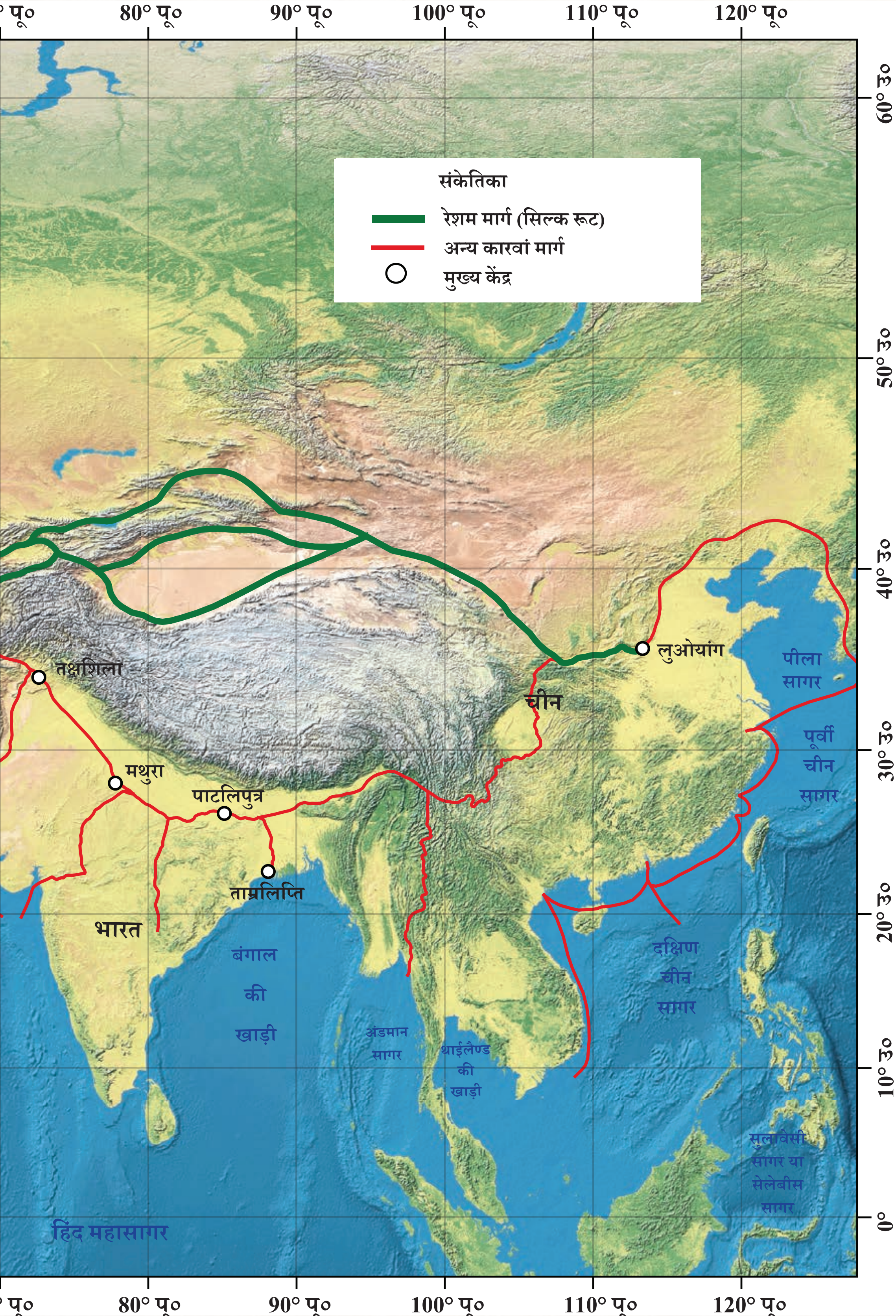

संकेतिका
रेशम मार्ग (सिल्क रूट)
अन्य कारवां मार्ग
मुख्य केंद्र
80° पू०
90° पू०
100° पू०
110° पू०
120° पू०
60° उ०
50° उ०
40° उ०
30° उ०
20° उ०
10° उ०
0°
लुओयांग
तक्षशिला
चीन
पीला सागर
पूर्वी चीन सागर
मथुरा
पाटलिपुत्र
ताम्रलिप्ति
भारत
बंगाल की खाड़ी
दक्षिण चीन सागर
अंडमान सागर
थाईलैण्ड की खाड़ी
सुलावेसी सागर या सेलेबीस सागर
हिंद महासागर

मथुरा कला शैली, वर्तमान उत्तर प्रदेश के मथुरा क्षेत्र में विकसित हुई थी, जो एक विशिष्ट भारतीय कला शैली के रूप में जानी जाती है। गांधार शैली के विपरीत इस शैली में मूर्तियों के लिए मुख्य रूप से लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ था। इसके साथ ही इस कला शैली में ग्रीक-रोमन प्रभाव भी बहुत कम दिखाई देता है। यह कला शैली विशेषतः भारतीय देवी-देवताओं की प्रतिमूर्तियों के लिए जानी जाती है, जिसमें कुबेर, लक्ष्मी, शिव, बुद्ध, यक्ष और यक्षिणियों की मूर्तियाँ सम्मिलित हैं। इन मूर्तियों में शरीर की आकृतियाँ प्रायः मृदुलाकार (गोल-मटोल) और चिकनी होती हैं।

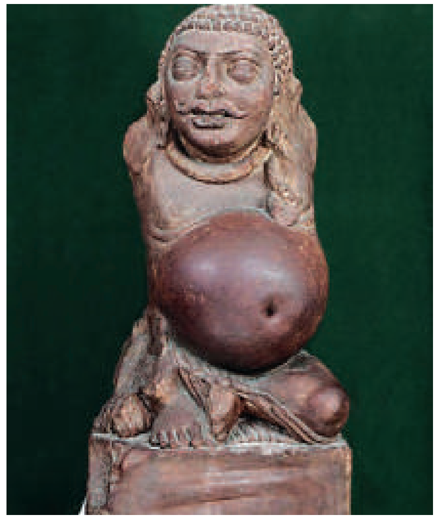

चित्र 6.26 — मथुरा कला शैली में बनी कुबेर (धन के देवता) की मूर्ति। क्या आपने इनकी मूँछों को देखा? मूँछें कुछ भारतीय मूर्तियों की एक विशेषता हैं।

आइए पता लगाएँ

अब आप मथुरा और गांधार कला शैलियों की मूल विशेषताओं से परिचित हो चुके हैं। अगले पृष्ठ पर चित्र 6.27 में दी गई कलाकृतियों को देखिए और पहचानिए। क्या आप बता सकते हैं कि चित्र में दी गई प्रत्येक कलाकृति किस कला शैली से संबंधित है? अपने विचार कारण सहित लिखिए और सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

यद्यपि इस काल के दौरान सत्ता के लिए राजनीतिक संघर्ष और प्रतिस्पर्धा थी, तथापि यह समय आदान-प्रदान के द्वारा एक मिश्र सांस्कृतिक धरोहर का भी था। यह विशेष रूप से कला और वास्तुशिल्प में दृष्टिगोचर होता है, जहाँ शैलियों ने एक-दूसरे को प्रभावित किया, परंतु उनमें भारतीय विषय विशेषतः हिंदू और बौद्ध परंपराएँ प्रमुख बनी रहीं। इसी समय संस्कृत साहित्य का भी उत्कर्ष हुआ तथा *महाभारत* एवं *रामायण* जैसे महाकाव्यों का संकलन हुआ (संदर्भ हेतु कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक का 'अनेकता में एकता' अध्याय देखें)।

इतिहास के इस चित्रपट (टेपेस्ट्री ऑफ द पास्ट) को किसी एक राजा या राज्य की दृष्टि से देखने के स्थान पर एक सतत प्रक्रिया के रूप में समझना चाहिए, जो समय के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समावेशन (एसीमिलेशन) के द्वारा विकसित होती है।

1

2

3

4

5

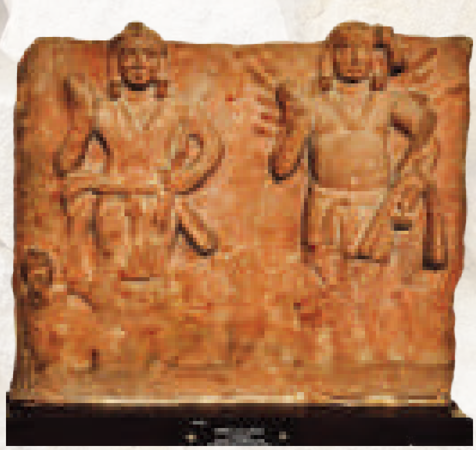

6

चित्र 6.27.1 — बुद्ध के परिनिर्वाण का एक दृश्य; चित्र 6.27.2 — बोधिसत्व मैत्रेय;
चित्र 6.27.3 — कुषाण भक्तों द्वारा शिवलिंग की पूजा; चित्र 6.27.4 — दो नागिनों के बीच एक नाग (यह शिलालेख कनिष्क के शासनकाल के आठवें वर्ष का उल्लेख करता है);
चित्र 6.27.5 — कार्तिकेय (युद्ध के देवता) एवं अग्निदेव; चित्र 6.27.6 — दंड मुद्रा में महात्मा बुद्ध

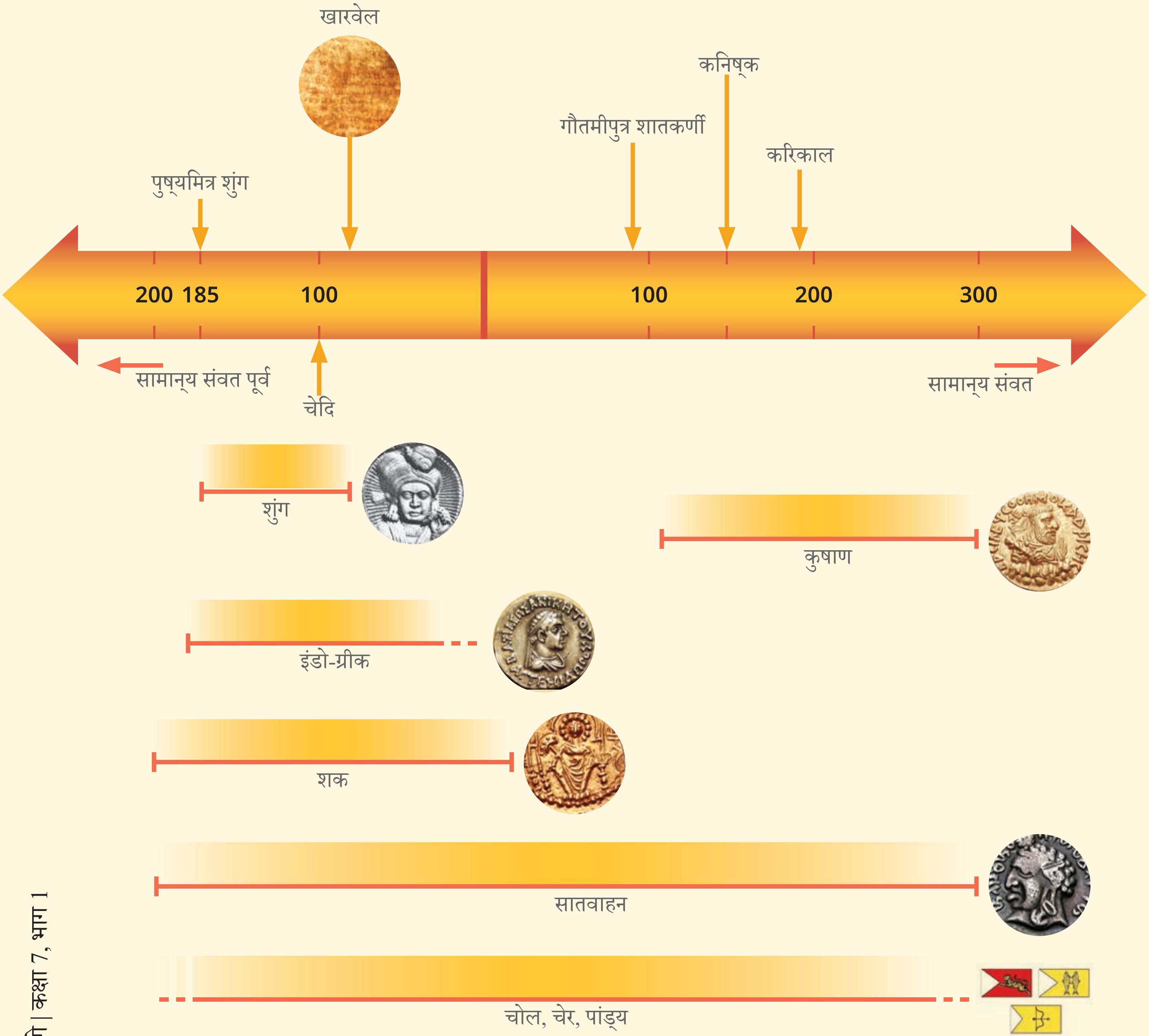

चित्र 6.28

आगे बढ़ने से पहले...

- मौर्य साम्राज्य के विघटन के पश्चात भारतीय उपमहाद्वीप में कई छोटे-बड़े राज्यों का उदय हुआ।
- आंतरिक संघर्षों के साथ-साथ अनेक विदेशी आक्रमण भी हुए, जिसके फलस्वरुप राजनीतिक शक्तियों के पुनर्गठन की प्रक्रिया आरंभ हुई।

- इस काल में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के द्वारा कला, स्थापत्य और मुद्रण जैसी नई शैलियों का विकास हुआ। इन शैलियों में भारतीय विषय की प्रधानता दिखाई दी तथा संस्कृत साहित्य का चरमोत्कर्ष हुआ।
- यह काल आंतरिक और बाह्य व्यापारिक गतिविधियों में उल्लेखनीय विकास का समय भी रहा।

प्रश्न और क्रियाकलाप

1. मौर्योत्तर काल को पुनर्गठन का काल क्यों कहा जाता है?
2. संगम साहित्य पर 150 शब्दों में एक लेख लिखिए।
3. इस अध्याय में उल्लिखित किन शासकों ने अपनी उपाधि में माता का नाम सम्मिलित किया। उन्होंने ऐसा क्यों किया?
4. इस अध्याय में वर्णित किसी एक राज्य जो आपको रोचक लगता है, के विषय में 250 शब्दों का एक लेख लिखिए। आपने उस राज्य का चयन क्यों किया? अपना लेख कक्षा में प्रस्तुत कीजिए और यह जानने का प्रयास कीजिए कि आपके सहपाठियों ने कौन-से राज्यों का सर्वाधिक चयन किया है।
5. कल्पना कीजिए कि आपको एक स्वतंत्र राज्य स्थापित करने का अवसर प्राप्त हुआ है। आप कौन-सा राजचिह्न चुनेंगे और क्यों? आप एक शासक के रूप में कौन-सी उपाधि धारण करेंगे? अपने राज्य के विषय में एक लेख लिखिए जिसमें राज्य के मूल्य, नियमावली एवं विशिष्टताएँ सम्मिलित हों।
6. आपने मौर्योत्तर काल के वास्तु कलात्मक विकास के विषय में पढ़ा है। भारतीय उपमहाद्वीप के एक रेखांकित मानचित्र पर इस अध्याय में उल्लिखित कुछ स्थापत्य कलाओं के स्थान को चिह्नित कीजिए।

छत्तीसगढ़ के सन्दर्भ में

दक्षिण कोसल में सातवाहनों के राज्यों का पता ह्यएनसांग के यात्रा विवरण से भी चलता है। उसने लिखा है "प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन दक्षिण कोसल की राजधानी के निकट के एक विहार में निवास करता था और उसके समय में कोसल का राजा कोई सातवाहन वंशीय था।" चीनी यात्री के इस कथन की पुष्टि बिलासपुर जिले में सक्ती के निकट गुंजी (ऋषभतीर्थ) में प्राप्त शिलालेख से भी होती है, जिसमें सातवाहन राजा कुमारवरदत्त का उल्लेख है। सातवाहन काल में निर्मित पाषाण प्रतिमाएं बिलासपुर जिले में प्राप्त हुई है। इसी समय का एक काष्ठ स्तंभ लेख रायपुर संग्रहालय के संग्रह में है, जो बिलासपुर जिले के किरारी नामक स्थान में प्राप्त हुआ था।

भारत का एकलौता काष्ट स्तंभ
ग्राम- किरारी, बिलासपुर

गुप्त काल— अथक सृजनशीलता का युग

अध्याय 7

न बल के द्वारा, न केवल कूटनीति से अधर्म का नाश किया जा सकता है; न ही चाटुकारिता से धर्म की स्थापना की जा सकती है। राज्य की वास्तविक शक्ति विद्या और बुद्धि में निहित होती है, न कि भोगवृत्ति में।

— कालिदास (रघुवंशम्)

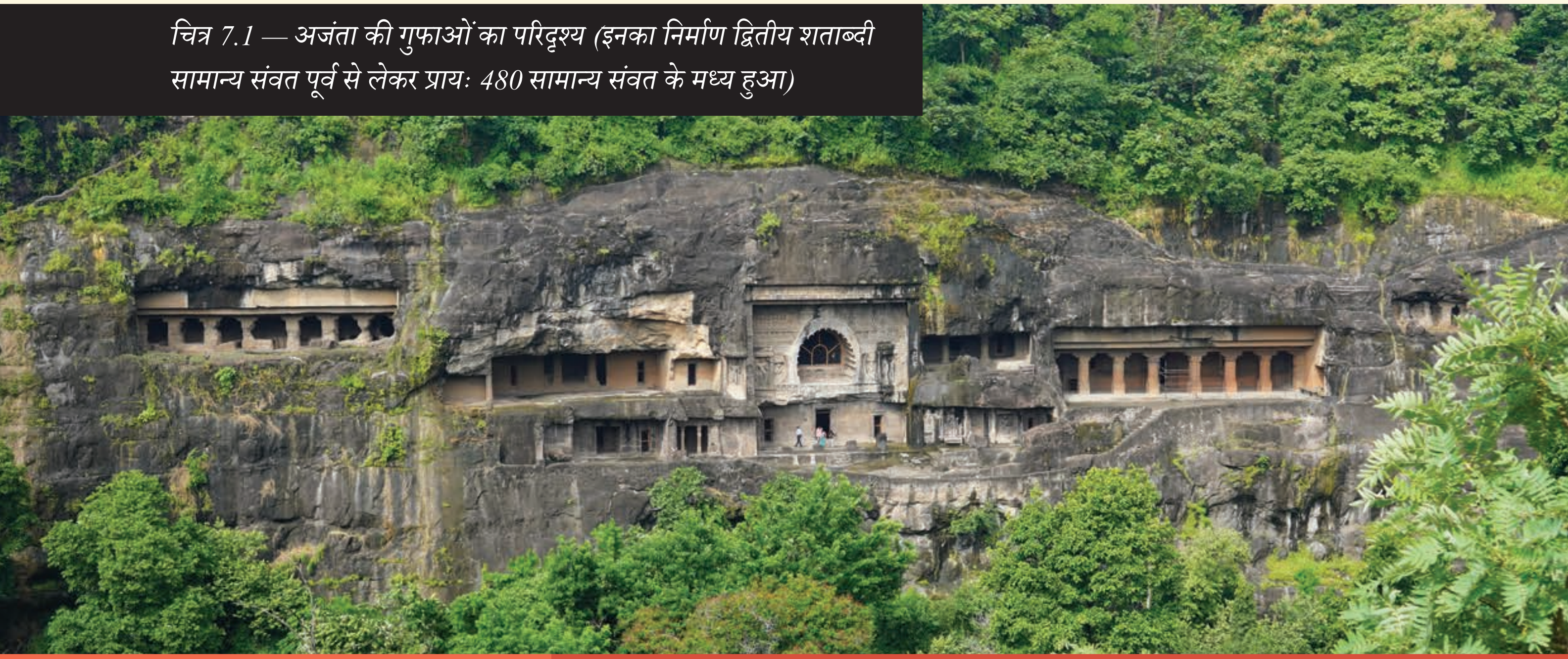

चित्र 7.1 — अजंता की गुफाओं का परिदृश्य (इनका निर्माण द्वितीय शताब्दी सामान्य संवत पूर्व से लेकर प्रायः 480 सामान्य संवत के मध्य हुआ)

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *गुप्त कौन थे? गुप्त काल को कभी-कभी भारतीय इतिहास में 'उत्कृष्ट युग' (क्लासिकल ऐज) क्यों कहा जाता है?*
2. *इस समय भारतीय उपमहाद्वीप के अन्य भागों में क्या हो रहा था?*
3. *इस काल के कुछ महान व्यक्ति कौन थे? आज भी उनके बारे में प्रचलित कथाएँ क्यों महत्वपूर्ण हैं?*

0783CH07

ध्रुव और भविषा अभी-अभी पांड्य राज्य की यात्रा से लौटे थे। वहाँ उन्होंने भव्य बाजारों को देखा, नौका-विहार किया और कुछ रोमन व्यापारियों से भी मिले, जो मोतियाँ खरीद रहे थे। अब वे पुन: 'इतिहास' काल-यंत्र का उपयोग कर कुछ और शताब्दियों की यात्रा करना चाहते थे। "वह समय कैसा होगा?" उन्होंने सोचा। "क्या नगर पहले जैसे ही होंगे? लोग और समाज कैसे होंगे? क्या उनमें परिवर्तन हुआ होगा? शासन प्रणाली कैसी होगी? क्या कोई नवीन साहित्य या कला देखने को मिलेगी?" अभी वे इन प्रश्नों के उत्तर की प्रतीक्षा में ही थे कि तभी 'इतिहास' उन्हें एक नवीन युग की ओर ले चला...

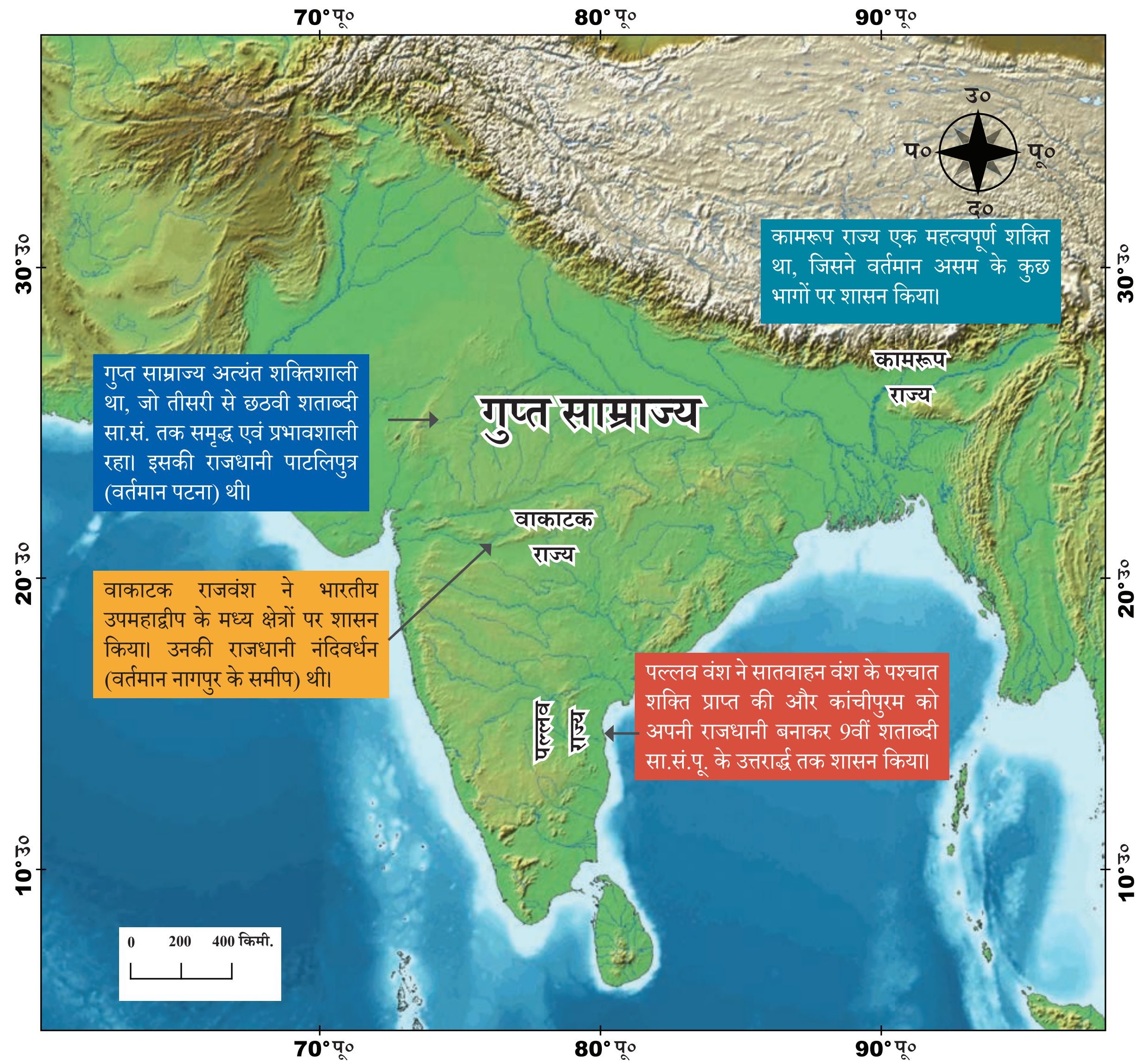

चित्र 7.2 — तीसरी से छठवीं शताब्दी सा.सं. तक की अवधि के साम्राज्य और राज्य

भविषा — *इतने राज्य और साम्राज्य देखकर मेरा सिर घूम रहा है। मैं यह सब कैसे याद रख पाऊँगी?*

ध्रुव — *चिंता मत करो, भविषा! चलो, पहले यह समझते हैं कि उस समय क्या हो रहा था, फिर हमें याद हो जाएगा।*

भविषा — *क्या उस समय की कोई वस्तु हमें अपने घर के समीप भी देखने को मिल सकती है?*

ध्रुव — *चलो, अपने काल-यंत्र का प्रयोग करते हैं और पता लगाते हैं।*

भविषा ने काल-यंत्र 'इतिहास' को सक्रिय किया और वे दोनों दिल्ली के महरौली पहुँच गए, जहाँ प्रसिद्ध लौह-स्तंभ खड़ा है।

पास ही वे एक टूर गाइड को सुनते हैं, जो इस लौह-स्तंभ की महत्ता बता रहा होता है।

चित्र 7.3 — महरौली (दिल्ली) का लौह-स्तंभ

टूर गाइड — *यह* **लौह-स्तंभ** *1600 वर्ष से भी अधिक प्राचीन है और आज भी बिना जंग लगे खड़ा है। यह प्राचीन भारत के उन्नत धातु विज्ञान का प्रमाण है।*

भविषा — *1600 वर्ष प्राचीन और अब तक इसमें जंग नहीं लगा! चलो, इसे समीप से देखते हैं।*

भविषा — *देखो! क्या यही प्रसिद्ध 'लौह-स्तंभ' है?*

ध्रुव — *वाह! इस पर कुछ लिखा है पर मैं पढ़ नहीं पा रहा हूँ।*

भविषा — *इसे किसने बनवाया होगा और क्यों? चलो, सुनते हैं गाइड चाचा क्या बता रहे हैं।*

टूर गाइड — *यह छह टन का स्तंभ, गुप्त साम्राज्य के शासक चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में स्थापित किया गया था। संभवत: इसे पहले मध्यप्रदेश स्थित उदयगिरि की गुफा के सम्मुख स्थापित किया गया था और कुछ शताब्दियों के बाद दिल्ली लाया गया। यह स्तंभ भगवान विष्णु को समर्पित था और इस पर लिखे अभिलेख सम्राट की विजयगाथाओं का वर्णन करते हैं।*

दोनों — *यह तो बहुत रोचक है! हम इस सम्राट और उसके साम्राज्य के विषय में और अधिक जानने को उत्सुक हैं।*

आइए, गुप्त साम्राज्य के इतिहास की रोमांचक यात्रा का आरंभ करें!

इसे अनदेखा न करें

यदि किसी साइकिल को मात्र एक वर्ष के लिए बाहर छोड़ दिया जाए, तो उसमें जंग लग जाएगा। परंतु यह स्तंभ शताब्दियों से खुले आकाश के नीचे खड़े रहने के उपरांत भी वैसा ही है। वैज्ञानिकों ने इसके रहस्य को जानने का प्रयास किया है और उनका मानना है कि ऐसा स्तंभ के ऊपर एक विशिष्ट रासायनिक पतली परत के कारण है, जो एक विशेष प्रकार के लौह और वायुमंडल में उपस्थित ऑक्सीजन की प्रतिक्रिया से बनी है। यह परत लोहे को क्षरण से बचाती है।

एक नई शक्ति का उदय

तीसरी शताब्दी सा.सं. तक उपमहाद्वीप के उत्तर और उत्तर-पश्चिम में फैला कुषाण साम्राज्य दुर्बल होने लगा। इसके पश्चात नए राज्यों का उदय हुआ। इससे एक नवीन काल की भूमिका बनी और गुप्त वंश का प्रादुर्भाव हुआ।

गुप्तों की उत्पत्ति को लेकर विभिन्न मत हैं, परंतु यह व्यापक रूप से माना जाता है कि उनका उद्भव वर्तमान उत्तर प्रदेश के समीपवर्ती क्षेत्र में शासक के रूप में हुआ। समय के साथ वे प्रभुत्वशाली हुए और एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की। भारतीय इतिहास में गुप्तकाल को अत्यंत विलक्षण माना जाता है, जिसमें अनेक क्षेत्रों में प्रगति हुई। विशेष रूप से चंद्रगुप्त द्वितीय के समय में कला, वास्तुकला, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई, जिसकी छाप आज भी विद्यमान है।

दिल्ली के लौह स्तंभ पर उत्कीर्ण अभिलेख 'चंद्र' नामक राजा का उल्लेख करता है, जिसे इतिहासकारों ने चंद्रगुप्त द्वितीय माना है (ध्यान रहे कि यह चंद्रगुप्त मौर्य नहीं हैं, जो

मौर्य वंश से थे)। चंद्रगुप्त द्वितीय को 'विक्रमादित्य' के नाम से भी जाना जाता है। वे गुप्त वंश के प्रसिद्ध शासकों में से एक थे। वे भगवान विष्णु के उपासक थे और उनके वाहन गरुड़ की आकृति विक्रमदित्य के अनेक अभिलेखों पर मिलती है।

इसे अनदेखा न करें

क्या आपने चंद्रगुप्त द्वितीय के नाम में 'द्वितीय (II)' देखा? इतिहासकारों ने यह संख्या इसलिए जोड़ी क्योंकि उनसे पूर्व एक अन्य **'चंद्रगुप्त'** भी थे अर्थात उनके पितामह। भारतीय परिवारों में यह परंपरा आज भी कहीं-कहीं देखी जाती है कि पहले पुत्र का नाम उसके पितामह के नाम पर रखा जाता है। चंद्रगुप्त प्रथम गुप्त साम्राज्य के प्रारंभिक विस्तार की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण थे। वे अपने सिक्कों और रणनीतिक गठबंधनों के लिए प्रसिद्ध थे, जिनके माध्यम से उन्होंने शक्ति का केंद्रीकरण किया और सुदृढ़ साम्राज्य की नींव रखी।

चित्र 7.4 — स्वर्ण मुद्रा, जिसमें सम्राट चंद्रगुप्त प्रथम अपनी रानी कुमारदेवी के साथ अंकित हैं। सिक्के के पृष्ठ भाग में आसन पर विराजित देवी हैं, जिन्हें लक्ष्मी के रूप में पहचाना गया है।

योद्धा शासक

प्रयागराज में स्थित स्तंभ अभिलेख जिसे 'प्रयाग प्रशस्ति' भी कहा जाता है, चंद्रगुप्त द्वितीय के पिता समुद्रगुप्त की उपलब्धियों की प्रशंसा में है। इस अभिलेख के लेखक राजकवि हरिषेण के अनुसार राजा की महत्वाकांक्षा 'धरणी-बंध' होना या 'संपूर्ण पृथ्वी को एक करना' था। इस उद्देश्य से उन्होंने अनेक युद्ध लड़े, कई राजाओं को पराजित कर उनके राज्यों पर अधिकार किया तथा अपने साम्राज्य का विस्तार किया। कुछ पराजित राजाओं द्वारा सम्राट की अधीनता स्वीकार करने और भेंट देने

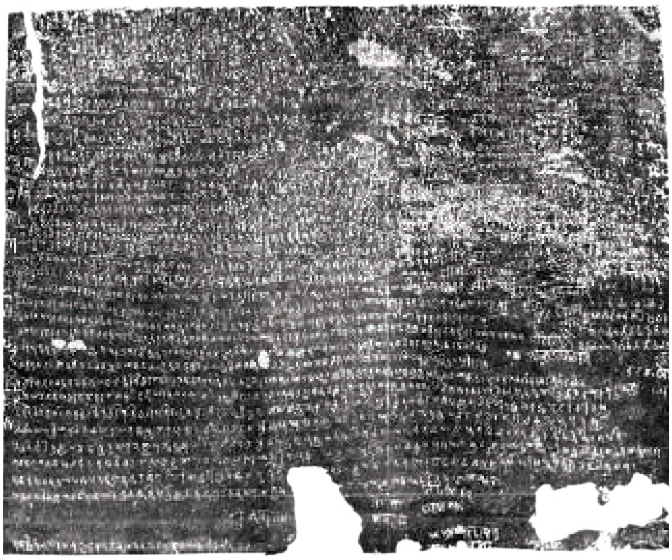

चित्र 7.5 — हरिषेण द्वारा लिखित एक अभिलेख

पर उन्हें पुनर्स्थापित कर दिया गया। कई अन्य राजाओं ने उनकी शक्ति से भयभीत होकर बिना युद्ध के ही समर्पण कर दिया।

हरिषेण ने यह भी लिखा है कि सम्राट समुद्रगुप्त ने कला, ज्ञान और व्यापार को प्रोत्साहन दिया जिससे उनका राज्य समृद्ध और सफल बना। समुद्रगुप्त ने एक सिक्के पर स्वयं को वीणा बजाते हुए (चित्र 7.6) दर्शाया है।

आइए विचार करें

आपके विचार से राजाओं ने अपनी उपलब्धियों को अभिलेखों के माध्यम से क्यों प्रस्तुत किया होगा?

चित्र 7.6 — सिक्के पर वीणा वादन करते हुए समुद्रगुप्त, जिसके पृष्ठ भाग पर देवी लक्ष्मी हैं।

पुनरावलोकन करें

महत्वाकांक्षी राजा कभी-कभी शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित करने और अपनी विरासत के लिए 'अश्वमेध यज्ञ' का आयोजन करते थे। ऐसे आयोजनों की स्मृति में विशेष सिक्के बनवाए जाते थे (चित्र 7.7)।

चित्र 7.7 — इस सिक्के पर एक ओर यज्ञीय अश्व तथा सिक्के के पृष्ठ भाग पर रानी को चँवर सहित दर्शाया गया है।

कुछ साहित्यिक स्रोत शासकों, राज्यों और लोगों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, *विष्णु पुराण* में साम्राज्य के प्रमुख क्षेत्रों का उल्लेख मिलता है — "गुप्त वंश अनुगंगा (मध्य-गंगा घाटी), प्रयाग (वर्तमान प्रयागराज), साकेत (अयोध्या) एवं मगध (वर्तमान बिहार) और आस-पास के समस्त क्षेत्रों पर शासन करेगा।" लेकिन अपने उत्कर्ष पर गुप्त साम्राज्य ने वर्तमान उत्तर और पश्चिम भारत के साथ-साथ मध्य और पूर्वी भारत के कुछ भागों पर भी शासन किया।

आइए पता लगाएँ

कक्षा 6 के अध्याय 'इतिहास की समय-रेखा एवं उसके स्रोत' में हमने अनेक स्रोत सूचीबद्ध किए हैं, जो हमें अतीत को समझने में सहायता करते हैं। इस अध्याय में अब तक हमने जिन स्रोतों का उल्लेख किया है, उनकी एक सूची बनाइए और प्रत्येक स्रोत से प्राप्त जानकारी को लिखिए।

कल्पना कीजिए कि एक विशाल सेना जिसमें सैनिक, हाथी, घोड़े, महाराज और अन्य सहायक कर्मचारी हैं, उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने व उनके भोजन की आपूर्ति का कार्य कितना विशाल रहा होगा। स्पष्ट रूप से अधीनस्थ राजाओं को इनकी व्यवस्था करने के लिए कहा जाता होगा।

आइए पता लगाएँ

भारत का राजनीतिक मानचित्र लेकर उन वर्तमान राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की पहचान कीजिए, जहाँ गुप्त शासकों ने शासन किया था (चित्र 7.8)। इन राज्यों को मानचित्र पर चिह्नित कीजिए और यह गणना कीजिए कि आपको कुल कितने राज्यों के बारे में पता चला। इसके पश्चात अपने मित्रों के साथ अपने-अपने खोजे गए राज्यों की संख्या की तुलना कीजिए।

चित्र 7.8 — गुप्त साम्राज्य का विस्तार। ध्यान दीजिए कि वाकाटक गुप्त शासकों के सहयोगी थे। गुप्त शासकों ने पूर्वी-तट के कुछ भागों पर विजय प्राप्त की थी। इसमें पल्लवों के राज्य सम्मिलित थे, जिन्हें उन्होंने कुछ समय के लिए अपने अधीन कर लिया था।

गुप्त युग में भारतीय समाज के विषय में एक यात्री का वर्णन

चीनी यात्री फा-शिएन ने 5वीं शताब्दी सा.सं. के आरंभ में भारत की यात्रा की थी। वह पवित्र बौद्ध धर्मस्थलों और ग्रंथों की पांडुलिपियाँ एकत्र करने के लिए इस लंबी और कठिन तीर्थयात्रा पर निकले थे। वह उन्हें वापस चीन ले जाना चाहते थे। फा-शिएन ने संपूर्ण भारत में व्यापक रूप से यात्रा की और यहाँ की संस्कृति, शासन-व्यवस्था और समाज को देखा और अपने अनुभवों तथा लेखों को अपने देश के लोगों और हमारे लिए भी लिपिबद्ध किया। उनका यात्रा-वृत्तांत आज भी उपलब्ध है।

यहाँ उनके यात्रा वृत्तांत का एक अंश दिया गया है, जिसमें गुप्त युग के बारे में उनकी टिप्पणी है—

"लोग अत्यधिक संख्या में हैं और प्रसन्न हैं [...] उन्हें पंजीकृत कराने या अधिकारियों के पास जाने की आवश्यकता नहीं होती [...] जो लोग राजकीय भूमि पर खेती करते हैं, वे अपने अनाज का एक भाग कर के रूप में देते हैं। [...] राजा के अंगरक्षकों और सेवकों को वेतन मिलता है [...] साम्राज्य के मध्य में नगर (अर्थात गंगा के मैदानों में) सबसे बड़े हैं और निवासी धनी, समृद्ध, दयालु और धर्मनिष्ठ हैं। वैश्य परिवारों (यानी व्यापारी या व्यवसायी) के मुखिया दान और औषधि के लिए भवन बनवाते हैं। [...] निर्धनों, अनाथों और रोगियों की देखभाल की जाती है [...] वैद्य उपचार करते हैं और निर्धन को भोजन व औषधि मिलती है। [...] नगर में अनेक धनवान वरिष्ठ वैश्य और विदेशी व्यापारी रहते हैं, जिनके घर सुंदर हैं [...] गलियों को अच्छी तरह से व्यवस्थित रखा गया है।"

—बौद्ध राज्यों का एक प्रलेख (399–414 सा.सं.)
(जे. लेग द्वारा अनुवादित)

आइए पता लगाएँ

ऊपर दिए गए फा-शिएन के यात्रा-विवरण को पढ़िए और उनके द्वारा वर्णित समाज की मुख्य विशेषताओं की पहचान कीजिए। अपने विचारों को लिखिए और सहपाठी मित्रों के साथ अपने लेख की तुलना कीजिए। आपको यह देखकर आश्चर्य हो सकता है कि अन्य लोग एक ही अंश की कितनी भिन्न व्याख्या कर सकते हैं।

बहिष्कृत
वह व्यक्ति जिसे किसी सामाजिक या सांस्कृतिक समूह द्वारा अस्वीकार कर दिया गया हो। वर्तमान संदर्भ में, लोगों की एक श्रेणी, जो वर्ण व्यवस्था से बाहर थी और सामाजिक रूप से बहुत निम्न मानी जाती थी।

फा-शिएन जैसे ऐतिहासिक विवरणों से लिए गए अंश मूल्यवान स्रोत हैं। हालाँकि, यह मात्र एक विशेष समय और समाज के सीमित वर्ग के प्रति ही लेखक के दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अपने यात्रा-वृत्तांत में फा-शिएन ने चांडालों के साथ हुए कठोर व्यवहार का भी वर्णन किया है, जिन्हें **बहिष्कृत** माना जाता था और जो नगर की सीमा से बाहर रहते थे।

जिस प्रकार आपने फा-शिएन के यात्रा-वृत्तांत के अंश को अपने मित्रों से अलग ढंग से समझा होगा, उसी तरह इतिहासकारों का समूह एक ही स्रोत की जाँच करते समय अलग-अलग तरह की व्याख्याएँ कर सकता है। अपनी समझ को पुष्ट करने के लिए इतिहासकार फिर अन्य स्रोतों को देखते हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि कोई भी निष्कर्ष निकालने से पहले अनेक स्रोतों, दृष्टिकोणों और व्याख्याओं का विश्लेषण करना आवश्यक होता है।

गुप्त साम्राज्य की झलकियाँ

शासन एवं प्रशासन

आइए, चित्र 7.8 में दिए गए मानचित्र को देखें। आप एक ही समय में अनेक राज्यों को एक साथ अस्तित्व में देखेंगे। उनमें से कुछ राज्य अपने नियंत्रण को बढ़ाने की महत्वाकांक्षा में एक-दूसरे के साथ युद्धरत भी रहे होंगे। याद कीजिए कि कौटिल्य के राज्य के शासन संबंधी विचारों के बारे में आपने पहले क्या पढ़ा था। उन्होंने शासकों को गठबंधन (मित्र) बनाने की सलाह दी थी, जो सप्तांग के घटकों में से एक था।

नए राजा... नई उपाधियाँ
अभिलेखों और सिक्कों से गुप्त शासकों की उपाधियों, जैसे– 'महाराजाधिराज', 'सम्राट' और 'चक्रवर्ती' के बारे में बहुमूल्य जानकारी मिलती है। ये उपाधियाँ उनके सर्वोच्च अधिकार के दावे को दर्शाती हैं और पहले के शासकों से उनकी श्रेष्ठता को रेखांकित करती हैं, जो 'राजन' और 'महाराज' जैसी सरल उपाधियों का प्रयोग करते थे।

गुप्त शासकों ने अपने विशाल साम्राज्य का विस्तार और सुदृढ़ीकरण करने के लिए युद्ध, कूटनीति और गठबंधन सहित विभिन्न रणनीतियों का प्रयोग किया। गठबंधन के अंतर्गत वैवाहिक संबंध सम्मिलित थे। इसका एक जाना-माना उदाहरण प्रभावती गुप्त का है, जो चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री थीं। उनका विवाह गुप्त साम्राज्य के दक्षिण में स्थित पड़ोसी वाकाटक राज्य के राजकुमार से हुआ था। दुर्भाग्यवश उस राजकुमार की

अकस्मात मृत्यु हो गई। फलस्वरूप प्रभावती गुप्त उस राज्य की **प्रतिशासिका** बन गईं। उनके शासनकाल के दौरान गुप्त और वाकाटकों के बीच संबंध सुदृढ़ बने रहे, इसके लिए उन्होंने यथासंभव प्रयास किए। उनके एक अभिलेख में उन्हें 'दो राजाओं की माँ' के रूप में वर्णित किया गया है। यह उनके दो पुत्रों की ओर संकेत करता है, जो बाद में वाकाटक राज्य के सिंहासन पर आसीन हुए। अपने पिता की तरह विष्णु भक्त होने के कारण प्रभावती गुप्त को भगवान विष्णु और उनके अवतारों को समर्पित सात मंदिरों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है। इनमें से कुछ मंदिर वर्तमान महाराष्ट्र के रामगिरी (रामटेक पहाड़ी) में हैं।

प्रतिशासक/ प्रतिशासिका (रीजेंट/ रूलर)
वह व्यक्ति, जो अल्पवयस्क राजा के स्थान पर अस्थायी रूप से राज्य का शासन तब तक संभालता है, जब तक अल्पवयस्क राजा स्वयं शासन करने योग्य न हो।

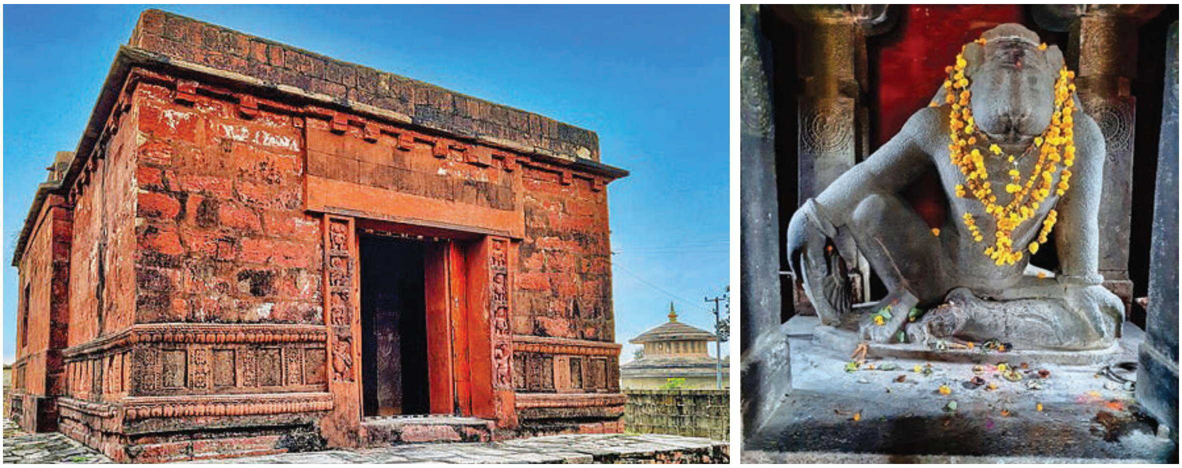

चित्र 7.9 — भगवान विष्णु के नरसिंह अवतार को समर्पित केवल नरसिंह मंदिर। कुछ इतिहासकारों के अनुसार यह मंदिर प्रभावती गुप्त की पुत्री द्वारा अपनी माँ की स्मृति में बनवाया गया था।

आइए पता लगाएँ

अपने दरबार में बैठी हुई प्रभावती गुप्त पर बनी चित्रकारी को देखिए (चित्र 7.10)। उनके वस्त्र, मुद्रा, आस-पास के लोगों और दरबार की व्यवस्था पर ध्यान दीजिए। ये सभी आपको उनके जीवन, भूमिका और समय के बारे में क्या बताते हैं? अपने अवलोकनों पर समूहों में चर्चा कीजिए और अपने विचारों को कक्षा के साथ साझा कीजिए।

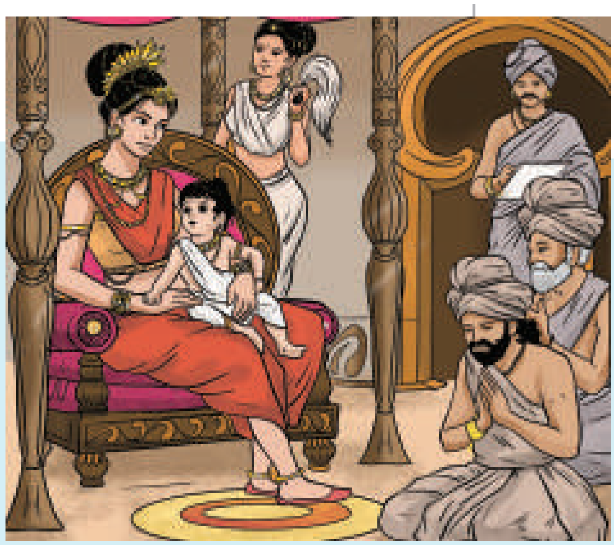

चित्र 7.10 — दरबार में बैठी प्रभावती गुप्त का एक पुनर्कल्पित चित्र

गुप्त साम्राज्य में एक सुव्यवस्थित प्रशासनिक व्यवस्था थी। केंद्रीय स्तर पर सब कुछ नियंत्रित करने की जगह गुप्त राजाओं ने साम्राज्य को अनेक प्रांतों में विभाजित किया। इन प्रांतों में स्थानीय शासकों, पुरोहितों और मुखियाओं को भूमि दान में दी गई। इन भूमि अनुदानों को सटीक रूप से संरक्षित करने के लिए ताम्रपत्रों (तांबे की पट्टियों) पर लिपिबद्ध किया गया था। इन ताम्र पत्रों में से अनेक हाल के दिनों में पुरातत्वविदों द्वारा खोजे गए हैं। यह व्यवस्था गुप्त शासकों को उचित कर संग्रह करने, कुशलतापूर्वक शासन करने तथा स्थानीय मुखियाओं को अपने क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित करने में सहायक होती थी।

समृद्ध व्यापार

गुप्त शासकों के राजस्व का प्रारंभिक स्रोत भूमि कर था। अन्य स्रोतों में दंड-शुल्क, खदान, सिंचाई, व्यापार और शिल्प कर सम्मिलित थे। इस राजस्व का उपयोग प्रशासन, सेना को बनाएँ रखने, मंदिरों और आधारभूत ढाँचों के निर्माण तथा विद्वानों व कलाकारों को प्रोत्साहन देने के लिए किया जाता था।

हम एक बार पुन: देखते हैं कि एक सशक्त साम्राज्य को बनाएँ रखने के लिए एक जीवंत आंतरिक और बाह्य व्यापार को बढ़ावा देना आवश्यक होता है। गुप्त काल में भारत ने भूमध्यसागरीय क्षेत्र, दक्षिण-पूर्व एशिया और चीन के साथ व्यापार किया। कपड़ा, मसाले, हाथीदाँत से बने आभूषण और रत्नों का निर्यात किया। हिंद महासागर व्यापार तंत्र ने भारतीय बंदरगाहों को दूर के बाजारों से जोड़ा। भूमध्यसागरीय बाजारों के मार्ग में एक महत्वपूर्ण पड़ाव सोकोट्रा द्वीप था, जो सामरिक रूप से अरब सागर में स्थित था। मिस्र, अरब, रोम और ग्रीस के व्यापारियों के अतिरिक्त पुरातात्विक साक्ष्य जैसे – मिट्टी के बर्तन, ब्राह्मी लिपि के अभिलेख और बौद्ध स्तूप वहाँ कई शताब्दियों से भारतीय व्यापारियों की उपस्थिति की पुष्टि करते हैं। यह लघु द्वीप हिंद महासागर में व्यापार के द्वारा सांस्कृतिक आदान-प्रदान को समृद्ध बनाएँ जाने का प्रमाण है।

नवीन विचारों और उपलब्धियों का युग

जैसा हमने देखा, गुप्त शासक विष्णु के परम भक्त थे। यह प्राय: उनके सिक्कों और अभिलेखों में परिलक्षित होता है। हालाँकि, उन्होंने अन्य परंपराओं और विचारधाराओं को भी संरक्षण दिया। उन्होंने प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय और कई अन्य बौद्ध विहारों सहित बौद्ध संस्थानों को संरक्षण दिया। उनका दृष्टिकोण उदार और समावेशी था। आगे की कक्षाओं में इन संस्थानों के बारे में हम विस्तार से अध्ययन करेंगे।

गुप्तकाल के अंतर्गत शांति और स्थिरता लंबे समय तक बनी रही, जिसने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियों को प्रोत्साहन दिया। यही कारण है कि कुछ इतिहासकारों

चित्र 7.11 — नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष

ने इस अवधि को भारत का 'उत्कृष्ट युग' कहा। यही वह समय था जब पूर्ववर्ती युगों के ज्ञान को एकत्रित करके अनेक ग्रंथों में संकलित किया गया। इसी समय कालिदास की रचनाओं और अनेक प्रमुख पुराणों के साथ संस्कृत साहित्य का विकास हुआ। आर्यभट और वराहमिहिर ने गणित और खगोल विज्ञान में उल्लेखनीय योगदान दिया। चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सिद्धांतों और पद्धतियों को संकलित और परिष्कृत किया गया। धातु-विज्ञान में भी प्रगति हुई, जैसा हमने जंग रोधी लौह-स्तंभ के उदाहरण में देखा है। इस स्थिरता ने अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया, जिससे राज्य ने विद्वानों, कलाकारों और वैज्ञानिकों को प्रोत्साहन दिया। फलस्वरूप, सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास संभव हुआ।

चंद्रगुप्त द्वितीय स्वयं को अनेक विद्वानों, कवियों और कलाकारों के सानिध्य में रखते थे। ऐसी विविध प्रतिभाओं को संरक्षण प्रदान करके उन्होंने अपनी राजसभा को समृद्ध बनाया।

आइए, इस अवधि के कुछ उल्लेखनीय व्यक्तियों पर एक दृष्टि डालें।

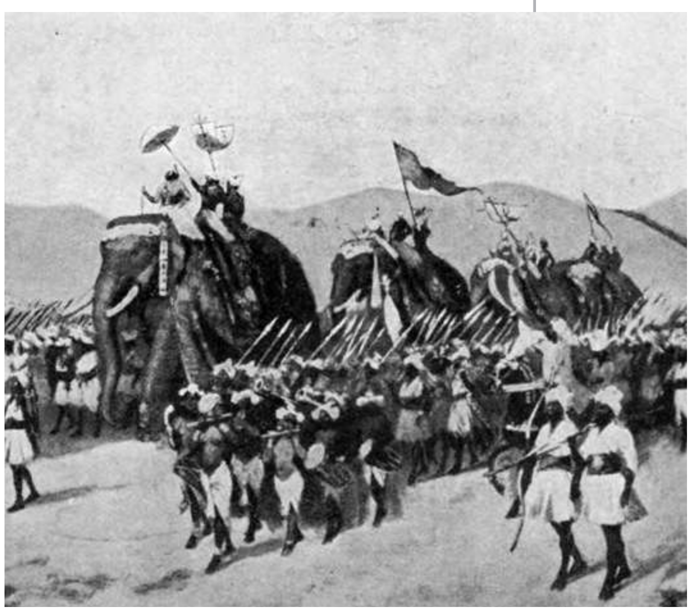

चित्र 7.12 — चंद्रगुप्त द्वितीय युद्ध में प्रस्थान करते हुए (1920 के दशक के एक कलाकार की कल्पना पर आधारित)

आर्यभट– ये लगभग 500 सा.सं. में तत्कालीन प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र कुसुमपुरा (आधुनिक पटना के पास) में रहते थे। आर्यभट ने गणित और खगोल विज्ञान पर एक संक्षिप्त ग्रंथ *आर्यभटीय* की रचना की। उन्होंने सूर्य, चंद्रमा और ग्रहों की गति की गणना हेतु सूत्र लिखे और प्रस्तावित किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, जिससे दिन और रात होते हैं। उन्होंने एक वर्ष की अवधि 365 दिन, 6 घंटे, 12 मिनट और 30 सेकंड के समतुल्य बताई, जो आधुनिक मान (365 दिन, 5 घंटे, 48 मिनट और 45 सेकंड) के अत्यंत निकट है। आर्यभट ने पृथ्वी के आकार का उचित अनुमान और सूर्य व चंद्रग्रहण की एक सटीक व्याख्या भी की। उनका कार्य भारत और विश्व में वैज्ञानिक प्रगति की आधारशिला बना। गणित के क्षेत्र में आर्यभट ने गणना और समीकरण समाधान की अनेक विधियों का वर्णन किया। इनमें से कुछ के बारे में आप विद्यालय में सीखते हैं जबकि उन्हें सर्वप्रथम 1500 वर्ष पूर्व आर्यभट ने प्रतिपादित किया था।

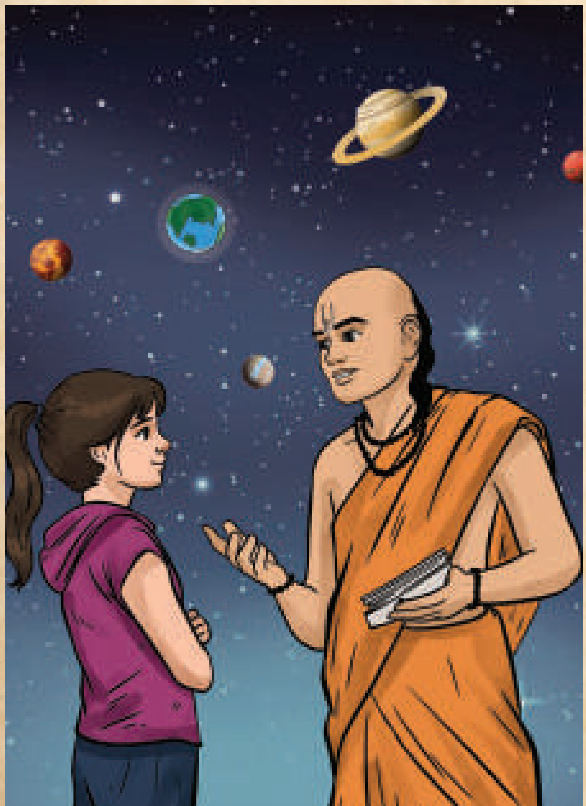

चित्र 7.13

वराहमिहिर– ये इसी काल के एक अन्य गणितज्ञ, खगोलशास्त्री और ज्योतिषी थे। वे उज्जयिनी में रहते थे, जो शिक्षा और ज्ञान की परंपरा के लिए विख्यात था। उनके वृहत्संहिता नामक ग्रंथ में खगोल विज्ञान और ज्योतिष से लेकर मौसम के पूर्वानुमान, वास्तुकला, नगरनियोजन और कृषि जैसे विषयों की विस्तृत जानकारी मिलती है। विश्व को तर्कसंगत दृष्टिकोण से देखने और उपलब्ध ज्ञान के साथ उसे जोड़कर नवीन सिद्धांत प्रस्तुत करने की उनकी क्षमता ने उन्हें अपने समय के विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी बनाया।

आइए पता लगाएँ

आइए, भविषा और ध्रुव के साथ काल-यंत्र में बैठकर गुप्त काल की यात्रा करते हैं। यदि आपको आर्यभट और वराहमिहिर से मिलने का अवसर मिले तो आप उनसे क्या पूछेंगे? कक्षा को दो समूहों में बाँटकर उनके साथ साक्षात्कार के लिए कुछ प्रश्न तैयार कीजिए।

चित्र 7.14 — मेघदूतम् में यक्ष का मेघ को संदेश देते हुए एक दृश्य

कालिदास – महाकवि कालिदास के जीवन के विषय में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। किंवदंतियों के अनुसार, एक बार लोगों के उपहास के कारण उन्होंने गहन साधना की और अपने जीवन को एक नई दिशा दी। वे संस्कृत साहित्य और आलंकारिक काव्य के लिए प्रसिद्ध हुए। उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में से एक *मेघदूतम्* है। यह काव्य एक यक्ष के बारे में है, जो अपने स्वामी द्वारा अपने घर से निर्वासित होने के उपरांत एक उड़ते मेघ के माध्यम से अपनी प्रेयसी को संदेश भेजता है। प्रेम के उच्छ्वास के अतिरिक्त यह काव्य भारत के भूदृश्य और ऋतुओं का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करता है।

इसे अनदेखा न करें

संहिताबद्ध व्यवस्थित या क्रमबद्ध रूप से लिखा हुआ।

क्या आप जानते हैं कि आयुर्वेद को गुप्त काल में **संहिताबद्ध** किया गया था? चिकित्सा की भारतीय पारंपरिक प्रणाली की जड़ें कई शताब्दियों पुरानी हैं। *चरक संहिता* और *सुश्रुत संहिता* जैसे ग्रंथ गुप्त काल में संकलित और पूर्ण किए गए, जो आयुर्वेद के आधारभूत ग्रंथ हैं। ये ग्रंथ रोगों के वर्गीकरण और उनके निदान, उपचार एवं अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने में आहार के महत्व और शल्य-चिकित्सा तकनीक जैसे अनेक विषयों पर जानकारी प्रदान करते हैं। यह अपने समय की दृष्टि से बहुत उन्नत थे, जिनका आज भी उपयोग होता है। आयुर्वेद मन, शरीर और प्रकृति के बीच गहरे संबंध को महत्व देकर समग्र उपचार पर बल देता है।

सौंदर्य की खोज

गुप्त शासकों ने एक ऐसा अनुकूल वातावरण प्रदान किया जिसमें रचनात्मकता और शिल्प-कौशल का अभूतपूर्व विकास हुआ। अनेक प्रसिद्ध ऐतिहासिक कलाकृतियाँ इसी अवधि में निर्मित की गईं। इसी समय कला के अनेक प्रमुख केंद्र उभरे, जिनमें उत्कृष्ट बुद्ध मूर्तियों के लिए विख्यात सारनाथ (वर्तमान वाराणसी के निकट) और विस्मयकारी अजंता गुफाएँ (वर्तमान महाराष्ट्र में) सम्मिलित हैं। मध्य प्रदेश के उदयगिरि में चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाएँ और देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ भी इसी काल की उत्कृष्ट कला के कुछ अन्य उदाहरण हैं। इसे कभी-कभी 'गुप्तकालीन कला' भी कहा जाता है। इसने सौंदर्यबोध के उच्च मानक स्थापित किए। जिसका एक स्थायी प्रभाव पड़ा (चित्र 7.15 से 7.18 देखिए)।

आइए पता लगाएँ

चित्र 7.15.1 और 7.15.2 में दिखाई गई गुप्तकालीन मूर्तियों को ध्यानपूर्वक देखिए। इनकी विशेषताओं को देखकर क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि वहाँ किन देवताओं को दर्शाया गया है? दिए गए स्थान पर अपने विचार लिखिए और चर्चा में अपने विचार साझा कीजिए।

गुप्त वंश का पतन

छठी शताब्दी सा.सं. तक गुप्त साम्राज्य में पतन के संकेत दिखने लगे थे क्योंकि बाद के शासकों को बाह्य आक्रमणों की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था। मध्य एशिया

की क्रूर हूण जनजाति ने बार-बार आक्रमण किए जिससे उत्तर भारत पर गुप्त राजाओं का नियंत्रण शिथिल हो गया। उसी समय, शक्तिशाली क्षेत्रीय शासकों के उदय ने आंतरिक संघर्षों को भी जन्म दिया। परंतु क्या यह वास्तव में अंत था या यह एक ऐसे युग का आरंभ था, जिसने भारतीय इतिहास को एक महत्वपूर्ण दिशा दी? इसका उत्तर हम इस पुस्तक के अगले भाग में पाएँगे।

इस बीच दक्षिण और पूर्वोत्तर में...

आइए, चित्र 7.8 में दिए गए मानचित्र को पुन: देखें। जब उत्तर भारत में गुप्त शासन था, उसी समय दक्षिण में पल्लव एक शक्तिशाली राजवंश के रूप में उभरे। उन्होंने धीरे-धीरे आज के तमिलनाडु, कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के कुछ भागों को अपने राज्य में मिला लिया। उनकी उत्पत्ति के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि वे सातवाहनों के अधीन थे और सातवाहनों के पतन के पश्चात उन्हें बल मिला। इनके विषय में हम पिछले अध्याय में पढ़ चुके हैं।

पल्लव, कला और वास्तुकला के भी महान संरक्षक थे। उनमें से अधिकांश शिव भक्त थे और उन्हें भव्य मंदिरों और चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं के निर्माण का श्रेय दिया जाता है। इनमें से कुछ को हम उत्कृष्ट भारतीय वास्तुकला के अध्ययन के समय जानेंगे। पल्लवों की राजधानी, कांचीपुरम (वर्तमान तमिलनाडु) जो प्राय: 'एक हजार मंदिरों का नगर' के रूप में जानी जाती है, दक्षिण में शिक्षा के प्रमुख केंद्रों में से एक के रूप में विकसित हुई। सातवाहन काल के दौरान स्थापित 'घटिकाओं' (शिक्षा के केंद्र) ने शिक्षा और बौद्धिक विकास के लिए एक वातावरण का निर्माण किया।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में वर्मन राजवंश द्वारा शासित कामरूप साम्राज्य, ब्रह्मपुत्र घाटी (व्यापक रूप से वर्तमान असम, पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के उत्तरी भाग) तक विस्तृत था। असम की ब्रह्मपुत्र घाटी का एक प्राचीन नाम प्राग्ज्योतिष था, जिसका उल्लेख रामायण और महाभारत में मिलता है। महाभारत में, प्राग्ज्योतिष (आधुनिक असम) के शासक भगदत्त का उल्लेख महाभारत के महान युद्ध में कौरवों की ओर से लड़ने वाले योद्धा के रूप में किया गया है। बाद के कुछ शासकों ने उन्हें अपना पूर्वज बताया है। कामरूप साम्राज्य एक प्रमुख सांस्कृतिक और राजनीतिक केंद्र था। यहाँ मंदिर और मठ शिक्षा के केंद्रों के रूप में विकसित हुए।

गुप्तकालीन कला के विभिन्न आयाम

चित्र 7.15.1 से 7.15.3 — तीसरे चित्र में गुप्तकाल की पकी मिट्टी (टेराकोटा) से बनी मूर्तियाँ (अहिछत्र, पश्चिमी उत्तर प्रदेश) भारत की पवित्र नदियों, गंगा और यमुना को दर्शाती हैं। उनके वाहन उन्हें अलग पहचान देते हैं— गंगा मकर (मगरमच्छ जैसा पौराणिक प्राणी) पर खड़ी हैं, जबकि यमुना कछुए पर खड़ी हैं। उनके सिर के ऊपर से पानी बह रहा है और घड़े का चित्रण नदियों के रूप को प्रकट करता है।

चित्र 7.16 — दशावतार मंदिर (देवगढ़, उत्तर प्रदेश) में शेषनाग पर विष्णु

चित्र 7.17 — इस अवधि में प्रसिद्ध अजंता गुफाएँ गुप्त और वाकाटक राजवंशों के सहयोग से बनाई गई थीं। बाएँ— एक विस्तृत गुफा जो एक मंदिर को दर्शाती है। इसके मध्य में एक स्तूप है इसमें से बैठे हुए बुद्ध उभर रहे हैं (लकड़ी की शहतीर की नकल पर आधारित धनुषाकार छत पर ध्यान दीजिए) दाएँ— बोधिसत्व पद्मपाणि का एक चित्र।

चित्र 7.18.1 से 7.18.3 — उदयगिरि गुफाएँ और साँची के पास गुप्तकालीन मंदिर, दोनों ही मध्यप्रदेश में स्थित हैं। युद्ध में अर्जुन और कर्ण— महाभारत से एक मूर्तिकला का चित्रण।

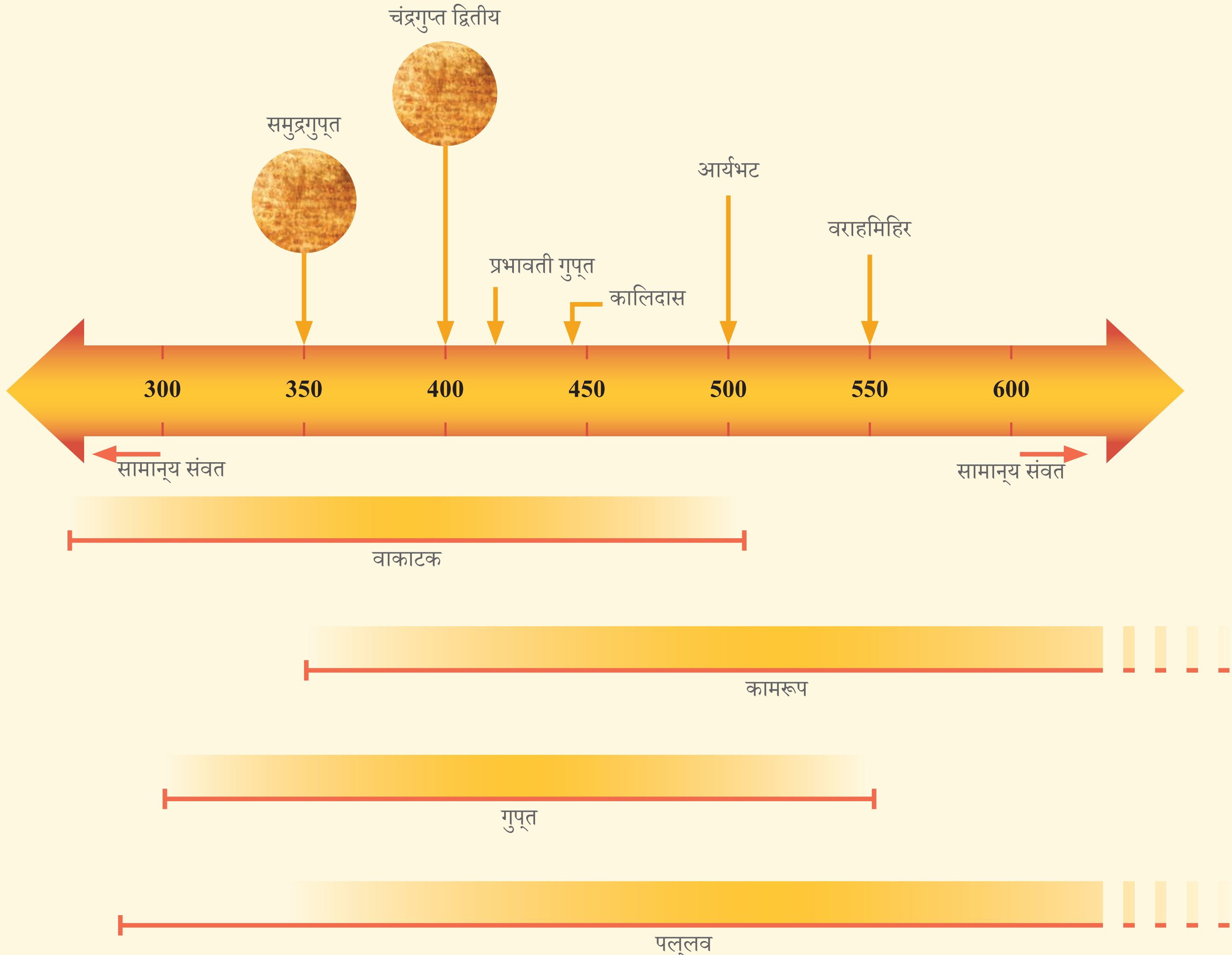

चित्र 7.19

पल्लव और कामरूप दोनों का उल्लेख *प्रयाग प्रशस्ति* में मिलता है, जिसके बारे में हमने पहले पढ़ा है। दक्षिण भारत के अभियान के समय समुद्रगुप्त ने एक पल्लव शासक को पराजित किया, परंतु इस क्षेत्र को अधिकार में नहीं लिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने पल्लवों सहित स्थानीय राजाओं को अपने सिंहासन पर तब तक बने रहने दिया, जब तक वे समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार करते हुए नियमित रूप से भेंट देते रहे। इससे विभिन्न राज्यों के साथ शांतिपूर्ण सहायक संबंध स्थापित करने में सहायता मिली। इसी प्रकार, पूर्वोत्तर में भी समुद्रगुप्त ने कामरूप के शासक को युद्ध में हराने के उपरांत उसका राज्य अपने सीधे नियंत्रण में नहीं लिया। इस प्रकार हम समुद्रगुप्त की यह नीति बार-बार पुनरावृत्त होते हुए देखते हैं।

गुप्तकाल उल्लेखनीय प्रगति का काल था। इसका प्रभाव गुप्त साम्राज्य की सीमाओं से कहीं आगे तक देखा गया। इसके परिणाम शताब्दियों तक कला, विज्ञान, साहित्य और

शासन को प्रभावित करते रहे। गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा और धातु विज्ञान सहित अन्य क्षेत्रों में हुई प्रगति ने भविष्य के वैज्ञानिक और तकनीकी विकास की नींव रखी। इस काल में बने भव्य मंदिर और संस्कृत साहित्य आज भी हमें प्रेरणा देते हैं। गुप्त शासकों ने एक स्थिर और समृद्ध समाज का निर्माण किया और उसने भविष्य के शासकों के लिए एक मानक स्थापित किया। उनकी विरासत आज भी भारतीय संस्कृति, परंपराओं और आदर्शों में जीवित है। यह गुप्त काल को भारतीय इतिहास के शीर्षतम बिंदुओं में से एक के रूप में स्थापित करता है।

मगध के गुप्तवंश का प्रभाव छत्तीसगढ़ पर उस समय से पड़ा जब उपर्युक्त समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के राजाओं को जीतकर दक्षिणापथ की विजय यात्रा की। समुद्रगुप्त की दक्षिणापथ यात्रा के समय छत्तीसगढ़ में महेन्द्र नामक एक राजा राज करता था, जिसके वंश आदि के बारे में कोई सूचना उपलब्ध नहीं है। समुद्रगुप्त से हुए युद्ध में महेन्द्र परास्त हुआ किन्तु विजेता ने उसका राज्य उसे वापिस कर दिया था। उसी प्रकार बस्तर और सिहावा के जंगली प्रदेश (जिसे महाकान्तार कहते थे) के अधिपति व्याघ्रराज ने भी समुद्रगुप्त के सम्मुख अपनी पराजय स्वीकार कर ली थी। तब से गुप्तों का प्रभाव दक्षिण कोसल पर क्रमशः बढ़ता ही गया और यहां के शासकीय कार्यों में गुप्त संवत् का प्रयोग होने लगा।

आगे बढ़ने से पहले...

→ गुप्त शासकों ने युद्ध, भूमि अनुदान और वैवाहिक संबंधों के माध्यम से स्वयं को समर्थ बनाया और साम्राज्य में स्थिरता सुनिश्चित की।

→ इस काल में कला, साहित्य, विज्ञान और गणित के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति देखी गई।

→ गुप्त वंश के अतिरिक्त वाकाटक, पल्लव और वर्मन जैसे राजवंशों ने अपने-अपने क्षेत्रों में शासन किया। इन सभी राजवंशों ने मिलकर इस काल को सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप से जीवंत बनाया।

प्रश्न और क्रियाकलाप

1. कल्पना कीजिए कि आपको गुप्त साम्राज्य में रहने वाले किसी व्यक्ति से एक पत्र मिलता है। पत्र का आरंभ इस प्रकार होता है— "पाटलिपुत्र से अभिवादन। यहाँ का जीवन सुखमय और उत्साह से भरा है। कल ही मैंने देखा..." गुप्त साम्राज्य में जीवन का वर्णन करते हुए एक संक्षिप्त लेख (250–300) के साथ पत्र को पूरा कीजिए।
2. किस गुप्तकालीन शासक को 'विक्रमादित्य' के नाम से भी जाना जाता है?
3. "शांतिकाल सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन, साहित्य तथा विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास लाने में सहायक होते हैं।" गुप्त साम्राज्य के संदर्भ में इस कथन का परीक्षण कीजिए।
4. किसी गुप्तकालीन शासक की राजसभा के एक दृश्य का नाटकीय रूपांतरण कीजिए, जिसमें राजा, मंत्री और विद्वानों जैसी भूमिकाएँ हों। इस प्रकार आप गुप्त युग को पुनर्जीवित कर सकते हैं।

5. मिलान कीजिए—

अ	ब
(1) कांचीपुरम	(क) जातक कथाओं को दर्शाने वाले जीवंत गुफा चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
(2) उज्जयिनी	(ख) यह स्थान चट्टान काटकर बनाई गई गुफाओं के लिए प्रसिद्ध है, जिनमें हिंदू देवी-देवताओं, विशेषकर भगवान विष्णु की उत्कृष्ट प्रतिमाएँ उत्कीर्ण की गई हैं।
(3) उदयगिरि	(ग) गुप्त शासकों की राजधानी
(4) अजंता	(घ) 'एक हजार मंदिरों का शहर' के रूप में प्रसिद्ध है।
(5) पाटलिपुत्र	(ङ) प्राचीन भारत में शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र

6. पल्लव कौन थे और उन्होंने कहाँ शासन किया?

7. अपने शिक्षकों के साथ निकट के किसी ऐतिहासिक स्थल, संग्रहालय या विरासत भवन की यात्रा का आयोजन कीजिए। यात्रा के बाद अपने अनुभव का वर्णन करते हुए एक विस्तृत रिपोर्ट लिखिए। रिपोर्ट में इस स्थल के ऐतिहासिक महत्व, वास्तुकला, कलाकृतियों और यात्रा के दौरान आपके द्वारा सीखे गए किसी भी रोचक तथ्य के बारे में अपने महत्वपूर्ण अवलोकनों को सम्मिलित कीजिए। इस यात्रा ने इतिहास के बारे में आपकी समझ को कैसे विकसित किया?

अध्याय 8

भौगोलिक क्षेत्र कैसे पावन होते हैं?

> *आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, ग्रह, सभी प्रकार के जीव-जंतु, दिशाएँ, वृक्ष तथा पौधे, नदियाँ और समुद्र परमेश्वर के शरीर के अंग हैं।*
>
> *— भागवत पुराण*

चित्र 8.1

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *'पावनता' क्या है?*
2. *भूमि कैसे पावन हो जाती है?*
3. *पावन स्थल और तीर्थ स्थल का अंतर्संबंध किस प्रकार मानव जीवन और संस्कृति से जुड़ जाता है?*
4. *पावन भूगोल ने भारतीय उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक एकीकरण में किस प्रकार की भूमिका निभाई है?*

0783CH08

आइए पता लगाएँ

क्या आप इनमें से किसी चित्र से परिचित हैं? क्या आप अपने आस-पास इसी तरह के किसी स्थान का नाम बता सकते हैं ?

पावनता क्या है?

पावनता के अनेक अर्थ हो सकते हैं। इस अध्याय के सीमित संदर्भ में पावनता का तात्पर्य उन समस्त धार्मिक एवं आध्यात्मिक भावों से है, जो पावन और दिव्य हों तथा आदर एवं श्रद्धा के योग्य हों। किंतु इसका आधार क्या है? यह कोई विशेष स्थल या धार्मिक स्थान हो सकता है, जो ऐसे गंभीर भावों, उच्च विचार और संवेदनाओं को प्रकट करता है। जैसा कि हम इस अध्याय में देखेंगे, यह किसी विशेष प्रकार की यात्रा हो सकती है (सामान्यत: तीर्थयात्रा), जो किसी विशेष मार्ग से होकर गुजरती है।

इस प्रकार, पावनता केवल धर्म या आध्यात्मिकता से जुड़ी हुई नहीं है, अपितु भारत के संदर्भ में निश्चित भूभाग, विविध परंपराओं एवं अन्य विषयों से भी जुड़ी हुई है, जिसके विषय में हम आगे पढ़ेंगे।

आइए, सबसे पहले हम अपने पावन स्थलों पर ध्यान केंद्रित करें। आप आगे जानेंगे कि भारत में प्राय: सभी प्रकार के विचारों एवं धर्मों के अपने-अपने पावन स्थल हैं।

चित्र 8.2

भारत से बाहर उद्‌भव होने वाले धर्मों, जैसे – इस्लाम, ईसाई, यहूदी तथा पारसी धर्म के अनुयायी इन चित्रों में दर्शाए गए स्थलों को श्रद्धेय मानते हैं। ये लोग इन स्थलों पर प्रार्थना या पूजा के लिए जाते हैं। अन्य पंथों के लोग भी इन स्थलों पर जाते हैं, जिनमें राजस्थान का अजमेर शरीफ़ तथा तमिलनाडु का वेलांकन्नी चर्च विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। विशेष अवसरों पर श्रद्धालु इन **पावन स्थलों** की **तीर्थयात्रा** करते हैं।

स्वाभाविक रूप से, जब हम भारत में उत्पन्न धर्मों की बात करते हैं, तो ऐसे अनेक पावन स्थलों के विषय में जानकारी मिलती है। बौद्ध धर्म के संदर्भ में वे स्थल पावन माने जाते हैं, जहाँ महात्मा बुद्ध गए थे या जहाँ उनके अवशेष रखे हुए हैं। ऐसे पावन स्थलों में साँची का (मध्य प्रदेश) का प्रसिद्ध स्तूप जहाँ **पावन अवशेष** संरक्षित हैं (आप इसे 'साम्राज्यों का उदय' नामक अध्याय में देख सकते हैं।) तथा बोधगया (बिहार) का महाबोधि स्तूप है, जहाँ बौद्ध परंपरा के अनुसार महात्मा बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था। ये स्थल तीर्थयात्रियों के लिए महत्वपूर्ण हैं। उदाहरणस्वरूप, बोधगया में प्रतिवर्ष चालीस लाख से अधिक यात्री आते हैं।

सिख धर्म में 'तख्त' अध्यात्म का आधिकारिक केंद्र है, उदाहरण के लिए— तख्त श्री पटना साहिब (पटना), अकाल तख्त (स्वर्ण मंदिर, अमृतसर, चित्र 8.3) तथा तख्त श्री केशगढ़ साहिब (आनंदपुर)। सिख श्रद्धालुओं की इच्छा रहती है कि जीवन में कम से कम एक बार इन पावन स्थलों की यात्रा करें क्योंकि ये स्थल सिख धर्म के महान गुरुओं से संबंधित हैं। अत: इन स्थलों का उनके जीवन में विशेष महत्व है। इन सबके अतिरिक्त सिख परंपरा में उन स्थलों को भी पावन माना जाता है, जहाँ अनेक गुरुओं ने यात्रा की, जैसे – गुरु नानक ने हरिद्वार, प्रयाग, मथुरा, वाराणसी, अयोध्या, पुरी के अतिरिक्त मुसलमानों के पावन स्थलों की भी यात्रा की थी।

चित्र 8.3

पावन स्थल

किसी स्थल को पावन इसलिए माना जाता है क्योंकि इसका संबंध किसी दिव्य, पावन स्मृति अथवा आध्यात्मिक व्यक्ति या आकृति से होता है।

तीर्थयात्रा

किसी पावन स्थल की यात्रा, जो उससें संबधित धर्म या मत-विश्वास के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

पावन अवशेष

किसी संत या आध्यात्मिक व्यक्ति के शरीर के अंश या उनसे संबंधित वस्तु को जब सम्मान के साथ रखा जाता है।

भारत अनादिकाल से तीर्थयात्राओं का देश रहा है। संपूर्ण देश में ये प्राचीन स्थल बर्फीले हिमालय पर्वतों, जैसे – बद्रीनाथ, केदारनाथ तथा अमरनाथ से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक स्थित हैं। ऐसा क्या है, जो हमारे लोगों को उत्तर से दक्षिण और दक्षिण से उत्तर के तीर्थ स्थलों की यात्रा के लिए आकर्षित करता है? यह एक देश और एक संस्कृति की भावना है।

— जवाहरलाल नेहरू, 1961

तीर्थ
शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से तीर्थ वह स्थल है जो प्राय: नदी या जल के किसी स्रोत के पास स्थित होता है। प्रतीकात्मक दृष्टि से, तीर्थ वह स्थान है जहाँ कोई जिज्ञासु अपने सामान्य जीवन से उच्च और आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करता है। ऐसे स्थलों को अत्यंत श्रद्धा और पावनता के साथ देखा जाता है।

तीर्थयात्राएँ

अनेक भारतीय अपने जीवनकाल में विविध पावन स्थलों की यात्रा करते हैं। **तीर्थ** की यह प्राचीन और सतत परंपरा न केवल शारीरिक और भौतिक, बल्कि एक आध्यात्मिक यात्रा भी है। इसके लिए एक विशिष्ट आचार-व्यवहार की आवश्यकता होती है।

पिछले लगभग 3000 वर्षों से, आधुनिक यातायात के अभाव में भी भारतीय जन समस्त उपमहाद्वीप में चतुर्दिक तीर्थयात्राएँ करते आ रहे हैं। परिणामस्वरूप, संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप को पावन माना जाता है। हम इसके बारे में आगे विस्तार से पढ़ेंगे।

यहाँ इतिहासकार एवं विचारक धर्मपाल के लेख से एक उद्धरण प्रस्तुत है —

"मैं ग्वालियर से दिल्ली की यात्रा कर रहा था... जब मैं लोगों के समूह से मिला... वे लगभग बारह व्यक्ति थे, जिनमें तीन या चार महिलाएँ तथा सात या आठ पुरुष थे।... उन्होंने बताया कि वे लगभग तीन महीनों से, अन्य स्थलों के साथ-साथ रामेश्वरम तक की तीर्थयात्रा पर हैं। वे लखनऊ के उत्तर में स्थित दो गाँवों से आए थे। उनके पास मिट्टी के पात्रों के अतिरिक्त अनेक प्रकार की गठरियाँ थीं... उनके पास भोजन की सभी आवश्यक वस्तुएँ थीं, जैसे – आटा, घी, चीनी, आदि... मैंने उनसे पूछा, "क्या आप सभी इस समय दिल्ली जा रहे हैं?" "हाँ!" उन्होंने उत्तर दिया। "क्या आप दिल्ली में रुकेंगे?" "नहीं, हम केवल वहाँ ट्रेन बदलेंगे। हम हरिद्वार जा रहे हैं... हमारे पास समय नहीं है... हमें हरिद्वार पहुँचना है। उसके बाद हमें घर लौटना है।"

आइए पता लगाएँ

- → इस उद्धरण को पढ़िए। इस विषय में आपका क्या अभिमत है? उस मार्ग को दर्शाइए, जिससे होकर उन यात्रियों ने रामेश्वरम से हरिद्वार तक की यात्रा की होगी। आपके अनुसार, इन यात्रियों ने दिल्ली रूकने के स्थान पर सीधे हरिद्वार की यात्रा क्यों की?
- → प्राचीन काल में जब लोग तमिलनाडु के मदुरई से उत्तर प्रदेश के वाराणसी की यात्रा करते थे, तो उनका संपर्क किन-किन भाषाओं से होता होगा? उन स्थानों में वे लोगों से कैसे वार्तालाप करते होंगे? वे कहाँ ठहरते होंगे? वे किस प्रकार का भोजन करते होंगे?

जैन परंपरा में तीर्थ उन पावन स्थलों से संबद्ध हैं, जहाँ **तीर्थंकरों** ने मोक्ष प्राप्त किया था या जहाँ उनके जीवन से जुड़ी हुई कोई विशिष्ट घटनाएँ घटी थीं। वृक्ष, सरोवर, पहाड़ी और पर्वत— जहाँ भी तीर्थंकर गए या ध्यान किया, वे पावन माने जाने लगे। उदाहरण के रूप में माउंट आबू, गिरनार और सौराष्ट्र (गुजरात) की शत्रुंजय पहाड़ी इनमें सम्मिलित हैं।

तीर्थंकर

शाब्दिक अर्थ में तीर्थंकर वह है, जो तीर्थ का निर्माण करता है। (या मोक्ष का मार्ग दिखता है), अर्थात जो साधारण जीवन से ऊपर उठकर उच्चतर जीवन की ओर मार्गदर्शन करता है। जैन परंपरा में तीर्थंकर सर्वोच्च धर्मोपदेशक होते हैं।

केरल में स्थित अयप्पा देवता को समर्पित सबरीमाला मंदिर की तीर्थयात्रा इसका अन्य उदाहरण है। यहाँ प्रतिवर्ष लगभग एक करोड़ श्रद्धालु दर्शनार्थ आते हैं। पहाड़ी पर स्थित इस पावन स्थल पर पारंपरिक रूप से पहाड़ियों और जंगलों के बीच एक कठिन मार्ग से होकर पहुँचा जाता था। इस प्रकार की चुनौतीपूर्ण यात्रा प्राय: पूरे देश में अनेक पहाड़ियों या पर्वतों पर स्थित पावन स्थलों के लिए सामान्य बात है। प्राकृतिक संकेतों से युक्त मार्ग के साथ ऐसी यात्रा पावन मानी जाती है। यह आध्यात्मिक यात्रा की कठिनाइयों का भी प्रतीक है।

चित्र 8.4 — महाराष्ट्र में आठ सौ वर्ष पुरानी 'पंढरपुर वारी' परंपरा। 'वारी' का तात्पर्य उस वार्षिक तीर्थयात्रा से है, जो नियमित रूप से होती है। तीर्थ यात्री विशाल समूह में इक्कीस दिनों तक पंढरपुर के प्रसिद्ध विठोबा मंदिर की यात्रा करते हैं।

छत्तीसगढ़ की जनजातीय परंपरा – छत्तीसगढ़ में निवास करने वाली उरांव जनजाति सरई (साल) के वृक्ष को पावन मानती है। उरांवों की मान्यता है कि सरई के वृक्ष ने उनके पूर्वजों की रक्षा शत्रुओं से की थी। इस घटना की याद में यह जनजाति वसंत ऋतु में सरई वृक्ष की पूजा (सरना पूजा) करती है। साल के वृक्ष के चारों ओर नृत्य कर सरहुल पर्व मनाते है। सरई वृक्ष को काटना उरांव जनजातियों में प्रतिबंधित है।

अन्य पावन स्थल

हिंदू तथा अन्य लोक एवं जनजातीय मान्यताएँ पावन स्थलों की धारणा के संबंध में और आगे जाती हैं। जैसा कि हमने कक्षा 6 में पढ़ा है, इन मान्यताओं में लोग प्रकृति के तत्वों, जैसे – पर्वत, नदी, वृक्ष, पौधे एवं पशुओं और कभी-कभी पत्थरों को भी पावन मानते हैं। उदाहरण के लिए, हिंदू विश्वास परंपरा में अनगिनत स्थलों और प्रकृति के रूपों, जैसे – पर्वत, नदी, वन विशेष रूप से दिव्य माने जाते हैं और उनकी देवी-देवताओं के रूप में पूजा की जाती है। कई नदियाँ देवी के रूप में जानी जाती हैं, जबकि कुछ वृक्षों, पशुओं तथा पौधों को भी पावन माना जाता है।

चित्र 8.5 — इस चित्र में भगवान विष्णु वराह अवतार के रूप में एक दैत्य का संहार करते हैं तथा भूदेवी (पृथ्वी माता) की रक्षा करते हैं। उन्हें भगवान विष्णु की कोहनी पर बैठे हुए दर्शाया गया है (कर्नाटक के बेलुर मंदिर से)।

यह परंपरा उस समझ पर आधारित है, जो यह मानती है कि प्रकृति के कण-कण में दैवीय उपस्थिति है। निष्कर्ष स्वरूप संपूर्ण पृथ्वी पावन मानी जाती है। यह पृथ्वी माता या भूदेवी है।

इन परंपराओं पर आधारित कुछ अन्य उदाहरण हैं —

- डोंगरिया खोंड जनजाति के लिए झारखंड की नियमगिरि शृंखला में स्थित नियम डोंगर पहाड़ी पावन है। उनकी मान्यता है कि यह पहाड़ी सर्वोच्च देवता 'नियम राजा' का निवास स्थान है और वे उन्हें सब कुछ प्रदान करते हैं, जो उनके भरण-पोषण के लिए आवश्यक है। वृक्ष काटना यहाँ प्रतिबंधित है और ऐसा करना देवता के प्रति असम्मान माना जाता है।
- वर्ष 2000 के आरंभ में सिक्किम सरकार ने अनेक पावन पर्वत, गुफा, झील, चट्टान एवं उष्ण जलस्रोतों को चिह्नित किया, जिससे उन्हें किसी भी हानि से बचाया जा सके।
- तमिलनाडु की नीलगिरि शृंखला में स्थित टोडा नामक जनजातीय समुदाय अनेक पर्वत शिखरों को पावन मानता है और उन्हें अपने देवताओं से जोड़कर देखता है। उनके लिए पावनता की यह भावना कई पौधों (जो प्राय: उनके अनुष्ठानों का हिस्सा बन जाते हैं) शोला वन, आर्द्र भूमि और यहाँ तक कि विशिष्ट पत्थरों और विशेष वृक्षों तक फैली हुई है।

पावन भूभाग से अवगत होना

अगले पृष्ठ पर दिए गए मानचित्र (चित्र 8.6) में कुछ पावन स्थल चिह्नित किए गए हैं। यद्यपि ये पूरे देश में फैले हुए हैं, फिर भी यह आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं। उदाहरण के लिए, कुछ हिंदू चार धामों की यात्रा करने की इच्छा रखते हैं तथा ये चार पावन स्थल सुनियोजित रूप से भारत के दक्षिण, उत्तर, पूर्व तथा पश्चिम में स्थापित हैं। यही आकांक्षा अत्यंत पावन माने जाने वाले द्वादश ज्योतिर्लिंगों के लिए भी होती है। 51 शक्ति पीठ भी संपूर्ण भारत में (वर्तमान बांग्लादेश तथा पाकिस्तान सहित) फैले हैं। इसी प्रकार कई अन्य अंतर्संबंधित क्षेत्र हैं।

द्वादश ज्योतिर्लिंग हिंदू धर्म के प्रमुख भगवान शिव से संबंधित पावन स्थल माने जाते हैं। प्रत्येक पावन स्थल के पृथक-पृथक नाम हैं तथा प्रत्येक की अपनी पौराणिक पृष्ठभूमि है।

इन अंतर्संबंधों का जाल संपूर्ण भारत की लंबाई-चौड़ाई में हर दिशा से होते हुए पावन भूभाग का निर्माण करता है। निष्कर्षत: संपूर्ण भारत स्वयं एक पावन स्थल बन जाता है।

51 शक्तिपीठों के विषय में एक कथा भी प्रचलित है। सती के रूप में माता आदि शक्ति एवं उनके पति भगवान शिव का अपमान सती के पिता द्वारा किया गया था। तब आदि शक्ति माता सती ने आत्मदाह कर लिया। इससे भगवान शिव अत्यंत कुपित हुए और वह माता सती के शव को लेकर यहाँ-वहाँ विचरण करने लगे। उन्होंने सती के शव का अंतिम संस्कार करने से मना कर दिया। भगवान शिव का क्रोध सृष्टि एवं संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए अत्यंत घातक था। इसलिए, भगवान विष्णु ने अपने चक्र से माता सती के मृत शरीर को अनेक हिस्सों में विभाजित कर दिया। पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में माता सती के अंग जहाँ भी गिरे, वे सभी स्थल शक्तिपीठों के रूप में स्थापित हो गए। इस कहानी का आशय स्पष्ट है— भारतीय उपमहाद्वीप का संपूर्ण भू-भाग देवी माता का ही रूप है।

आइए पता लगाएँ

चार धामों की स्थिति का पता लगाइए। आपके अनुसार जब लोगों ने भारत के उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम की यात्रा की, तब उनके लिए इन धामों का क्या कोई विशेष महत्व था?

अपनी आस्थाओं से संबंधित प्रमुख पावन स्थलों की यात्रा करते हुए तीर्थयात्री नैसर्गिक रूप से भारत के संपूर्ण भूभाग से परिचित होते हैं। वे मार्ग में विभिन्न प्रकार की भाषाओं, रीति-रिवाजों, वस्त्रों तथा खाद्य पदार्थों के साथ-साथ इनकी समरूपता का भी अनुभव करते हैं।

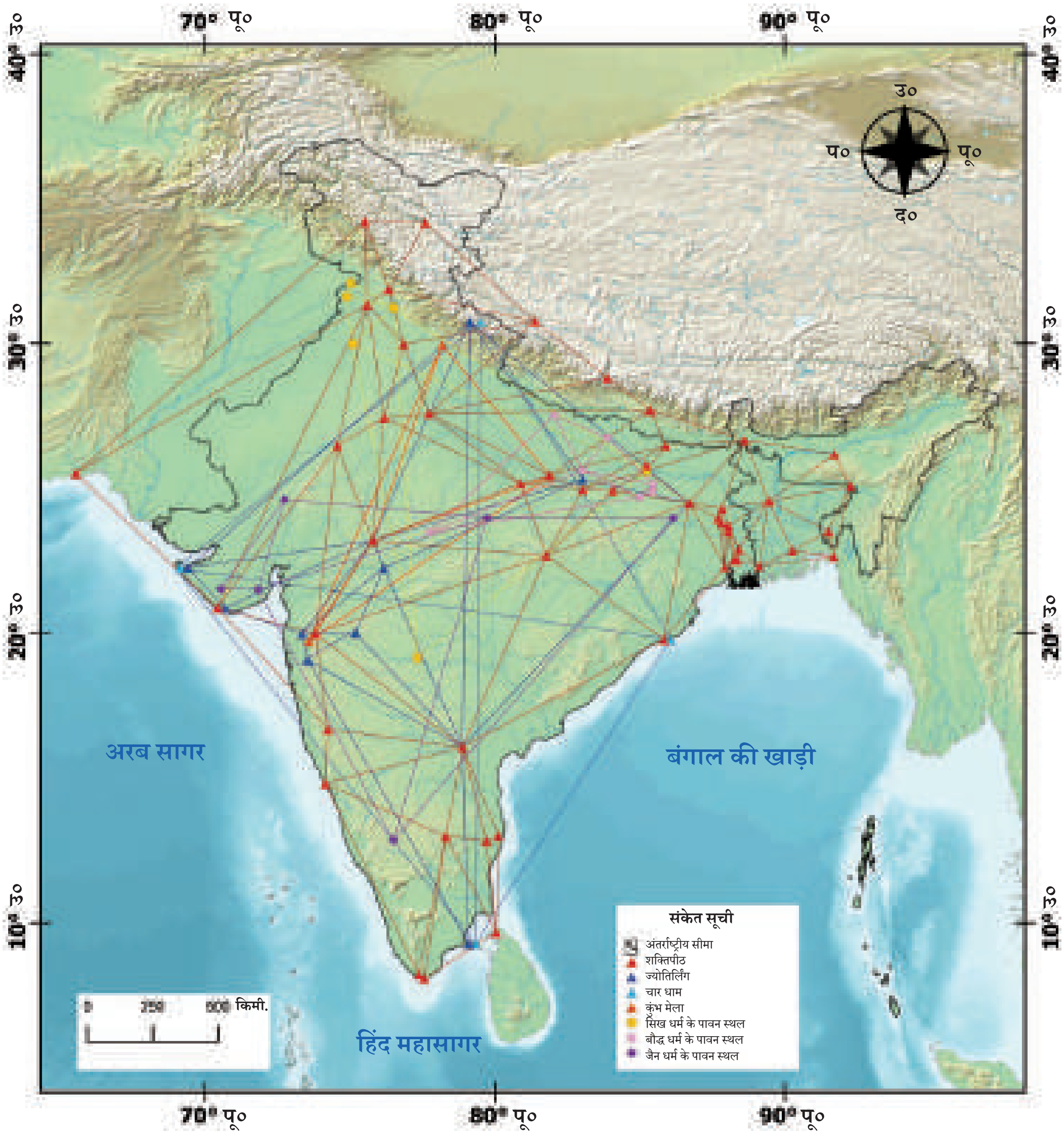

चित्र 8.6 — पारंपरिक तीर्थों के अंतर्संबंधों को दर्शाता हुआ एक मानचित्र

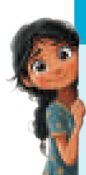

आइए पता लगाएँ

क्या आप ऊपर दिए गए मानचित्र में कुछ पारंपरिक तीर्थों की पहचान कर सकते हैं? आप पुस्तक के अंत में दिए गए राजनैतिक मानचित्र की भी सहायता ले सकते हैं।

लोग इतनी लंबी दूरी की यात्रा क्यों करते थे? धार्मिक उद्देश्य के अतिरिक्त, कुछ व्यापारी तथा व्यवसायी वस्तुओं के क्रय-विक्रय के लिए यात्रा करते थे। कुछ अन्य, चर्चा, विचार-विमर्श, अपने मत-विश्वास को लोकप्रिय बनाने तथा देश के विभिन्न भागों में रहने वाले प्रतिष्ठित शिक्षकों से सीखने या अध्ययन करने जाते थे। यद्यपि ये सभी पृथक-पृथक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु यात्रा करते थे, फिर भी उनके मार्ग कहीं-न-कहीं एक-दूसरे से मिल जाते थे। परिचर्चाएँ एवं विचार-विमर्श; वस्तुओं, अनुभवों तथा कहानियों को समझना एवं साझा करना सभी को समृद्ध करता था। इस क्रम में नए विचार उत्पन्न होते थे तथा पुराने विचारों के साथ सामंजस्य स्थापित किया जाता था। यह जटिल प्रक्रिया भारतीय उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक एकीकरण का प्रमुख कारण बनी।

पावन पारिस्थितिकी

तीर्थ स्थल सामान्यतः नदी या झील के किनारे, वनों या पहाड़ों पर स्थित होते हैं। जैसा कि हमने पहले पढ़ा, संपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य पावन स्थल के रूप में माना जाता है। इस अवधारणा ने ही हमें प्रकृति को सुरक्षित तथा संरक्षित रखने में सहायता की, क्योंकि हम प्रकृति से पृथक नहीं हैं। इस प्रकार, तीर्थ क्षेत्र भूभाग, संस्कृति और आध्यात्मिकता का परस्पर सम्मिश्रण होता है।

नदियाँ एवं संगम (नदियों का संगम)

भारत में वैदिक काल से नदियों की पूजा होती रही है। *ऋग्वेद* का 'नदी-स्तुति सूक्त' नदियों की प्रशंसा एवं स्तुतियों के प्रति समर्पित है, जो प्राचीन भारत के उत्तर-पश्चिम की उन्नीस प्रमुख नदियों का आह्वान करता है। आज भी अनेक धार्मिक रीति-रिवाजों में जल का आह्वान करते हुए कुछ प्रमुख नदियों की उपस्थिति का ध्यान किया जाता है —

> *गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।*
> *नर्मदे सिंधु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरू।।*
> *गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु*
> *तथा कावेरी — आप सभी इस जल में सम्मिलित हों।*

ये नदियाँ भारतीय सभ्यता के लिए जीवनदायिनी रही हैं। उनके उद्गम स्रोत, सहायक नदियाँ तथा वे स्थान जहाँ से होकर वे बहती हैं, प्राय: पावन माने जाते हैं तथा अनेक तीर्थयात्री भी वहाँ की तीर्थयात्रा करते हैं। क्षेत्रीय भाषाओं में इन नदियों का नाम आदर के साथ लिया जाता है, जैसे – 'गंगा जी' या 'यमुना जी'।

इसे अनदेखा न करें

- प्रयागराज में प्रत्येक छह वर्षों में **कुंभ मेले** का आयोजन होता है। प्रयाग तीन नदियों— गंगा, यमुना तथा अदृश्य सरस्वती के संगम पर स्थित है। कुछ वर्ष पूर्व यूनेस्को ने कुंभ मेले को 'अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर' के रूप में सूचीबद्ध किया है।
- लगभग 66 करोड़ लोगों ने 2025 के कुंभ मेले में भाग लिया था। भारत की पूरी जनसंख्या का यह कितना अनुपात है?

कुंभ मेला

कुंभ मेला 'अमृत मंथन' के आख्यान से आरंभ होता है। पारंपरिक रूप से, एक-दूसरे के शत्रु देवता और असुर एक बार समुद्र-मंथन के लिए एकत्र हुए। उन्हें विश्वास था कि इस मंथन से प्राप्त अमृत उन्हें अमरत्व प्रदान करेगा। असुर अमृत प्राप्त न करें, इसके लिए श्री विष्णु ने अति सुंदरी मोहिनी का रूप धारण कर अमृत-कलश (कुंभ) को ले लिया। इसी क्रम में अमृत की कुछ बूँदें चार स्थानों— हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक और उज्जैन में गिर गईं। तब से इन स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन होता आ रहा है और एक विशेष खगोलीय अवधि में वहाँ की नदियों में डुबकी लगााना अत्यंत मांगलिक माना जाता है।

चित्र 8.7

आइए विचार करें

आपके विचार में किस प्रकार ये पावन स्थल लोगों के आर्थिक जीवन और गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। मानस मानचित्र (माइंड मैप) के माध्यम से इन संबंधों का पता लगाएँ। (संकेत— चित्र 8.7 और 8.8 में इस विषय में कुछ जानकारियाँ दी गई हैं।)

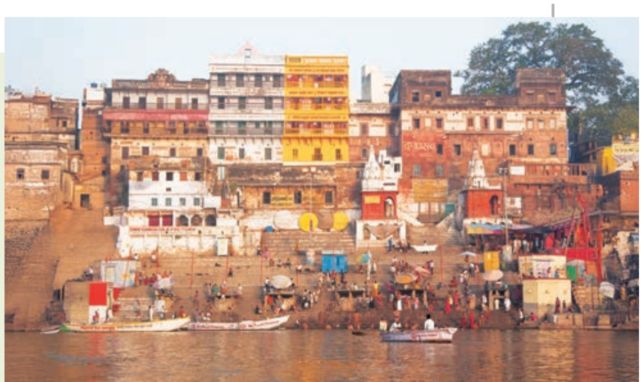

चित्र 8.8

पर्वत और वन

प्राय: संपूर्ण विश्व की दंतकथाओं में पर्वतों का संबंध देवताओं तथा नायकों से रहा है। साथ ही, पर्वतों को उनकी ऊँचाई के कारण पृथ्वी से स्वर्ग तक के प्रतीकात्मक प्रवेश- द्वार के रूप में भी देखा जाता है। यही कारण है कि भारत के अनेक तीर्थ स्थल तथा मंदिर पहाड़ियों की चोटियों पर स्थित हैं। इन चोटियों तक पहुँचने की यात्रा प्रतीकात्मक दृष्टि से दिव्य शक्ति तक पहुँचने की यात्रा मानी जाती है। लोग पर्वतीय मार्गों से उन भूभागों और पावन स्थलों की कठिन यात्रा करते हैं, जो उनकी न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक शक्ति का भी परीक्षण करती है। वर्तमान समय में, ऐसे स्थलों तक सड़कों तथा परिवहन के अन्य साधनों के माध्यम से पहुँचना संभव है।

चित्र 8.9

वृक्ष, वन तथा पावन निकुंज

भारत के अनेक भागों में हल्दी और कुमकुम से वृक्षों को अलंकृत किया जाता है। पीपल का वृक्ष— जिसे बोधि वृक्ष या संस्कृत में 'अश्वत्थ' भी कहते हैं— हिंदू, बौद्ध, सिख तथा जैन धर्मों के लिए अत्यंत पावन है। वस्तुत: लैटिन में उसका वानस्पतिक नाम 'फाइकस रिलिजियासा' है, जिसका शाब्दिक अर्थ है— 'पावन वट वृक्ष'।

चित्र 8.10 — बोधगया के महाबोधि मंदिर में स्थित वृक्ष को मूल वृक्ष का वंशज बताया जाता है। बौद्ध परंपरा के अनुसार, इसी के नीचे महात्मा बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था। इसी कारण वृक्ष का नाम बोधि वृक्ष और स्थान का नाम बोधगया पड़ा।

कक्षा 6 में हमने भारत के दो महाकाव्यों— *रामायण* और *महाभारत* के बारे में पढ़ा है। इनमें तीर्थयात्राओं, यात्रा के दौरान देखे गए स्थानों, पावन नदियों, वनों और पर्वतों का स्पष्ट वर्णन है। भारत के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में कई ग्रामीण एवं जनजातीय परंपराओं का मानना है कि इन ग्रंथों के नायक उनके क्षेत्रों में आए थे। वहाँ के पावन स्थल इस बात का संकेत भी प्रस्तुत करते हैं। ऐसे आख्यानों द्वारा विभिन्न जनसमुदाय इन महाकाव्यों को अपना मानते हैं।

चित्र 8.11 — छत्तीसगढ़ के बस्तर में एक पावन स्थल, जहाँ भगवान राम के उस क्षेत्र में आने का उत्सव मनाया जा रहा है।

चित्र 8.12 — मोहनजोदड़ो की एक मुहर (सील)

मोहनजोदड़ो की इस मुहर का अवलोकन कीजिए। क्या आप इसके ऊपरी भाग में अंकित पत्तियों को पहचान सकते हैं? इससे यह ज्ञात होता है कि पीपल का वृक्ष कितनी शताब्दियों से भारत के सांस्कृतिक भूगोल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

आइए विचार करें

पीपल के वृक्ष के अनेक भागों का औषधीय उपयोग होता है। इसकी पत्तियों का प्रयोग त्वचा रोगों में तथा छाल का प्रयोग उदर रोगों के निवारण में उपयोगी होता है। यह वृक्ष प्राय: वर्ष भर हरा-भरा रहता है, अत: यह अनेक प्रकार के पक्षियों एवं पशुओं को भोजन एवं आश्रय प्रदान करता है।

कालांतर में भारत के कई ग्रामीण एवं जनजातीय समुदायों ने हानिकारक गतिविधियों, जैसे – आखेट, वृक्षों की कटाई या खनिजों के दोहन आदि से वनों की रक्षा एवं उनका संरक्षण करने का निश्चय किया। उन्होंने वनों को देवताओं का निवास स्थान माना। उदाहरण के लिए मेघालय में रिंके या बासा। ऐसे विशिष्ट वनों को अंग्रेजी भाषा में ग्रोव्स (पावन निकुंज) कहते हैं (क्षेत्रीय भाषाओं के नामों को अगले पृष्ठ पर दी गई तालिका में देखें)। अपने पावन महत्व के कारण ये वनस्पतियों एवं जीवों की विशाल जैव-विविधता को आश्रय प्रदान करते हैं। कई पावन निकुंजों में छोटे-छोटे जलाशय होते हैं जो जल संरक्षण में भी सहायक होते हैं।

भारत में हजारों की संख्या में पावन निकुंज हैं। यह एक विडंबना है कि इनकी संख्या तेजी से घटती जा रही है, क्योंकि लोगों ने अनेक प्रकार के कृषि कार्यों एवं उद्योगों के लिए उनका अतिक्रमण करना आरंभ कर दिया है। फिर भी भारत के अनेक क्षेत्रों में पावन निकुंजों के संरक्षण का कार्य आज भी चल रहा है।

चित्र 8.13 — कलकई मंदिर, मुलशी, महाराष्ट्र

चित्र 8.14 — मावफ्लांग, शिलांग

चित्र 8.15 — भीलों का पावन निकुंज

चित्र 8.16 — उदयनकुदुकादु कारुमबारियमकोंडन, तमिलनाडु

नीचे दी गई तालिका में भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में पावन निकुंजों के लिए प्रयुक्त नाम दिए गए हैं। क्या आप इसमें कुछ नए नाम जोड़ सकते हैं?

मलयालम	*कावु*
तमिल	*कोविलकादु*
कन्नड़	*देवरे कादु*
मराठी	*देवराई*
खासी (मेघालय)	*खलाव केनतांग*
हिंदी (हिमाचल प्रदेश)	*देव वन*
झारखंड	*सरना*
छत्तीसगढ़	*देवगुड़ी*
राजस्थान	*ओरण*

तमिलनाडु में स्थानीय गाथाएँ पावन निकुंज के देवता, प्रकृति और मानव के मध्य संबंधों को प्रमुखता से प्रदर्शित करती हैं। तंजावुर जनपद में इसी प्रकार की एक गाथा यह बताती है कि निकुंज के देवता फल-चमगादड़ (फ्रूट बैट) की रक्षा करते हैं, जिन्हें पावन माना जाता है। इन्हें देखना भी मांगलिक माना जाता है। इसके अतिरिक्त, पुष्पों के परागीकरण तथा बीजों को बिखेरने में चमगादड़ की भूमिका महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, पावन निकुंज के देवता पारिस्थितिकीय पद्धति एवं मानव के पारस्परिक संबंध को विकसित करते हैं।

तीर्थयात्रा से व्यापार तक

चित्र 8.17

तीर्थयात्री अपनी यात्रा के क्रम में व्यापारियों तथा व्यवसायियों के संपर्क में आते हैं। यह मेल-मिलाप दोनों समूहों को लाभान्वित करता है। तीर्थयात्रियों को अनेक प्रकार की वस्तुओं की आवश्यकता होती है, जिन्हें व्यापारी उपलब्ध कराते हैं। परिणामस्वरूप, तीर्थयात्रा मार्ग तथा व्यापार मार्ग प्राय: एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं। कुछ व्यापारी तीर्थयात्री के रूप में तीर्थ स्थलों की यात्रा करते हुए अपनी वस्तुओं को भी दूर-दूर तक के उपनगरों एवं नगरों में विक्रय के लिए ले जाते हैं। इस प्रकार वे दो कार्य एक साथ करते हैं।

प्राचीन भारत में व्यापारी किस प्रकार के मार्गों का उपयोग करते थे? 'साम्राज्यों का उदय' नामक अध्याय में दिए गए व्यापार मार्गों के मानचित्र (चित्र 5.5) का पुनरावलोकन कीजिए। उत्तरापथ एक प्रमुख यात्रा मार्ग था, जो उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी और पूर्वी भागों को जोड़ता था। दक्षिणापथ कौशांबी तथा उज्जयिनी होते हुए प्रतिष्ठान (पैठन) तक जाता था। जैसा कि आप जानते हैं, इन मार्गों के द्वारा कुछ वस्तुओं का व्यापार होता था जिनमें बहुमूल्य रत्न, जैसे – सीप और मोती, सिक्के, स्वर्ण तथा हीरे के साथ-साथ कपास, मसाले और चंदन सम्मिलित थे।

आइए पता लगाएँ

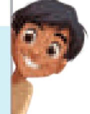

पारदर्शी कागज की एक शीट लीजिए जिसका उपयोग अनुरेखण (ट्रेसिंग) के लिए किया जा सकता हो। 'साम्राज्यों उदय' का नामक अध्याय में दिए व्यापारिक मार्गों के मानचित्र का अनुरेखण कीजिए। इसे महत्वपूर्ण तीर्थस्थलों के मानचित्र पर रखिए। आप इसके द्वारा क्या अवलोकन कर पा रहे हैं?

भारत से बाहर के पावन भूभाग

पावन भूभाग की अवधारणा और परंपरा केवल भारत तक ही सीमित नहीं है। प्राचीन ग्रीस में पर्वतों से लेकर पावन निकुंज तक विविध प्रकार के पावन चिह्न पाए जाते हैं। अमेरिका के मूल निवासियों का प्रकृति के साथ विशेष संबंध है, जिसे वे पावन मानते हैं। न्यूज़ीलैंड के मूल निवासी माओरी, तारानकी माउंगा पर्वत को अपना पूर्वज मानते हैं, अत: वह उनके लिए पावन है। माओरी समुदाय के अनेक प्रतिवेदनों के पश्चात एक नए नियम द्वारा इस पर्वत को मनुष्य के समान अधिकार और दायित्व प्रदान किए गए। यह माओरी विश्व-दृष्टि की स्वीकृति का प्रतीक था। इस समुदाय के वरिष्ठजन पर्वत और नदी को हानि पहुँचाने वाली गतिविधियों के विरुद्ध खड़े होते हैं, जिससे यह सुनिश्चत होता है कि पावन स्थलों का शोषण एवं ह्रास न हो।

पावन स्थलों का पुनरुद्धार और संरक्षण

आइए विचार करें

चित्र 8.18

उन स्थानों और प्राणियों के चित्रों को सावधानीपूर्वक देखिए, जिन्हें पावन माना जाता है। उत्तर में यमुना, पूर्व में महानदी तथा दक्षिण में कावेरी, ये सभी नदियाँ पावन मानी जाती हैं। फिर भी ये इतनी प्रदूषित कैसे हो गईं? क्या आपके आस-पास ऐसे पावन स्थल हैं, जो मानवीय गतिविधियों के कारण इसी तरह प्रदूषित एवं क्षीण हो गए हैं? हमारे पावन स्थलों की पावनता को बनाए रखना किसका दायित्व है? कक्षा में इस विषय पर चर्चा कीजिए।

पूर्वकाल के लोगों एवं पावन भूभाग के मध्य सौहार्दपूर्ण संबंध विद्यमान थे। इसने भारतीय सभ्यता को हजारों वर्ष बनाए रखा तथा ऐसे मूल्यों का निर्धारण किया जिन्हें संपूर्ण उपमहाद्वीप में मान्यता प्राप्त थी। परंतु आज इन्हीं संबंधों पर संकट है।

पावन भौगोलिक क्षेत्रों की उपस्थिति आज भी प्रासंगिक है, जबकि प्रकृति के साथ हमारा संबंध असंगत हो चला है। नदियों के अति दोहन ने उनके लुप्त होने की स्थिति उत्पन्न कर दी है। पावन पर्वतों को विकास चुनौती दे रहा है। लोगों ने अपने पर्यावरण, देवता और मूल्यों की रक्षा के लिए विरोध भी आरंभ कर दिया है। वर्तमान समय में, जबकि सतत विकास (सस्टेनेबल डेवलपमेंट) एक वैश्विक विषय बन गया है। ऐसे में पावन भौगोलिक क्षेत्र आधारित विश्व-दृष्टि इसमें महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

आगे बढ़ने से पहले...

- भारत के सभी धर्मों के अपने-अपने पावन स्थल हैं, जिन्हें बिंदुओं के द्वारा स्थलाकृति पर प्रदर्शित किया गया है। बौद्ध, जैन और सिख धर्म में ऐसे पावन स्थल सामान्य रूप से किसी महान व्यक्ति से संबंधित होते हैं।
- हिंदू धर्म में तीर्थ स्थलों का वृहत जाल है, जो संपूर्ण भारत को आपस में जोड़ता है। तीर्थयात्रा की परंपरा लोगों के जीवन में गहराई से जुड़ी हुई है। यह न केवल व्यक्तिगत एवं आध्यात्मिक विकास को पोषित करती है, अपितु व्यापार और अखिल भारतीय सांस्कृतिक एकीकरण के सामाजिक-आर्थिक उद्देश्य को भी समर्थन देती है।
- हिंदुओं, जनजातियों एवं लोक-परंपराओं में भूमि को पावन माना जाता है।
- उपेक्षा और देखभाल की कमी के कारण हमारे पावन स्थल प्रदूषित होते जा रहे हैं। हमारी राष्ट्रीय धरोहर की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। हमारा संविधान भी हमें इसकी याद दिलाता है।

प्रश्न एवं क्रियाकलाप

1. प्रसिद्ध पर्यावरणविद डेविड सुज़ुकी के निम्नलिखित वाक्य पढ़ें—

"हम जिस दृष्टि से विश्व को देखते हैं, उसी के अनुसार उसके साथ व्यवहार करते हैं। अगर पर्वत एक देवता है, न कि खनिज का ढेर; अगर नदियाँ पृथ्वी की शिराएँ हैं, न कि केवल सिंचाई का स्रोत; अगर वन पावन निकुंज है, न कि केवल इमारती लकड़ियों का ढेर; अगर अन्य प्रजातियाँ हमारे संबंधी हैं, न कि केवल साधनमात्र या अगर पृथ्वी हमारी

माता है, न कि केवल संसाधन; तब हम इन सभी के साथ अत्यंत आदर के साथ व्यवहार करते हैं। अत: यह विश्व को एक अलग परिप्रेक्ष्य में देखने की चुनौती है।”

इस पर छोटे समूह में चर्चा कीजिए। आप उक्त वाक्यों से क्या समझते हैं? इससे हमारे चारों ओर विद्यमान वायु, जल, भूमि, वृक्ष तथा पर्वत के प्रति हमारे व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है?

2. अपने क्षेत्र के पावन स्थलों की सूची बनाइए। पता लगाइए कि ये स्थल पावन क्यों माने जाते हैं? क्या इनसे जुड़ी कोई कहानियाँ हैं? इस विषय में 150 शब्दों में एक संक्षिप्त लेख लिखिए। (संकेत— आप अपने परिवार एवं समुदाय के वरिष्ठ लोगों से चर्चा कर सकते हैं। अपने शिक्षक से भी विचार-विमर्श कीजिए। इस प्रकार की सूचनाओं का संग्रह करने के लिए लेख एवं पुस्तक पढ़िए)।

3. आपके विचार में प्राकृतिक तत्व, जैसे – नदी, पर्वत और वन आदि लोगों के लिए पावन क्यों माने जाते हैं? वे हमारे जीवन में किस प्रकार योगदान देते हैं?

4. लोग तीर्थ या अन्य पावन स्थलों की यात्रा क्यों करते हैं?

5. प्राचीन तीर्थयात्रा मार्गों ने उस समय किस प्रकार व्यापार को प्रोत्साहित किया? आपके अनुसार ये पावन स्थल उन क्षेत्रों के आर्थिक विकास में किस प्रकार सहायक बने?

6. पावन स्थल किस प्रकार वहाँ के लोगों की संस्कृति और परंपरा को प्रभावित करते हैं?

7. भारत के विविध प्रकार के पावन स्थलों में से अपनी रुचि के अनुसार किन्हीं दो का चयन कीजिए तथा उनका महत्व बताते हुए एक परियोजना बनाइए।

8. तीर्थयात्राएँ किस प्रकार दोहरा महत्व रखती हैं?

शासक से शासित तक — सरकार के प्रकार

अध्याय 9

राज्य के आंतरिक प्रशासन में एक शासक का दायित्व तीन स्तरों पर होता है— रक्षा (बाह्य आक्रमणों से राज्य की सुरक्षा करना), पालन (राज्य में कानून व्यवस्था बनाए रखना एवं सुचारु रूप से शासन संचालित करना) और योगक्षेम (जनता के हितों की रक्षा करना)।

— कौटिल्य (अर्थशास्त्र)

चित्र 9.1 — भारतीय संसद का भीतरी दृश्य

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. सरकार के विभिन्न प्रकार कौन-कौन से हैं?
2. सरकार अपनी शक्ति कहाँ से प्राप्त करती है?
3. एक देश की सरकार जनता से किस प्रकार संवाद स्थापित करती है?
4. लोकतंत्र का क्या महत्व है?

0783CH09

सरकार क्या है?
इसके क्या कार्य हैं?

कक्षा 6 में हमने जाना कि सरकार क्या होती है और इसकी कुछ भूमिकाओं का भी अध्ययन किया।

सरकार हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो निम्नलिखित हैं —

- समाज में कानून व्यवस्था बनाए रखना;
- लोगों के लिए शांति, स्थायित्व एवं सुरक्षा सुनिश्चित करना;
- अन्य देशों के साथ संबंधों का संचालन करना;
- राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करना;
- आवश्यक वस्तुओं एवं सेवाओं (जैसे – शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आधारभूत संरचना) की आपूर्ति करना;
- अर्थव्यवस्था और आर्थिक गतिविधियों का प्रबंधन करना;
- लोगों के कल्याण एवं उनके जीवन को उन्नत बनाने के लिए कार्य करना।

आइए पता लगाएँ

→ क्या आपको अपनी कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक का यह चित्र याद है?

→ सरकार के बहुत से अन्य कार्य भी हैं। उन्हें सूचीबद्ध कीजिए।

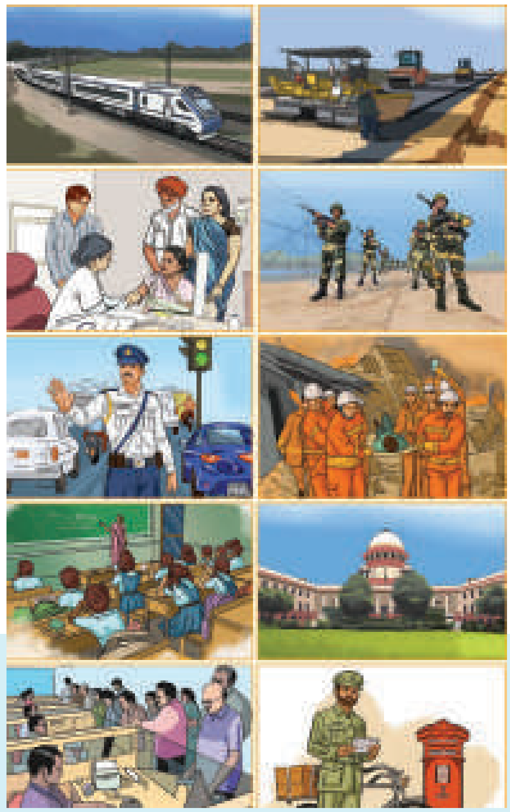

चित्र 9.2

कक्षा 6 में हमने सीखा कि भारत में लोकतांत्रिक सरकार है। भारत की तरह अनेक अन्य देशों में भी लोकतांत्रिक सरकारें हैं, जबकि कुछ देशों में अन्य प्रकार की सरकारें हैं। सभी लोकतांत्रिक सरकारें भी एक जैसी नहीं होती हैं। इस अध्याय में हम सरकारों के विभिन्न प्रकारों का अध्ययन करेंगे, उनके बीच के अंतर को जानेंगे और समझेंगे कि वे किस प्रकार कार्य करती हैं।

लोकतंत्र क्या है?

जैसा कि हमने कक्षा 6 में पढ़ा, लोकतंत्र को सबसे अच्छी तरह जनता के शासन के रूप में समझा जा सकता है। इसका अर्थ है कि लोकतंत्र में शक्ति और सत्ता का स्रोत देश की जनता होती है। आइए, इसे विद्यालय के एक उदाहरण से समझते हैं।

लोकतंत्र संबंधी विद्यालय का उदाहरण

विद्यालयों में कई प्रकार की गतिविधियाँ और कार्य होते हैं, जिन्हें सभी विद्यालय अनिवार्य रूप से करते हैं। विद्यालय प्रतिदिन अनेक कार्यों का प्रबंधन तो करते ही हैं, साथ ही विभिन्न गतिविधियों को सुव्यवस्थित रूप से संचालित भी करते हैं। उदाहरण के लिए, समय-सारणी बनाना तथा उसका अनुपालन सुनिश्चित करना, खेलकूद का आयोजन करना, मध्याह्न के समय भोजन परोसना (जिसे मध्याह्न भोजन योजना कहा जाता है) बर्तन धोना, प्रार्थना सभा हेतु वक्ताओं का चयन करना तथा 'बस्ता रहित दिवसों' के लिए गतिविधियाँ निर्धारित करना। इस प्रकार विद्यालयों में किए जाने वाले कार्यों की सूची बहुत लंबी है।

इन कार्यों को करने के लिए प्रधानाध्यापिका को विद्यालय में एक विद्यार्थी समिति के गठन की आवश्यकता प्रतीत होती है, जिससे विद्यार्थी इन कार्यों के संचालन के लिए उपयोगी नियमों के विकास का हिस्सा बन सकें और नियमों के क्रियान्वयन में सहायता कर उनका अनुपालन सुनिश्चित कर सकें। प्रधानाध्यापिका के समक्ष अब प्रश्न यह था कि समिति के सदस्य कौन होंगे?

प्रधानाध्यापिका ने प्रार्थना सभा में इस विषय पर चर्चा की। उन्होंने प्रस्ताव रखा कि अच्छा होगा यदि कुछ विद्यार्थी स्वयं से इन कार्यों का दायित्व लें, जिसके लिए एक विद्यार्थी समिति का गठन किया जाना चाहिए। यह सुनकर विद्यार्थी उत्साहित हो गए और आपस में चर्चा करने लगे—

चित्र 9.3

नगमा— कक्षा 12 के विद्यार्थी वरिष्ठतम हैं, हम सभी कार्यों का ध्यान रखेंगे।

शोभा— लेकिन आपकी पढ़ाई तो कुछ ही महीनों में पूरी हो जाएगी, इसलिए कक्षा 11 के विद्यार्थियों को ये सभी दायित्व लेने चाहिए।

गुरप्रीत— यदि केवल एक ही कक्षा के विद्यार्थी सभी दायित्व सँभालेंगे, तो वे अन्य कक्षाओं के समक्ष आने वाली समस्याओं को कैसे जानेंगे?

प्रतिनिधि
वह व्यक्ति जिसे किसी अन्य व्यक्ति या समूह की ओर से कार्य करने या निर्णय लेने के लिए अधिकृत किया गया हो।

ऐसी रोचक स्थिति में विद्यार्थी अंततः तीन विकल्पों पर पहुँचे—

- विद्यालय में सभी समिति का हिस्सा बन सकते हैं और दायित्व निभा सकते हैं।
- प्रधानाध्यापिका स्वयं विद्यार्थियों का चयन समिति के लिए कर सकती हैं।
- विद्यार्थी मतदान के आधार पर अपने प्रतिनिधि का चयन कर सकते हैं, जिससे निर्वाचित **प्रतिनिधि** ही समिति के सदस्य बनेंगे।

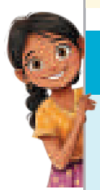

आइए पता लगायें

तीनों तरीकों में से आप सबसे अधिक प्रभावी किसे मानते हैं और क्यों?

पहला तरीका आकर्षक प्रतीत हो सकता है, किंतु यदि विद्यालय का प्रत्येक विद्यार्थी समिति का सदस्य होगा, तो किसी निर्णय तक पहुँच पाना कठिन होगा और लिए गए निर्णयों का प्रभावी अनुपालन सुनिश्चित करना भी कठिन होगा। दूसरे तरीके में, क्योंकि प्रधानाध्यापिका स्वयं समिति के लिए विद्यार्थियों का चयन कर रही हैं, इसलिए अधिकांश विद्यार्थियों को दायित्व नहीं मिल सकेगा। साथ ही उनके पास यह सुनिश्चित करने का भी कोई तरीका नहीं होगा कि उनकी बात सुनी जा सके, उन्हें क्या चाहिए और उनकी क्या आवश्यकताएँ हैं। हालाँकि, तीसरे तरीके में प्रत्येक कक्षा से विद्यार्थी अपने बीच में से किसी ऐसे विद्यार्थी को अपना प्रतिनिधि चुन सकते हैं, जिस पर उन्हें विश्वास हो कि वह प्रभावशाली रूप से उनकी कक्षा की आवश्यकताओं का पक्ष रख सकेगा। यह प्रतिनिधि समिति में कार्य करेगा, अर्थात विद्यार्थी समिति में प्रत्येक कक्षा से प्रतिनिधि सम्मिलित होंगे। प्रतिनिधियों के चयन और समिति के गठन की यह प्रक्रिया ही लोकतांत्रिक प्रक्रिया है।

आइए विचार करें

विद्यालय का उदाहरण हमें प्रतिनिधित्व की अवधारणा और इसकी कार्यप्रणाली को समझने में सहायता करता है। यद्यपि विद्यार्थियों की समिति, संसदीय और विधायी समितियों से भिन्न होती है, जैसे कि विद्यालय के कक्षा प्रतिनिधि संसद अथवा विधान सभा के सदस्यों से काफी भिन्न होते हैं। ये भिन्नताएँ क्या हैं? कक्षा में अपने शिक्षक के साथ चर्चा कीजिए और इन भिन्नताओं की एक सूची बनाइए।

सरकार के कार्य

आरंभ में हमने चर्चा की थी कि सरकार हमारे जीवन में अनेक दायित्वों का निर्वहन करती है। उसी प्रकार विद्यालय में विद्यार्थी समिति के भी विभिन्न दायित्व होते हैं। जिस प्रकार

सरकार आवश्यक नियम बनाती है, उनका क्रियान्वयन करती है और यह सुनिश्चित करती है कि सभी लोग इन नियमों का पालन करें, उसी प्रकार विद्यार्थी समिति आवश्यक नियम बनाती है, उन्हें लागू करती है और यह सुनिश्चित करती है कि सभी विद्यार्थी इन नियमों का पालन करें। सरकार के यह तीनों ही दायित्व महत्वपूर्ण हैं।

कानूनों का निर्माण करना **विधायी कार्य** कहलाता है। किसी देश के संचालन हेतु ये कानून एक सशक्त आधार प्रदान करते हैं। इन नियमों का कार्यान्वयन करना और इनके अनुसार देश का **प्रशासन कार्यपालिका** संबंधी कार्य कहलाता है। वहीं कानूनों की व्याख्या करना और विवादों का निपटारा करना **न्यायिक कार्य** कहलाता है।

लोकतंत्र को 'जनता के शासन' के रूप में जाना जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि जैसे विद्यालय में प्रतिनिधि चुनने की तीसरी विधि अपनाई जाती है, उसी प्रकार लोकतंत्र में भी जनता स्वयं पर शासन करने के लिए अपने प्रतिनिधियों को चुनती है। हालाँकि, सभी देश अपने प्रतिनिधियों के चुनाव हेतु एक जैसी प्रणाली का प्रयोग नहीं करते। इस विषय को हम आगे अधिक विस्तार से समझेंगे।

क्या आप जानते हैं?

*चित्र 9.4 — लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, यू.एस.ए. से लिया गया चित्रकार वेडर द्वारा वर्ष 1896 में बनाया गया 'सरकार' नामक **भित्ति चित्र***

19वीं शताब्दी के अंत में अमेरिका के राष्ट्रपति रहे अब्राहम लिंकन ने लोकतंत्र को 'जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए शासन' के रूप में परिभाषित किया, जो आज भी व्यापक रूप में प्रयुक्त होता है।

भित्ति चित्र
एक विशाल पेंटिंग या कलाकृति, जिसे सीधे दीवार या छत पर बनाया जाता है।

सरकारें किस प्रकार एक-दूसरे से भिन्न होती हैं?

किसी भी देश की सरकार समय के साथ विकसित होती है। प्रत्येक देश का अपना विशिष्ट इतिहास, संस्कृति और आकांक्षाएँ होती हैं, इसलिए अलग-अलग देशों की सरकारों में भिन्नता स्वाभाविक है। आइए, कुछ ऐसे पक्षों पर विचार करें जो एक सरकार को दूसरी सरकार से भिन्न बनाते हैं। इन विभिन्नताओं को हम आगे अध्याय में अलग-अलग प्रकार की शासन प्रणालियों का अध्ययन करते समय और अधिक स्पष्ट रूप से समझ पाएँगे।

सरकारों के बीच प्रमुख अंतर

‘यह सरकार है’— यह तय करने का अधिकार किसे है?

1. **‘यह सरकार है’— यह तय करने का अधिकार किसे है?**
   विभिन्न प्रकार की शासन प्रणालियों के मध्य यह आधारभूत अंतर होता है। यह प्रश्न है कि ‘यह हमारे देश की सरकार है’ किसके द्वारा तय किया जाता है? अर्थात सरकार को उसका अधिकार और शक्ति प्रदान करने वाला कौन है? उदाहरणार्थ, भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में देश की जनता यह निर्णय करती है और सत्ता का स्रोत होती है, जबकि धर्मतंत्रीय व्यवस्था में सत्ता का स्रोत धार्मिक विश्वास और धार्मिक संस्था का मुखिया होता है।

सरकार का गठन किस प्रकार होता है?

2. **सरकार का गठन किस प्रकार होता है?**
   लोकतंत्र में सरकार का गठन सामान्यत: किसी न किसी प्रकार के निर्वाचन के माध्यम से होता है, जबकि जिन राजतंत्रात्मक राज्यों में राजा या रानी होते हैं, वहाँ सामान्यत: राजपरिवार का ही कोई सदस्य शासन करता है और निर्णय लेता है कि किस प्रकार शासन किया जाए। सरकार बनाने के अन्य तरीके भी हो सकते हैं, यहाँ तक कि लोकतंत्रों में भी निर्वाचन की विभिन्न प्रणालियाँ अपनाई जा सकती हैं।

सरकार के विभिन्न अंग कौन-कौन से होते हैं और वे क्या कार्य करते हैं?

3. **सरकार के विभिन्न अंग कौन-कौन से होते हैं और वे क्या कार्य करते हैं?**
   किसी भी सरकार के अनेक अंग होते हैं, जो विभिन्न प्रकार की शासन व्यवस्थाओं में भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। उदाहरणार्थ, सरकार के तीन प्रमुख कार्य— विधायी, कार्यकारी और न्यायिक एक ही संस्था या तीन अलग-अलग संस्थाओं द्वारा किए जा सकते हैं। देश में शासन चलाने की व्यवस्था को एक प्रलेख में लिखित रूप दिया जा सकता है, जिसमें देश के मूलभूत नियम होते हैं। इसे ‘संविधान’ कहा जाता है और यही व्यवस्था अधिकांश लोकतंत्रों में अपनाई जाती है या फिर यह व्यवस्था राजा या रानी द्वारा तय की जा सकती है, जैसा कि ‘राजतंत्र’ में होता है, जहाँ शासन राजा या रानी द्वारा किया जाता है।

4. **सरकार किस उद्देश्य से कार्य कर रही है? वह कौन-से लक्ष्य प्राप्त करना चाहती है?**

सरकारों का गठन कुछ मूल्यों और आदर्शों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। कुछ सरकारें, जैसे – भारत सरकार समता और समस्त नागरिकों की समृद्धि के लिए कार्य करती है, जबकि कुछ अन्य प्रकार की सरकारों का उद्देश्य सीमित हो सकता है।

सरकार किस उद्देश्य से कार्य कर रही है? वह कौन से लक्ष्य प्राप्त करना चाहती है?

सरकार के विभिन्न स्वरूपों में इन चार प्रमुख पहलुओं के आधार पर भिन्नताएँ पाई जाती हैं, यद्यपि अन्य प्रकार की भिन्नताएँ भी संभव हैं। आइए, अब हम सरकारों के कुछ विभिन्न स्वरूपों का अध्ययन करते हैं।

विश्व में लोकतांत्रिक सरकारें

आधुनिक विश्व में लोकतंत्र शासन का सबसे लोकप्रिय स्वरूप बन गया है। अध्याय के इस भाग में हम यह समझेंगे कि लोकतांत्रिक सरकारें भी भिन्न प्रकार की हो सकती हैं। लेकिन इन विभिन्नताओं को जानने से पहले यह आवश्यक है कि हम लोकतंत्र के कुछ मूलभूत सिद्धांतों को समझें, जो प्रत्येक लोकतंत्र में अनिवार्य रूप से पाए जाते हैं।

लोकतंत्र के मूलभूत सिद्धांत

लोकतंत्र में **समानता** का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को समान व्यवहार पाने का अधिकार प्राप्त है। इसका अर्थ यह भी है कि सभी व्यक्तियों को शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी सुविधाएँ समान रूप से मिलनी चाहिए और सभी व्यक्ति कानून के समक्ष समान हैं।

लोकतंत्र में **स्वतंत्रता** से तात्पर्य नागरिकों को स्वयं चयन करने और अपना मत अभिव्यक्त करने के अधिकार से है।

प्रतिनिधि सहभागिता का अर्थ है कि प्रत्येक नागरिक को चुनाव के माध्यम से अपने प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार प्राप्त होता है। चुने गए प्रतिनिधि विधायिका का भाग बनते हैं और सरकार के विभिन्न निर्णयों में नागरिकों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार प्रत्येक नागरिक को (निर्धारित आयु से ऊपर) अपना प्रतिनिधि चुनने के लिए मतदान का अधिकार प्रदान करता है।

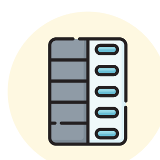

नागरिकों के **मौलिक अधिकार,** जैसे – मतदान का अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार और शोषण के विरुद्ध अधिकार, सभी को लोकतंत्र में प्रदान किया जाता है और संरक्षित किया जाता है।

स्वतंत्र न्यायपालिका यह सुनिश्चित करती है कि प्रत्येक नागरिक के मौलिक अधिकारों की रक्षा हो और नागरिकों के साथ-साथ सरकार के सभी अंगों के द्वारा कानूनों का पालन हो।

लोकतंत्र के ये मौलिक सिद्धांत भी समय के साथ विकसित हुए हैं। उदाहरण के लिए, भारत ने 1950 में गणराज्य बनने के साथ ही सभी वयस्कों को चुनाव में मतदान का अधिकार (सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार) प्रदान कर दिया था, जबकि स्विट्ज़रलैंड में महिलाओं को यह अधिकार 1971 में मिला।

यह स्पष्ट है कि उपर्युक्त सिद्धांत एक आदर्श हैं। सभी लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ इन आदर्शों को पूर्णतः व्यवहार में नहीं उतार पातीं, फिर भी यह आवश्यक है कि सभी व्यक्ति इन आदर्शों को अपने मानस में स्थान दें तथा इन्हें लोकतांत्रिक जीवन की दिशा में प्रेरक बनाएँ।

लोकतांत्रिक सरकारों के विभिन्न स्वरूप

आइए, अब हम विश्व भर में प्रचलित लोकतांत्रिक सरकारों के विभिन्न रूपों को समझते हैं।

1. प्रत्यक्ष लोकतंत्र

प्रत्यक्ष लोकतंत्र वह व्यवस्था है, जिसमें देश के सभी नागरिक शासन संबंधी सभी नियमों, नीतियों एवं कार्यों के लिए प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी होते हैं और वे सभी निर्णयों में स्वयं भाग लेते हैं।

वर्तमान समय में स्विट्ज़रलैंड जैसे देश में इस प्रकार की लोकतांत्रिक व्यवस्था अपनाई जाती है। इस शासन प्रणाली की एक सीमा यह है कि इसे व्यवहार में लागू करना अधिक कठिन है, विशेष रूप से बड़े देशों में— जैसा हम अपने विद्यालय की कहानी में देख चुके हैं, यदि प्रत्येक विद्यार्थी समिति का भाग बनता है, तो निर्णय लेना और सभी कार्यों को सुचारु रूप से संपन्न करना कठिन हो जाएगा।

2. प्रतिनिधि सरकार

यह लोकतांत्रिक सरकार का वह स्वरूप है, जिसमें नागरिक सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के माध्यम से अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं, जैसा कि भारत में होता है। इस प्रकार की लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता सीधे शासन नहीं करती, किंतु सरकार सदैव जनता के प्रति **उत्तरदायी** रहती है।

उत्तरदायित्व
लोकतंत्र में उत्तरदायित्व का अर्थ है कि सरकार जनता के प्रति जवाबदेह होती है।

चुनाव प्रतिनिधि लोकतंत्र का एक अभिन्न अंग होते हैं, जिसके माध्यम से जनता अपनी इच्छा के अनुसार सरकार में बदलाव कर सकती है। इसलिए, चुनाव नियमित और निश्चित अंतराल पर आयोजित किए जाते हैं। भारत में प्रत्येक पाँच साल में आम चुनाव होते हैं, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रत्येक चार साल में आम चुनाव होते हैं।

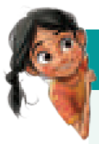

इसे अनदेखा न करें

जैसा कि हमने आरंभ में पढ़ा था, लोकतंत्र समय के साथ विकसित हुआ और इसकी विशेषताएँ भी परिवर्तित हुई हैं। आज भी इन लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के कार्य करने के तरीकों में कई भिन्नताएँ पाई जाती हैं। यह याद रखना आवश्यक है कि जब इन देशों ने लोकतंत्र अपनाया, तब उनके पास लोकतंत्र के वे सभी सिद्धांत नहीं थे, जिस रूप में हम आज उन्हें समझते हैं। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन में प्रभावी सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार 1928 में लागू हुआ और संयुक्त राज्य अमेरिका में यह 1965 में लागू हो सका।

देश	लोकतंत्र की स्थापना का वर्ष
संयुक्त राज्य अमेरिका	1787
स्विट्ज़रलैंड	1848
भारत	1947
जर्मनी	1949
केन्या	1964
नेपाल	2008

चित्र 9.5 - भारत में मतदान

आज अधिकांश लोकतंत्र, प्रतिनिधि लोकतंत्र की प्रणाली अपनाते हैं। किंतु प्रत्येक लोकतंत्र का कार्य करने का तरीका अलग-अलग हो सकता है। सामान्यतः प्रतिनिधि लोकतंत्र के दो प्रमुख स्वरूप होते हैं।

क. संसदीय लोकतंत्र

इस प्रकार की सरकार में कार्यपालिका के सदस्य विधायिका का भी हिस्सा होते हैं, जैसे भारत में प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद संसद के सदस्य भी होते हैं।

मंत्रिपरिषद विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती है और तब तक कार्य करती है, जब तक उसे विधायिका का विश्वास प्राप्त रहता है। भारत में जब तक मंत्रिपरिषद को लोकसभा में विश्वास प्राप्त रहता है, वह तब तक कार्य करती है।

इस प्रकार की सरकार में जनता केवल विधायिका के सदस्यों का ही निर्वाचन करती है, न कि कार्यपालिका का। विधायिका के कुछ चयनित सदस्य ही मंत्री बनते हैं।

ख. अध्यक्षीय शासन प्रणाली

इस प्रकार की शासन प्रणाली में न केवल न्यायपालिका, बल्कि कार्यपालिका भी विधायिका से स्वतंत्र कार्य करती है। राष्ट्राध्यक्ष का चुनाव जनता द्वारा किया जाता है। इसलिए राष्ट्राध्यक्ष को अपना पद बनाए रखने के लिए विधायिका के समर्थन की आवश्यकता नहीं होती।

लोकतांत्रिक सरकार के विभिन्न स्वरूपों की संरचनाएँ अलग-अलग होती हैं। आप अगले पृष्ठ की तालिका 9.1 से इन मूलभूत अंतरों को समझ सकते हैं।

निम्न शब्दों से क्या तात्पर्य है?

- **कार्यपालिका** – कार्यपालिका सरकार का वह अंग है, जो कानून को लागू करने के लिए उत्तरदायी होता है। इसके चुनाव की प्रक्रिया विभिन्न देशों में अलग-अलग होती है।

लोकतांत्रिक सरकार के विभिन्न स्वरूप			
देश	**कार्यपालिका**	**विधायिका**	**न्यायपालिका**
भारत	प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद	निम्न सदन (लोक सभा) उच्च सदन (राज्य सभा) से अधिक शक्तिशाली है।	कार्यपालिका एवं विधायिका से स्वतंत्र (शक्तियों का पृथक्करण)
संयुक्त राज्य अमेरिका	राष्ट्राध्यक्ष	उच्च सदन (सीनेट) निम्न सदन (प्रतिनिधि सभा) से अधिक शक्तिशाली है।	कार्यपालिका एवं विधायिका से स्वतंत्र (शक्तियों का पृथक्करण)
दक्षिण कोरिया	राष्ट्राध्यक्ष	एकल सदन (राष्ट्रीय सभा)	कार्यपालिका एवं विधायिका से स्वतंत्र (शक्तियों का पृथक्करण)
ऑस्ट्रेलिया	प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद	उच्च सदन (सीनेट) और निम्न सदन (प्रतिनिधि सभा) दोनों ही समान रूप से शक्तिशाली हैं।	कार्यपालिका एवं विधायिका से स्वतंत्र (शक्तियों का पृथक्करण)
क			
ख			

तालिका 9.1— लोकतांत्रिक सरकार के विभिन्न स्वरूप

- **विधायिका**– विधायिका सरकार का वह अंग है, जो कानून बनाने के लिए उत्तरदायी होता है। इसे अलग-अलग देशों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। भारत में इसे 'संसद' कहा जाता है, जबकि अमेरिका में 'कांग्रेस' कहा जाता है। अधिकांश लोकतंत्रों में इसमें दो सदन होते है— उच्च सदन और निम्न सदन।

- **उच्च सदन और निम्न सदन –** अधिकांश देशों में निचले सदन के सदस्यों को प्रत्यक्ष मतदान के आधार पर चुना जाता है और यह सामान्यतः उच्च सदन से अधिक शक्तिशाली होता है, जिसे चुनाव या नामांकन द्वारा गठित किया जाता है। भारत में निम्न सदन लोकसभा और उच्च सदन राज्यसभा कहलाता है।
- **शक्तियों का पृथक्करण –** इसका अर्थ है कि सरकार के तीनों अंग— विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं और एक-दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करते।

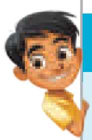

आइए पता लगाएँ

→ पिछले पृष्ठ पर दी गई तालिका 9.1 में देश 'क' और देश 'ख' के रूप में अपनी पसंद के दो अलग-अलग देशों का चयन कर रिक्त तालिका भरें।

→ तालिका का विश्लेषण करें और इसके उदाहरणों में सभी समानताओं और भिन्नताओं पर आपस में चर्चा करें।

इस अभ्यास से आपने अवश्य ही यह समझा होगा कि लोकतांत्रिक सरकारों के विभिन्न स्वरूपों के गठन, संरचना और कार्य करने की विधियाँ अलग-अलग होती हैं। इसके साथ ही, सरकार के तीनों अंगों के मध्य संबंध भी भिन्न-भिन्न होते हैं। लेकिन, जैसा कि हमने आरंभ में पढ़ा, कुछ विशेषताएँ, जैसे– समानता, स्वतंत्रता और सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार आदि सभी लोकतंत्रों में समान रूप से विद्यमान रहती हैं।

आइए पता लगाएँ

→ ऊपर दिए गए उदाहरणों का अध्ययन करने के पश्चात लोकतांत्रिक सरकार के मुख्य सिद्धांतों को सूचीबद्ध करें। अपनी समझ के आधार पर नीचे दी गई गतिविधि कीजिए—

→ आपको अपने विद्यालय में एक विद्यार्थी समिति का गठन करना है। इसके लिए एक योजना बनाइए और उसे लोकतांत्रिक तरीके से लागू कीजिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि —

◈ समिति के कार्य स्पष्ट रूप से परिभाषित हों।

◈ समिति के सदस्यों के चुनाव की प्रक्रिया लोकतांत्रिक हो।

इतिहास की एक झलक

प्रारंभिक गणराज्य

गणराज्य एक ऐसी शासन व्यवस्था है, जिसमें राज्य का प्रमुख निर्वाचित होता है और वह वंशानुगत राजा या रानी नहीं होता।

जैसा कि आपने 'नवारंभ — नगर और राज्य' अध्याय में पढ़ा होगा, भारत के प्राचीन महाजनपदों में कम-से-कम दो ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहाँ यह व्यवस्था थी। वज्जि महाजनपद में विशेष रूप से लिच्छवी कुल, सामूहिक निर्णय प्रक्रिया अपनाता था और नेता जन्म के आधार पर नहीं बल्कि योग्यता के आधार पर चुने जाते थे। मुख्य पदों पर चुनाव के आधार पर नियुक्तियाँ की जाती थीं और विभिन्न कुलों के प्रतिनिधि नियमित रूप से बैठक करते थे जिससे कि जनकल्याण के लिए समस्याओं का समाधान निकाला जा सके। इसलिए, ऐसे राज्यों को प्रारंभिक गणराज्य कहा गया है।

वास्तव में, भारत में आम जनता की आवाज को सदियों से महत्व दिया गया है, भले ही सत्ता राजा या रानी के हाथों में रही हो। चोल काल (10वीं शताब्दी) के उत्तरमेरूर शिलालेखों में इसका उल्लेखनीय उदाहरण मिलता है। तमिलनाडु में स्थित ये शिलालेख ग्राम सभा (स्थानीय प्रशासनिक निकाय) के सदस्यों के चुनाव की प्रक्रिया के बारे में जानकारी देते हैं। इनमें सीलबंद मतपेटियों द्वारा चुनाव, सदस्यों की योग्यताएँ, उनके कर्तव्य और हटाए जाने की स्थितियाँ स्पष्ट की गई हैं। उदाहरणार्थ, यदि कोई सदस्य भ्रष्टाचार में लिप्त पाया जाता था, तो उसे तत्काल पद से हटा दिया जाता।

चित्र 9.6 — उत्तरमेरूर, तमिलनाडु के वैकुंठ पेरुमल मंदिर की दीवार पर अंकित चोलकालीन शिलालेख

दास
वह व्यक्ति जिसे किसी अन्य के लिए काम करने और उसकी आज्ञा मानने को बाध्य किया जाता था और जिसे उस व्यक्ति की संपत्ति माना जाता था।

विश्व के अन्य भागों में भी गणराज्य थे। पाँचवीं और चौथी शताब्दी सामान्य संवत पूर्व में रोम और ग्रीस में गणराज्य प्रणाली प्रचलित थी। ग्रीस के कुछ क्षेत्रों में केवल स्वतंत्र पुरुषों को मतदान का अधिकार था जब कि महिलाओं, श्रमिकों और **दासों** को यह अधिकार नहीं था। कुछ अन्य क्षेत्रों में केवल एक विशेषाधिकार प्राप्त छोटा वर्ग ही मतदान या निर्णय प्रक्रिया में भाग ले सकता था।

अन्य प्रकार की सरकार

पूर्व में हमने देखा कि लोकतंत्र आज विश्व में सबसे लोकप्रिय शासन व्यवस्था है और इसके भी विभिन्न स्वरूप होते हैं। आइए, अब अन्य प्रकार की शासन व्यवस्थाओं पर प्रकाश डालते हैं और उनकी मूलभूत संरचनाओं को समझते हैं।

1. राजतंत्र

जैसा हमने 'अतीत के चित्रपट' अध्यायों में देखा कि महाजनपदों के शासक राजा हुआ करते थे जिन्हें सभा या समिति द्वारा मार्गदर्शन दिया जाता था। उनसे यह अपेक्षा की जाती थी कि वे इन संस्थाओं द्वारा दी गई सलाह और उनके निर्णयों को गंभीरता से लें। जैसे-जैसे भारत में साम्राज्यों का निर्माण और विस्तार होता गया, राजाओं को अपार शक्ति प्राप्त होती गई। फिर भी वे शासन चलाने के लिए मंत्रिपरिषद और अधिकारियों के एक व्यापक तंत्र पर निर्भर रहते थे। अनेक बार राजा धर्म संबंधी विषयों पर विद्वानों से परामर्श लेते थे। हालाँकि, ऐसे भी उदाहरण हैं जहाँ राजाओं ने अपनी शक्ति का प्रयोग जनता को अपने **अधीन करने** के लिए किया।

अधीन करना
किसी व्यक्ति या स्थान पर बलपूर्वक नियंत्रण स्थापित करना और वहाँ लोगों को आज्ञा मानने के लिए बाध्य करना।

चित्र 9.7— साँची स्तूप के स्तंभ की आराधना

विश्व के कुछ भागों में राजाओं के पास पूर्ण सत्ता होती थी। वे स्वयं कानून बनाते थे, उन्हें लागू करते थे और दंड भी निर्धारित करते थे। कुछ मामलों में तो उन्होंने यह तक दावा किया कि उन्हें ईश्वर से दिव्य शक्ति प्राप्त है।

हालाँकि, भारत के कई क्षेत्रों में राजा की शक्ति न तो निरंकुश थी और न ही आलोचना से मुक्त। उनसे यह अपेक्षा की जाती थी कि वे राजधर्म की सीमाओं में रहकर निर्णय लें। इसका अर्थ था कि वे राजधर्म के अनुसार शासन करें और सभी लोगों के कल्याण को सर्वोपरि रखें। हालाँकि, इस आदर्श स्थिति को सभी राजा व्यवहार में नहीं लागू कर सके।

आइए विचार करें

यदि कोई राजा स्वयं को ईश्वरीय शक्तियों से युक्त मानने लगे, तो क्या हो सकता है? वह अपनी प्रजा पर किस प्रकार शासन करेगा?

इसे अनदेखा न करें

चित्र 9.8 — 17वीं शताब्दी की राजपूतकालीन लघु चित्रकला, जिसमें भीष्म बाणों की शय्या पर लेटे हुए युधिष्ठिर को शिक्षा दे रहे हैं, जबकि श्रीकृष्ण शय्या के सिरहाने विराजमान होकर इस क्षण के साक्षी बने हैं।

महाभारत के शांतिपर्व में जब कुरुवंशीय वृद्ध और ज्ञानी भीष्म बाणों की शय्या पर मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे, तब वे बड़े विस्तार से पांडवों में सबसे बड़े युधिष्ठिर को सुशासन, न्याय और राजा के नैतिक दायित्वों के विषय में उपदेश देते हैं। एक राजा केवल शासक ही नहीं होता। उसकी सबसे बड़ी प्राथमिकता अपनी प्रजा का कल्याण होता है। उसे निष्पक्ष रूप से कानूनों को लागू करना चाहिए जिससे न्याय और समानता सुनिश्चित हो सके। उसे सत्ता से आसक्त नहीं होना चाहिए क्योंकि इससे अहंकार और भ्रष्टाचार जन्म लेते हैं। राजा को उचित और विवेकपूर्ण निर्णय लेने के लिए विद्वान सलाहकारों की सलाह अवश्य लेनी चाहिए। उसे यह समझना चाहिए कि उसकी सत्ता अस्थायी है और वह धर्म के बंधन से बँधी हुई है।

राजा चंद्रापीड अपनी इष्ट देवी के लिए एक मंदिर बनवाना चाहते थे, लेकिन एक हठी मोची की झोंपड़ी उस स्थान पर स्थित थी जहाँ मंदिर बनना था। जब शिल्पकारों ने राजा से शिकायत की कि मोची उन्हें भूमि का नाप तक नहीं लेने दे रहा है, तो राजा ने शिल्पकारों को ही दोषी ठहराया कि उन्होंने पहले मोची से अनुमति क्यों नहीं ली। राजा ने स्वयं मोची को दरबार में बुलाया। मोची ने बताया कि उसकी झोंपड़ी उसके लिए माँ के समान है और राजा के लिए जितना मूल्यवान राजमहल है, उतना ही यह झोंपड़ी उसके लिए मूल्यवान है। उसने कहा "किसी का घर बलपूर्वक छीन लिए जाने पर उन्हें जिस पीड़ा का अनुभव होता है, उसे केवल वही समझ सकता है जो या तो देवता होकर अपने दिव्य रथ से गिर पड़ा हो या वह राजा हो जिसने अपना राज्य खो दिया हो।" फिर भी मोची ने कहा कि यदि राजा स्वयं आएँ और सम्मानपूर्वक उससे अनुमति माँगें तो वह अपनी झोंपड़ी छोड़ने को तैयार है। राजा स्वयं उसके पास गए, विनम्रतापूर्वक अनुरोध किया और उसे बदले में उचित धनराशि प्रदान की। इस प्रसंग का निष्कर्ष था — 'जो लोग सुख की कामना करते हैं, उन्हें झूठे अहंकार को त्याग देना चाहिए।' मोची ने राजा की धर्मनिष्ठा की प्रशंसा की जिसने एक साधारण व्यक्ति के साथ भी न्यायपूर्ण और सम्मानजनक व्यवहार किया।

— कश्मीरी विद्वान कल्हण द्वारा
रचित *राजतरंगिणी* से (12वीं शताब्दी सामान्य संवत)

संप्रभु
इसका अर्थ है कि कोई देश अपने आंतरिक मामलों में सर्वोच्च तथा बाहरी मामलों में स्वतंत्र है।

राजा
राजा या रानी जो अपना पद अपने परिवार से विरासत में प्राप्त करते हैं। सामान्यतः राजपरिवार में यह पद एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी को सौंपा जाता है।

वर्तमान राजतंत्र

राजतंत्र वह शासन प्रणाली है जिसमें राजा द्वारा शासन किया जाता है। राजा या रानी को सम्राट/साम्राज्ञी भी कहा जाता है, जो **संप्रभु** शक्ति का प्रयोग करते हैं। **राजतंत्र प्रणाली** सामान्यतः वंशानुगत होती है, जिसमें राजा का ज्येष्ठ पुत्र ही भावी राजा होता है।
वर्तमान में हम दो प्रकार के राजतंत्र देखते हैं —

क. निरंकुश राजतंत्र

निरंकुश राजतंत्र वह शासन व्यवस्था है, जिसमें राजा को कानून बनाने, उन्हें लागू कराने और उनके उल्लंघन की स्थिति में **न्यायिक निर्णय** देने

का पूर्ण अधिकार होता है। सऊदी अरब एक उदाहरण है, जहाँ राजा के पास संपूर्ण सत्ता होती है और वह इस्लामी कानून के अनुसार शासन करता है। हालाँकि, वह एक सलाहकार परिषद नियुक्त करता है, परंतु उस परिषद की सलाह मानने के लिए वह बाध्य नहीं है।

न्यायिक निर्णय
किसी विवाद की स्थिति में न्यायपूर्ण निर्णय करना।

ख. संवैधानिक राजतंत्र

आइए, एक अलग प्रकार के राजतंत्र का उदाहरण देखते हैं। यूनाइटेड किंगडम या ब्रिटेन भी एक राजतंत्र है। यहाँ राष्ट्राध्यक्ष राजा या रानी होते हैं, परंतु उनके पास केवल औपचारिक शक्ति होती है। कार्यपालिका की वास्तविक शक्ति प्रधानमंत्री के पास होती है। कानून निर्माण की शक्ति संसद के पास होती है और कार्यपालिका की शक्ति मंत्रिपरिषद के माध्यम से प्रधानमंत्री द्वारा प्रयोग की जाती है।

इसका अर्थ है कि सभी कानून जनता द्वारा संसद में अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से निर्मित किए जाते हैं और कार्यकारी शक्ति का प्रयोग मंत्रिपरिषद द्वारा प्रधानमंत्री के नेतृत्व में किया जाता है। इसलिए, भले ही ब्रिटेन में राजतंत्र के प्रतीक के रूप में आज भी राजा होता है, किंतु वास्तव में ब्रिटेन एक संसदीय लोकतंत्र है। इस प्रकार के लोकतंत्र को संवैधानिक राजतंत्र कहा जाता है।

चित्र 9.9 — किसी विदेशी गणमान्य की यात्रा के दौरान एक भव्य सवारी में राजा चार्ल्स तृतीय

2. धर्मतंत्र

धर्मतंत्र, वह शासन प्रणाली है जिसमें देश का शासन धार्मिक नियमों और धार्मिक नेताओं के निर्देशों के अनुसार होता है।

ईरान, जिसका आधिकारिक नाम 'इस्लामिक ईरान गणराज्य' है, एक विशिष्ट लोकतांत्रिक व्यवस्था का प्रमुख उदाहरण है, जिसमें धर्मतंत्र और लोकतांत्रिक शासन दोनों ही प्रणालियों का समन्वयन हैं। वहाँ का संविधान इस्लाम के मूलभूत नियमों पर आधारित है, जो देश का आधिकारिक धर्म है। वहाँ का सर्वोच्च नेता विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका, तीनों पर सर्वोच्च अधिकार रखता है। इस पद पर नियुक्ति इस्लामी धर्मगुरुओं के एक समूह द्वारा की जाती है और उसका कार्यकाल जीवनपर्यंत होता है। साथ ही, एक निर्वाचित राष्ट्रपति और संसद भी होती है जो दैनिक प्रशासनिक कार्यों का संचालन करते हैं। इस गणराज्य का उद्देश्य इस्लामी नियमों पर आधारित समाज की स्थापना करना है।

वर्तमान समय में अफगानिस्तान और वेटिकन सिटी भी धर्मतंत्र के उदाहरण हैं।

3. अधिनायकतंत्र

अधिनायकतंत्र एक ऐसी शासन पद्धति है जिसमें एक व्यक्ति या छोटा समूह संपूर्ण सत्ता पर नियंत्रण रखता है। इस प्रकार के शासन में संविधान या कानून के द्वारा शासक के ऊपर कोई नियंत्रण नहीं होता है। 20वीं शताब्दी में ऐसे कई तानाशाहों के उदाहरण देखने को मिले जिन्होंने लोगों के लिए अत्यंत कठिन परिस्थितियाँ उत्पन्न कीं। यहाँ हम उनमें से दो का उदाहरण देखेंगे।

- 1933 में जब एडोल्फ हिटलर को जर्मनी का चांसलर नियुक्त किया गया, उसके तुरंत बाद ही उसने ऐसे कानून बनाए जिन्होंने उसे निरंकुश शक्ति प्रदान की और विपक्ष को समाप्त कर दिया। वह अब एक तानाशाह बन चुका था। अपनी नस्लीय श्रेष्ठता पर विश्वास करते हुए उसने माना कि जर्मनी को दुनिया पर शासन करना चाहिए और 'हीन नस्लों' पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करनी चाहिए। वह कम से कम 60 लाख यहूदियों की हत्या के लिए उत्तरदायी था, जिसे 'होलोकॉस्ट' के नाम से जाना जाता है। इसके साथ ही हजारों रोमा और अन्य समूहों के लोगों की भी हत्या की गई। वास्तव में वह द्वितीय विश्व युद्ध

चित्र 9.10 — एडोल्फ हिटलर का व्यंग्य-चित्र

(1939–1945) का प्रमुख कारण बना, जिससे कई देशों में जीवन और संपत्ति की भारी हानि हुई।

- ईदी अमीन युगांडा में एक सैन्य तानाशाह था। वह हजारों लोगों की नृशंस हत्या करने के लिए उत्तरदायी था। अनेक भारतीय जिनके पूर्वज कुछ पीढ़ियों पहले युगांडा आए थे, उन्हें देश छोड़ने के लिए बाध्य किया गया था।

चित्र 9.11— ईदी अमीन का व्यंग्य-चित्र

व्यंग्य-चित्र
एक ऐसा चित्र जिसमें किसी व्यक्ति की शारीरिक विशेषता को अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर दर्शाया जाता है, जिससे वह हास्यास्पद लगे।

इसे अनदेखा न करें

रोमा या रोमानी लोग मूल रूप से घुमंतू थे। उनके भाषाई और सांस्कृतिक लक्षणों के आधार पर विद्वानों ने यह माना है कि उनका मूल स्थान भारत है। वे सबसे पहले यूरोप के पूर्वी हिस्सों में बसे, लेकिन अब वे विश्व के कई देशों में प्रवास कर चुके हैं।

चित्र 9.12

शेन की कहानी

शेन उत्तर कोरिया में रहता है, जहाँ उसके दैनिक जीवन से जुड़े हर छोटे-बड़े पहलुओं के लिए सरकार द्वारा नियम निर्धारित हैं। वह इस समय अनिवार्य सैन्य सेवा कर रहा है जिसमें उससे अपेक्षा की जाती है कि वह तब तक सेना में रहेगा जब तक सरकार चाहेगी। वहाँ इस बात के लिए भी नियम हैं कि उसे बाल कैसे कटवाने हैं और कैसे कपड़े पहनने हैं। वह इंटरनेट का प्रयोग नहीं कर सकता, इसलिए अपने देश के बाहर की दुनिया के बारे में नहीं जानता। सरकार उसके सभी क्रियाकलापों को बहुत नजदीकी से देखती है और उससे यह अपेक्षा भी रखती है कि यदि कोई भी नियमों का उल्लंघन करता है तो शेन उसकी जानकारी सरकार को देगा। एक दिन वह एक पर्यटक से मिला जिसने उससे पूछा, "यहाँ तुम सभी के बाल एक जैसे क्यों बने हैं?" शेन ने उत्तर दिया "हम सभी नए तरीकों से बाल बनाना चाहते हैं, लेकिन यह सरकार निर्धारित करती है, हमें किस प्रकार से बाल रखने चाहिए।"

आइए पता लगाएँ

- → क्या शेन का देश एक लोकतांत्रिक देश कहा जा सकता है?
- → आपके विचार में शेन का दैनिक जीवन कैसा होगा?
- → क्या आप ऐसे देश में रहना चाहेंगे? बताइए क्यों?

4. अल्पतंत्र

राजनीतिक टिप्पणीकार
ऐसे व्यक्ति जो राजनीतिक घटनाओं का विश्लेषण करते हैं और उन पर अपनी राय व्यक्त करते हैं।

'ओलिगार्की' ग्रीक मूल का शब्द है जहाँ 'ओलिगोस' का अर्थ है 'कुछ' और 'आर्की' का अर्थ है 'शासन करना'। इस प्रकार यह एक ऐसी शासन प्रणाली है, जिसमें कुछ शक्तिशाली लोग या परिवार शासन करते हैं और सारे महत्वपूर्ण निर्णय वही लेते हैं।

प्राचीन ग्रीस में कुछ स्थानों पर कुलीन परिवारों द्वारा शासन किया जाता था, जो ओलिगार्की के उदाहरण माने जाते हैं। कुछ **राजनीतिक टिप्पणीकारों** के अनुसार आधुनिक समय में कुछ लोकतंत्रों में यह देखा गया है कि कुछ शक्तिशाली राजनेता और बड़े व्यापारिक घराने शासन पर अत्यधिक प्रभाव रखते हैं।

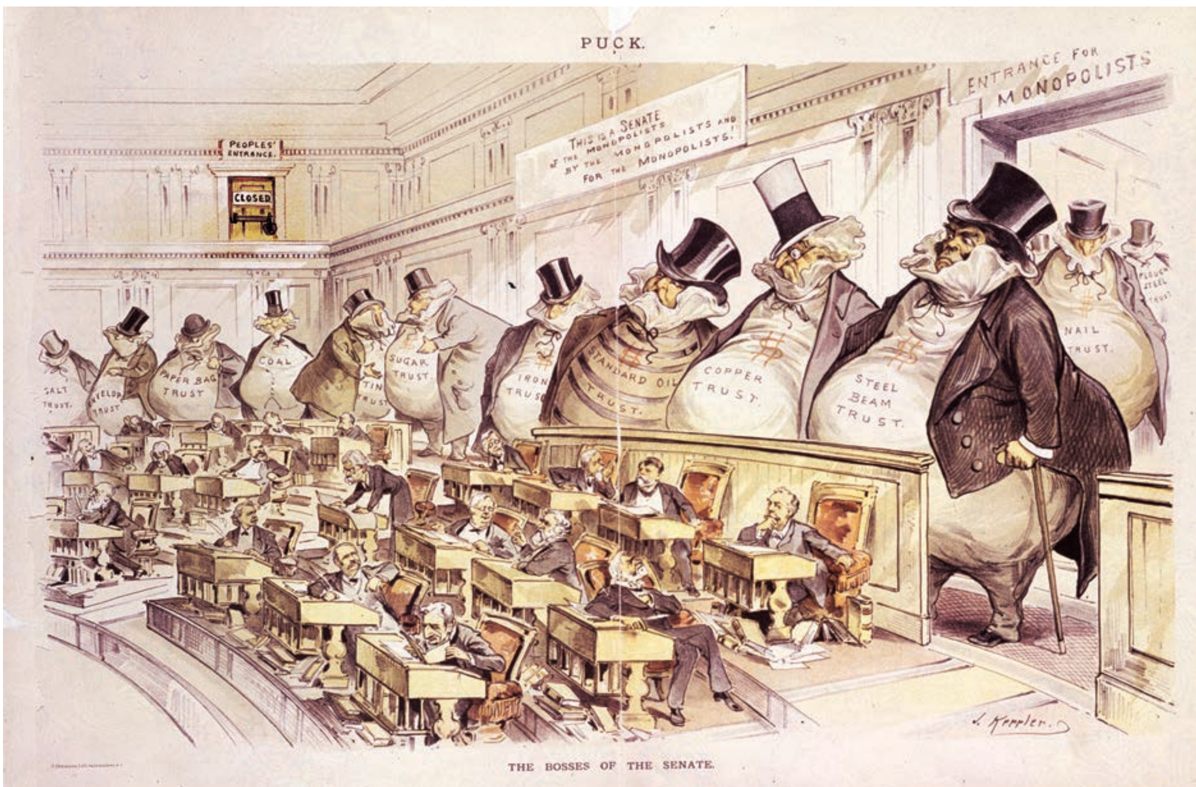

चित्र 9.13 — अल्पतंत्रीय स्थिति को दर्शाता हुआ 1889 का एक व्यंग्य-चित्र

आइए पता लगाएँ

→ पिछले पृष्ठ पर दिए गए चित्र 9.13 को ध्यान से देखिए। यह चित्र 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अमेरिका की एक निर्वाचित संस्था को दर्शाता है। चित्र में दिखाए गए सभी लोग निर्वाचित प्रतिनिधि हैं। आप क्या देख रहे हैं? चित्र के ऊपर बाईं ओर क्या दिख रहा है? आपके अनुसार इस निर्वाचित संस्था में निर्णय कौन ले रहा है?

→ लोकतंत्र क्या अल्पतंत्र में बदल सकता है? लोकतंत्र को सशक्त रखने के लिए लोग क्या कर सकते हैं?

लोकतंत्र क्यों महत्वपूर्ण है?

विभिन्न प्रकार की सरकारें हमें बताती हैं कि लोकतंत्र ही देशों में शासन व्यवस्था का एकमात्र तरीका नहीं है। किंतु अधिकतर देशों में लोकतंत्र को अन्य प्रकार की शासन व्यवस्था की तुलना में अधिक उपयुक्त माना जाता है। आइए, इसे और बेहतर ढंग से समझने के लिए तुलना करें।

शासन प्रणलियों के विभिन्न स्वरूपों में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार करें और रिक्त खानों को 'हाँ' या 'नहीं' से भरें—

विशेषताएँ	लोकतंत्र	अधिनायकतंत्र	निरंकुश राजतंत्र	अल्पतंत्र (कुलीनतंत्र)
सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार	**हाँ**	**नहीं**	**नहीं**	**नहीं**
नागरिकों के मध्य समानता				
अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता				
शक्तियों का पृथक्करण				
सभी नागरिकों का कल्याण तथा समृद्धि				

तालिका 9.2— सरकार के विभिन्न स्वरूपों की विशेषताएँ

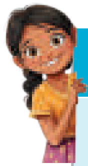

आइए पता लगाएँ

→ आपने सरकार के विभिन्न स्वरूपों की मूलभूत विशेषताएँ सीखी हैं। अब अपनी कक्षा में निम्नलिखित विषयों पर एक लघु भूमिका निर्वहन (रोल प्ले) नाटिका प्रस्तुत करें—

- लोकतंत्र
- राजतंत्र
- अधिनायकतंत्र

→ इसके पश्चात विचार करें कि कौन-सी शासन व्यवस्था आपको सबसे उपयुक्त लगी?

आपने पूर्व में अलग-अलग शासन व्यवस्थाओं के बारे में पढ़ा है और यह भी समझा है कि एक देश की शासन व्यवस्था उसके नागरिकों के जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती है। पिछली तालिका में हमने देखा कि नागरिकों की पसंद और अधिकारों का प्रतिनिधित्व विभिन्न शासन व्यवस्थाओं में अलग-अलग होता है।

वास्तविक लोकतंत्र में लोग अपना दैनिक जीवन अपने ढंग से जी सकते हैं। वे क्या बोलना चाहते हैं, क्या पहनना चाहते हैं, किस विश्वास को मानना चाहते हैं और अपनी अभिव्यक्ति कैसे करना चाहते हैं, यह सब निर्धारित करने की स्वतंत्रता उन्हें होती है, जब तक कि यह अन्य किसी के अधिकार को क्षति न पहुँचाए।

लोकतांत्रिक सरकार में लोग अपनी सरकार का चुनाव करते हैं। सरकार का यह उत्तरदायित्व होता है कि वह अपने नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करे और उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति सुनिश्चित करे। यदि सरकार अपने दायित्वों का सही ढँग से निर्वहन नहीं करती है, तो लोग चुनावों के माध्यम से अपने प्रतिनिधियों को बदल सकते हैं। इससे सरकार की कार्यप्रणाली पर निरंतर निगरानी बनी रहती है। इस प्रकार, लोकतांत्रिक सरकार के मूल्य और आदर्श सभी नागरिकों की भलाई पर केंद्रित होने चाहिए।

हमारा देश भी एक लोकतंत्र है और आप हमारे दैनिक जीवन में लोकतंत्र की अनेक विशेषताओं को देख सकते हैं। इसलिए आश्चर्य नहीं है कि आज विश्व के आधे से अधिक देशों ने लोकतंत्र या लोकतांत्रिक शासन अपनाया है।

हालाँकि, यह भी याद रखना आवश्यक है कि लोकतंत्र की भी अपनी चुनौतियाँ हैं। कई मुद्दे, जैसे – भ्रष्टाचार, आर्थिक विषमता, लोकतांत्रिक संस्थाओं पर कुछ लोगों का अत्यधिक नियंत्रण, न्यायपालिका की स्वतंत्रता का क्षरण, सूचना माध्यमों का दुरुपयोग

आदि लोकतंत्र के आदर्शों को प्राप्त करने में बाधाएँ बन सकते हैं। हम एक व्यक्ति और समाज के रूप में सजग रहकर इन समस्याओं और बाधाओं को कम करने के लिए क्या कर सकते हैं?

आगे बढ़ने से पहले...

- → सरकार किसी भी देश के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समूचे विश्व में विभिन्न प्रकार की सरकारें इन प्रश्नों के अलग-अलग उत्तर देती हैं— 'यह सरकार है' — इसे कौन निर्धारित करता है? सरकार के कौन-कौन से अंग होते हैं और वे क्या कार्य करते हैं? सरकार किसके लिए कार्य करती है? सरकार को किन मूल्यों और आदर्शों का पालन करना चाहिए?
- → वर्तमान में सबसे लोकप्रिय शासन प्रणाली लोकतंत्र है। विश्व भर में लोकतांत्रिक सरकारों के विभिन्न स्वरूप विद्यमान हैं, जिनमें प्रत्यक्ष लोकतंत्र और प्रतिनिधि लोकतंत्र सम्मिलित हैं।
- → प्रतिनिधि लोकतंत्र के भी दो प्रमुख प्रकार होते हैं— अध्यक्षीय प्रणाली और संसदीय प्रणाली। भारत में संसदीय लोकतंत्र है।
- → अन्य प्रकार की शासन व्यवस्थाओं में राजतंत्र, धर्मतंत्र, अधिनायकतंत्र और अल्पतंत्र सम्मिलित हैं।
- → लोकतंत्र महत्वपूर्ण है, लेकिन इसके समक्ष गंभीर चुनौतियाँ भी हैं, जिनके लिए नागरिकों को सजग और सतर्क रहना आवश्यक है।

प्रश्न एवं क्रियाकलाप

1. आपने अध्याय में किस-किस प्रकार की सरकारों के बारे में पढ़ा? उनके नाम लिखिए।
2. भारत में किस प्रकार की सरकार है और उसे ऐसा क्यों कहा जाता है?
3. आपने पढ़ा कि सभी लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में स्वतंत्र न्यायपालिका होती है। न्यायपालिका का स्वतंत्र होना क्यों आवश्यक है? कोई तीन कारण बताइए।
4. क्या आपको लगता है कि लोकतांत्रिक सरकार अन्य शासन प्रणालियों से बेहतर है? क्यों?

5. नीचे कुछ देशों की शासन पद्धतियों से जुड़ी गतिविधियाँ दी गई हैं। क्या आप इनका मिलान संबंधित शासन प्रणाली से कर सकते हैं?

क्र. सं.	देश में प्रचलित प्रथा	शासन प्रणाली
1.	सभी नागरिकों को कानून के समक्ष समान रूप से देखा जाता है।	अधिनायकतंत्र
2.	सरकार प्रत्येक निर्णय के लिए धार्मिक नेताओं से परामर्श करती है।	राजतंत्र
3.	शासक की मृत्यु के बाद उसका पुत्र राजा बनता है।	लोकतंत्र
4.	शासक किसी प्रकार के संविधान का अनुपालन करने के लिए बाध्य नहीं है। वह सभी निर्णय अपनी इच्छा के अनुसार लेता है।	धर्मतंत्र

6. नीचे कुछ देशों के नाम दिए गए हैं। पता लगाइए कि इनमें कौन-सी शासन व्यवस्था प्रचलित है—

क्र. सं.	देश	शासन प्रणाली
1.	भूटान	
2.	नेपाल	
3.	बांग्लादेश	
4.	दक्षिण अफ्रीका	
5.	ब्राजील	

7. लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में लोकतंत्र के आदर्शों और मूल्यों को प्राप्त करने में कौन-कौन सी बाधाएँ आ सकती हैं? उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है?
8. लोकतंत्र, राजतंत्र और अधिनायकतंत्र से किस प्रकार भिन्न है? स्पष्ट कीजिए।

अध्याय 10

भारत का संविधान— एक परिचय

मैं यह कहना चाहूँगा कि यदि हम उस संविधान के अनुसार कार्य करें, जिसे हमने अपनाया है.... तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि शीघ्र ही हम अपने देश को महान बना सकते हैं। यह एक ऐसा लक्ष्य है जिसे हम प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए सर्वोपरि अथक शारीरिक और मानसिक परिश्रम के साथ-साथ उत्कृष्ट नैतिक पुनर्जीवन की भी आवश्यकता होगी।

हमने एक लोकतांत्रिक संविधान तैयार किया है। लेकिन लोकतांत्रिक संस्थाओं के सफल कार्यान्वयन के लिए आवश्यक है कि इन संस्थाओं में कार्य करने वाले दूसरे के विचारों का सम्मान करें तथा लचीलेपन और समन्वय के साथ कार्य करें।

—डॉ. राजेंद्र प्रसाद, भारत के प्रथम राष्ट्रपति

चित्र 10.1 — गणतंत्र दिवस परेड की झलकियाँ

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. संविधान क्या है और इसकी आवश्यकता क्यों होती है?
2. भारतीय संविधान का निर्माण किस प्रकार हुआ?
3. हमारे स्वाधीनता संग्राम और सभ्यता की विरासत ने संविधान को कैसे प्रभावित किया?
4. भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं? सत्तर वर्ष से भी पहले लिखा गया संविधान आज भी प्रासंगिक क्यों है?

0783CH10

हीलियम
हीलियम एक गैस है, जो कागज या स्याही के साथ कोई रासायनिक अभिक्रिया नहीं करती। यही कारण है कि यह मूल संविधान की प्रति को लंबे समय तक सुरक्षित रखने में सहायक है।

यह भी जनवरी की एक ठंडी सुबह थी, जैसी हर गणतंत्र दिवस पर होती है। माँ की आवाज घर में गूँजी, "उठ जाओ! समय हो गया है, नहीं तो परेड छूट जाएगी!" पापा पहले ही जाग चुके थे। उन्होंने टेलीविजन पर दूरदर्शन लगाया और बोले, "कुमार, निहारिका, जल्दी आओ! परेड शुरू हो गई है।" बच्चे अपने गर्म बिस्तरों से कूदकर भागे और दूरदर्शन के सामने उत्सुकता के साथ बैठ गए, ताकि गणतंत्र दिवस परेड का एक भी पल छूट न जाए।

कर्तव्य पथ पर तिरंगे के फहराने, शानदार मार्चिंग बैंड्स और रंग-बिरंगे प्रदर्शनों को देखकर पूरे कमरे में गर्व और उत्साह की भावना फैल गई।

26 जनवरी भारत के लिए एक विशेष दिन है। इसी दिन वर्ष 1950 में हमारा संविधान लागू हुआ था। इस दिन का हमारे संविधान से गहरा संबंध है।

चित्र में दिखाई गई पुस्तक हमारा संविधान है। इसे सुरक्षित रखने के लिए इसे संसद में एक **हीलियम** से भरे काँच के डिब्बे में सावधानीपूर्वक संरक्षित किया गया है। परंतु वास्तव में संविधान है क्या और यह क्यों इतना महत्वपूर्ण है?

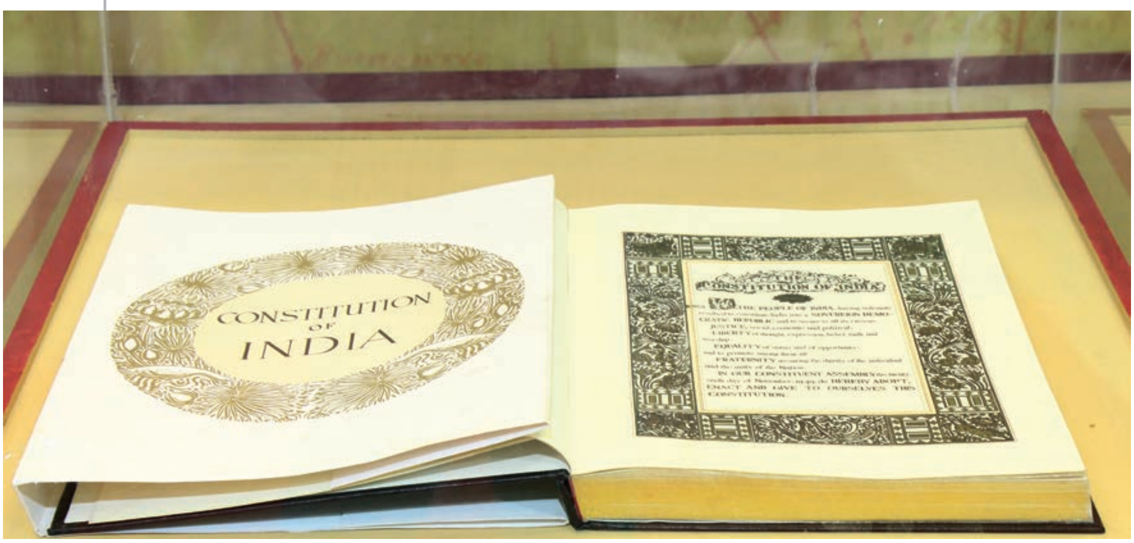

चित्र 10.2 — हीलियम गैस से भरे काँच के डिब्बे में संरक्षित भारत के संविधान की मूल प्रति

पुनरावलोकन करें

कक्षा 6 में हमने 'संविधान' शब्द का अर्थ जाना— यह एक ऐसा प्रलेख होता है जो किसी देश के मूल सिद्धांतों और कानूनों की नींव रखता है। अब तीन-तीन के छोटे समूहों में बैठकर उन सभी प्रश्नों की सूची बनाइए जो किसी देश के संविधान को लेकर आपके मन में आते हैं।

भारत का संविधान एक ऐसा प्रलेख है, जिसका पालन करने की प्रतिज्ञा हमारे देश के कई महत्वपूर्ण पदाधिकारी करते हैं। राष्ट्रपति शपथ लेते हैं कि वे इसे संरक्षित, सुरक्षित रखेंगे और इसकी रक्षा करेंगे। साथ ही प्रधानमंत्री, मंत्रिपरिषद के सदस्य और न्यायाधीश यह संकल्प लेते हैं कि वे संविधान के प्रावधानों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे।

संविधान क्या है?

सरल शब्दों में कहें तो संविधान वह प्रलेख है, जो किसी देश के मूल सिद्धांतों और कानूनों को स्पष्ट रूप से निर्धारित करता है। यह निम्नलिखित बातों को निर्धारित करता है —

- सरकार के तीन अंगों— विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका की संरचना, भूमिकाएँ और उत्तरदायित्व;
- इन तीनों अंगों के मध्य संतुलन और नियंत्रण की व्यवस्था, जिससे निष्पक्षता; उत्तरदायित्व और जवाबदेही सुनिश्चित हो;
- नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों का उल्लेख;
- राष्ट्र के दीर्घकालिक लक्ष्यों और आकांक्षाओं की रूपरेखा।

हमें संविधान की आवश्यकता क्यों है?

आइए पता लगाएँ

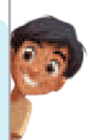

कल्पना कीजिए कि आपके विद्यालय की टीम कबड्डी के राज्य स्तरीय फाइनल मैच में पहुँच गई है। प्रतिद्वंद्वी टीम बहुत सशक्त है और पिछले दो वर्षों से लगातार विजेता रही है। इस बार वे तीसरी बार जीतकर हैट्रिक बनाना चाहते हैं। खेल आरंभ होता है और आपकी टीम की एक खिलाड़ी सामने वाली टीम के एक खिलाड़ी को आउट कर देती है, तभी विवाद हो जाता है। विरोधी टीम की खिलाड़ी कहती है कि वह आपकी टीम के खिलाड़ी द्वारा पकड़े जाने से पहले ही अपनी टीम के क्षेत्र में वापस पहुँच गई थी। रेफरी ने देखा कि वह खिलाड़ी वास्तव में आउट थी। स्थिति को सहजता से सुलझाने के लिए रेफरी एक छोटी-सी नियम-पुस्तिका निकालती हैं। दोनों टीमों के कप्तान रेफरी के साथ मिलकर नियमों को देखते हैं और सहमत होते हैं कि वह खिलाड़ी आउट थी। इस प्रकार आपकी टीम राज्य स्तरीय ट्रॉफी जीत जाती है।

अपने समूह में चर्चा कीजिए कि यदि रेफरी और टीम कप्तानों के पास ऐसी कोई नियम-पुस्तिका नहीं होती, तो क्या हो सकता था? सभी लोग उस नियम-पुस्तिका का पालन करें, यह सुनिश्चित करने के लिए क्या आवश्यक होता है? अगर टीम कप्तान उस नियम-पुस्तिका को मानने से ही मना कर देते, तो क्या होता?

किसी ऐसे खेल के बारे में सोचिए जिसे आप प्राय: खेलते हैं और उसमें पालन किए जाने वाले नियमों की सूची बनाइए। फिर प्रत्येक समूह अपनी-अपनी नियमों की सूची कक्षा के शेष विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत करेगा। सभी प्रस्तुतियों को ध्यान से सुनिए, नियमों पर चर्चा कीजिए और मिलकर उस खेल के लिए एक साझा नियम तय करने का प्रयास कीजिए। सभी की सहमति से नियम बनाने में आपको किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?

किसी देश के लिए ऐसी 'नियम-पुस्तिका' क्या हो सकती है? उसे कैसे बनाया जाता होगा?

हमारा संविधान देश के लिए नियम-पुस्तिका की तरह ही है।

इसे अनदेखा न करें

जिस प्रकार आपकी पाठ्यपुस्तक में अनेक खंड और अध्याय होते हैं, उसी प्रकार भारत के संविधान में 25 भाग और 12 अनुसूचियाँ हैं। प्रत्येक भाग में कई खंड हैं। यह विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान है। जब यह लागू हुआ था, तब इसमें 22 भाग और 8 अनुसूचियाँ थीं। इन्हें आपको कंठस्थ करने की आवश्यकता नहीं है। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि 1950 के बाद ये संख्याएँ क्यों बढ़ी होंगी?

संविधान में दिए गए मूल नियम यह निर्धारित करते हैं कि देश में किस प्रकार की सरकार होगी, वह कैसे बनेगी और कैसे काम करेगी। इसमें वे कई मूल नियम सम्मिलित हैं, जिन पर हमने पिछले अध्याय में चर्चा की थी, जैसे कि विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का गठन कैसे होता है, तथा वे कैसे कार्य करते हैं। संविधान यह भी बताता है कि कानून कैसे बनाए और लागू किए जाएँगे; कार्यपालिका का चुनाव कौन करेगा; न्यायपालिका का गठन कैसे होगा; और नागरिकों के क्या अधिकार और कर्तव्य होंगे।

विश्व के अनेक संविधानों की भाँति भारतीय संविधान भी देश के उन आदर्शों और मूल्यों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है, जिनके प्रति वह प्रतिबद्ध है, जैसे– सभी के लिए समानता और न्याय, बंधुत्व, विविधता में एकता और स्वतंत्रता। वास्तव में, यही मूल्य

और आदर्श प्राय: संविधान में लिखे गए कानूनों और सिद्धांतों की नींव बनते हैं। अधिकांश संविधानों में सम्मिलित कुछ प्रमुख विशेषताएँ है —

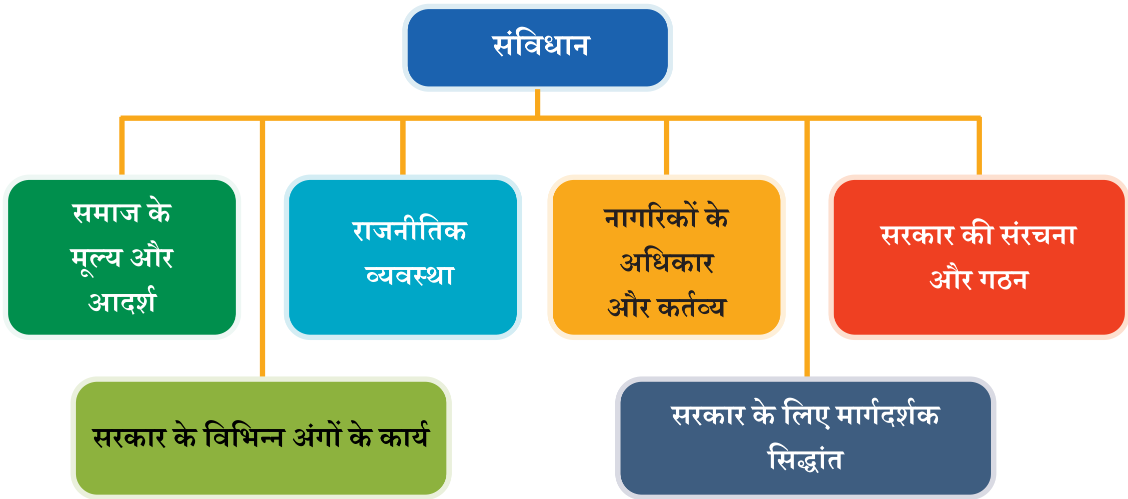

भारतीय संविधान का निर्माण

"मैं आपके प्रयासों में सफलता की कामना करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपकी कार्यवाही केवल विवेक, जन-कल्याण और सच्ची देशभक्ति से ही नहीं, बल्कि ज्ञान, सहिष्णुता, न्याय और सभी के प्रति निष्पक्षता से भी युक्त हो और सबसे बढ़कर, उसमें वह दृष्टि हो जो भारत को उसके प्राचीन गौरव की ओर ले जाए और उसे विश्व के महान राष्ट्रों की पंक्ति में सम्मान और समानता का स्थान दिला सके।"

— डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा, संविधान सभा के अंतरिम अध्यक्ष, संविधान निर्माण प्रक्रिया के आरंभ होने पर

जब भारत ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहा था, तब यह आवश्यक हो गया था कि हम यह योजना बनाना आरंभ करें कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हम अपना शासन कैसे चलाएँगे। भारत जैसे विशाल, सांस्कृतिक रूप से विविध और जटिल देश में कई महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर देने थे— हमें किस प्रकार की सरकार चाहिए? कौन-से नियम और सिद्धांत हमारा मार्गदर्शन करेंगे? मतदान का अधिकार किसे मिलना चाहिए? विवादों का समाधान कैसे किया जाएगा?

इन तथा कई अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने के लिए वर्ष 1946 में एक संविधान सभा का गठन किया गया। प्रारंभ में इसमें 389 सदस्य थे, जो भारत के विभाजन के बाद घटकर 299 रह गए। इनमें 15 महिलाएँ भी सम्मिलित थीं। ये सदस्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों, व्यवसायों और सामाजिक वर्गों का प्रतिनिधित्व करते थे।

हमारा संविधान कैसे बना?

भारतीय संविधान की रचना संविधान सभा द्वारा लगभग तीन वर्षों (दो वर्ष ग्यारह माह अट्ठारह दिन) की अवधि में की गई। यह सभा 9 दिसंबर 1946 को गठित की गई थी और इसके सदस्य प्रांतीय विधायिकाओं द्वारा चुने गए थे, जो स्वयं जनता द्वारा निर्वाचित थे। डॉ. राजेंद्र प्रसाद संविधान सभा के अध्यक्ष थे। यह कार्य 26 नवंबर 1949 को पूरा हुआ और परिणामस्वरूप तैयार प्रलेख भारत के संविधान के रूप में 26 जनवरी 1950 को अंगीकृत (लागू) किया गया। इसीलिए हम प्रतिवर्ष इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं।

संविधान का प्रारंभिक मसौदा संविधान सभा की प्रारूप समिति द्वारा तैयार किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध समाज सुधारक और स्वतंत्र भारत के पहले कानून मंत्री डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर ने की थी। (चित्र 10.3)

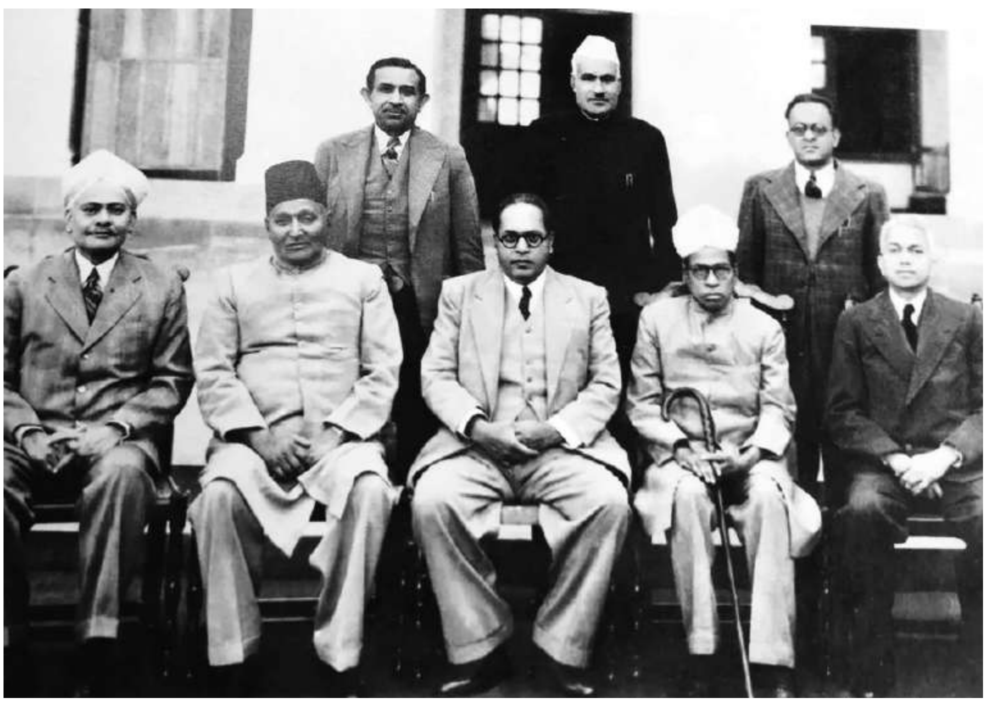

चित्र 10.3 — प्रारूप समिति के कुछ अन्य सदस्यों के साथ मध्य में बैठे हुए डॉ.बी.आर. आंबेडकर

आइए पता लगाएँ

छोटे-छोटे समूहों में मिलकर यह पता लगाने का प्रयास कीजिए कि आपके क्षेत्र से कौन-कौन से व्यक्ति भारतीय संविधान निर्माण में सम्मिलित हुए थे। इसके लिए आप कौन-से स्रोतों का उपयोग कर सकते हैं? (संकेत— अपने विद्यालय या स्थानीय पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकें ढूँढ़ें। आप अपने शिक्षक, माता-पिता और पड़ोस के वृद्धों से भी पूछ सकते हैं। साथ ही, (https://sansad.in/ls/about/constituent-assembly) पर जाकर जानकारी प्राप्त करें।)

भारतीय संविधान को आकार देने और प्रभावित करने वाले कारक

भारतीय संविधान के निर्माण के समय इसे अनेक कारकों ने प्रभावित किया था। इनमें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अनुभव, विचार और आदर्श प्रमुख थे। साथ ही, भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक और सभ्यतागत विरासत की भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसके अतिरिक्त, अन्य देशों के संविधानों से भी उपयोगी बातें ली गई थीं।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अनेक मुख्य आदर्शों और मूल्यों को संविधान में स्थान दिया गया। स्वतंत्र भारत के लिए संविधान नींव का पत्थर था। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के कई प्रमुख नेता संविधान सभा के सदस्य थे, जिन्होंने अपने अनुभव और विचार संविधान में सम्मिलित किए।

ये आदर्श और मूल्य हैं— सभी के लिए समानता और न्याय; बंधुत्व; भारत की सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण; और संविधान को इन आदर्शों की प्राप्ति के एक साधन और उपाय के रूप में देखना।

स्वतंत्रता संग्राम से प्राप्त अनुभव और शिक्षाओं ने अनेक 'कैसे' और 'क्या' संबंधी प्रश्नों का समाधान भी प्रस्तुत किया।

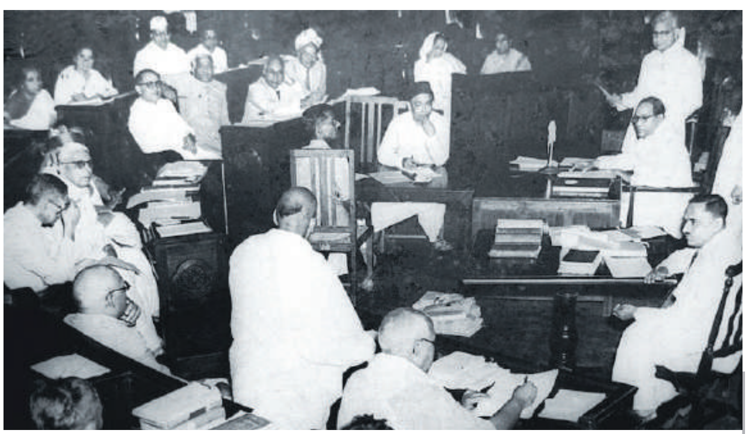

चित्र 10.4.1 — संविधान सभा की कार्यवाही का दृश्य

चित्र 10.4.2 और 10.4.3 — संविधान सभा की कार्यवाही के दृश्य

- हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि प्रत्येक वयस्क नागरिक को मतदान का अधिकार मिले?
- हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका की शक्तियाँ अलग-अलग रखी जाएँ?
- हम प्रत्येक व्यक्ति के मौलिक अधिकारों के सम्मान की गारंटी कैसे करें?
- यदि हमें संविधान में संशोधन करना हो, तो क्या प्रक्रिया होनी चाहिए?
- केंद्र और राज्य सरकारों के बीच क्या संबंध होना चाहिए? आदि।

हम इस अध्याय में आगे देखेंगे कि संविधान में इन्हें किस प्रकार व्यवस्थित किया गया है।

भारतीय सभ्यता की विरासत और इतिहास

पुनरावलोकन करें

कक्षा 6 में 'अनेकता में एकता या एक में अनेक' नामक अध्याय में हमने यह पढ़ा था कि कौन-सी बातें भारत को एक राष्ट्र बनाती हैं और किस प्रकार अनेकता (विविधता) के भीतर एक गहन एकता समाहित है।

भारत के एक राष्ट्र होने की यह भावना हमारे संविधान में अंतर्निहित है।

कुछ मौलिक सिद्धांत हमारी संस्कृति में गूढ़ रूप से समाहित हैं, जैसे – मत वैभिन्य की स्वीकृति, प्रकृति को पवित्र मानना, ज्ञान और शिक्षा की निरंतर खोज, महिलाओं के प्रति सम्मान तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) और 'सर्वे भवन्तु

सुखिनः’ (सभी सुखी हों) जैसे आदर्श। ये सभी सिद्धांत हमारे संविधान में भी विद्यमान हैं, यद्यपि कहीं-कहीं ये थोड़े भिन्न ढंग से व्यक्त किए गए हैं।

पुनरावलोकन करें

पहले हमने भारत में विभिन्न प्रकार की शासन व्यवस्थाओं के संबंध में पढ़ा था — जनपदों, संघों, राजाओं और उनकी सभाओं, कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत, राजधर्म आदि। कुल मिलाकर, शासन में जनता की भूमिका और उनके कर्तव्यों पर विशेष बल दिया गया था।

इसलिए यह स्वाभाविक था कि संविधान निर्माता हमारी सभ्यता से प्राप्त इन विचारों को हमारे संविधान में समाहित करते। उदाहरणार्थ, मौलिक अधिकार इसी का एक महत्वपूर्ण अंग है।

विश्व से मिला ज्ञान

भारतीय परंपरा के अनुरूप “आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः” (अर्थात सभी दिशाओं से शुभ विचार मेरे पास आएँ) संविधान निर्माताओं ने फ्रांस, अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, आयरलैंड, ऑस्ट्रेलिया और अन्य लोकतांत्रिक देशों के संविधान का अध्ययन किया, उन्होंने यह देखा कि कौन-से विचार भारतीय संदर्भ में उपयोगी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, ‘स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व’ के उदाहरण फ्रांस के संविधान से लिए गए, जो फ्रांसीसी क्रांति (1789) से उत्पन्न हुए थे। राज्य के नीति-निर्देशक सिद्धांत, जिनके बारे में हम आगे पढ़ेंगे, आयरलैंड के संविधान से प्रेरित थे। स्वतंत्र न्यायपालिका की अवधारणा अमेरिका के संविधान से प्रेरित थी।

चित्र 10.5 — 1789 की फ्रांसीसी क्रांति के दौरान ‘मानव और नागरिक अधिकारों की घोषणा’ तैयार की गई थी, जो समानता, स्वतंत्रता और न्याय जैसे सिद्धांतों पर आधारित थी। इसने विश्व के अनेक भागों में इन मूल्यों के प्रसार में सहायता की और कई देशों (फ्रांस सहित) के संविधान ने इन आदर्शों को अपनाया या अनुकूलित किया।

भारत के संविधान में कुछ चित्रण

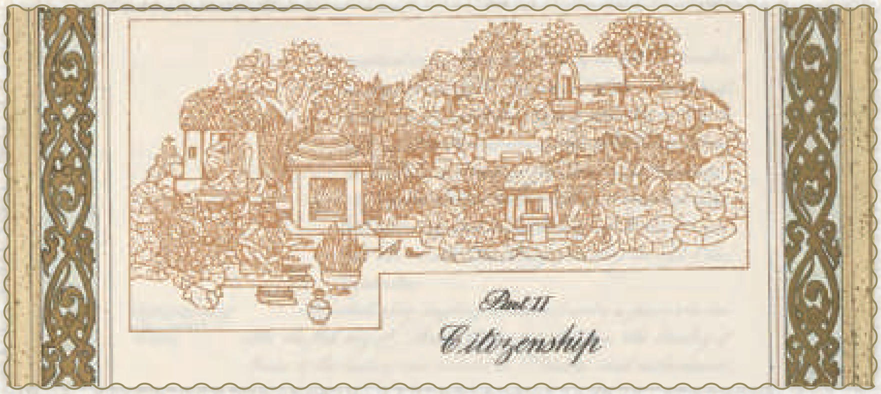

चित्र 10.6 — एक प्राचीन गुरुकुल का दृश्य

चित्र 10.7 — रामायण का एक दृश्य — राम की लंका-विजय और सीता का पुनरागमन

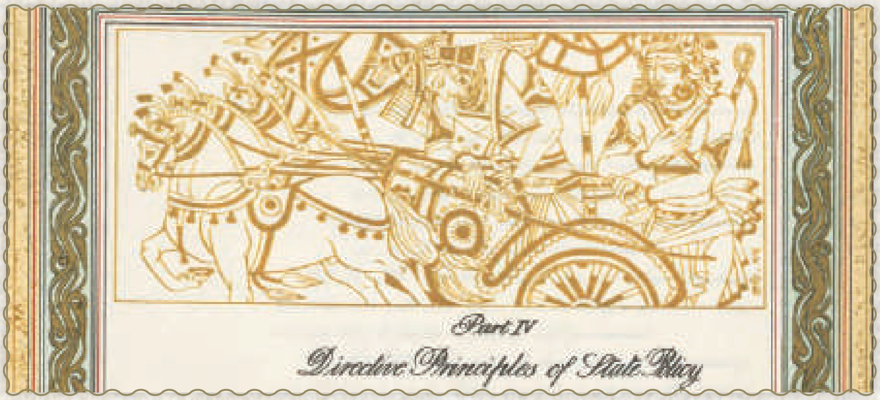

चित्र 10.8 — महाभारत का एक दृश्य — कृष्ण द्वारा अर्जुन को गीता का उपदेश

चित्र 10.9 — ओडिशा की मूर्तिकला का एक दृश्य

चित्र 10.10 — नटराज की एक छवि

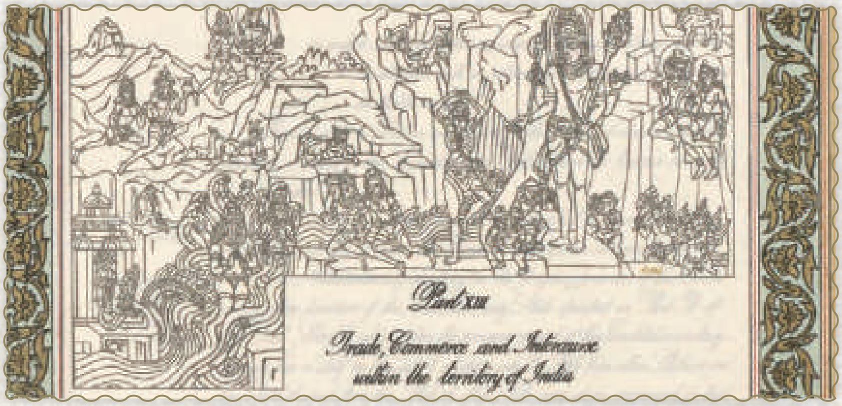

चित्र 10.11 — महाबलीपुरम् की मूर्तिकला से एक दृश्य — भगीरथ की तपस्या और गंगा का अवतरण

चित्र 10.12 — अकबर और मुगल स्थापत्य कला से संबंधित एक दृश्य

चित्र 10.13 — नालंदा विश्वविद्यालय का एक दृश्य, जो भारत के प्राचीन विश्वविद्यालयों में से एक है।

भारतीय संविधान की मुख्य विशेषताएँ

संविधान की मुख्य विशेषताओं से परिचित होने से पहले, आइए कक्षा 6 में पढ़ी गई कुछ अवधारणाओं का पुनरावलोकन करते हैं।

पुनरावलोकन करें

- → सरकार के तीन अंग होते हैं — विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका और इनकी प्रभावी कार्यप्रणाली के लिए 'शक्तियों का पृथक्करण' अत्यंत आवश्यक है।
- → विधायिका कानून निर्माण करती है।
- → प्रधानमंत्री की अगुवाई में कार्यपालिका इन कानूनों को लागू करती है।
- → न्यायपालिका यह सुनिश्चित करती है कि बनाए गए सभी कानून संविधान के अनुरूप हों। यह भी निर्णय लेती है कि किसी कानून का उल्लंघन तो नहीं हुआ है और यदि उल्लंघन हुआ है, तो क्या दंड दिया जाना चाहिए।
- → हमारे यहाँ सरकार की त्रि-स्तरीय व्यवस्था है — केंद्र, राज्य और स्थानीय (पंचायती राज व्यवस्था, नगरपालिका, नगरनिगम)।
- → कुछ कार्य और दायित्व केंद्र सरकार के लिए आरक्षित हैं, जबकि अन्य कार्य राज्य सरकार को सौंपे गए हैं।

संविधान इन बिंदुओं को व्यापक रूप से निर्धारित करता है। यह सरकार के प्रत्येक अंग की भूमिका, कार्य, उत्तरदायित्व और जवाबदेही की व्यवस्था को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है। इसके अतिरिक्त, ऐसा निर्वाचन तंत्र भी निर्धारित किया गया है, जिससे देश के प्रत्येक पात्र नागरिक को मतदान का अवसर सुनिश्चित हो सके।

मौलिक कर्तव्यों और अधिकारों के कुछ उदाहरण हमें सूचना-चित्र (चित्र 10.14) में मिलते हैं। संविधान के अन्य मुख्य पहलू हैं — मौलिक कर्तव्य, मौलिक अधिकार तथा राज्य के नीति-निर्देशक तत्व। राज्य के नीति-निर्देशक तत्व हमारे संविधान निर्माताओं द्वारा भारत के सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण का सार प्रस्तुत करते हैं। हम जो उदाहरण सूचना-चित्र में प्रस्तुत कर रहे हैं, वे उन सिद्धांतों का चित्रण करते हैं जिनका पालन शासन व्यवस्था से अपेक्षित था।

इसे अनदेखा न करें

राज्य के नीति-निर्देशक तत्व वे लक्ष्य हैं, जिन्हें सरकार को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। ये उस दिशा को दर्शाते हैं, जिसमें संविधान निर्माताओं ने देश को आगे बढ़ते देखना चाहा था, जिससे कि भारत को सभी नागरिकों के लिए उन्नत बनाया जा सके। उदाहरणार्थ, देश के प्रत्येक व्यक्ति को एक अच्छे जीवन-स्तर का अधिकार मिलना चाहिए। लेकिन यदि सरकार इन तत्वों का पालन करने का प्रयास नहीं करती, तो कोई व्यक्ति न्यायालय जाकर इसकी शिकायत नहीं कर सकता। नीति-निर्देशक तत्व कठोर नियमों की तुलना में दिशा-निर्देशों जैसे हैं। दूसरी ओर, मूल अधिकार वे प्रतिज्ञाएँ हैं, जिन्हें निभाना अनिवार्य है। यदि आपके साथ केवल आपकी पहचान के कारण कोई अनुचित व्यवहार करता है, तो आप न्यायालय की सहायता ले सकते हैं।

हमारे संविधान निर्माताओं ने यह व्यवस्था निश्चित उद्देश्य से बनाई थी। वे चाहते थे कि कुछ अधिकार (मूल अधिकार) ऐसे हों जिन्हें तुरंत प्राप्त किया जा सके और कुछ बड़े लक्ष्य (नीति-निर्देशक तत्व) ऐसे हों जिन्हें देश की प्रगति के साथ धीरे-धीरे प्राप्त किया जा सके।

आइए पता लगाएँ

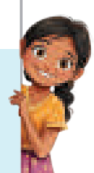

नीचे दिए गए उद्धरण को पढ़िए। आपके विचार से यह संविधान के किस अनुच्छेद का संदर्भ दे रहा है। आपके अनुसार उन्होंने ऐसा क्यों कहा कि महिलाओं की समानता भारत के लिए कोई नई अवधारणा नहीं है? कक्षा में इस पर चर्चा कीजिए।

“महोदय, भारत की महिलाएँ जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ पूर्ण समानता के अपने वैध अधिकार को लेकर प्रसन्न हैं। मैं यह इसलिए कहती हूँ कि यह कोई नया सिद्धांत नहीं है जिसे विशेष रूप से इस संविधान के लिए प्रस्तावित किया गया है, बल्कि यह एक आदर्श है जिसे भारत ने लंबे समय से सँजोकर रखा है। यद्यपि कुछ समय तक सामाजिक परिस्थितियों ने दुर्भाग्यवश इसे व्यावहारिक रूप से विफल कर दिया था। यह संविधान उस आदर्श की पुष्टि करता है और यह प्रभावी आश्वासन देता है कि भारतीय गणराज्य में महिलाओं के अधिकारों का विधि के अनुसार पूर्ण सम्मान किया जाएगा।”

— बेगम ऐजाज रसूल, 22 नवंबर 1949,
संविधान सभा में बहस के दौरान

मौलिक अधिकार

- समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14 — कानून के समक्ष समानता)
- स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 21 — जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा)
- शोषण के विरुद्ध अधिकार
- शिक्षा का अधिकार (अनुच्छेद 21-ए)

राज्य के नीति-निर्देशक तत्व

- अनुच्छेद 38 — सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक न्याय
- अनुच्छेद 41 — कल्याणकारी सरकार
- अनुच्छेद 44 — समान नागरिक संहिता
- अनुच्छेद 47 — पोषण, जीवन स्तर और सार्वजनिक स्वास्थ्य का संवर्धन
- अनुच्छेद 48-ए — पर्यावरण और वन्यजीव संरक्षण
- अनुच्छेद 49 — राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों, स्थलों और वस्तुओं का संरक्षण

मौलिक कर्तव्य

क. संविधान, उसके आदर्शों और संस्थाओं, राष्ट्र-ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करना।

ख. देश की रक्षा करना और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करना।

ग. हमारी साझा संस्कृति की समृद्ध विरासत का सम्मान करना और उसे सुरक्षित रखना।

घ. प्राकृतिक पर्यावरण, जिसमें वन, झीलें, नदियाँ और वन्य जीव सम्मिलित हैं, की रक्षा करना और जीवमात्र के प्रति दया भाव रखना।

ङ प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्तिगत और सामूहिक उत्कृष्टता की ओर प्रयत्न करना, जिससे राष्ट्र निरंतर ऊँचाई की ओर बढ़े।

च. यदि माता-पिता या अभिभावक हैं, तो 6 से 14 वर्ष की आयु के अपने बच्चे या आश्रित को शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करना।

चित्र 10.14 — संविधान के विभिन्न भागों के गठन की एक झलक।

संविधान एक जीवंत प्रलेख है

हमारे संविधान निर्माताओं ने यह समझा था कि समय के साथ और भी नए कानूनों की आवश्यकता उत्पन्न होगी। उदाहरणार्थ, भाग 4-ए 'मूल कर्तव्य' वर्ष 1976 में जोड़े गए थे। हालाँकि, हमें याद रखना चाहिए कि संविधान में कोई भी परिवर्तन, जिसे 'संशोधन' कहा जाता है, संसद में गहन चर्चा और विचार-विमर्श के बाद ही स्वीकार किया जाता है। कुछ मामलों में राज्यों की विधान सभाओं में भी चर्चा होती है। अनेक बार आम जनता से भी राय ली जाती है। कुछ संशोधन जन आंदोलनों के माध्यम से भी प्रारंभ हो सकते हैं।

आइए पता लगाएँ

→ एक समय था जब नागरिकों को अपने घरों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने की अनुमति नहीं थी। यह स्थिति 2004 में बदली, जब एक नागरिक ने इसे देश के प्रति अपने गर्व को व्यक्त करने का अधिकार मानते हुए न्यायालय में चुनौती दी। माननीय उच्चतम न्यायालय ने इस पर सहमति जताई और कहा कि तिरंगा फहराना अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का भाग है। आज हम गर्व के साथ तिरंगा फहरा सकते हैं, बशर्ते उसका अपमान न हो।

→ हमने कक्षा 6 में पंचायती राज व्यवस्था का अध्ययन किया था। यह संविधान का मूल भाग नहीं था। इसे 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 के द्वारा जोड़ा गया था।

→ क्या आप पता कर सकते हैं कि पिछले दस वर्षों में संविधान में कौन-कौन से संशोधन किए गए हैं?

सरकार भी नागरिकों को प्रस्तावित कानूनों या नियमों में बदलाव के संबंध में सुझाव देने के अवसर प्रदान करती है। अगला पृष्ठ इसी पर प्रकाश डालता है।

इसे अनदेखा न करें

भारतीय संविधान केवल एक कानूनी प्रलेख नहीं है, अपितु एक कलात्मक रचना भी है। प्रेम बिहारी नारायण रायजादा ने संविधान का मूल पाठ अपनी सुंदर हस्तलिपि में लिखा था। नंदलाल बोस एवं उनके सहयोगियों ने इसके प्रत्येक पृष्ठ को मोहनजोदड़ो से लेकर स्वतंत्रता आंदोलन तक के ऐतिहासिक दृश्य बनाकर सजाया था। (चित्र 10.6 से 10.13 देखें)

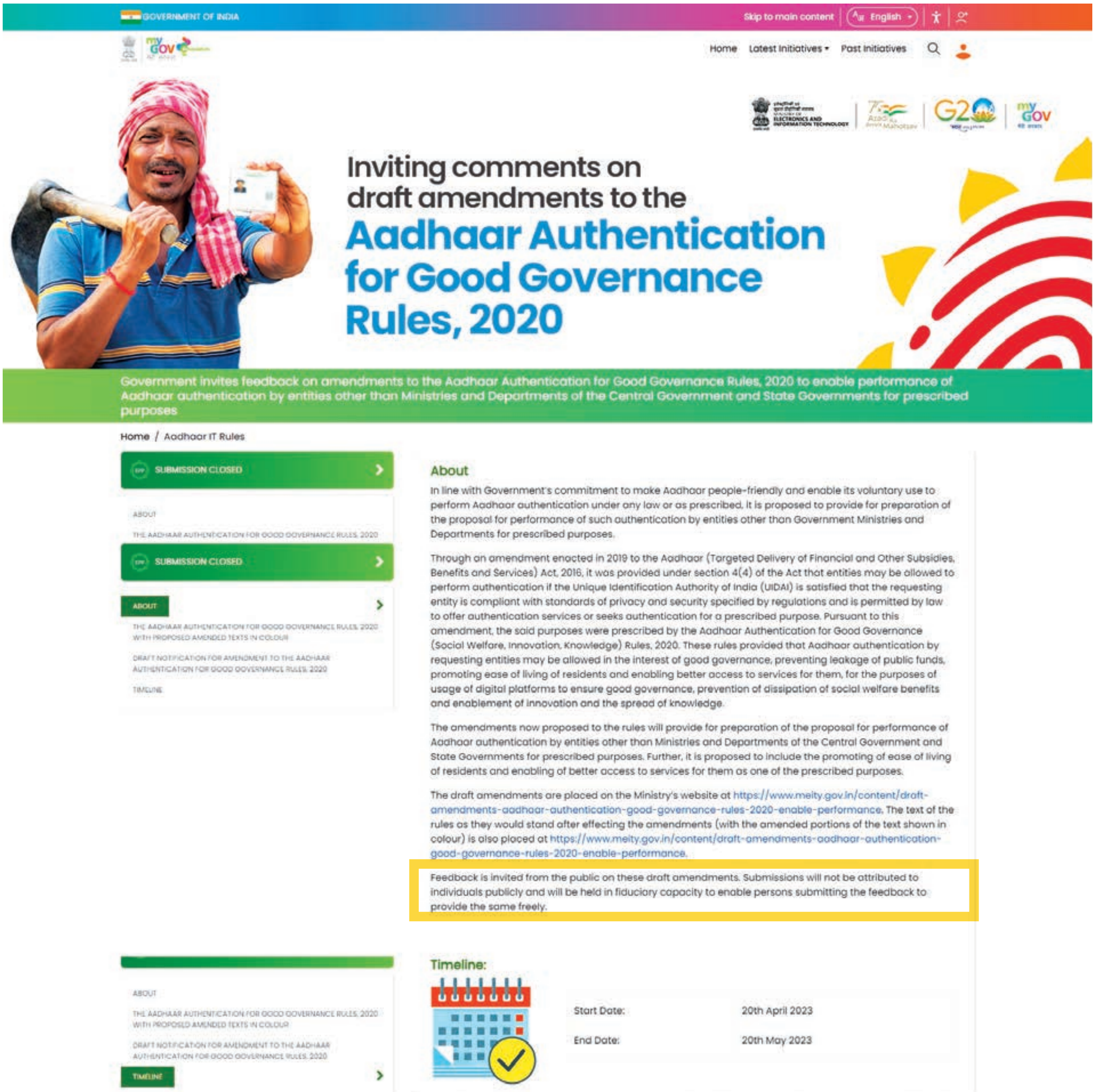

चित्र 10.15

उद्देशिका को समझना — भारतीय संविधान के मार्गदर्शक मूल्य

संविधान के महत्वपूर्ण मूल्य नीतियों एवं निर्णयों हेतु दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं, जिनका सरकार द्वारा पालन किया जाना अपेक्षित है। नागरिकों से भी अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी क्षमता के अनुसार इन मूल्यों का पालन करें। ये मार्गदर्शक मूल्य पूरे संविधान में समाहित हैं, लेकिन उनका सार उद्देशिका में संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत है। इसलिए, अब हम उद्देशिका का अध्ययन करेंगे।

भारतीय संविधान की उद्देशिका

हम, भारत के लोग
यह संविधान भारत के लोगों ने स्वयं अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से बनाया और अपनाया है, जिसे न तो किसी राजा ने हमें दिया, न ही किसी बाहरी शक्ति ने।

संप्रभु
लोकतंत्र में सभी मामलों में सर्वोच्च राजनीतिक शक्ति लोगों में निहित होती है। कोई भी बाहरी शक्ति भारत सरकार को निर्देश नहीं दे सकती।

समाजवादी
संपत्ति का उत्पादन समाज में होता है और उसका लाभ समाज के बीच साझा होना चाहिए। सरकार भूमि और उद्योग के स्वामित्व को नियंत्रित कर सकती है, जिससे सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम किया जा सके।

पंथनिरपेक्ष
नागरिकों को अपनी पसंद का धर्म अपनाने और पालन करने की पूर्ण स्वतंत्रता है। भारत का कोई राजकीय धर्म नहीं है। सरकार सभी धर्म-विश्वासों और आचारों के साथ समान व्यवहार करती है।

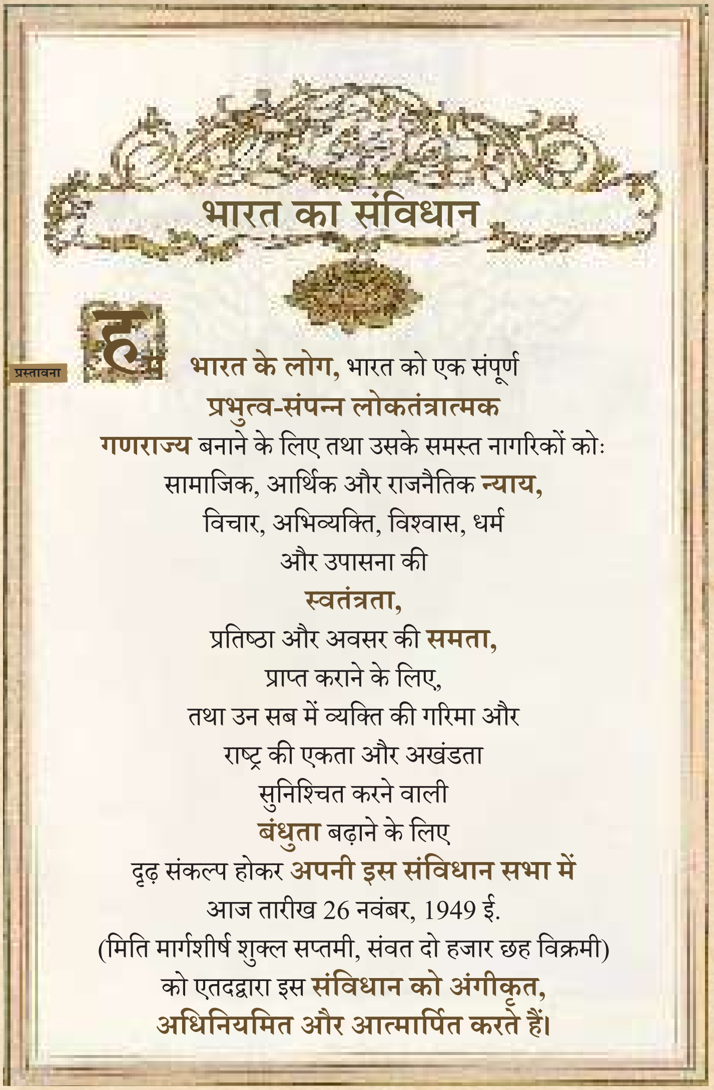
भारत का संविधान

प्रस्तावना

हम भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण
प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक
गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:
सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की
स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता,
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली
बंधुता बढ़ाने के लिए
दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में
आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई.
(मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत दो हजार छह विक्रमी)
को एतदद्वारा इस संविधान को अंगीकृत,
अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

गणराज्य
राष्ट्र का अध्यक्ष निर्वाचित होता है, न कि वंशानुगत।

न्याय
नागरिकों के साथ जाति, धर्म और लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा। सामाजिक असमानताओं को समाप्त किया जाना चाहिए। सरकार के सभी वर्गों, विशेष रूप से वंचित समूहों के कल्याण के लिए काम करना चाहिए।

स्वतंत्रता
नागरिकों के सोचने, अपने विचार व्यक्त करने और अपने विश्वासों के अनुसार कार्य करने पर कोई अनुचित रोक नहीं होनी चाहिए।

समानता
कानून के समक्ष सभी समान हैं। सामाजिक असमानताओं को समाप्त किया जाना चाहिए। सभी को समान अवसर प्रदान करना सरकार का कर्तव्य है।

लोकतांत्रिक
एक प्रकार की सरकार जिसमें लोगों के पास समान राजनीतिक अधिकार होते हैं। वे अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं और उन्हें जवाबदेह रखते हैं। सरकार कुछ मूलभूत नियमों के अनुसार चलाई जाती है।

बंधुता
हम सभी को एक परिवार के सदस्यों की तरह व्यवहार करना चाहिए। किसी को भी दूसरे नागरिक को नीचा नहीं दिखाना चाहिए।

नोट— 'समाजवादी' और 'पंथनिरपेक्ष' शब्दों को 42वें संविधान संशोधन, 1976 द्वारा संविधान की उद्देशिका में जोड़ा गया है।

चित्र 10.16 — भारतीय संविधान की उद्देशिका की एक झलक

आइए पता लगाएँ

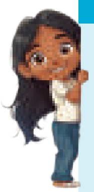

प्रस्तावना में उल्लिखित विशेषताओं की सूची नीचे दी गई है। इन्हें दिए गए चित्र में ध्यान से पढ़िए और अपने आस-पास के दैनिक जीवन में इन मूल्यों के पालन के उदाहरण लिखिए। दो उदाहरण दिए गए हैं, जिससे आपको अभ्यास पूर्ण करने में सहायता मिलेगी।

प्रस्तावना की विशेषताएँ	हम इन्हें अपने दैनिक जीवन में कैसे देखते हैं
संप्रभु	
पंथनिरपेक्ष	किसी व्यक्ति को यदि अपने धर्म के रीति-रिवाजों का पालन करना है और वह दूसरे के जीवन में बाधा नहीं डालता, तो उसे इसके लिए राज्य से अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है।
गणतंत्र	
न्याय	राज्य नौकरियों और अवसरों में सभी नागरिकों को जाति, धर्म, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव किए बिना समान अवसर प्रदान करता है।
स्वतंत्रता	
समानता	
बंधुत्व	

आगे बढ़ने से पहले...

- भारतीय संविधान एक मार्गदर्शक नियम-पुस्तिका है, जो सभी नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करता है। नागरिकों से भी यह अपेक्षा की जाती है कि वे संविधान में निहित मूल कर्तव्यों का पालन करें।
- भारत की समृद्ध सभ्यता की विरासत, स्वतंत्रता संग्राम और अन्य देशों के संविधानों से ली गई अच्छी परंपराएँ भारतीय संविधान के निर्माण में सहायक रहीं।
- संविधान की मुख्य विशेषताएँ देश की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचना तथा उसकी संसदीय शासन प्रणाली को परिभाषित करती हैं।
- यह एक जीवंत प्रलेख है, जिसे देश की आवश्यकताओं के अनुसार समय-समय पर संशोधित किया जा सकता है।

प्रश्न और क्रियाकलाप

1. 'संविधान सभा में भारत के विभिन्न क्षेत्रों और पृष्ठभूमियों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे।' आपके अनुसार ऐसा होना क्यों महत्वपूर्ण था?

2. नीचे दिए गए कथनों को ध्यान से पढ़िए और पहचानिए कि इनमें भारतीय संविधान की कौन-कौन सी प्रमुख विशेषताएँ या मूल्य दिखाई देते हैं—

   (क) शीना, रजत और हर्ष एक पंक्ति में खड़े हैं। वे आम चुनावों में अपना पहला वोट डालने के लिए उत्साहित हैं।

   (ख) राधा, इमोन और हरप्रीत एक ही विद्यालय में एक ही कक्षा में पढ़ते हैं।

   (ग) माता-पिता को अपने बच्चों की शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए व्यवस्था करनी चाहिए।

   (घ) गाँव के कुएँ का उपयोग सभी जाति, धर्म और लिंग के लोग कर सकते हैं।

3. यह कहा जाता है कि 'भारत में सभी नागरिक कानून के समक्ष समान है।' क्या आपको लगता है कि यह एक सच्चाई है? यदि हाँ, तो क्यों? यदि नहीं, तो क्यों नहीं? तर्कों के साथ उत्तर दीजिए।

4. आपने पढ़ा कि 'भारत एकमात्र ऐसा देश है, जिसने आरंभ से ही अपने नागरिकों को सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार प्रदान किया।' क्या आप बता सकते हैं कि भारत ने ऐसा क्यों किया?

5. स्वतंत्रता संग्राम ने भारतीय संविधान के निर्माण को कैसे प्रेरित किया? भारतीय सभ्यता की विरासत ने संविधान की किन प्रमुख विशेषताओं को किस प्रकार प्रेरित किया? स्पष्ट कीजिए।

6. क्या आपको लगता है कि हम एक समाज के रूप में संविधान के सभी आदर्शों को प्राप्त कर चुके हैं? यदि नहीं, तो एक नागरिक के रूप में हम में से प्रत्येक क्या कर सकता है जिससे कि हमारा देश इन आदर्शों के और निकट पहुँच सके?

7. अगले पृष्ठ पर दी गई शब्द-पहेली को भारतीय संविधान की महत्वपूर्ण अवधारणाओं का प्रयोग करते हुए हल कीजिए।

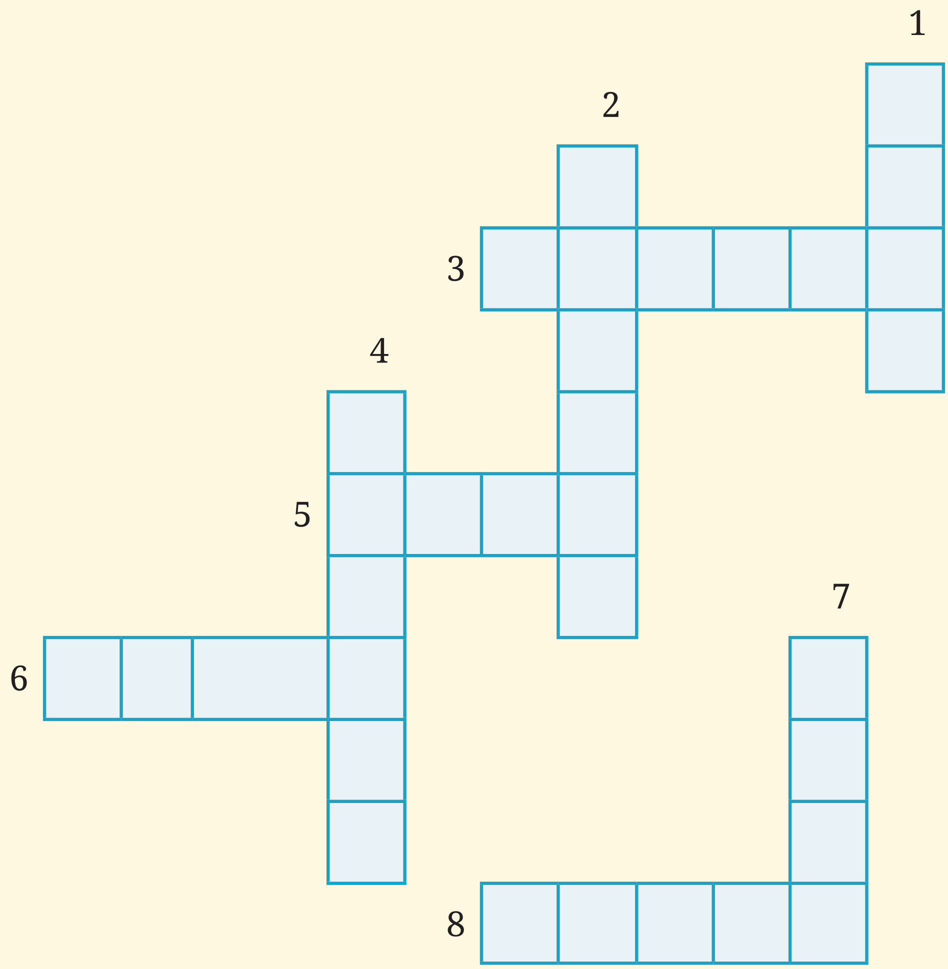

ऊपर से नीचे

2. वे अधिकार जो हर नागरिक को मिलते हैं, जैसे— स्वतंत्रता और समानता का अधिकार।
1. वह गैस जिसमें मूल संविधान की प्रति सुरक्षित रखी गई है।
4. लोगों का वह समूह जिसने भारतीय संविधान तैयार किया।
7. संविधान का आरंभिक कथन, जो वे मूल्य व आदर्श बताता है, जिनका वह संरक्षण करता है।

बाएँ से दाएँ

6. वह प्रक्रिया जो संविधान में परिवर्तन के लिए प्रयोग की जाती है।
5. सरकार का अंग, जो कानून बनाता है।
8. सरकार का अंग, जो कानून को क्रियान्वित करता है।
3. संविधान का वह भाग जो नागरिकों के कर्तव्य को दर्शाता है।

वस्तु विनिमय से मुद्रा तक

अध्याय **11**

मुद्रा का महत्व इसलिए है, क्योंकि यह वर्तमान और भविष्य को जोड़ने वाली कड़ी है।

— जॉन मेनार्ड कीन्स, बीसवीं शताब्दी के अर्थशास्त्री

चित्र 11.1

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *मुद्रा प्रचलन से पहले विनिमय कैसे होता था?*
2. *मुद्रा प्रचलन में क्यों आई?*
3. *समय के साथ मुद्रा विभिन्न रूपों में कैसे परिवर्तित हुई?*

0783CH11

पिछली कक्षा में आपने 'अतीत के चित्रपट' विषय में पढ़ा था कि लोग किस प्रकार की फसलें उगाते थे, जैसे – अनाज; या वे कारनेलियन के मनके जैसी वस्तुएँ कैसे बनाते थे। आपके विचार में, वे इन वस्तुओं का विनिमय अपनी आवश्यकता की वस्तुओं के लिए कैसे करते होंगे?

कारनेलियन - लाल भूरे रंग का एक रत्न।

वस्तु विनिमय प्रणाली (बार्टर सिस्टम)
यह मुद्रा का प्रयोग किए बिना वस्तुओं और सेवाओं का आदान-प्रदान करने का एक तरीका है।

लेन-देन
लोगों के बीच, विशेष रूप से क्रय और विक्रय से संबंधित किया गया व्यवसाय।

वस्तुएँ
व्यापार योग्य उत्पाद या वस्तुएँ जो क्रय या विक्रय की जा सकती हैं।

मुद्रा
एक सामान्य साधन/माध्यम है जिसे प्रत्येक व्यक्ति स्वीकृत करता है तथा जिसका उपयोग वस्तुओं और सेवाओं के बदले में भुगतान करने या प्राप्त करने के लिए प्रयोग करता है।

प्राचीन काल में, लोग अपनी वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय अन्य वस्तुओं एवं सेवाओं के लिए करते थे। इस व्यवस्था को **वस्तु विनिमय प्रणाली** (बार्टर सिस्टम) कहते हैं। यह कैसे संचालित होती थी? मान लीजिए कि आपको एक पेंसिल की आवश्यकता है और आपके पास एक अतिरिक्त रबर है। इसी बीच पता चलता है कि आपका सहपाठी रबर लाना भूल गया है, किंतु उसके पास अतिरिक्त पेंसिल है। ऐसे में आप अपने अतिरिक्त रबर का विनिमय अपने सहपाठी की अतिरिक्त पेंसिल के साथ कर सकते हैं। क्या इससे आपकी और आपके सहपाठी की आवश्कता पूरी नहीं हो सकती? इस तरीके से वस्तु विनिमय प्रणाली संचालित होती है।

आज हम वस्तुओं को खरीदने और बेचने के लिए सिक्कों और नोटों का प्रयोग करते हैं। लोग इस तरह के **लेन-देन** के लिए अपने मोबाइल फोन और कंप्यूटर का भी प्रयोग करते हैं।

वस्तु विनिमय प्रणाली लेन-देन का सबसे प्रारंभिक रूप था। इसके विश्व में कई प्रमाण मिले हैं। उस समय लोग विनिमय के लिए कौड़ी, सीप, नमक, चायपत्ती, तंबाकू, कपड़ा, पशुधन (गाय, बकरी, घोड़े, भेड़), बीज आदि जैसी **वस्तुओं** का प्रयोग करते थे।

*चित्र 11.2.1 — पाषाण **मुद्रा** या पत्थर की मुद्रा — चट्टान की वृहद डिस्क जिसे 'राई पत्थर' कहा जाता है। इसका प्रयोग प्रशांत महासागर में स्थित माइक्रोनेशिया देश में स्थित याप द्वीप में मुद्रा के रूप में किया जाता था।*

चित्र 11.2.2 — एज्टेक ताँबे का ताजार्डो (स्पेनी भाषा में इसका अर्थ है, काटने वाला चाकू) यह मध्य मैक्सिको और मध्य अमेरिका के कुछ हिस्सों में प्रयोग की जाने वाली एक प्रकार की मुद्रा थी।

चित्र 11.2.3 — सोलोमन द्वीप पर तेवाऊ (पक्षियों के पंखों से बनी लाल पंख की कुंडली) का प्रयोग मुद्रा के रूप में किया जाता था।

हमें मुद्रा की आवश्यकता क्यों है?

आइए पता लगाएँ

कल्पना कीजिए कि आप एक किसान हैं और जहाँ आप रहते हैं, वहाँ लोग वस्तु विनिमय प्रणाली का प्रयोग करते हैं। आपको यहाँ अनेक प्रकार की वस्तुओं की आवश्यकता है, जैसे– एक जोड़ी नए जूते, एक स्वेटर और अपनी दादी के लिए दवाइयाँ। परंतु आपके पास देने के लिए केवल एक बैल है।

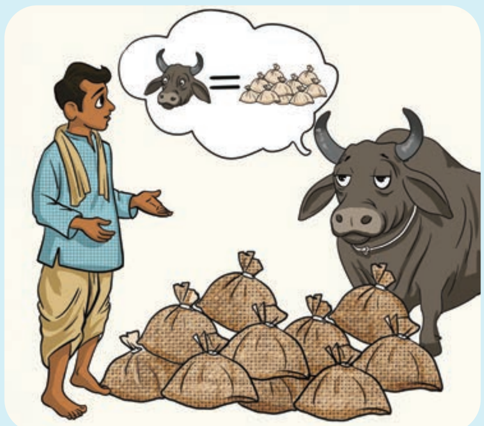

इस बैल का विनिमय करके आप कैसे विभिन्न प्रकार की आवश्यक वस्तुओं को विभिन्न लोगों एवं स्थानों से प्राप्त करेंगे? इसमें आपको किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है?

सबसे पहले आपको किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ना होगा जिसे बैल की आवश्यकता हो। बैल को केवल एक जोड़ी जूतों के लिए बदलना संभवत: उचित विनिमय नहीं होगा। आपको इसके लिए बहुत सारे विनिमयों या आदान-प्रदान की श्रृंखला से गुजरना पड़ेगा। उदाहरण के लिए, पहले किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ना होगा जो आपको बैल के बदले कई बोरे गेहूँ दे सके। फिर आपको वह सारा गेहूँ कई स्थानों पर ले जाना पड़ेगा।

सबसे पहले आपको किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ना होगा जो जूतों के बदले गेहूँ का कुछ भाग लेने को तैयार हो, फिर दूसरा व्यक्ति स्वेटर के लिए तथा अन्य कोई और दवाइयों के लिए। हर लेन-देन में यह तय करना कठिन होगा कि जूते या स्वेटर के बदले गेहूँ की कितनी मात्रा उचित रहेगी। दोनों पक्षों को तैयार करने के लिए लंबी बातचीत करनी पड़ेगी।

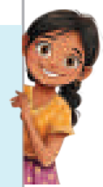

आपको बचे हुए गेहूँ के बोरे उठाकर किसी ऐसे स्थान पर रखने पड़ेंगे, जहाँ उसका सुरक्षित भंडारण किया जा सके। अगली बार जब आपको कुछ खरीदना होगा, तो आपको फिर से गेहूँ के बोरे को ले जाना पड़ेगा।

आइए विचार करें

ऊपर दी गई स्थिति में आपको किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

कल्पना कीजिए कि किसान की कहानी में, वह कोई ऐसा व्यक्ति ढूँढ़ लेता है जो उसके बैल के बदले उसे एक जोड़ी नए जूते, एक स्वेटर और दवाइयाँ देने को तैयार हो। क्या आप सोचते हैं कि ऐसी स्थिति आसानी से बन सकती है?

ठीक किसान की तरह, वस्तु विनिमय प्रणाली पर निर्भर व्यक्तियों को अपने दैनिक जीवन में विनिमय करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता होगा। उन्हें ऐसा व्यक्ति ढूँढ़ना पड़ता होगा जो ठीक वही वस्तु चाहता है, जिसे वे देना चाहते हैं और

बदले में वह व्यक्ति ठीक वही वस्तु दे सके जिसकी उन्हें आवश्यकता है। इस स्थिति को **आवश्यकताओं का द्विसंयोग (डबल कोइंसिडेंस ऑफ वॉन्ट्स)** कहा जाता है।

अगर मान लें कि दो व्यक्ति एक-दूसरे की वस्तुएँ चाहते हों और विनिमय के लिए तैयार भी हों, तो भी अन्य समस्याएँ आ सकती हैं। उदाहरण के लिए, यह तय करना कि कितने अनुपात में दोनों वस्तुओं का विनिमय किया जाए? ऐसे मामलों में, एक वस्तु के मूल्य की तुलना दूसरी वस्तु के मूल्य से करना कठिन हो जाता है। अगर किसी एक व्यक्ति को लगता है कि यह विनिमय उसके लिए लाभकारी नहीं है, तो वह विनिमय में रुचि नहीं रखेगा। इसका कारण यह है कि वहाँ **मूल्य का कोई सामान्य मानक माप** उपलब्ध नहीं है।

आइए विचार करें

उपर्युक्त उदाहरण में आवश्यकताओं के द्विसंयोग के क्या दृष्टांत हैं? उपर्युक्त स्थिति में वे कौन-से मामले हैं जहाँ आपको मूल्य के सामान्य मानक माप की कमी का सामना करना पड़ सकता है?

आप बैल का कुछ हिस्सा स्वेटर के लिए विनिमय नहीं कर सकते— यह **विभाज्यता** (डिवीजिबिलिटी) की समस्या है। बैल को सभी स्थानों पर ले जाना कठिन है— यह **सुवाह्यता (पोर्टेबिलिटी)** की समस्या है। आप गेहूँ के बदले बैल का विनिमय करके कुछ हद तक इस समस्या का समाधान कर सकते हैं, किंतु गेहूँ को अधिक समय तक संगृहीत नहीं किया जा सकता, क्योंकि गेहूँ या तो सड़ सकता है या चूहे इसे खा सकते हैं। इस तरह **टिकाऊपन** (ड्यूरेबिलिटी) की समस्या उत्पन्न होती है।

आइए विचार करें

ऐसे कुछ उपाय सुझाइए जिससे मुद्रा के प्रयोग द्वारा किसान की स्थिति को सरल बनाया जा सके?

टिकाऊपन (ड्यूरेबिलिटी)
किसी वस्तु अथवा सामग्री का वह गुण, जो उसे टिकने और क्षति सहने की क्षमता प्रदान करता है, जिसके कारण वह लंबे समय तक संगृहित की जा सकती है।

आवश्यकताओं का द्विसंयोग (डबल कोइंसिडेंस ऑफ वॉन्ट्स)
यह एक आर्थिक अवधारणा है, जो उस स्थिति को दर्शाती है जहाँ एक व्यक्ति के पास ऐसी वस्तु होती है, जिसकी दूसरे व्यक्ति को आवश्यकता है और वे इसे सीधे विनिमय कर सकते हैं।

मूल्य का सामान्य मानक माप (कॉमन स्टैंडर्ड मेजर ऑफ वैल्यू)
यह मूल्य का एक ऐसा मानक माप है, जिस पर सभी सहमत होते हैं। यह लेन-देन में सहायक होता है और वस्तुओं सेवाओं के मूल्य को अर्थव्यवस्था में निर्धारित करता है।

विभाज्यता (डिवीजिबिलिटी)
किसी वस्तु या सामग्री की वह क्षमता जिससे वह टुकड़ों या भागों में विभाजित हो सकती है।

सुवाह्यता (पोर्टेबिलिटी)
किसी वस्तु या सामग्री को सरलता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की समर्थता।

इसे अनदेखा न करें

चित्र 11.3

हालाँकि, मुद्रा ने संपूर्ण विश्व में पारंपरिक वस्तु विनिमय प्रणाली को प्रतिस्थापित कर दिया है, परंतु आज भी कुछ स्थानों पर इस प्रणाली का प्रचलन है। उनमें से एक है— जोन बोल मेला (असमी भाषा में जोन का अर्थ चाँद और बोल का अर्थ आर्द्रभूमि होता है), जो असम के मोरीगांव जिले में एक तीन दिवसीय वार्षिक सामाजिक-सांस्कृतिक मेला है। रोचक बात यह है कि यह मेला अग्नि पूजा से प्रारंभ होता है, जिसमें सार्वभौमिक कल्याण हेतु प्रार्थना की जाती है।

चित्र 11.4

15वीं शताब्दी के आरंभ में असम और मेघालय की तिवा, कारबी, खासी और जैंतिया जनजातियों के समुदायों के प्रमुख प्रतिवर्ष राजनीतिक मुद्दो पर चर्चा करने एवं मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखने के लिए एकत्रित होते थे। इन जनजातियों के सदस्यों द्वारा इस आयोजन के समय एकत्रित होने के कारण इस आयोजन ने मेले का रूप ले लिया। यहाँ लोग अपने उत्पादों को लाकर एक-दूसरे के उत्पादों के साथ विनिमय करने लगे। यह आज भी एक महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम बना हुआ है। यहाँ पर वस्तु विनिमय प्रात:काल ही शुरू हो जाता है, जिसमें स्थानीय उत्पाद जैसे– कंद-मूल, सब्जियाँ, फल, जड़ी-बूटियाँ और मसालों का लेन-देन होता है। मेले में हस्तनिर्मित वस्तुएँ और कलाकृतियाँ भी देखने को मिलती हैं, जो पहाड़ी क्षेत्रों के जंगलों से प्राप्त प्राकृतिक सामग्रियों से बनाई जाती हैं।

चित्र 11.5

इन वस्तुओं का प्राय: देश के मैदानी क्षेत्रों से आए व्यक्तियों द्वारा निर्मित चावल के पिठा (राइस केक) और अन्य खाद्य वस्तुओं के बदले में आदान-प्रदान किया जाता है, जिन्हें पहाड़ी स्थानों पर उगाया नहीं जा सकता।

- **पुस्तक विनिमय—** ऐसे मनोरंजन क्लब की कल्पना कीजिए, जहाँ आप मित्रों के साथ अपनी पुरानी पुस्तकें बदल सकें! यह कहानियों का एक खजाना ढूँढ़ने जैसा है। आप अपनी पढ़ी हुई पुस्तकों के बदले पुस्तकों के बड़े संग्रह में से नई पुस्तक चुन सकेंगे। उदाहरण के लिए, आप अपनी जंगल की रोमांचक कहानी की पुस्तक को किसी मित्र की रहस्यमयी कहानी की पुस्तक से बदल सकते हैं। यह बिना कोई मुद्रा व्यय किए नई पुस्तकें पढ़ने का एक रोचक तरीका है!

चित्र 11.6

- **पुराने कपड़ों के बदले** नए बर्तन लेना इसका एक आम उदाहरण है। यह परंपरा वर्षों से चली आ रही है। इस व्यवस्था में एक विक्रेता घर-घर जाता है और परिवार वालों को उनके पुराने उपयोग किए गए कपड़ों के बदले में नए बर्तन अथवा अन्य घरेलू सामान देता है। यह विनिमय दोनों पक्षों के लिए लाभदायक है— इस तरह परिवार से अनावश्यक वस्तुएँ चली जाती हैं और उसके बदले में विक्रेता को ऐसी वस्तुएँ मिल जाती हैं जिन्हें वह फिर से बेच सकता है, पुनः प्रयुक्त कर सकता है या फिर उसका पुनर्चक्रण कर सकता है।

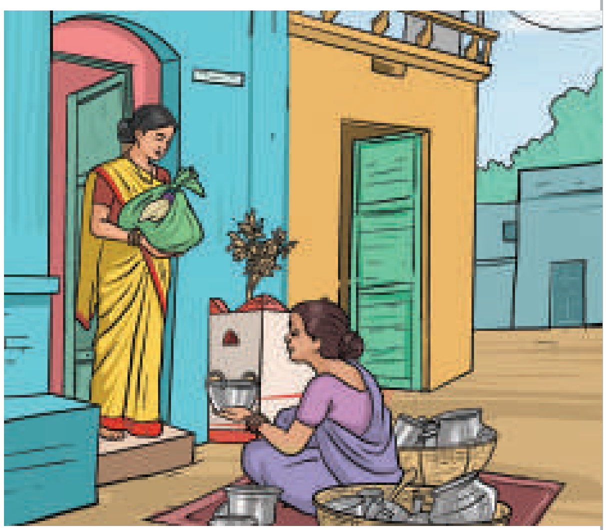

चित्र 11.7

आइए पता लगाएँ

पहले दिए गए चित्रणों में वस्तु विनिमय प्रणाली के कुछ तरीके दर्शाए गए हैं। क्या आपने अपने क्षेत्र में इस तरह के प्रयोगों का अवलोकन किया है? इस प्रकिया में लोगों को किस-किस प्रकार के अनुभव होते हैं?

मुद्रा के मूलभूत कार्य

कहा जाता है कि 'आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है'। जैसे-जैसे विनिमय की जाने वाली वस्तुओं के प्रकार और संख्या बढ़ने लगी और वस्तु विनिमय सुदूर क्षेत्रों तक होने लगा, यह स्पष्ट हो गया कि अब एक अलग प्रणाली की आवश्यकता है। एक सामान्य **विनिमय माध्यम** ही व्यापार को आसान बनाएगा और इसी कारण मुद्रा अस्तित्व में आई। जैसे-जैसे अधिक से अधिक व्यक्ति इसे वस्तुओं एवं सेवाओं के लेन-देन में प्रयोग करने लगे, यह भुगतान की एक स्वीकृत विधि बन गई।

चित्र 11.8

जैसा कि हमने किसान की कहानी में देखा कि वह गेहूँ का संग्रहण अधिक समय तक नहीं कर सका, क्योंकि या तो गेहूँ सड़ जाते हैं या उसे चूहे खा जाते हैं। अगर किसान गेहूँ की जगह मुद्रा के माध्यम से विनिमय करता, तो वह मुद्रा को अधिक लंबे समय तक रख पाता और आगे भी उससे क्रय कर पाता। इस प्रकार मुद्रा मूल्य के संग्रहण (स्टोर ऑफ वैल्यू) का कार्य करता है, जिसे बाद में प्रयोग किया जा सकता है। है न ये कितना रोचक!

मुद्रा एक **सामान्य अंकित मूल्य** के रूप में भी कार्य करती है, जिसके द्वारा वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को मापा जाता है और उनके मूल्य की तुलना करना संभव होता है।

उदाहरण के लिए, आपके माता-पिता दुकानदार से विभिन्न प्रकार के उत्पादों को खरीदने के लिए मुद्रा का प्रयोग करते हैं। यह मुद्रा दुकानदार द्वारा उसके श्रमिकों को वेतन देने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। श्रमिक इसी के माध्यम से अपनी प्रतिदिन की आवश्यक वस्तुएँ एवं अन्य वस्तुएँ खरीदते हैं और अपने बच्चों के विद्यालय की फीस भरते हैं।

चित्र 11.9

आइए विचार करें

मान लीजिए कि आपको एक पुस्तक खरीदनी है। आपकी जेब में ₹50 हैं। आप अपने पड़ोस की पुस्तक की दुकान पर जाते हैं और वहाँ दुकानदार आपको पुस्तक की कीमत ₹100 बताता है। आपके पास आज पुस्तक खरीदने के क्या विकल्प हैं? क्या आप दुकानदार को शेष भुगतान बाद में करने की अनुमति देने का अनुरोध करेंगे?

अत: मुद्रा को भविष्य में भुगतान करने के एक माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया है, जिससे यह **स्थगित भुगतान का एक मानक** बन गया है।

मुद्रा की यात्रा

आइए पता लगाएँ

चित्र 11.10 में दी गई समय-रेखा को देखें। आपने मुद्रा में क्या-क्या बदलाव देखे?

सिक्का-प्रणाली

जैसा कि आप समय-रेखा में देख सकते हैं, सिक्के मुद्रा के सबसे प्राचीन रूपों में एक है। उस समय में शासक सिक्के जारी करते थे, जो नागरिकों के द्वारा अपने-अपने राज्य में लेन-देन में प्रयोग में लाए जाते थे। इस प्रकार विभिन्न साम्राज्यों की अपनी सिक्का-प्रणाली होती रही होगी। **सिक्के ढालना** एवं सिक्के जारी करना पूर्णतया शासकों के द्वारा नियंत्रित था। समय के साथ शक्तिशाली शासकों के सिक्के उनके अपने राज्य के अलावा अन्य राज्यों में भी स्वीकृत होने लगे। इससे विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में व्यापार सुगम हुआ।

सिक्के ढालना (मिंटिंग)
वह प्रक्रिया जिसके द्वारा सिक्कों का उत्पादन किया जाता है। सिक्के ढालने (मिंट) का संदर्भ उस विनिर्माण सुविधा से है, जिसके द्वारा सिक्कों का उत्पादन किया जाता है और जिनका प्रयोग राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में किया जाता है।

मिश्रधातु
ऐसी धातु जो दो या दो से अधिक धातु तत्वों के मिश्रण से बनती है। यह सिक्के को सशक्त बनाती है।

कार्षापण
एक विशिष्ट वजन/भार का सिक्का।

पण- सिक्का

रूपा
मिश्र धातु से बने सिक्के जिनमें चिन्ह अंकित होते हैं, उसे रूपा कहा जाता है।

सिक्के महँगी धातुओं जैसे – सोना, चाँदी और ताँबा अथवा उनकी **मिश्रधातु** से बनाए जाते थे। उन्हें कार्षापण या पण कहा जाता था। उन पर चिह्न अंकित होता था, जिसे 'रुपा' कहा जाता था।

क्या यह शब्द वर्तमान भारत में मुद्रा के लिए प्रयोग किए जाने वाले शब्द से मिलता-जुलता है?

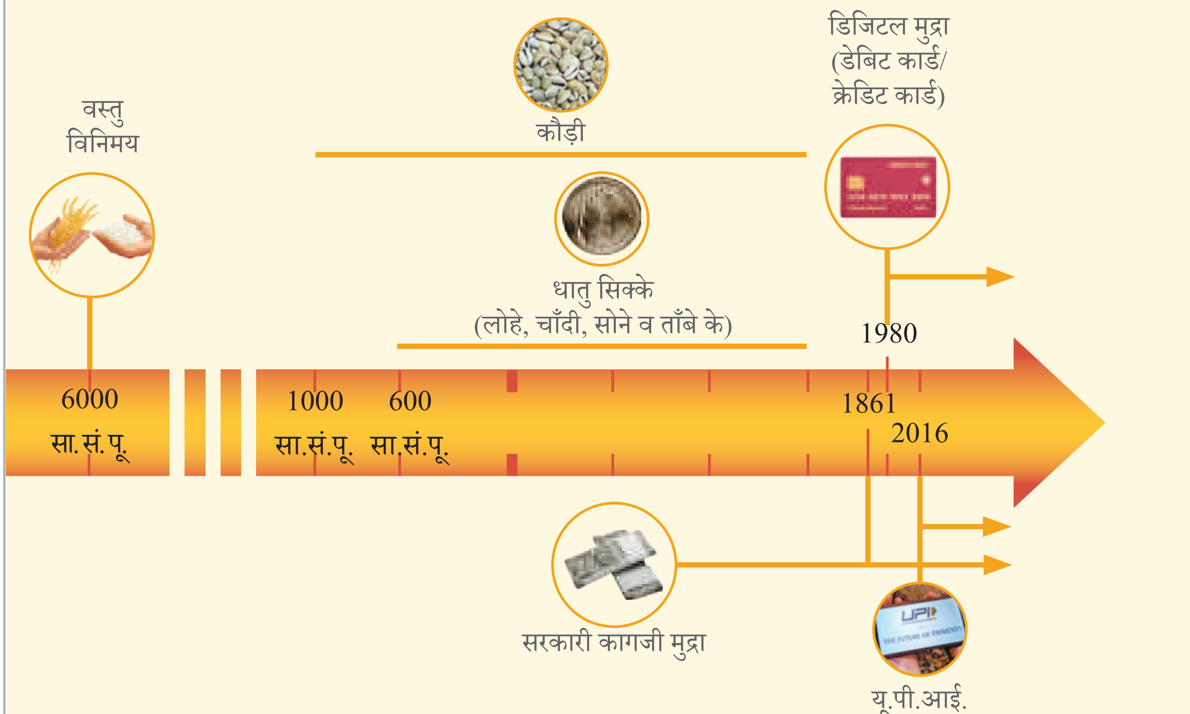

चित्र 11.10 — भारत में मुद्रा का विकास — एक विस्तृत समय-रेखा

इसे अनदेखा न करें

- क्या यह रोचक नहीं है कि 'पण' शब्द के लिए आज भी तमिल, तेलुगु और मलयालम भाषा में 'पणं' और कन्नड़ में 'हण' का प्रयोग किया जाता है।
- चाँदी और ताँबे की मिश्रधातु से सिक्के ढाले जाते थे। वर्तमान में हम जिन सिक्कों का प्रयोग करते हैं, वे भी अधिकतर लोहे की मिश्रधातु से बने होते हैं। इनमें अन्य पदार्थ जैसे – क्रोमियम, सिलिकॉन और कार्बन का सटीक अनुपात होता है। आपको मिश्रधातु के बारे में अधिक जानकारी विज्ञान विषय के अध्यायों में मिलेगी।

प्राचीन समय में सिक्के के दो पहलुओं— सिक्के के **'शीर्ष'** (**ऑबवर्स** या मुख्यचित्र) और 'पृष्ठ' (रिवर्स या पट्ट), पर विभिन्न प्रकार के चिह्न और आकृतियाँ उकेरी जाती थीं। इनमें प्राकृतिक आकृतियाँ, जैसे – जानवर, वृक्ष, पहाड़ और उस समय के राजा-रानी और देवी-देवताओं की छवियाँ सम्मिलित होती थीं।

उदाहरण के लिए, चालुक्य राजवंश के सिक्कों में एक तरफ वराह की प्रतिमा (विष्णु अवतार) और दूसरी तरफ सजाया गया त्रिस्तरीय छत्र अंकित होता था।

शीर्ष (ऑबवर्स)
सिक्के या मेडल का वह भाग जिस पर शीर्ष या मुख्य डिजाइन अंकित होता है।

कल्याण के चालुक्य सिक्का प्रणाली में वराह (विष्णु अवतार) एवं राजसी छत्र

चाँदी के सिक्के पर दर्शाया गया चोल (850–1279 सामान्य संवत) राजचिह्न का प्रतीक बाघ

चित्र 11.11

आइए पता लगाएँ

चित्र 11.12 में दर्शाए गए सिक्के तमिलनाडु में स्थित पुड्डूकोटाई में उत्खनन के समय मिले हैं। उनके 'शीर्ष' पर रोमन राजाओं की आकृति उकेरी हुई है। इस तरह की जानकारियों के द्वारा हम क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं?

चित्र 11.12 — पुड्डूकोटाई, भारत में उत्खनन के समय मिले ग्रीक स्वर्ण सिक्के

सिक्कों के प्रयोग से भारत को विश्व में समुद्री व्यापार बढ़ाने में सहायता मिली। उदाहरण के लिए, केरल और तमिलनाडु के कुछ भागों में ये सिक्के मिले हैं। यह दक्षिण भारत की विश्व के अन्य भागों से जुड़ी व्यापारिक गतिविधियों को दर्शाता है। इस जानकारी से विद्वान यह निष्कर्ष निकालते हैं कि उस समय व्यापार भारत के पक्ष में था।

इसे अनदेखा न करें

1 आना, रुपये के 1/16 वें भाग के बराबर होता था। 1947 में 1 आने से एक दर्जन केले खरीदे जा सकते थे।

1/2 आना	1/2 आना	1/4 आना	1 पैसा
1942	1918	1943	1945

चित्र 11.13

अंकित मूल्य
वह इकाई जिसमें सिक्कों एवं कागजी नोटों को वर्गीकृत किया जाता है। उदाहरण के लिए, भारतीय करेंसी पर अंकित मूल्यों में 50 पैसे, ₹1, ₹2, ₹5, ₹10 के सिक्के और ₹10, ₹20, ₹50, ₹100, ₹200 और ₹500 के कागजी नोटों को सम्मिलित किया जाता है।

वर्तमान में हम देखते हैं कि विभिन्न अंकित मूल्यों के लिए अलग-अलग आकार के सिक्के हैं और प्रत्येक सिक्के पर हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया गया है। देश के महत्वपूर्ण आयोजनों के उपलक्ष्य में विशेष स्मृति-चिह्न के रूप में सिक्के भी ढाले जाते हैं।

इसे अनदेखा न करें

भारत सरकार ने वर्ष 2010 में '₹' चिह्न को स्वीकृति दी। यह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बॉम्बे (मुंबई) के उदय कुमार द्वारा डिजाइन किया गया था। यह चिह्न देवनागरी लिपि के 'र' और रोमन अक्षर 'R' का मिश्रण है, जिसमें ऊपर की ओर दो समानांतर क्षैतिज रेखाएं राष्ट्रीय ध्वज का प्रतिनिधित्व करती हैं और 'बराबर' चिह्न का भी प्रतिनिधित्व करती हैं।

वर्तमान सिक्का प्रणाली

2021 में स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में एक प्रतीकात्मक सिक्का

चित्र 11.14

आइए पता लगाएँ

आप अपने आप को पाँच-पाँच विद्यार्थियों के समूहों में संगठित करें। एक सामूहिक परियोजना आरंभ करें जिसमें परिवार के सदस्यों, पड़ोसियों, दुकानदारों आदि से पुराने सिक्के एकत्रित करें। उनकी विभिन्न विशेषताओं को लिखें — वे किस धातु से बने हैं, सिक्कों पर अंकित वर्ष क्या है, सिक्कों के शीर्ष और पृष्ठ भाग पर आप क्या देखते हैं। अपने अवलोकनों से आप क्या अनुमान लगा सकते हैं? आपको कैसे पता चलेगा कि आपके अनुमान सही हैं?

जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है, वस्तु विनिमय प्रणाली में गैर-धातु मुद्रा का प्रयोग होता था। सिक्का प्रणाली में धातु मुद्रा के प्रयोग ने कालांतर में मुद्रा के अन्य रूपों के विकास का मार्ग प्रशस्त किया!

कागजी मुद्रा

आइए पता लगाएँ

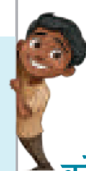

आपके विचार में क्या हुआ होगा जब सिक्कों का प्रयोग हर प्रकार के लेन-देन के लिए शुरू हुआ होगा, चाहे वह सब्जियाँ हों या जमीन खरीदना हो? ऐसी क्या समस्याएँ उत्पन्न हुई होंगी?

करेंसी
मुद्रा की वह प्रणाली जो किसी देश में प्रयोग की जाती है। उदाहरण के लिए सिक्के और कागजी नोट जो भारत में रुपयों के रूप में प्रयोग किए जाते हैं, वे भारतीय करेंसी हैं।

आप कल्पना कर सकते हैं कि बड़ी मात्रा में सिक्के ले जाना कठिन होता होगा। सिक्कों को संगृहित करना भी एक समस्या बन गई होगी। कागजी मुद्रा के प्रयोग में आने से अन्य उपयुक्त विकल्पों की खोज समाप्त हो गई। कागजी मुद्रा या **करेंसी** पहली बार चीन में प्रयोग की गई और भारत में इसे 18वीं शताब्दी के अंत में प्रयोग में लाया गया।

चित्र 11.15 — बैंक ऑफ बंगाल का एकमुखी नोट (बाएँ) और बैंक ऑफ बॉम्बे का दस रुपए का नोट (दाएँ)

सिक्कों का प्रयोग सामान्यत: छोटे मूल्यों के लिए, जबकि कागजी मुद्रा का प्रयोग बड़े मूल्यों के लेन-देन हेतु किया जाता है।

आजकल जो मुद्रा आप अधिकतर देखते हैं, इस प्रकार की दिखती है —

चित्र 11.16 — वर्तमान कागजी मुद्रा

आइए पता लगाएँ

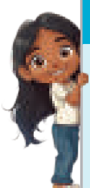

₹50 और ₹100 के नोटों को देखिए। क्या आप नोटों के पृष्ठ भाग पर दर्शाई गई भारत की सांस्कृतिक विरासत से संबंधित आकृतियों को पहचान पा रहे हैं? इनके बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।

→ नोटों की सतह को छूकर महसूस कीजिए। क्या दृष्टिबाधित लोगों के लिए नोटों पर अंकित मूल्य को पहचानने हेतु कोई विशेष लक्षण हैं?

चित्र 11.17

इस अध्याय में हमने पहले पढ़ा कि प्राचीन काल में सिक्के शासकों द्वारा जारी किए जाते थे। वर्तमान में भारत में हमारे पास एक केंद्रीय प्राधिकरण है, जिसे भारतीय रिजर्व बैंक कहा जाता है यह मुद्रा जारी करने को नियंत्रित करता है। भारतीय रिजर्व बैंक के अलावा किसी अन्य के लिए मुद्रा जारी करना वैधानिक नहीं है।

मुद्रा के नए रूप

समय के साथ-साथ तकनीकी प्रगति के कारण वर्तमान में मुद्रा के अन्य रूपों का प्रयोग होने लगा है। आइए, इनमें से कुछ को समझते हैं —

कृष्णप्पा एक ठेले पर मौसमी फल बेचते हैं। अपने ठेले पर रंग-बिरंगे फलों को साफ-सुथरे ढंग से सजाने के साथ-साथ वह एक छोटा-सा कार्ड रखते हैं, जिसमें **क्यू.आर.कोड** होता है। उनके ग्राहक अपने मोबाइल फोन से क्यू.आर.कोड को स्कैन करते हैं और क्रय के लिए डिजिटल भुगतान करते हैं। फिर यह भुगतान सीधे कृष्णप्पा के बैंक खाते में चला जाता है।

मुद्रा के मूर्त रूपों, जैसे – सिक्कों और कागजी नोटों के अलावा, मुद्रा ने ऐसे अमूर्त रूप ले लिए हैं, जिन्हें हम न छू सकते हैं और न ही महसूस कर सकते हैं। इसे डिजिटल मुद्रा कहा जाता है, जो इलेक्ट्रॉनिक रूप में होती है। क्या आपने अपने आस-पास के अन्य व्यक्तियों को सिक्कों और नोटों का प्रयोग किए बिना भुगतान करते या भुगतान प्राप्त करते हुए देखा है? भुगतान के विभिन्न तरीकों जैसे – डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, नेट

क्यू.आर.कोड
यह 'क्विक रिस्पॉन्स' कोड हैं, यह काले और सफेद वर्गों का संग्रह है जो स्मार्टफोन और क्यू.आर.कोड स्कैनर जैसे उपकरणों द्वारा पढ़ा जा सकते हैं। इसमें प्राप्तकर्ता के बैंक खाते के बारे में जानकारी होती है और ये मौद्रिक लेन-देन में प्रयोग किया जाता हैं।

चित्र 11.18

बैंकिंग, यू.पी.आई. (यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस) आदि का भी लेन-देन के लिए प्रयोग किया जाता है। यह प्रणाली मुद्रा को सीधे एक व्यक्ति के बैंक खाते से दूसरे के खाते में स्थानांतरित करती है। आप मौद्रिक लेन-देन के इन आधुनिक तरीकों के बारे में आगे और भी जानेंगे।

आगे बढ़ने से पहले...

- मुद्रा के अस्तित्व में आने से पहले वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित थी। विनिमय को सुविधाजनक बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का प्रयोग किया जाता था।
- वस्तु विनिमय प्रणाली की सीमाओं ने विनिमय के माध्यम के रूप में मुद्रा के विकास को प्रेरित किया।
- समय के साथ-साथ मुद्रा के अन्य रूप विकसित हुए, जैसे – सीप (कवच), कौड़ी, सिक्के और कागजी मुद्रा। यह विकास निरंतर चल रहा है क्योंकि हम भुगतान करने और प्राप्त करने के नए और आसान तरीके सृजित कर रहे हैं, जिसमें चित्र में दिखाया गया क्यू.आर.कोड भी सम्मिलित है।

प्रश्न और क्रियाकलाप

1. वस्तु विनिमय प्रणाली कैसे कार्य करती थी और इस प्रणाली में किस प्रकार की वस्तुओं का प्रयोग विनिमय हेतु किया जाता था?
2. वस्तु विनिमय प्रणाली की क्या सीमाएँ थीं?
3. प्राचीन भारतीय सिक्कों की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?
4. समय के साथ मुद्रा विनिमय के माध्यम के रूप में कैसे परिवर्तित हुई?
5. प्राचीन काल में कौन-से कदम उठाए गए होंगे जिससे भारतीय सिक्के विभिन्न देशों में विनिमय का माध्यम बन सकें?
6. *अर्थशास्त्र* की निम्नलिखित पंक्तियाँ पढ़ें —
   '60 पणों का एक वर्ष का वेतन प्रतिदिन एक अधक अनाज से प्रतिस्थापित हो सकता था, जो चार बार के भोजन के लिए पर्याप्त था...' (एक अधक लगभग 3 किलोग्राम के बराबर होता है)। यह एक पण के मूल्य के विषय में क्या बताता है? पड़ोसी की सहायता न करने की दंड 100 पण था। इसकी तुलना वार्षिक वेतन से करें। इससे आप मानवीय मूल्यों के बारे में क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं, जो इसके माध्यम से प्रोत्साहित किए जा रहे थे?
7. एक नाटक लिखिए और उसका मंचन कीजिए जिसमें यह दिखाया जाए कि लोग एक-दूसरे को कौड़ी, सीप (और ऐसी अन्य वस्तुओं) को विनिमय के माध्यम के रूप में प्रयोग करने के लिए कैसे तैयार कर सके होंगे?

8. भारत में भारतीय रिजर्व बैंक (आर.बी.आई.) ही कागजी मुद्रा को छापने व वितरण करने का एकमात्र वैधानिक स्रोत है। नोटों की अवैध छपाई और उनके दुरुपयोग को रोकने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक ने कई सुरक्षा कदम उठाए हैं। पता लगाइए कि ऐसे कुछ उपाय कौन-से हैं और अपनी कक्षा में उनकी चर्चा कीजिए।
9. अपने परिवार के कुछ सदस्यों और स्थानीय दुकानदारों का साक्षात्कार लीजिए और उनसे पूछिए कि वे भुगतान करने या प्राप्त करने में नकद या यू.पी.आई. में किसको वरीयता देंगे और क्यों?

छत्तीसगढ़ में वस्तु विनिमय प्रणाली (पौनी पसारी व्यवस्था)

प्राचीन छत्तीसगढ़ में प्रचलित वस्तु विनिमय प्रणाली इस अंचल के आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी प्रचलित है। ग्रामीण अंचल के कुछ वर्ग ऐसे थे, जो गांव में अपने परंपरागत व्यवसाय के अनुसार गांव के नागरिकों की सेवा करते थे। यही कार्य उनके जीविकोपार्जन का साधन भी था। इस सेवा के बदले उन्हे डोली (खेत) दी जाती थी. जिसे 'पौनी डोली' कहते थे। इन पौनी डोली के बदौलत ये जातियां अपनी सेवा के बदले पीढ़ी दर पीढ़ी कमाते खाते रहे। अब गांव वाले डोली के बदले में पौनियों को धान, कोदो या मड़िया देने लगे हैं। गांव के मुखिया, गौटिया, सरपंच, पटेल तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति एक ही स्थान पर एकत्रित होकर आपसी सहमती से पौनियों का मेहनताना उनके कार्य के अनुसार तय करते हैं। ये अनुबंध चैत्र से फागुन तक तय किया जाता है, जिसे 'चोंगी माखुर कहते हैं। ब्रिटिश सेटलमेंट अधिकारी मेजर पी. वांस एग्न्यू ने अपने रिपोर्ट में पौनी पसारी व्यवस्था के अन्तर्गत नाई, गहिरा, धोबी, लोहार, बिगरिहा आदि का वर्णन किया है।

ग्रामीण व्यवस्था में नाई, धोबी, लुहार, राऊत, बैगा आदि पौनी पसारी व्यवस्था के अंग होते हैं। कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण जैसे -

1. बाल कटवाने के बदले नाई को अन्न दिया जाता है।
2. इमली के बीज और गोंद के बदले में बर्फगोला विनिमय होता था।
3. बबूल के बीज के बदले नमक विनिमय किया जाता है।
4. मवेशी चराने वाले समुदाय को उनकी सेवा के बदले अन्न दिया जाता है।
5. जन्म एवं मृत्यु संस्कार के बाद धोबी समुदाय को कपड़े धोने के बदले धान एवं उनके जरूरत की वस्तुएं प्रदान की जाती है।
6. आज भी विशेष कर बस्तर और सुकमा में मुद्रा के बदले वनोपज जैसे महुआ, धान के बदले चावल, नमक, बर्तन एवं अन्य वस्तुएं खरीदी एवं बेची जाती है।

छत्तीसगढ़ में वस्तु विनिमय प्रणाली (पौनी पसारी व्यवस्था) एक प्राचीन आर्थिक व्यवस्था है जो स्थानीय क्षेत्रीय संस्कृति और अर्थ व्यवस्था का हिस्सा है, जो वर्तमान बाजार व्यवस्था के साथ मिलकर काम कर रही है।

अध्याय 12

बाजारों की समझ

बाजार से समृद्धि तभी उत्पन्न होती है, जब व्यक्तियों को उन वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता होती है, जिन्हें वे स्वयं निर्मित नहीं कर सकते हैं।

— एडम स्मिथ, 18वीं शताब्दी के अर्थशास्त्री

महत्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *बाजार क्या होते हैं और वे कैसे कार्य करते हैं?*
2. *व्यक्तियों के जीवन में बाजारों की क्या भूमिका है?*
3. *सरकार बाजारों में क्या भूमिका निभाती है?*
4. *उपभोक्ता अपनी क्रय की गई वस्तुओं तथा सेवाओं की गुणवत्ता का आकलन किस प्रकार कर सकते हैं?*

0783CH12

आगामी पृष्ठ पर दिए गए चित्रों में आप व्यक्तियों को वस्तुओं का क्रय और विक्रय करते देखेंगे, जैसे – सब्जियाँ, फल, कपड़े, किराने का सामान, मोबाइल फोन एवं फ्रिज इत्यादि। यह वस्तुएँ विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियों — प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक से प्राप्त होती हैं, जिसका अध्ययन आपने कक्षा 6 में किया है। लेकिन ये वस्तुएँ हम लोगों तक कैसे पहुँचती हैं?

चित्र 12.1

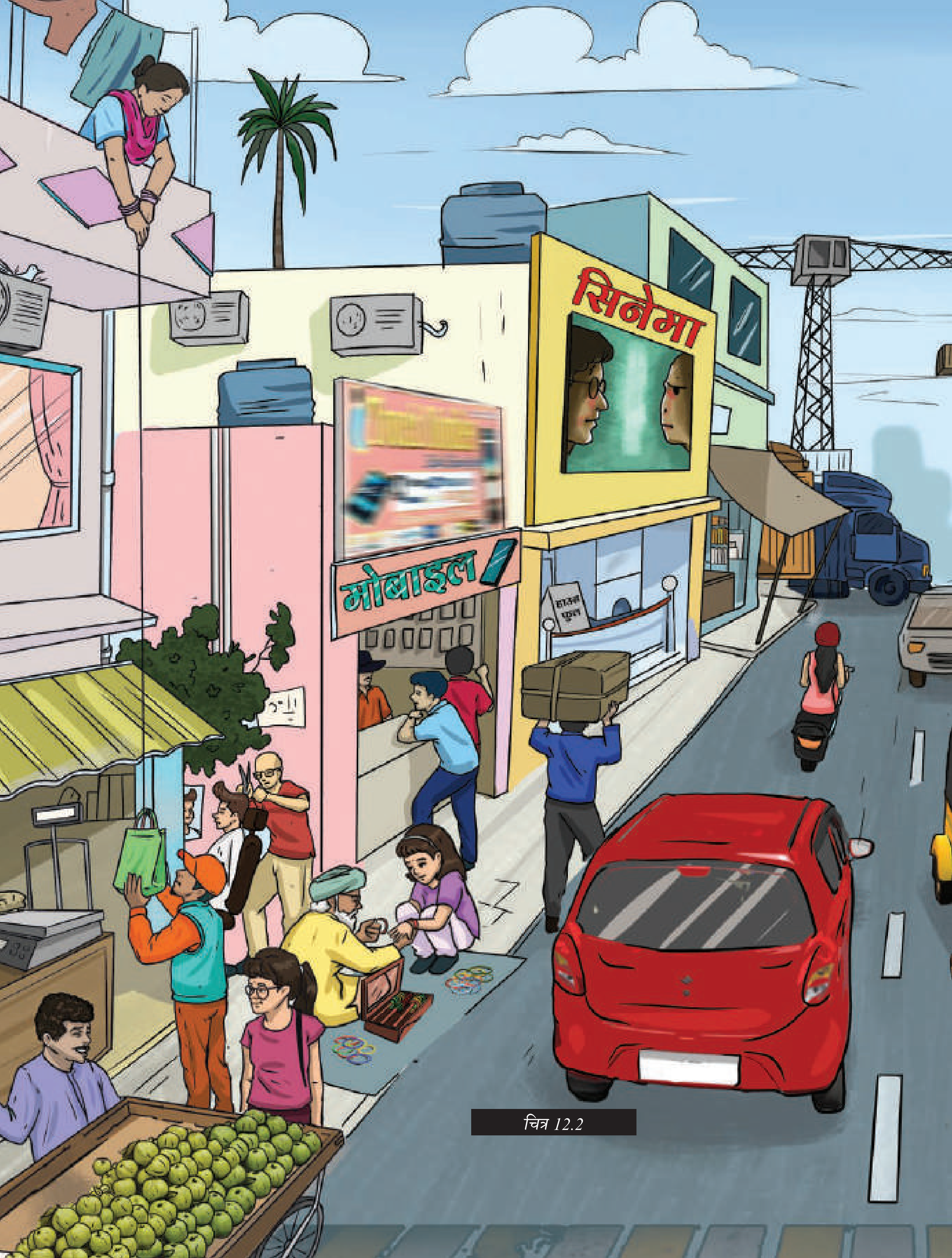

चित्र 12.2

मॉल

बाजार क्या है?

वह स्थान जहाँ लोगों द्वारा विभिन्न वस्तुओं का क्रय और विक्रय किया जाता है, उसे बाजार कहते हैं। इसे हिंदी में हाट और कन्नड़ में 'मारुकट्टे' कहा जाता है। आपके क्षेत्र में इसे क्या कहा जाता है? बाजार कहीं भी हो सकता है और वर्तमान में ऑनलाइन बाजार बहुत ही ज्यादा प्रचलित हो रहा है। वस्तुएँ और सेवाएँ बाजार के माध्यम से व्यक्तियों, परिवारों और व्यापारियों के लिए उपलब्ध हो रही हैं। लंबे समय से व्यक्ति वस्तुओं और सेवाओं की **मूलभूत आवश्यकताओं** एवं अन्य **आवश्यकताओं** को पूरा करने के लिए बाजारों पर निर्भर रहे हैं। इसके अलावा बाजार लोगों, परंपराओं और विचारों को जोड़ते हैं।

आइए, 16वीं शताब्दी के भारत से एक बाजार का उदाहरण देखते हैं।

मूलभूत आवश्यकताएँ
अर्थशास्त्र में मूलभूत आवश्यकताओं से तात्पर्य उन बुनियादी वस्तुओं से होता है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवित रहने के लिए आवश्यक हैं, जैसे – भोजन, वस्त्र और आवास।

आवश्यकताएँ
अर्थशास्त्र में आवश्यकता से तात्पर्य किसी भी व्यक्ति की उन इच्छाओं से होता है, जो जीवित रहने के लिए आवश्यक नहीं हैं।

गौरवशाली हंपी बाजार, कर्नाटक

चित्र 12.3 — हंपी बाजार

कर्नाटक में हंपी बाजार समृद्ध **व्यापार** का केंद्र और विजयनगर साम्राज्य के समृद्ध बाजारों में से एक था। यह बाजार विरूपाक्ष मंदिर के सामने स्थित था। अनेक विदेशी लेखों में इस शहर की अपार समृद्धि और संपन्नता का वर्णन किया गया है।

प्रसिद्ध पुर्तगाली यात्री डोमिन्गोस पेस ने हंपी बाजार में विभिन्न प्रकार के उत्पादों का कारोबार होने के कारण इसे 'विश्व में उत्कृष्ट उपलब्धता वाला शहर' कहा था। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के उत्पाद, जैसे – अनाज, बीज, दूध, तेल, रेशम तथा पशुओं में गाय, खरगोश, घोड़े और यहाँ तक कि बटेर और तीतर जैसे पक्षियों का भी व्यापार होता था। एक और पुर्तगाली यात्री फर्नाओ नुनिज ने हंपी बाजार के बारे में लिखा, "वहाँ शिल्पकार भी थे, जो अपनी गलियों में काम करते थे और जिन्हें आप सोने के जवाहरात और कृत्रिम आभूषण बनाते हुए और हर प्रकार के माणिक्य, हीरे-मोतियों

व्यापार
व्यक्तियों या देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का क्रय-विक्रय या विनिमय।

के साथ बेचते हुए देख सकते थे। कपड़ों के विक्रेताओं के लिए कपास और प्रचुर मात्रा में घास और भूसे की भी उपलब्धता थी। मुझे नहीं मालूम कि यह कौन कह सकता है कि यह देश बंजर है। यह एक रहस्य है कि एक नगर में हर चीज की प्रचुरता कैसे हो सकती होगी।"

आइए पता लगाएँ

→ क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि यह बाजार अपनी समृद्धि की चरम सीमा पर कैसा रहा होगा?

→ क्या आप अपने राज्य में किन्हीं पुराने बाजारों के बारे में जानते हैं? वे वर्तमान बाजारों से किस तरह समान या भिन्न होंगे? अपने परिवार और समुदाय के वरिष्ठजनों के साथ चर्चा कीजिए।

आइए, बाजारों और उनकी कार्यप्रणाली के विषय में और जानें!

आइए पता लगाएँ

चित्र का अवलोकन कीजिए। ये व्यक्ति क्या चर्चा कर रहे हैं? कल्पना कीजिए कि आप और आपका साथी अमरूद के क्रेता और विक्रेता हैं। आप दोनों के बीच हुए संवाद को एक नाटक के रूप में तैयार करके अपनी कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

चित्र 12.4

जिन स्थानों को हम बाजार कहते हैं, उसके लिए कुछ विशेषताओं की आवश्यकता होती है। जैसा कि आपने चित्र 12.2 (परिचारक विस्तृत बाजार पृष्ठ संख्या 248 पर) में देखा, हर बाजार में एक क्रेता और विक्रेता होता है। दोनों को एक **कीमत** पर सहमत होने की आवश्यकता होती है, जिस पर लेन-देन हो सके। किसी भी लेन-देन को पूर्ण करने के लिए कीमत एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रायः क्रेता और विक्रेता किसी स्वीकार्य कीमत पर लेन-देन करने के लिए मोल-तोल करते हैं। आपके नाटक में किस तरह का मोल-तोल हुआ था?

कीमत
कीमत वह राशि होती है, जिस पर विक्रेता किसी विशेष वस्तु या सेवा को बेचने के लिए तैयार होता है और एक क्रेता उसे खरीदने को तैयार होता है।

आइए विचार करें

क्या आप किसी ऐसे बाजार के बारे में सोच सकते हैं, जहाँ मोल-तोल कम प्रचलित है और क्यों?

कीमत और बाजार

जब बाजार में अधिक क्रेता और विक्रेता होते हैं, तो क्या होता है? बाजार में क्रेताओं और विक्रेताओं की आपसी बातचीत से कीमतें किस प्रकार बदलती हैं?

नीचे दिए गए चित्र में विक्रेता अमरूदों को ₹80/- प्रति किलोग्राम पर बेचना चाहता है, जबकि क्रेता इस कीमत पर खरीदने के लिए तैयार नहीं भी हो सकता है। यदि खरीददार को कीमत बहुत अधिक लगती है तो वह उस कीमत की माँग करेगा जिस पर वह खरीदना चाहता है। विक्रेता, खरीददार द्वारा दी गई कीमत पर बेचने को तैयार नहीं भी हो सकता है, क्योंकि उसके लिए वह लाभदायक नहीं होगा। खरीददार और बेचनेवाला तब तक मोल-तोल करते हैं, जब तक कि वे कीमत पर परस्पर सहमत नहीं हो जाते। तभी लेन-देन पूरा किया जा सकता है। वह स्थिति जहाँ क्रेता और विक्रेता एक कीमत पर सहमत नहीं होते, उस स्थिति में लेन-देन नहीं हो सकता।

आइए, इसे समझने के लिए नीचे कुछ दृश्य देखें—

1. क्या होगा यदि विक्रेता बहुत अधिक मूल्य तय कर दे?

चित्र 12.5

2. क्या होगा यदि विक्रेता बहुत कम मूल्य तय कर दे?

चित्र 12.6

3. समय के साथ अमरूद की एक सही कीमत तय हो जाती है, जो न तो क्रेता के लिए बहुत अधिक होती है और न ही विक्रेता के लिए बहुत कम।

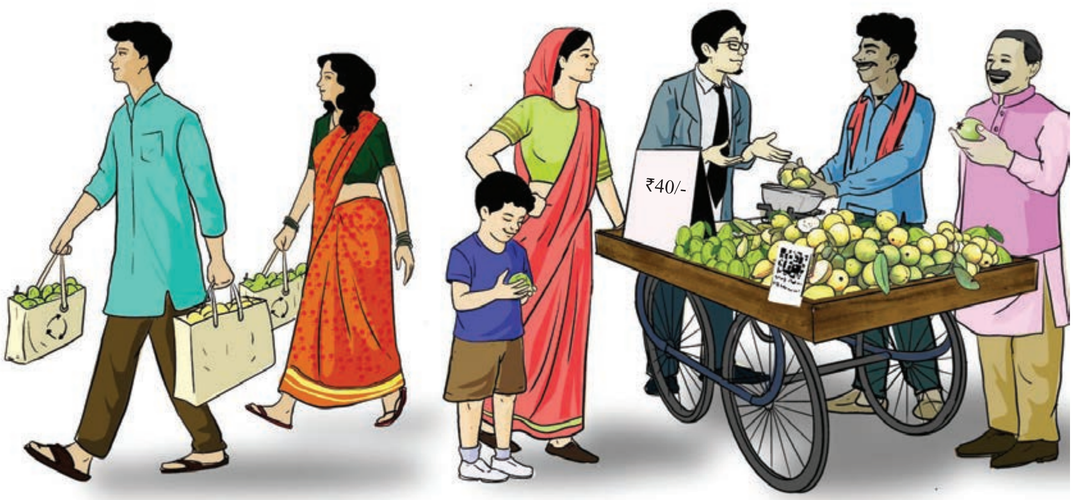

चित्र 12.7

इन तीनों परिदृश्यों से विक्रेता यह आकलन कर सकता है कि क्रेता को लगभग कितनी मात्रा में अमरूद की आवश्यकता है और भविष्य में वह बाजार में उतनी ही मात्रा उपलब्ध कराता है।

समय के साथ, विक्रेता द्वारा उपलब्ध कराई गई वस्तुओं की मात्रा तथा क्रेता द्वारा अपेक्षित मूल्य से वस्तुओं की उस कीमत के निर्धारण में सहायता मिलती है, जो उचित हो, अर्थात— जो विक्रेता के लिए पर्याप्त रूप से अधिक और क्रेता के लिए पर्याप्त रूप से कम हो।

आइए विचार करें

साप्ताहिक बाजार में देर रात को सब्जियाँ दिन की तुलना में सस्ती हो जाती हैं। आपके विचार में ऐसा क्यों होता है? शीत ऋतु के अंत में कपड़े की दुकानों में ऊनी वस्त्रों पर भारी छूट दी जाती है। ऐसा क्यों होता है?

हमारे आस-पास के बाजार

बाजार हर स्थान पर और विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं।

प्रत्यक्ष (फिजिकल) और ऑनलाइन बाजार

विनिर्माता
एक व्यक्ति या उद्योग जो विक्रय के लिए वस्तुएँ निर्मित करता है।

उत्पादन के आगत
वे सामग्रियाँ या संसाधन जिनका उपयोग वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में किया जाता है।

प्रत्यक्ष बाजार (फिजिकल मार्केट) वह होता है, जहाँ क्रेता-विक्रेता प्रत्यक्ष रूप से मिल सकते हैं और मुद्रा के बदले वस्तुएँ या सेवाएँ क्रय कर सकते हैं। यह सबसे सामान्य प्रकार का बाजार है। साप्ताहिक बाजार और हाट इसके अंतर्गत आते हैं, जहाँ विक्रेता सब्जियाँ, अन्य आवश्यक वस्तुएँ और हस्तशिल्प की वस्तुएँ ठेलों पर सजाकर बेचते हैं। स्थानीय बाजार की दुकानें और सड़क के किनारे खाद्य पदार्थ, कृत्रिम आभूषण आदि बेचने वाले विक्रेताओं से गुंजायमान रहने वाले बाजार भी प्रत्यक्ष बाजार हैं। इनमें कई बहुमंजिला भवन भी सम्मिलित हैं, जैसे– नगरों और कस्बों के बड़े क्षेत्रों में बने मॉल, जिनमें कई तरह की दुकानें होती हैं।

आज क्रेता और विक्रेता को लेन-देन के लिए व्यक्तिगत रूप से मिलने की आवश्यकता नहीं है। वे एक-दूसरे से हजारों किलोमीटर दूर होते हुए भी सुविधाजनक स्थानों से लेन-देन कर सकते हैं। वे फोन या कंप्यूटर पर शॉपिंग एप्लिकेशन (ऐप) या वेबसाइट का उपयोग कर सकते हैं। ये ऐप या वेबसाइट उन व्यवसायों द्वारा संचालित होते हैं, जो अनेक प्रकार की वस्तुएँ और सेवाएँ प्रदान करते हैं। हम नीचे दिए गए अनुभाग में इसकी कार्यप्रणाली के बारे में पढ़ेंगे।

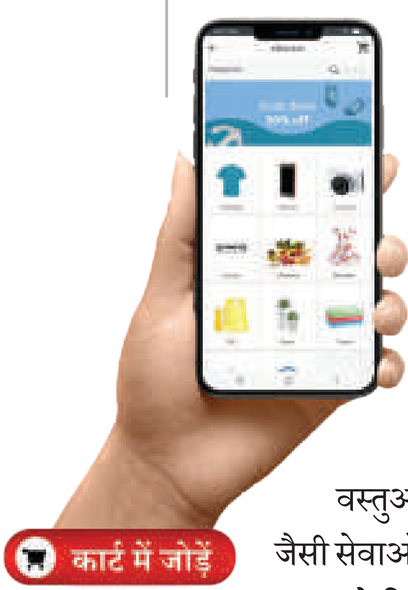

चित्र 12.8

कोई भी व्यक्ति पुस्तक, वस्त्र, फर्नीचर और किराने की वस्तुओं से लेकर इलेक्ट्रॉनिक सामान, जैसे– टी.वी., मोबाइल फोन और लैपटॉप तक खरीदकर अपने घर मँगा सकते हैं। **विनिर्माता** वस्तुओं के **उत्पादन के आगत** घटकों को भी ऑनलाइन खरीद सकते हैं। वस्तुओं के अतिरिक्त, कोई भी घर से बाहर निकले बिना ऑनलाइन कक्षाओं जैसी सेवाओं का लाभ भी उठा सकता है। ऐसी सेवाओं के लिए भुगतान ऑनलाइन माध्यम से किया जा सकता है।

आइए विचार करें

- आपके विचार में ऑनलाइन और प्रत्यक्ष क्रय के क्या लाभ और हानि हैं? इसका उत्तर विक्रेता और क्रेता दोनों के दृष्टिकोण से पता कीजिए।
- कुछ सेवाओं के लिए व्यक्तिगत संपर्क की आवश्यकता होती है, जैसे कि कपड़ों की सिलाई, जिसकी सेवा ऑनलाइन प्रदान नहीं की जा सकती है। क्या आप ऐसी अन्य सेवाओं का सुझाव दे सकते हैं, जिनके लिए प्रत्यक्ष बाजार की आवश्यकता होती है?

ऐसे अन्य प्रकार के बाजार भी होते हैं, जो वस्तुओं और सेवाओं का लेन-देन नहीं करते। उनमें से एक है— शेयर बाजार या स्टॉक मार्केट।

अपने परिवार, शिक्षकों या समुदाय के सदस्यों से इसके बारे में पूछिए। इस वर्ष हम इन अवधारणाओं को और अधिक विस्तार से समझेंगे।

चित्र 12.9 — स्टॉक मार्केट

निर्यात
किसी देश में उत्पादित वस्तुओं या सेवाओं को दूसरे देश के क्रेता को विक्रय करना।

आयात
अन्य देशों से वस्तुओं या सेवाओं का क्रय करना और उन्हें अपने देश में लाना।

घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजार

वह बाजार जहाँ वस्तुओं और सेवाओं का क्रय-विक्रय देश की भौगोलिक सीमा के भीतर होता है, उसे घरेलू बाजार कहते हैं। उदाहरण के लिए, इस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए पूरे भारत में स्थित बड़ी कागज मिलों से कागज प्राप्त किया गया था। क्रेता और विक्रेता के बीच यह लेन-देन देश की सीमा के अंदर ही किया गया।

वह बाजार जहाँ वस्तुओं और सेवाओं का क्रय-विक्रय देश की भौगोलिक सीमा के बाहर होता है, उसे अंतर्राष्ट्रीय बाजार कहते हैं। एक देश के विक्रेता अपने उत्पादों को दूसरे देश में **निर्यात** करते हैं या एक देश के क्रेता दूसरे देश में उत्पादित उत्पादों का **आयात** करते हैं। इस प्रकार व्यापार देश की सीमा के पार से भी होता है।

विश्व भर में भारत का आयात और निर्यात

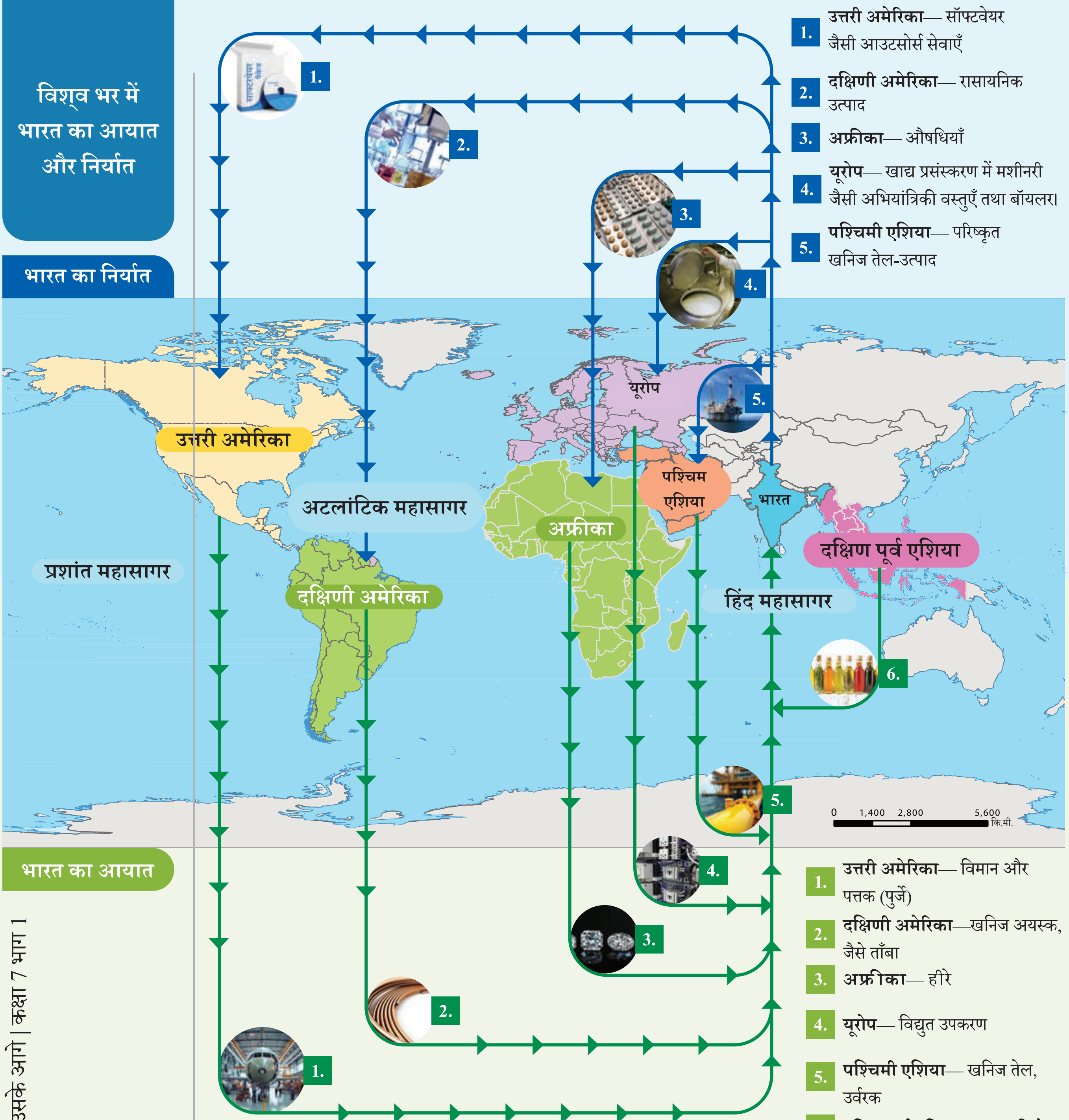

चित्र 12.10

इसे अनदेखा न करें

2024 में भारत वनस्पति तेलों, जैसे– ताड़ के तेल, सूरजमुखी के तेल और सोयाबीन के तेल का विश्व में सबसे बड़ा आयातक था। ताड़ का तेल अधिकांशतः मलेशिया, इंडोनेशिया और थाइलैंड से आयात किया जाता है।

थोक और खुदरा बाजार

बाजार के सुचारु संचालन में अनेक प्रतिभागी अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं।

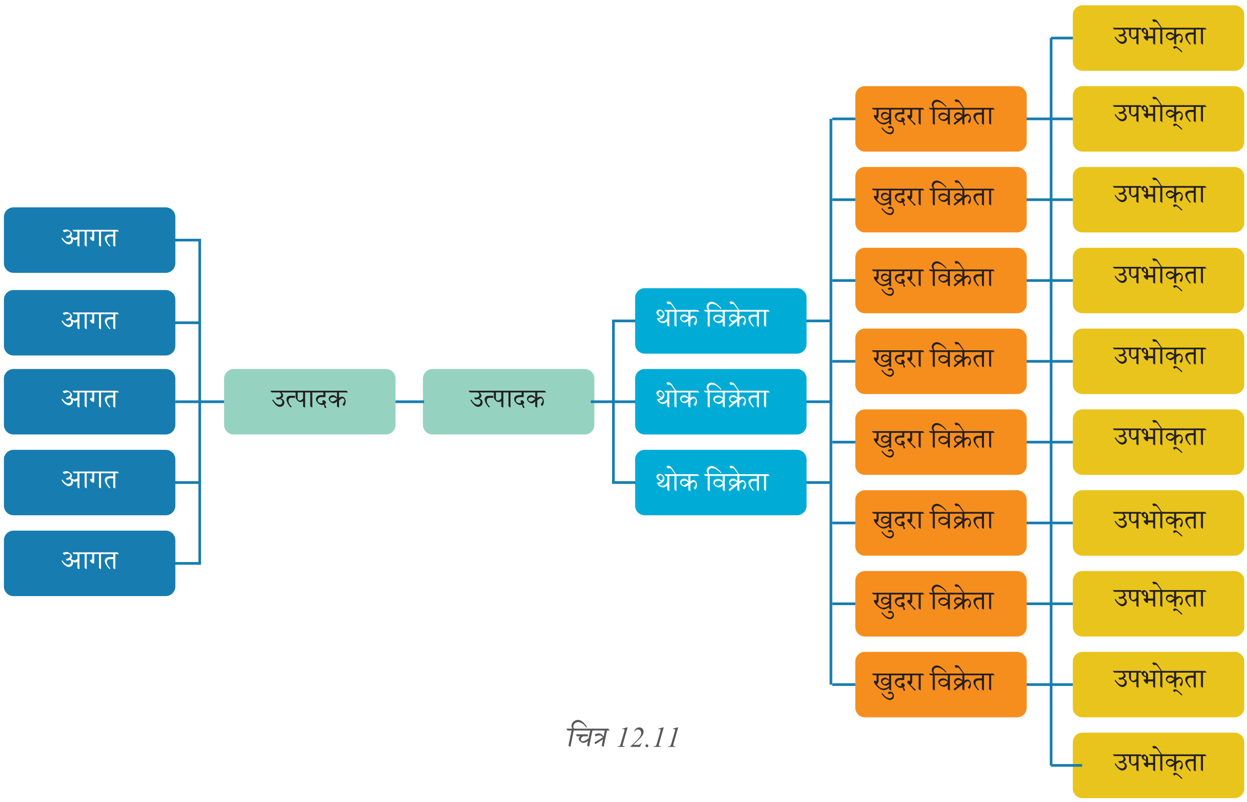

चित्र 12.11

आइए पता लगाएँ

प्रवाह चित्र 12.11 को ध्यान से देखिए और विनिर्माता या उत्पादक से उपभोक्ता तक वस्तुओं के प्रवाह का वर्णन कीजिए। इस प्रवाह में थोक विक्रेता और खुदरा विक्रेता की क्या भूमिका होती है?

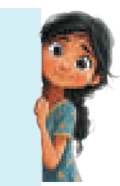

प्रत्यक्ष बाजारों के संदर्भ में थोक व्यापारी उत्पादक या विनिर्माता से अधिक मात्रा में वस्तुएँ क्रय करते हैं। उदाहरण के लिए, अनाज, सब्जियाँ और फलों के थोक व्यापारी किसानों से सीधा क्रय करते हैं। उत्पाद को जहाँ संगृहीत किया जाता है, उस स्थान को गोदाम कहते हैं। इन

चित्र 12.12 — सब्जियों के लिए शीतागार की सुविधा

शीतागार
शीघ्र सड़ने वाली वस्तुओं के संरक्षण के लिए समुचित निम्न तापमान बनाएँ रखने हेतु विशिष्ट गोदाम।

गोदामों में शीघ्र सड़ने वाली वस्तुओं के लिए **शीतागार** (कोल्ड स्टोरेज) की सुविधा भी हो सकती है। इसके बाद इन्हें जिस बाजार में लाया जाता है, उसे 'मंडी' कहते हैं।

चित्र 12.13 — अनाज भंडारण गोदाम

चित्र 12.14 — थोक विक्रेताओं के बड़े गोदाम

इसी प्रकार अन्य वस्तुओं के लिए थोक बाजार विद्यमान हैं, जैसे – रसायन, विद्युत वस्तुएँ और उनके घटक, निर्माण सामग्री, स्वचालित पुर्जे इत्यादि।

चित्र 12.15 — खारी बावली मसाला बाजार, पुरानी दिल्ली (मसाले और सूखे मेवे)

चित्र 12.16 — फूल बाजार, बेंगलुरु

थोक विक्रेता घरों के पास स्थित दुकानों और स्टोरों को वस्तुओं की आपूर्ति करते हैं। इन दुकानदारों को खुदरा विक्रेता कहा जाता है। वे हमारे जैसे अंतिम उपभोक्ताओं को वस्तुएँ बेचते हैं। थोक विक्रेताओं के विपरीत, खुदरा विक्रेता कम मात्रा में वस्तुएँ बेचते हैं और यहाँ उत्पाद पुनर्विक्रय के स्थान पर उपभोग के लिए होते हैं। खुदरा स्टोर सेवाओं के

चित्र 12.17 — जौहरी बाजार, जयपुर (रत्न एवं आभूषण)

लिए भी होते हैं, जैसे – सैलून, फिल्म थिएटर और रेस्तराँ। खुदरा विक्रेता घरों में वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता बढ़ाने में सहायक हैं।

कुछ मामलों में दूरी और क्षेत्र के कारण थोक विक्रेताओं के लिए बड़ी संख्या में खुदरा विक्रेताओं तक पहुँचना कठिन होता है। **वितरक** इस अंतर को कम करने में सहायक होते हैं। क्या आपको कक्षा 6 में 'अमूल की कहानी' में दूध के लिए मध्यस्थ याद है?

हालाँकि, ऑनलाइन बाजार के मामले में वितरण माध्यम अलग है। यहाँ विनिर्माता अपने उत्पाद को वृहद मात्रा में थोक व्यवसाय के गोदामों में भेजते हैं, जो ऑनलाइन एप्लिकेशन के माध्यम से विक्रय करते हैं। उपभोक्ता ऑनलाइन विकल्प (वेबसाइट या मोबाइल एप्लिकेशन) से उत्पाद क्रय करते हैं। इन व्यवसायियों को संग्राहक कहा जाता है। **संग्राहक** उत्पादों को पैक करता है और फिर उन्हें ऑनलाइन क्रेता तक पहुँचाता है।

वितरक
ऐसे व्यक्ति या व्यवसाय जो निर्माताओं और थोक विक्रेताओं से खुदरा विक्रेताओं को वस्तुओं की आपूर्ति करते हैं।

संग्राहक
वेबसाइट या मोबाइल एप्लिकेशन जो अनेक विक्रेताओं के प्रस्तावों को व्यवस्थित और संयोजित करते हैं तथा उन्हें एक ही स्थान पर उपभोक्ताओं को विक्रय करते हैं।

चित्र 12.18 — वस्त्रों की दुकान

चित्र 12.19 — सैलून

चित्र 12.20 — मॉल

चित्र 12.21 — किराने की दुकान

आइए, **गुजरात के सूरत में वस्त्र बाजार** के लिए प्रत्यक्ष बाजारों में आपूर्ति-शृंखला (सप्लाई चेन) का पता लगाएँ— यह वस्त्रों का एशिया में सबसे पुराना बाजार है तथा यह नगर वस्त्रों के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है।

सूरत में वस्त्र उत्पादन के हजारों कारखाने हैं, जो सूती और सिंथेटिक वस्त्र बनाते हैं। सूती वस्त्र बनाने के लिए कच्चा कपास महाराष्ट्र जैसे निकटवर्ती राज्यों और गुजरात के अन्य भागों की कपास मंडियों से यहाँ पहुँचती है। विभिन्न चरणों की प्रक्रिया से होते हुए इसे परिधान योग्य कपड़े और वस्त्र में बदल दिया जाता है, जैसे – पावरलूम से बुनाई, प्रसंस्करण इकाइयों से रंगाई आदि। उत्पाद एक चरण से दूसरे चरण में बाजारों के माध्यम से जाता है, उदाहरण के लिए बुने वस्त्र, रंगे वस्त्र और तैयार उत्पाद, जैसे – साड़ी, रेडीमेड पोशाक।

चित्र 12.22

कपड़े से तैयार उत्पाद का थोक बाजार में उत्पादक इकाइयों द्वारा व्यापार किया जाता है। थोक विक्रेता आपूर्ति की एक महत्वपूर्ण शृंखला हैं, क्योंकि वे देश और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर छोटे दुकानदारों और बड़ी खुदरा दुकानों को उत्पादों के वितरण की देख-रेख करते हैं। वे यह भी आकलन करते हैं कि खुदरा विक्रेताओं को कितनी मात्रा में उत्पाद की आवश्यकता है। इससे उत्पादकों को उत्पाद का संग्रह करने में सहायता मिलती है और अंतिम उपभोक्ताओं को उत्पादों की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने में भी आसानी होती है।

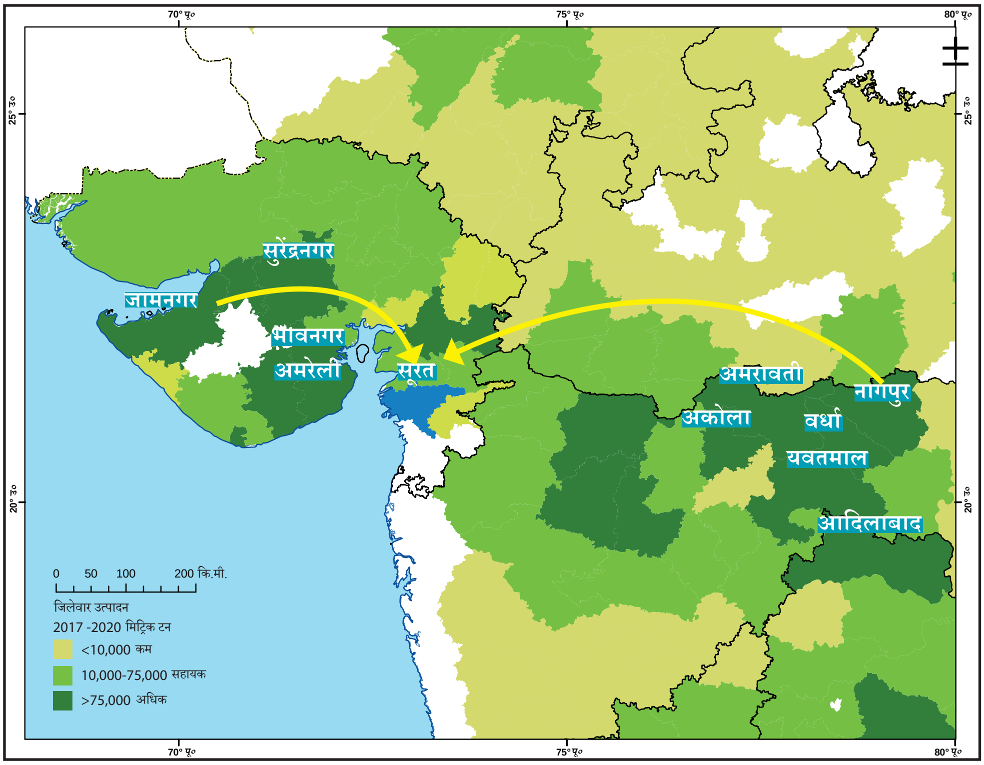

चित्र 12.23 — सूरत के आस-पास के कपास आपूर्तिकर्ता

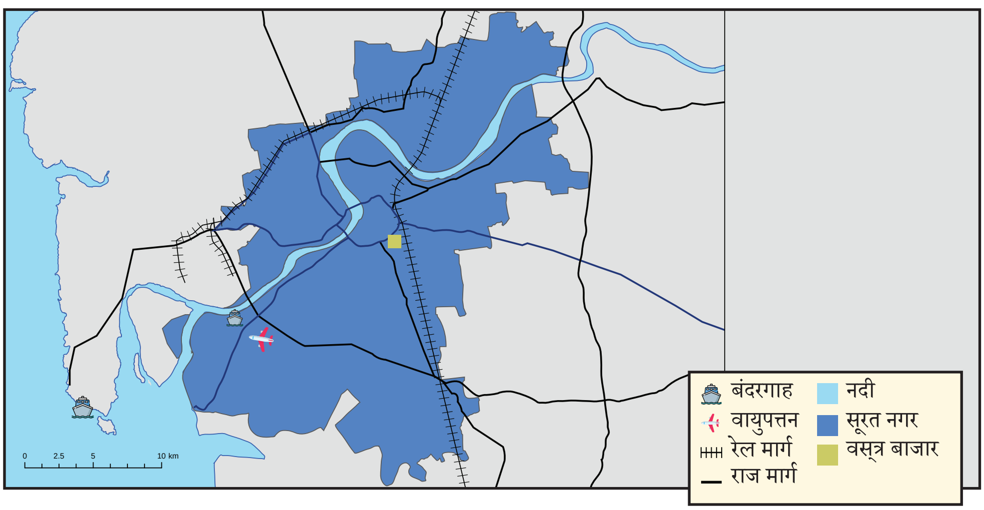

चित्र 12.24 — सूरत नगर का मानचित्र

चित्र 12.25 — थोक विक्रेता के कपड़े का गोदाम

आइए पता लगाएँ

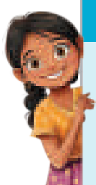

अपने समीप स्थित खुदरा विक्रेता से किसी उत्पाद, उसके मूल स्थान और दुकान तक पहुँचने की प्रक्रिया में आपूर्तिकर्ताओं की शृंखला के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए। चित्र 12.11 में प्रवाह चित्र (फ्लो चार्ट) का उपयोग करके इसका पता लगाइए और इसे कक्षा में साझा कीजिए।

इसे अनदेखा न करें

→ वस्त्र उद्योग के अतिरिक्त सूरत विश्व में हीरा उद्योग का सबसे बड़ा केंद्र है। लगभग 15 लाख कारीगर हीरों को काटने और चमकाने जैसे कार्यों में बड़े स्तर पर लगे हुए हैं। 16वीं शताब्दी के बाद से यहाँ व्यापार अत्यधिक विकसित हुआ। पश्चिमी तट पर नगर के स्थित होने के कारण अनेक बंदरगाह और सड़कों के जाल बिछे, जो आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। विशेषज्ञ कारीगरों और कुशल व्यक्तियों के समुदाय सदियों से यहाँ रहते आए हैं। उनके कौशल पीढ़ियों से हस्तांतरित होते रहे हैं, जिससे यह एक समृद्ध नगर बन गया है।

→ क्या आप चित्र 12.24 में दिए गए मानचित्र पर बंदरगाह, राजमार्ग और रेलवे के जाल को देख सकते हैं? आपके विचार से इन्होंने सूरत को व्यापारिक केंद्र बनाने में किस प्रकार सहायता प्रदान की?

लोगों के जीवन में बाजार की भूमिका

जैसा कि आपने पहले पढ़ा बाजार लोगों के आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच लेन-देन को सुगम बनाते हैं। यह व्यक्तियों, परिवारों और व्यवसायों को उन वस्तुओं और सेवाओं तक पहुँचने में सहायता करते हैं, जिनकी उन्हें आवश्यकता होती है परंतु जिन्हें वह स्वयं नहीं बना सकते।

आइए विचार करें

हमने बाजारों के अलग-अलग आयामों पर चर्चा की। क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि हमारा जीवन बाजारों के बिना कैसा होगा? यदि किसान चावल, गेहूँ, दाल, सब्जियाँ और फल बाजार में न लाएँ तो क्या होगा? अगर सूरत में वस्त्र बनाने वाले उत्पादक बाजार से कपास जैसी आवश्यक सामग्री न खरीद पाएँ तो क्या होगा?

इस अनुभाग खण्ड में हम बाजारों की भूमिका के कुछ अन्य आयामों का पता लगाएँगे।

आकृति एक पेशेवर चित्रकार है, जो कैनवास पर तैल-चित्र बनाती है। उसके चित्रों की सराहना की जाती है, लेकिन उसे क्रेता मिल पाना कठिन लगता है। वह इस बात से चिंतित है कि अपने चित्र कहाँ और किस मूल्य पर विक्रय करे? अमरूद वाली स्थिति के विपरीत कलाकृति के लिए स्थानीय क्रेता और विक्रेता बहुत कम होते हैं।

क्या आप ऐसे अन्य उत्पादों के बारे में सोच सकते हैं, जिनके लिए तैयार बाजार नहीं है? यह स्थिति क्रय-विक्रय करने वाले लोगों को कैसे प्रभावित करता है? वर्तमान समय में चित्रकार को अपने चित्रों के लिए किन-किन तरीकों से क्रेता मिल सकते हैं?

बाजार समाज को कैसे लाभान्वित करते हैं?

आइए पता लगाएँ

उपभोक्ता अब कम विद्युत-खपत करने वाले रेफ्रिजरेटर क्रय करना पसंद करते हैं। जब बड़ी संख्या में उपभोक्ता कम विद्युत-खपत करने वाले रेफ्रिजरेटर की माँग करने लगे हैं तो आपके विचार से चित्र 12.11 में दर्शाए गए नेटवर्क में क्या परिवर्तन होता है?

उत्पादकों को इस बात का संकेत मिल जाता है कि उपभोक्ता क्या क्रय करना चाहेंगे। अत: वे ऐसे रेफ्रिजरेटर बनाते हैं, जिनमें विद्युत-खपत कम होती है। कम ऊर्जा खपत वाले रेफ्रिजरेटर के उत्पादन से समाज को लाभ होता है।

यद्यपि क्रय-विक्रय एक आर्थिक गतिविधि है, जिसमें मौद्रिक विनिमय सम्मिलित है, तथापि बाजारों में होने वाली अंत:क्रियाएँ प्रायः उत्पाद या सेवा या दो पक्षों के बीच परस्पर बातचीत के माध्यम से बढ़ती हैं।

प्रायः क्रेता और विक्रेता के बीच एक संबंध विकसित होता है, जो कई पीढ़ियों तक भी चलता है। कुछ परिवारों का अपने दर्जी, स्वर्णकार और चिकित्सक के साथ दशकों पुराना भरोसेमंद संबंध बना रहता है। भारत में कई परिवार स्थानीय किराना दुकानदार के साथ एक खाता रखते हैं, जिसका महीने के अंत में भुगतान किया जाता है।

इसलिए, जहाँ बाजार की प्रमुख भूमिका आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देना है, वहीं यह अनेक लोगों के जीवन में गैर-आर्थिक महत्व भी रखता है।

मणिपुर की मैतेई भाषा में 'इमा कैथल' (मदर्स मार्केट) के नाम से जाना जाने वाला इंफाल का एक अनूठा बाजार है। इस बाजार में लगभग 3,000 महिलाओं की अपनी दुकानें हैं, जिन्हें वे ही चलाती हैं। वे सब्जियाँ, पारंपरिक मणिपुरी परिधान सहित अन्य वस्त्र, हथकरघा व हस्तशिल्प, स्थानीय उत्पाद और नगर एवं आस-पास के स्थान के लोगों की दैनिक आवश्यकता के सामान विक्रय करती हैं। एक तरफ यह बाजार रोजगार प्रदान करता है, जो हजारों परिवारों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया है। दूसरी तरफ, यह बाजार विभिन्न संस्कृतियों का संगम स्थल भी है। विभिन्न समुदायों के लोग यहाँ विचारों का आदान-प्रदान करने और साझा परंपराओं का आनंद लेने के लिए एक साथ आते हैं।

चित्र 12.26 — इंफाल का इमा कैथल बाजार

इसे अनदेखा न करें

वर्तमान में ऐसी अनेक परंपराएँ हैं, जो क्रय और विक्रय से कहीं आगे हैं। दक्षिण भारत में हल्दी और कुमकुम (सिंदूर) के विक्रेता अपने ग्राहकों को शुभकामनाओं के तौर पर हल्दी और कुमकुम की थोड़ी मात्रा अलग से बिना किसी शुल्क के देते हैं।

चित्र 12.27

आइए पता लगाएँ

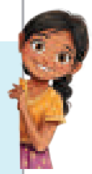

क्या आपने अपने समुदाय या पड़ोस में ऐसी कोई प्रथा देखी है? उस प्रथा का वर्णन चित्र या लघु अनुच्छेद (पैराग्राफ) द्वारा कीजिए।

बाजार में सरकार की भूमिका

बाजार क्रेताओं की **माँग** और विक्रेताओं द्वारा **आपूर्ति** के बीच अंतःक्रिया से संचालित होता है। हालाँकि, कुछ ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं, जिनमें यह बहुत सुचारु रूप से कार्य नहीं कर पाता है। ऐसी स्थितियों में सरकार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वह उपभोक्ताओं और उत्पादकों के बीच अंत:क्रिया और मूल्य के उचित निर्धारण की निगरानी करती है।

माँग
सेवाओं या वस्तुओं की वह मात्रा, जिसे उपभोक्ता किसी निश्चित समय पर किसी विशेष मूल्य पर क्रय करने के लिए इच्छुक और सक्षम हैं।

आपूर्ति
सेवाओं या वस्तुओं की वह मात्रा, जिसे विक्रेता किसी निश्चित समय पर किसी विशेष मूल्य पर विक्रय के लिए इच्छुक और सक्षम हैं।

क्रेताओं और विक्रेताओं की सुरक्षा के लिए मूल्यों पर नियंत्रण

सरकार **कुछ वस्तुओं के मूल्यों को नियंत्रित** करती है। उदाहरण के लिए, वह विक्रेता द्वारा वसूले जाने वाले अधिकतम मूल्य को निर्धारित करती है। कई आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं, जैसे कि जीवन-रक्षक दवाओं के मूल्यों की ऊपरी सीमा निर्धारित करती है। इसी प्रकार सरकार न्यूनतम मूल्य भी निर्धारित करती है, जिस पर गेहूँ, धान और मक्का जैसे कृषि उत्पाद विक्रय किए जा सकते हैं। इससे यह सुनिश्चित होता है कि किसानों को किसी प्रकार की हानि न हो। सरकार कर्मचारियों द्वारा किए गए कार्य के लिए न्यूनतम मजदूरी भी निर्धारित करती है, ताकि नियोक्ता उन्हें उचित भुगतान कर सकें।

परन्तु, सरकार को ऐसी मूल्य सीमाओं को सावधानीपूर्वक लागू करने की आवश्यकता हैं। यदि मूल्य बहुत कम हों, तो उत्पादकों को उत्पादन करने की कोई प्रेरणा नहीं मिलेगी और यदि मूल्य अत्यधिक होंगे, तो उपभोक्ताओं को हानि होगी।

आइए पता लगाएँ

→ प्याज भारत के अधिकांश भागों में भोजन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। कुछ ऋतुओं में इसकी आपूर्ति बाजार में कम हो जाती है। आपके विचार में ऐसा होने पर प्याज के मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

→ अगर प्याज के आपूर्तिकर्ता आवश्यक मात्रा में प्याज बाजार में नहीं लाएँगे, तो क्या होगा? आपके विचार से सरकार को इस स्थिति में क्या करना चाहिए?

गुणवत्ता और सुरक्षा मानकों को सुनिश्चित करना

उपभोक्ता के कल्याण को सुनिश्चित करने और उन्हें बाजार में अनुचित मनमानी से बचाने में सरकार की भूमिका होती है। सरकार यह सुनिश्चित करती है कि विनिर्माता वस्तुओं का उत्पादन और सेवाएँ प्रदान करते समय आवश्यक गुणवत्ता और सुरक्षा मानकों का पालन करें। उदाहरण के लिए, औषधीय कंपनियाँ रोगों के इलाज के लिए औषधियों का निर्माण करती हैं। सरकार औषधियों के अनुमोदन के लिए प्रक्रिया निर्धारित करती है और यह जाँचने के लिए नमूना परीक्षण करती है कि उत्पादित औषधियाँ गुणवत्ता के मानकों को पूरा करती हैं या नहीं। ये नियम औषधियों की गुणवत्ता और सुरक्षा को सुनिश्चित करते हैं, ताकि उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को किसी भी प्रकार का संकट न हो।

बाजारों के बाह्य प्रभावों को कम करना

क्रय-विक्रय के अतिरिक्त, बाजार का कभी-कभी जीवन की अन्य गतिविधियों पर भी बहुत प्रभाव होता है। उदाहरण के लिए, बाजारों में उपलब्ध कुछ वस्तुओं का उत्पादन कारखानों में करना आवश्यक होता है, जो पर्यावरण को प्रदूषित कर सकता है। सरकार बाजारों के ऐसे प्रभावों को समझने और नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरण के लिए, क्या होता है जब ऐसी वस्तुओं का भी उत्पादन किया जाता है, जैसे कि एक बार उपयोग में आने वाला प्लास्टिक, जिसका कुप्रभाव न केवल पर्यावरण पर पड़ता है बल्कि उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को भी संकट में डालता है? ऐसी स्थिति में सरकार इन नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए कठोर नियम लागू करके हस्तक्षेप करती है। इसी प्रकार, सरकार डिब्बाबंद वस्तुओं की शुद्धता की जाँच करने तथा उनके भार और माप की निगरानी के लिए पद्धति स्थापित करती है।

आइए विचार करें

शासकों द्वारा उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करना आधुनिक भारत की प्रथा नहीं है। कौटिल्य के *अर्थशास्त्र* में घी का व्यापार करने वाले व्यापारियों के लिए निर्देश सम्मिलित हैं। इसमें उल्लेख किया गया है कि विक्रेता घी की मात्रा की कमी, जो मापने वाले डिब्बे में चिपकी रह जाती है, की क्षति-पूर्ति हेतु क्रेताओं को 1/50 वाँ भाग अधिक **भावनाओं** के रूप में देगा।

सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए नियम बनाती है कि बाजार निष्पक्ष रूप से कार्य करे और उपभोक्ताओं का शोषण न हो। हालाँकि, नियमों की बहुलता बाजारों के सुचारु रूप से कार्य करने में कठिनाई पैदा कर सकती है।

सार्वजनिक सुविधा और सेवाएँ उपलब्ध कराना

उत्पादक, वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन एवं विक्रय **लाभ** के लिए करते हैं। हालाँकि, उत्पादक कुछ वस्तुओं एवं सेवाओं में लाभ की अपेक्षा नहीं रखते हैं। उदाहरण के लिए, सार्वजनिक उद्यान, सड़कें, सुरक्षा व्यवस्था आदि। इसके अतिरिक्त पिछले अध्याय में आपने नागरिकों के अधिकारों के संदर्भ में कुछ निश्चित कल्याणकारी प्रावधानों के बारे में पढ़ा होगा। इसलिए, यह **सार्वजनिक वस्तुएँ** और सेवाएँ सरकार द्वारा प्रदान की जाती हैं।

सार्वजनिक वस्तुएँ
वस्तुएँ या सेवाएँ, जो समाज के सभी सदस्यों को उपलब्ध हैं। उनका वर्तमान उपयोग भविष्य में उनकी उपलब्धता को कम नहीं करता है।

आइए विचार करें

- वे कौन-से अन्य क्षेत्र हैं, जहाँ आप सरकार को बाजार के कार्यकलापों में भाग लेते हुए देखते हैं?
- क्या ऐसे क्षेत्र भी हैं, जहाँ सरकार को हस्तक्षेप कम करने की आवश्यकता है? परिवार या संबंधियों से चर्चा कीजिए।

उपभोक्ता वस्तु और सेवा की गुणवत्ता का आकलन कैसे करते हैं?

बाजार उपभोक्ताओं को विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ और सेवाएँ उपलब्ध कराता है। उपभोक्ता जिस वस्तु को क्रय करना चाहते हैं, उसके विषय में निर्णय कैसे लेंगे?

आइए विचार करें

आपके और आपके पड़ोस में अगली गली के बच्चों की टोली के मध्य कंचे खेलने की प्रतियोगिता है। आप प्रतियोगिता के लिए नए कंचे खरीदना चाहते हैं। आपने ₹150 बचा रखे हैं। आप कंचे खरीदने हेतु दुकान जाते हैं। आप कंचों में कौन-से गुणों को देखेंगे ताकि आप प्रतियोगिता जीत सकें?

चित्र 12.28

क्या आपने कंचों के आकार, मजबूती, मूल्य तथा आकर्षक रंगों के बारे में सोचा था? जैसा कि आपने देखा, हर उपभोक्ता जो वस्तु खरीद रहा है, उसे उस वस्तु की गुणवत्ता को परखने की आवश्यकता होती है।

निम्नलिखित अनुभागों में हम इसके विभिन्न तरीकों को समझेंगे।

मान लीजिए कि आपके माता-पिता आपको पास की एक किराने की दुकान से एक किलो बेसन लाने को कहते हैं। दुकान में विभिन्न प्रकार के बेसन के पैकेट उपलब्ध हैं, जैसे कि एक नीचे भी दर्शाया गया है। इसे ध्यानपूर्वक देखें। आप ये कैसे सुनिश्चित करेंगे कि बेसन की गुणवत्ता उपयुक्त मानकों पर सही है?

चित्र 12.29

क्या आपने एफ.एस.एस.ए.आई. के प्रतीक चिह्न पर ध्यान दिया था?

एफ.एस.एस.ए.आई. अर्थात 'भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण' का खाद्य पैकेटों और गत्ते के डिब्बों पर अंकित चिह्न यह दर्शाता है कि खाद्य पदार्थ की जाँच सरकार द्वारा की गई है और यह उपयोग के लिए सुरक्षित है। सरकारी एजेंसी का यह प्रमाणन क्रेताओं को वस्तुओं की गुणवत्ता पहचानने में सहायता प्रदान करता है। उत्पाद या उसके पैकेज पर ये चिह्न सुनिश्चित करते हैं कि उत्पाद न्यूनतम गुणवत्ता मानकों पर खरा है।

आइए प्रत्येक चित्र का अर्थ समझते हैं—

- एफ.एस.एस.ए.आई की तरह 'भारतीय मानक ब्यूरो' भारतीय मानक संस्थान **(आई.एस.आई.) चित्र** जारी करता है। यह चिह्न सामान्यतः विद्युत उपकरणों, निर्माण सामग्रियों, मोटर

वाहन के पहियों, कागज इत्यादि पर दिए जाते हैं। यह चिह्न उत्पाद की गुणवत्ता तथा इसके सुरक्षित होने का सूचक है।

- इसी तरह कृषि उत्पादों, जैसे – सब्जियों, फलों, अनाजों, दालों, मसालों, शहद इत्यादि के लिए **'एगमार्क'** एक प्रमाणन चिह्न है।
- इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे – टी.वी., लैपटॉप, वातानुकूलित उपकरणों आदि पर **'बी.ई.ई.' स्टार रेटिंग** अंकित होती हैं। बी.ई.ई. का तात्पर्य 'ऊर्जा दक्षता ब्यूरो' है। यह रेटिंग उत्पाद के पैकेट पर तारों के रूप में छपी होती है। अधिक तारे दर्शाते हैं कि उपकरण कम ऊर्जा एवं विद्युत का उपयोग कर रहा है। यह उपभोक्ताओं के लिए लाभदायक है, क्योंकि इससे विद्युत का व्यय कम होता है और साथ ही यह पर्यावरण के लिए भी लाभदायक है।

आइए पता लगाएँ

अपने घर में सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर बी.ई.ई. स्टार रेटिंग को जाँचें और उनकी विद्युत दक्षता के बढ़ते हुए क्रम में सारे उपकरणों का एक चार्ट तैयार करें।

उत्पाद की प्रसिद्धि क्रेता के निर्णय को प्रभावित करती है। यह प्रसिद्धि निजी संवाद द्वारा संभव होती है। क्या आपके परिवार के सदस्यों ने कुछ ऐसे उत्पाद खरीदे होंगे, जो उन्हें उनके साथियों या संबंधियों ने सुझाएँ होंगे?

वस्तुओं और सेवाओं की अन्य उपभोक्ताओं द्वारा की गई ऑनलाइन समीक्षा एवं प्रतिक्रिया भी हमें ऑनलाइन क्रय करते समय निर्णय लेने में सहायता करती है।

चित्र 12.30

आगे बढ़ने से पहले...

- बाजार उस मूल्य पर क्रेता और विक्रेता के मध्य विनिमय सुगम बनाता है जिस पर दोनों की सहमति हो और जो क्रेता की माँग तथा विक्रेता की आपूर्ति द्वारा निर्धारित होता है।
- बाजार में उत्पादक, थोक विक्रेता, वितरक और खुदरा विक्रेता जैसे भागीदारों की शृंखला अंतिम उपभोक्ता तक वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित करती है।
- बाजार आदान-प्रदान के स्थान भी हैं क्योंकि वह व्यक्तियों को एक साथ लाते हैं और विचारों एवं परंपराओं के आदान-प्रदान को संभव बनाते हैं।
- सरकार वस्तुओं एवं सेवाओं के गुणवत्ता मानकों को बढ़ावा देने तथा बाजार में उचित मोल-तोल के लिए नियामक भूमिका निभाती है। हालाँकि, उपभोक्ता सरकारी संस्थाओं के द्वारा उत्पाद पर दिए गए प्रमाणन चिह्नों तथा ऑनलाइन समीक्षाओं के माध्यम से वस्तुओं एवं सेवाओं की गुणवत्ता का आकलन भी कर सकते हैं।

प्रश्न और क्रियाकलाप

1. बाजार की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं? हाल में जब आप बाजार गए थे, तब आपने वहाँ कौन-कौन सी विशेषताएँ देखीं?
2. इस अध्याय के आरंभ में दिए गए एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री के उद्धरण को देखिए। इस अध्याय के संदर्भ में उस उद्धरण की प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए।
3. अमरूद के क्रय-विक्रय के दिए गए उदाहरण में यदि विक्रेता को अच्छा मूल्य मिल रहा है, तब वह किसानों से और अधिक अमरूद क्रय करने का प्रयास करेगा, ताकि वह उन्हें उसी मूल्य पर बेचकर अपनी आमदनी बढ़ा सके। ऐसी स्थिति में किसान क्या करेगा? क्या आपको लगता है कि वह अगली ऋतु में अमरूदों की माँग के बारे में सोचना शुरू करेगा? उसकी संभावित प्रतिक्रिया क्या होगी?

4. निम्नलिखित प्रकार के बाजारों का उनकी विशेषताओं से मिलान कीजिए—

क्र.सं.	बाजार	मानदंड
(क)	प्रत्यक्ष बाजार	वस्तुएँ और सेवाएँ जो राष्ट्र की सीमा के बाहर भेजी जाती हैं।
(ख)	ऑनलाइन बाजार	बड़ी मात्रा में सौदे
(ग)	घरेलू बाजार	अंतिम उपभोक्ताओं तक वस्तुएँ एवं सेवाएँ पहुँचाना।
(घ)	अंतर्राष्ट्रीय बाजार	क्रेता और विक्रेता की प्रत्यक्ष उपस्थिति आवश्यक है।
(ङ)	थोक बाजार	क्रेता और विक्रेता आभासी रूप से मिलते हैं और किसी भी समय लेन-देन कर सकते हैं।
(च)	खुदरा बाजार	किसी राष्ट्र की सीमा के भीतर स्थित

5. सामान्यतया मूल्य क्रेताओं की माँग और विक्रेताओं की आपूर्ति की अंत:क्रिया द्वारा निर्धारित होता है। क्या आप ऐसे उत्पादों के बारे मे सोच सकते हैं, जहाँ किसी उत्पाद की माँग के लिए क्रेताओं की संख्या कम होने के बावजूद उसका मूल्य अधिक होता है? इसके क्या कारण हो सकते हैं?

6. सब्जियों के एक खुदरा विक्रेता की वास्तविक जीवन-स्थिति पर विचार कीजिए— एक परिवार सब्जियाँ खरीदने के लिए दुकान पर आया। विक्रेता, जो फलियाँ ठेले पर बेच रहा था, उसकी कीमत ₹30/- प्रति किलोग्राम थी। महिला ने कीमत को ₹25/- प्रति किलोग्राम के नीचे लाने के लिए विक्रेता के साथ मोल-भाव करना शुरू कर दिया। विक्रेता ने उस मूल्य पर विक्रय करने से मना कर दिया और कहा कि उसे उस मूल्य पर घाटा होगा। महिला वहाँ से चली गई। फिर परिवार समीप के सुपरमार्केट में गया और वहाँ से सब्जियाँ क्रय कीं। सुपरमार्केट में अच्छे ढंग से पैक की गई फलियों के लिए उन्होंने ₹40/- प्रति किलोग्राम का भुगतान किया। क्या कारण है कि परिवार ने ऐसा किया? क्या कीमतों के अतिरिक्त ऐसे कोई कारक हैं, जो क्रय-विक्रय को प्रभावित करते हैं?

7. भारत के कुछ जिले टमाटर उगाने के लिए प्रसिद्ध हैं। हालाँकि, कुछ मौसमों में किसानों के लिए स्थिति अच्छी नहीं होती। अधिक उपज होने पर कृषकों द्वारा अपनी उपज को फेंकने और उनका सारा श्रम नष्ट होने के समाचार आते हैं। आपके विचार में किसान ऐसा क्यों करते हैं? ऐसी स्थिति में थोक विक्रेता क्या भूमिका निभा सकते हैं? यह सुनिश्चित करने के संभावित उपाय क्या हो सकते हैं जिससे टमाटर बर्बाद न हों और किसानों को नुकसान भी न पहुँचे?

8. क्या आपने अपने या किसी अन्य विद्यालय द्वारा आयोजित किसी मेले के बारे में सुना है या उसमें गए हैं? अपने मित्रों और शिक्षकों से ऐसे मेलों के बारे में चर्चा कीजिए कि इन मेलों में किस तरह से क्रय-विक्रय और मोल-भाव होता है?

9. कोई भी पाँच उत्पाद चुनें और अध्याय में चर्चा किए गए प्रमाणन चिह्नों के साथ उनके लेबल की जाँच करें। क्या आपको ऐसे उत्पाद मिले, जिन पर मानक चिह्न नहीं था? यह किस बात का सूचक है?

10. आपने और आपके सहपाठियों ने एक साबुन बनाया है। इसकी पैकेजिंग के लिए एक लेबल डिजाइन कीजिए। आपके विचार से लेबल पर क्या लिखा होना चाहिए, ताकि उपभोक्ता उत्पाद को बेहतर तरीके से जाँच सकें?

सामान्य चेतना

1. आओ प्राथमिक उपचार को जाने

2. नशे के दुष्प्रभाव से बचपन बचायें

1. आओ प्राथमिक उपचार को जाने

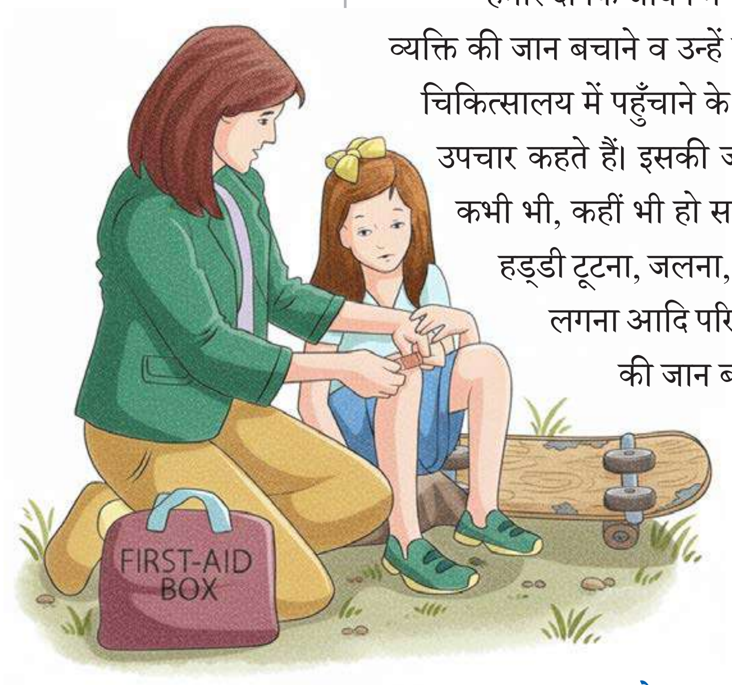

हमारे दैनिक जीवन में कभी-कभी छोटी-छोटी दुर्घटनाएं होती रहती हैं। दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की जान बचाने व उन्हें तुरन्त राहत पहुँचाने के लिए घटनास्थल पर तथा समीप के चिकित्सालय में पहुँचाने के दौरान हम उनका तत्काल उपचार करते हैं, जिसे प्राथमिक उपचार कहते हैं। इसकी जानकारी प्रत्येक व्यक्ति को होना चाहिये क्योंकि दुर्घटनाएं कभी भी, कहीं भी हो सकती है। दुर्घटना होने पर कभी-कभी खून का रिसाव होना, हड्डी टूटना, जलना, सांस लेने में अवरोध उत्पन्न होना, दांत में दर्द, घाव या चोट लगना आदि परिस्थितियों में प्राथमिक उपचार उपयोगी है। यह उपचार किसी की जान बचा सकती है।

विद्यालय में ऐसी ही छोटी-छोटी दुर्घटनाएं खेलकूद के दौरान होती है। जिससे कभी-कभी बच्चे जख्मी हो जाते हैं, तब उन्हें प्राथमिक उपचार की आवश्यकता होती है। बच्चों को प्राथमिक उपचार देने से पहले निम्न बातों को ध्यान में रखा जाना अति आवश्यक है -

चोट या रक्त स्राव होने पर -

1. सबसे पहले (उपचारकर्ता) अपने हाथों को अच्छी तरह साबुन से धो लेना चाहिये।
2. चोट या रक्त स्राव होने पर घाव वाले हिस्से को ऊपर उठाना चाहिए।
3. रक्त स्राव को रोकने के लिये साफ कपड़े या उपचारित रूई से जख्म को 2 से 3 मिनट दबाकर रखना चाहिये, जिससे खून बहना बंद हो जाये।
4. घाव या जख्म को साफ पानी से धोना चाहिये।
5. जख्म को ऐंटिसेप्टिक (डेटॉल/सेवलॉन/बीटाडीन) से साफ करके सोफ्रामाइसिन/न्यूस्प्रीन जैसे मरहम लगाना चाहिये।
6. जख्म ज्यादा गहरा होने पर तत्काल समीप के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से संपर्क करना चाहिये।

चूके नहीं:-

- जंग लगे लोहे से चोट लगने पर 24 घण्टे के अंदर टिटनेस का इंजेक्शन लगवाना चाहिए।
- कुत्ता काटने पर चिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए।

गले में खाना फंसने पर

खाना खाने के दौरान व्यक्ति के गले में कोई चीज फंस जाए तो ऐसी स्थिति में उसे जोर से खांसने को कहना चाहिए। व्यक्ति खांस नहीं पा रहा हो और उसे सांस लेने में दिक्कत हो रही हो तो मरीज के पीछे खड़े होकर पीठ पर दोनों कंधों के बीच थपकियां दें।

सामान्य जलने/झुलसने पर प्राथमिक उपचार

जलने पर प्राथमिक उपचार निम्न चरणों में किया जाना चाहिए:-

1. सबसे पहले जलते हुए कपड़े की लपटों को बुझाने के लिए पीड़ित को कंबल से ढकना चाहिए।
2. आहत व्यक्ति को उस क्षेत्र से दूर करते हुए जले हुए वस्त्रों को उतार देना चाहिए।
3. चिपके हुए वस्त्रों को बलपूर्वक खींचकर नहीं निकालना चाहिये बल्कि वस्त्र को काटकर अलग करना चाहिए।
4. जली हुई त्वचा को सामान्य तापमान वाले पानी से धोना चाहिये (बर्फ या अत्यधिक ठण्डे पानी से नहीं) एवं उसे छूना नहीं चाहिए।
5. जली त्वचा को उपचारित रूई या साफ सूती कपड़े से ढक देना चाहिए।
6. उस पर पाउडर, स्नेहक वस्तु जैसे तेल, चर्बी, वैसलीन आदि नहीं लगाना चाहिए।
7. जलने से शरीर में पानी की कमी हो जाती है, इसलिए जले हुए व्यक्ति को पेय पदार्थ (कॉफी, चाय आदि) देना चाहिए।

सैनिटाइजर

यह एक ज्वलनशील पदार्थ है, इसका उपयोग करने के बाद आग के सम्पर्क में नही आना चाहिए। कोरोना महामारी के समय संक्रमण रोकने के लिए सैनिटाइजर का उपयोग किया जाता था।

जलने पर भूल कर भी ना करें

बर्फ टूथपेस्ट घी, तेल, अंडा या मक्खन छाले/फफोले को फोड़ना

करंट लगने पर

करंट लगने पर सबसे पहले व्यक्ति और आसपास के लोगों की सुरक्षा के लिए बिजली का मुख्य स्विच बंद कर दें या प्लग निकाल दें। अगर बिजली बंद करना संभव न हों तो, पीड़ित को सीधे न छुएं बल्कि किसी सूखी और गैर प्रवाहकीय वस्तु (जैसे लकड़ी) का उपयोग करके उसे बिजली के स्रोत से दूर करें। चिकित्सक को दिखाकर परामर्श लें।

प्राथमिक चिकित्सा पेटी

(अन्तर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (ISO) ने प्राथमिक चिकित्सा किट के लिए सफेद रंग के क्रॉस के निशान सहित हरा रंग मानक निर्धारित किया है, ताकि जरूरतमंद उसे आसानी से पहचान सकें।)

प्राथमिक उपचार करने के लिये हमें (फर्स्ट ऐड बाक्स या किट) की जरूरत होती है। इस किट की मदद से घायल व्यक्ति का प्राथमिक उपचार कर उसकी जान बचाई जा सकती है। प्राथमिक चिकित्सा पेटी यह ऐसी किट है जिसमें दवाएं, उपकरण तथा तत्काल सुरक्षा देने वाली सामग्री होती है। विद्यालय में रेडक्रास विभाग में प्राथमिक चिकित्सा पेटी (FIRST AID BOX) रहता है।

विद्यालय के लिये प्राथमिक चिकित्सा पेटी में आवश्यक सामग्री:-

चोट के इलाज के लिये	जलने या कटने पर	दवाईयाँ	सुरक्षा उपकरण
कीटाणु रहित गॉज पैड		पैरासिटामोल (बुखार और दर्द के लिये।	निस्तारणीय दस्ताने
एंटीसेप्टिक क्रीम/स्प्रे (जैसे बीटाडीन, सेवलॉन)	बर्न क्रीम	ओ आर एस घोल (निर्जलीकरण के लिये)	फेस मास्क
एंटीसेप्टिक कॉटन	उपचारित कैंची	पाचक दवाईयाँ (जैसे - डाइजीन, एंटासिड आदि)	साफ पानी की बोतल
बांधने की पट्टी - अलग - अलग आकार की	पिन-काँटा निकालने के लिये	पुदिन हरा	सैनिटाइजर
कपड़े का टेप - छोटे कट और छिलने में उपयोगी।			
मेडिकल टेप			

अन्य आवश्यक दस्तावेज:-

1. आपातकालीन संपर्क नंबर - डॉक्टर, अस्पताल, अभिभावक आदि।

2. प्राथमिक उपचार पुस्तिका सरल भाषा में।

चूके नहीं:-

- सभी सामग्रियों की समाप्ति तिथि का नियमित अवलोकन किया जाना चाहिये।
- सहकर्मी (स्टॉफ) को प्राथमिक उपचार प्रशिक्षण देना आवश्यक है।
- दवाईयों का वितरण प्रशिक्षित व्यक्ति ही करें।

थर्मामीटर एक ऐसा उपकरण है जिसका उपयोग व्यक्ति के शरीर का तापमान मापने, बुखार का पता लगाने के लिए किया जाता है।

बढ़ते हुए बच्चों को अतिरिक्त पोषक आहार की आवश्यकता होती है। किशोरावस्था में पोषक आहार की कमी से एनीमिया और कुपोषण की समस्या आ जाती है। शरीर में खून की कमी को एनीमिया कहा जाता है।

- एनीमिया होने पर रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है।
- बच्चे जल्दी थक जाते हैं और कमजोरी महसूस करते हैं जिससे उनका पढ़ाई में मन नहीं लगता।

बच्चों में एनीमिया की समस्या को दूर करने के लिए भारत सरकार ने WIFS

(Weekly Iron and Folic Acid Supplementation) कार्यक्रम शुरू किया है। इस कार्यक्रम में पीले रंग की गोली प्राथमिक शाला के बच्चों को तथा नीले रंग की आयरन-फोलिक एसिड (IFA) की गोली उच्च प्राथमिक स्कूल के बच्चों को हर हफ्ते मंगलवार को दी जाती हैं। बच्चों को आयरन-फोलिक एसिड की गोली खून की कमी को दूर करने के लिए दी जाती है। स्वच्छता कि जानकारी नहीं होने के कारण बच्चे बिना हाथ धोए ही खा लेते हैं, जिसके कारण बच्चों के आंतों में कृमि हो जाती है और निम्न समस्याएं उत्पन्न होती है -

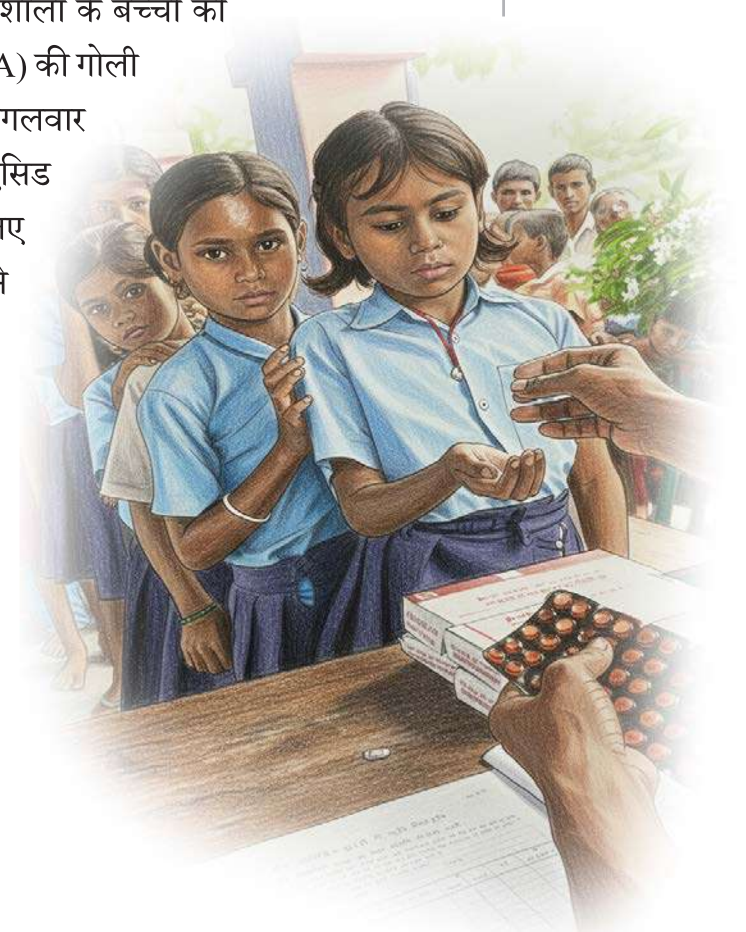

- खून की कमी, कमजोरी, पेटदर्द, दस्त।
- बच्चों का पढ़ाई में मन न लगना आदि समस्याओं के कारण बच्चों का विकास रूक जाता हैं।

भारत सरकार ने बच्चों की इस समस्या को गंभीरता से लिया। बच्चों को कृमि से बचाने, कुपोषण को कम करके स्वस्थ शरीर के निर्माण के लिए राष्ट्रीय कृमि दिवस (NDD) कार्यक्रम शुरू किया।

इस कार्यक्रम के तहत् साल में दो बार (फरवरी एवं अगस्त) स्कूल तथा आंगनबाड़ी के बच्चों को एल्बेंडाजोल की खुराक दी जाती है। बच्चों में संक्रमण का खतरा ज्यादा होता है इसलिए बच्चों को समय-समय पर स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देनी चाहिए बच्चों में व्यक्तिगत स्वच्छता जैसे हाथ धोने की आदत डालना उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं।

हाथ साफ करने का तरीका

1. दोनों हथेलियों को रगड़ें
2. हथेलियों को पलट कर रगड़ें
3. उंगलियों के बीच में रगड़ें
4. उंगलियों की सतह के पीछे साफ करें
5. अंगूठा के सतह को रगड़ें
6. नाखूनों को साफ करें

हाथों की सफाई के लिए दिए गए चित्र की प्रक्रिया को अपनाना चाहिए।

प्रश्न एवं क्रियाकलाप:-

1. प्राथमिक उपचार पेटी की सभी सामग्रियों की समाप्ति तिथि का नियमित अवलोकन करना आवश्यक हैं। क्यों ?
2. ओ.आर.एस. घोल का उपयोग कब किया जाता है ?
3. लंबी दूरी की यात्रा करते समय प्राथमिक उपचार पेटी में आप कौन-कौन सी सामग्री लेकर जायेंगे ?
4. प्राथमिक उपचार का प्रशिक्षण लेना क्यों अनिवार्य है? बताइए।
5. सैनिटाइजर का उपयोग कौन-सी स्थिति में नहीं करना चाहिए ?

2. नशे के दुष्प्रभाव से बचपन बचायें

छात्रों का एक दल अपने शिक्षक के साथ राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता में भाग लेने आए थे। वहाँ विभिन्न जिलों से आए बच्चे - खिलखिलाते हुए पहुँचे। उसमें से कुछ बच्चे राजीव के दाँत को देखकर हँसने लगे क्योंकि उसका दाँत गंदा और पीला दिखाई दे रहा था तथा मुँह से बदबू भी आ रही थी। छात्रों ने अपने शिक्षक से जिज्ञासा शांत करने के लिए प्रश्न किए -

हेमेश - सर राजीव के दाँत गंदे और पीले क्यों दिखाई दे रहे है ?

शिक्षक - राजीव तुम्हारे दाँत इतने पीले और गंदे क्यों दिखाई दे रहे है। क्या तुम ठीक से दाँत साफ़ नहीं करते हो ?

राजीव - मैं प्रतिदिन दाँत साफ करता हूँ।

शिक्षक - तो क्या तुम गुटखा खाते हो।

राजीव - जी सर। (हिचकिचाते हुए)

शिक्षक - ओह! क्या तुम्हें पता नहीं है, गुटखा खाने से दाँत व मसूड़े खराब हो जाते है एवं पीले और गंदे दिखाई देते है। गुटखा हमारे शरीर के लिए हानिकारक है।

काव्यांश - सर, फिर राजीव गुटखा क्यों खाता है ?

शिक्षक - बेटा, उसे गुटखा के दुष्प्रभाव के बारे में पता नहीं है। वह चोरी छुपे खाता है, जिसके कारण उसे कोई रोक नहीं पाया।

छाया - सर लेकिन मैने टी.वी. पर विज्ञापन में गुटखा, तम्बाकू खाते हुए तथा इसका प्रचार करते देखा है एवं लोगों को सिगरेट, बीड़ी पीते हुए भी देखा है।

शिक्षक - ये सब मादक पदार्थ है, जिसके उपयोग करने या खाने से अनेक प्रकार की बीमारियाँ होती है ये बुरी आदतें हमारे शरीर के साथ-साथ हमारे मन और व्यवहार पर भी बुरा प्रभाव डालती है।

बच्चों विज्ञापन में चेतावनी भी लिखा होता है कि धूम्रपान तथा मादक पदार्थों का सेवन करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।

रवि स्कूल के मैदान में खेल रहा था और खेलते-खेलते अचानक गिर पड़ा उसे उठाकर किनारे पर लेटाया गया।

कीर्ति - क्या हुआ! रवि, तुम्हें कैसे लग रहा है? क्या आज तुमने ठीक से खाना नहीं खाया ?

रवि - अचानक मेरे पेट में बहुत तेज दर्द हो रहा है ?

तब उसकी जाँच के लिए डॉक्टर के पास ले जाया गया और डॉक्टर साहब ने रवि की जाँच की और उससे पूछा - क्या तुम कोई मादक पदार्थ का सेवन करते हो ?

रवि - (हिचकिचाते हुए) हाँ डॉक्टर साहब मैं गुटखा खाता हूँ।

डॉक्टर - बेटा गुड़ाखु, जर्दा, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, आदि मादक पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए।

शिक्षक - इन मादक पदार्थों के सेवन से शरीर को कई तरह से नुकसान पहुँचाते है। इससे शरीर में कई गंभीर समस्याएं होती है। जैसे दाँतों व मसूड़ों में सूजन दाँतों का पीलापन, श्वांस (श्वसन) संबंधी समस्या, हृदय रोग का खतरा, पाचन संबंधी समस्या जैसे कि पेट दर्द, उल्टी, दस्त आदि।

शिक्षा और संस्कार के अभाव में इनके जैसे कुछ लोग नशा करने लगते हैं। इससे हमें बचना चाहिए राजीव और रवि को देखों

बच्चों आप सब ने क्या सीखा।

बच्चे - हमें नशे से दूर रहना चाहिए और हमें अपने आस-पास के सभी लोगों को जागरूक करना चाहिए।

नशा से दूर रहने के कई उपाय हो सकते हैं, चित्रों के माध्यम से दिखाया गया है।

ध्यान देने योग्य बातें :-

- मादक पदार्थों के सेवन का दुष्प्रभाव।
- आलस्य, कामचोरी, बहानेबाजी, उदासीनता बढ़ जाती है।
- मानसिक रोग से घिर जाता है।
- शारीरिक रूप से कमजोर व बीमार होने लगते है।
- जीभ लड़खड़ाती है, सही उच्चारण नहीं कर पाते एवं भूलने की बीमारी हो जाती है।
- छोटी-छोटी बातों में चिड़चिड़ाना, गुस्सा होना, बहस करना, शरीर में कम्पन, दर्द होना, उल्टियाँ होना, खाँसी आना, दिल का दौरा पड़ना शुरू हो जाता है।
- नशा करने से शरीर पीला पड़ने लगता है, आँखों की पुतलियाँ सिकुड़ जाती है।
- शरीर में ऐठन हो जाती है, पढ़ाई लिखाई में मन नहीं लगता है। दुःख, क्रोध, भय को बढ़ावा देता है।
- हृदय की धड़कन तेज हो जाती है, पसीना आना या घबराहट लगना शुरू हो जाता है। घर परिवार, दोस्तों से दूर एकांतपन बढ़ जाती है अकेले रहने की आदत लग जाती है।

https://pminewyork.gov.in/pdf/menu/Political_Map_of_India.pdf

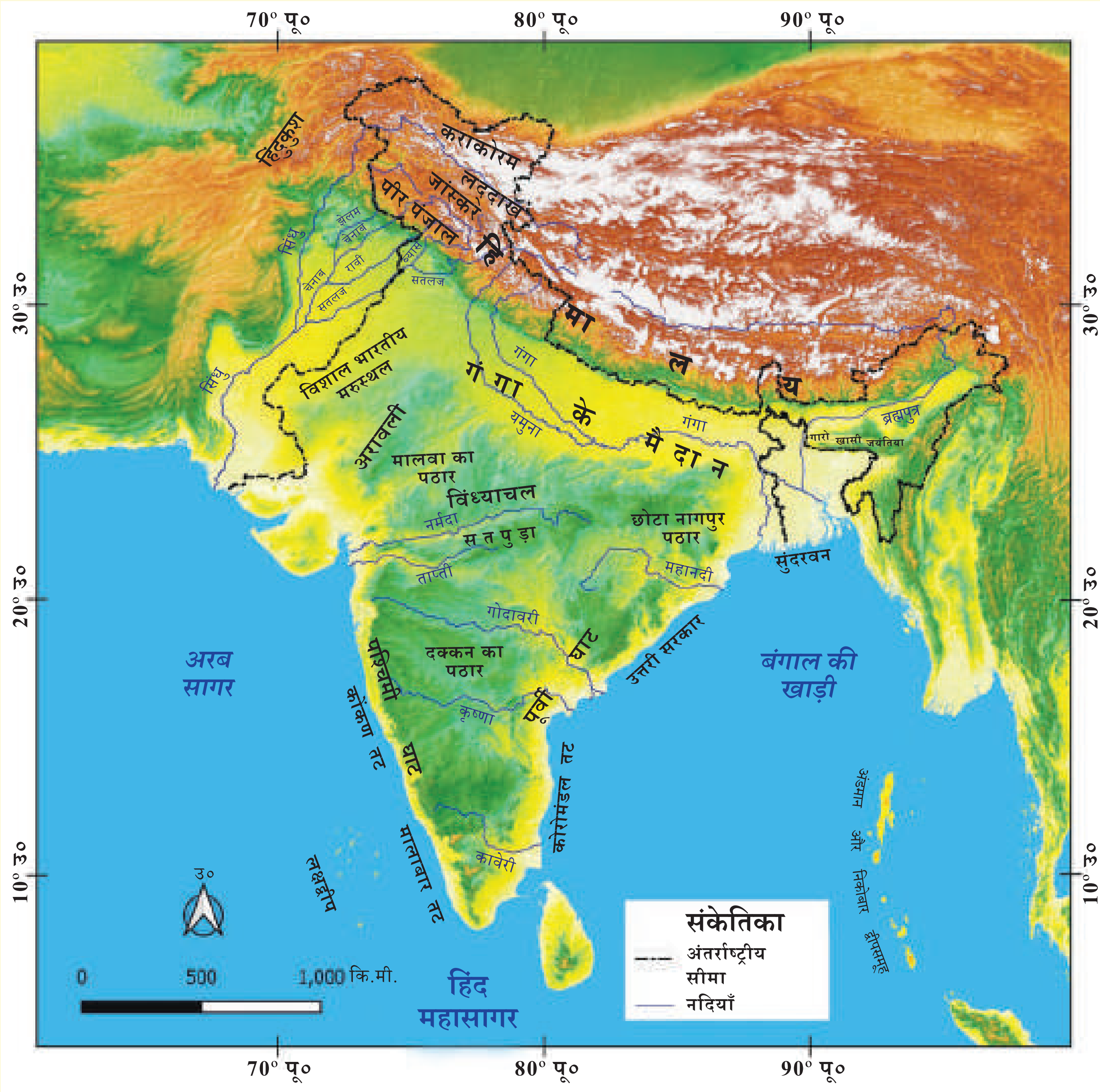

भारत का भौतिक मानचित्र

शब्दावली

पालन करना— किसी नियम, आदेश या संस्तुति को स्वीकार करना या उसके अनुसार कार्य करना।

निवास— रहने का स्थायी स्थान या घर।

प्रचुर— किसी वस्तु की अत्याधिक मात्रा में उपस्थिति।

एकत्र करना— किसी वस्तु को धीरे-धीरे संग्रहित करना।

नट— वह व्यक्ति जो शारीरिक लचीलेपन, संतुलन और कौशल के साथ कठिन और रोमांचक करतब करता है।

उन्नति— किसी वस्तु, विचार, तकनीक या स्थिति में धीरे-धीरे सुधार या आगे बढ़ना।

आगमन— किसी घटना का घटित होना, किसी आविष्कार का होना या किसी व्यक्ति का आना।

आक्रामकता— क्रोध या विरोध का भाव।

एगमार्क— भारत सरकार द्वारा स्थापित एक प्रमाणन चिह्न, जो यह दर्शाता है कि कृषि उत्पादों की गुणवत्ता सरकार द्वारा निर्धारित मानकों के अनुरूप है।

मैत्री समझौता— देशों या राजनीतिक दलों या लोगों का ऐसा समूह, जो साझा हितों और उद्देश्यों के लिए मिलकर कार्य करने पर सहमत हों।

अल्पाइन— ऊँचे तीर्थ क्षेत्रों से संबंधित।

संग्रह करना— वस्तुओं को धीरे-धीरे बड़ी मात्रा में संचयित करना।

संशोधन— किसी प्रलेख या नियम में परिवर्तन या सुधार करना।

मनमाना— ऐसा निर्णय या विचार, जो केवल किसी की इच्छा पर आधारित हो और जो कभी-कभी पक्षपातपूर्ण या अनुचित लग सकता है।

दुष्कर— ऐसा कार्य, जो थकाने वाला, मेहनत भरा और समय लेने वाला हो।

शिल्पकार— वह व्यक्ति, जो अपने हस्त-कौशल से कलात्मक या उपयोगी वस्तुएँ बनाता है।

संन्यासी— वह व्यक्ति, जो भौतिक सुखों को त्यागकर आध्यात्मिक जीवन जीता है।

कोलतार— एक प्रकार का गाढ़ा काला पदार्थ, जो प्रायः छोटे पत्थरों या रेत के साथ मिलाया जाता है और सूखने पर एक टिकाऊ सतह बनाता है।

अभिप्सा— किसी वस्तु, लक्ष्य, पद या सफलता को प्राप्त करने की प्रबल इच्छा।

आकलन करना— किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थिति की प्रकृति, क्षमता या गुणवत्ता का आकलन करना।

आश्वासन— भरोसा दिलाना।

मंगलकारी—शुभ, कल्याणकारी और सफल बनाने वाला।

प्राधिकरण— कोई संस्थान या पद जिसे निश्चित क्षेत्र में वैध नियंत्रण का अधिकार हो, विशेष रूप से शासन-प्रशासन में।

स्वचालित— ऐसी प्रक्रिया या यंत्र, जो मनुष्य की प्रत्यक्ष सहायता के बिना स्वयं कार्य करता है।

वाहन संबंधी— वाहनों से संबंधित।

प्रतिशोध— किसी हिंसा, हानि या अन्याय के बदले की गई कार्रवाई।

मोल-भाव— क्रय-विक्रय में मूल्य पर सहमति के लिए किया गया वार्तालाप।

बंजर— अनुपजाऊ भूमि जिस पर पौधे, फल और फसल आदि नहीं उगाई जा सकती।

अवरोध— कोई भी बाधा, जो कार्य और मार्ग में रुकावट उत्पन्न करें।

बटालियन— सेना की एक संगठित इकाई।

---

* शब्दावली में दिए गए शब्द/पद अंग्रेजी शब्दों के वर्णक्रमानुसार दिए गए हैं।

बी.ई.ई.— ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी (ऊर्जा दक्षता ब्यूरो)।

दयालु— सहृदय और सहायता देने वाला।

बी.आई.एस.— ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड्स (भारतीय मानक ब्यूरो)

वनस्पति संबंधी— पौधों, वनस्पतियों या वनस्पति विज्ञान से संबंधित।

थोक— बड़ी मात्रा में वस्तुओं की उपस्थिति या विक्रय।

चहल-पहल— हलचलयुक्त या सक्रिय गतिविधियों से परिपूर्ण।

उत्कीर्ण करना— किसी ठोस वस्तु, विशेषकर लकड़ी या पत्थर को उकेरकर या तराशकर कोई आकृति या वस्तु बनाना।

कास्केट— सजावटी डिब्बा, जिसका प्रयोग प्रायः आभूषण रखने हेतु किया जाता है। कुछ परंपराओं में यह मृत शरीर या उसके अवशेष रखने के लिए भी प्रयुक्त होता है।

प्रमाणीकरण— किसी व्यक्ति, संस्था या वस्तु को किसी मानक, योग्यता या नियम के अनुसार प्रमाणित करने की प्रक्रिया।

ठिठुरन भरा— अत्यधिक ठंडा।

मथना— किसी द्रव को किसी उपकरण की सहायता से तेजी से घुमाना, जिससे उसमें से अन्य तत्व अलग किए जा सकें।

कुल— एक ऐसा समूह जिसमें लोग एक ही पूर्वज या वंश से संबंध रखते हैं।

उत्कृष्ट-युग— इतिहास का वह युग, जो महान सांस्कृतिक, कलात्मक, वैज्ञानिक एवं राजनीतिक उपलब्धियों के लिए जाना जाता है और जिसने दीर्घकालिक मानदंड स्थापित किए।

स्मरणोत्सव— किसी व्यक्ति, घटना या उपलब्धि को याद करने का आयोजन।

वस्तु— ऐसा उत्पाद जिसका क्रय-विक्रय किया जा सकता है।

क्षतिपूर्ति— किसी हानि, समस्या या कष्ट के बदले में धन, सुविधा या अन्य लाभ देना।

व्यापक— जो किसी विषय के सभी या लगभग सभी तत्वों को सम्मिलित करता हो।

परामर्श करना— किसी विषय पर विचार-विमर्श या सुझाव साझा करना।

संगम— जब दो या दो से अधिक नदियाँ या धाराएँ एक साथ मिलती हैं।

एकत्रित होना— जब लोग किसी विशेष उद्देश्य से एक स्थान पर जमा होते हैं।

विजय— किसी भूभाग, राष्ट्र या परिस्थिति को युद्ध, संघर्ष या प्रयासों द्वारा अपने नियंत्रण में लेना।

उपभोक्ता— वह व्यक्ति, जो वस्तुओं और सेवाओं को अपने उपयोग हेतु क्रय करता है।

समकालीन— उसी कालखंड से संबंधित या उसी समय घटित होने वाला।

संदर्भ— वह पृष्ठभूमि या परिस्थिति, जो किसी घटना, विचार या कथन के सही अर्थ को समझने में सहायता करती है।

सुविधाजनक— ऐसी वस्तु, स्थिति या समय, जो किसी कार्य को करने में सरलता प्रदान करे, कम-से-कम कठिनाई उत्पन्न करे और उपयोगकर्ता की आवश्यकताओं तथा उद्देश्यों के अनुकूल हो।

क्षरण— किसी पदार्थ (सामान्यतया धातु) का धीरे-धीरे नष्ट होना, जो उसके वातावरण (जैसे– हवा या पानी) के साथ रासायनिक अभिक्रिया के कारण होता है, जिससे उसकी गुणवत्ता और संरचना में गिरावट होती है।

परिषद— ऐसी संस्था, जो महत्वपूर्ण निर्णय लेने या सुझाव देने के लिए गठित की जाती है।

चुपके से चलना— धीर-धीरे, निःशब्द और सावधानीपूर्वक चलना या बढ़ना, जिससे उस पर किसी का ध्यान न जाए।

अत्यंत महत्वपूर्ण— अत्यधिक आवश्यक या विशिष्ट महत्व वाला।

सिकुड़ा हुआ— दबाया हुआ या सिलवटदार, जो अव्यवस्थित या असमान आकार का हो गया हो।

अवमूल्यन— किसी की प्रतिष्ठा या नैतिकता में गिरावट आना।

मलबा— वह अवशेष या टूटे-फूटे टुकड़े, जो किसी विनाश, विस्फोट, प्राकृतिक आपदा, निर्माण अथवा दुर्घटना के पश्चात बचे रह जाते हैं।

दशक— वह कालावधि, जो दस वर्षों की निरंतर अवधि को दर्शाती है। यह किसी विशेष समय-खंड को संदर्भित कर सकता है, जैसे कि 1990 से 1999 तक का दशक, जिसे 90 का दशक कहा जाता है।

बचाव करना— किसी संकट, आक्रमण, आरोप या आलोचना से सुरक्षा करने की क्रिया।

टालना— कुछ समय के लिए स्थगित करना या विलंबित करना।

पतित होना— शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक दृष्टि से सामान्य और वांछनीय गुणों को खोकर निम्न स्तर पर आ जाना।

वंशज— वह व्यक्ति, जो किसी व्यक्ति की अगली पीढ़ी में जन्मा हो और उससे रक्त संबंध रखता हो, जैसे – आपके पुत्र-पुत्री या प्रपौत्र-प्रपौत्री।

डराकर रोकना— दुष्परिणामों का डर दिखाकर किसी को कोई कार्य करने से रोकना।

उजाड़ना— किसी वस्तु या स्थान को इतनी गंभीर क्षति पहुँचाना कि वह पूरी तरह टूट जाए या नष्ट हो जाए।

श्रद्धालु— गहरे धार्मिक विश्वास और आस्था के साथ अपने धर्म का पालन करने वाला व्यक्ति।

कूटनीति— वह व्यवहार या नीति, जो लोगों या देशों के बीच की परिस्थितियों को इस प्रकार सँभाले कि सभी पक्षों के हित सुरक्षित रहें।

आपदा— अचानक घटित होने वाली ऐसी घटना, जिससे भारी नुकसान या हानि होती है, जैसे – जान-माल की क्षति या पर्यावरणीय क्षति।

डिस्क— एक चपटी, गोलाकार वस्तु, जैसे – सिक्का या कॉम्पैक्ट डिस्क (सी.डी.)।

प्रतिष्ठा हनन— अपमान और लोगों के सम्मान में कमी की भावना या ऐसी स्थिति जिसमें आप इसका अनुभव करते हैं।

खंडित— टूटकर अलग-अलग भागों में बिखर जाना।

विवाद— जब दो या दो से अधिक लोग किसी बात पर सहमत नहीं होते और उनके बीच टकराव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

विशिष्ट— जो किसी विशेष गुण के कारण अलग पहचाना जाए।

चल सेतु— एक ऐसा सेतु, जो सामान्यतया किसी दुर्ग, दुर्गबंदी या खाई के ऊपर बनाया जाता है और जिसे ऊपर खींचा या उठाया जा सकता है, जिससे दुश्मन दुर्ग तक न पहुँच सके या बड़ी नावों का आसानी से उसके नीचे आवागमन हो सके।

औषधि— ऐसा प्राकृतिक या रासायनिक पदार्थ जिसका उपयोग रोगों के उपचार के लिए किया जाता है।

राजवंश— ऐसा शासक परिवार, जो पीढ़ियों तक किसी देश या क्षेत्र पर शासन करता है। इसमें सत्ता सामान्यतः माता-पिता से उनकी संतान को हस्तांतरित होती है।

पारिस्थितिकी— वह विज्ञान जिसमें जीवों और उनके भौतिक तथा जैविक पर्यावरण के बीच पारस्परिक संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

कार्यकुशलता— किसी कार्य को कम समय, कम संसाधन और न्यूनतम प्रयास में अधिकतम परिणाम के साथ पूरा करने की क्षमता।

उत्पन्न होना— किसी स्रोत से निर्गत होना।

तटबंध— पानी को रोकने या नियंत्रित करने के उद्देश्य से बनी एक प्राकृतिक या कृत्रिम, ऊँची लंबवत संरचना, जो सामान्यतः मिट्टी, पत्थरों या कंक्रीट से निर्मित होती है।

उभरा हुआ— किसी सतह पर चित्र, डिजाइन या अक्षर आदि को इस प्रकार उभारकर बनाना कि वे सतह से ऊपर उठे हुए प्रतीत हों, जैसे – सिक्कों या मुद्रा पर दिखता है।

उभरना— किसी स्थिति से धीरे-धीरे बाहर निकलना या सामने आना।

समर्थ बनाना— किसी को कुछ करने में सक्षम बनाना या ऐसी स्थिति उत्पन्न करना जिससे कार्य संभव हो सके।

सामना— अचानक या अनापेक्षित रूप से किसी व्यक्ति, स्थिति या समस्या का आ जाना।

अतिक्रमण करना— धीरे-धीरे किसी राज्य की सीमा, अधिकार या संपत्ति में बिना अनुमति के प्रवेश करना या अधिकार करना।

विराट— अति विशाल।

अनिवार्य रूप से शामिल होना— सामान्यतया किसी कार्य, स्थिति या निर्णय में अंतर्निहित आवश्यक प्रभाव या गुण को अनिवार्य रूप से दर्शाना।

अभिलेख— किसी ठोस सतह (धातु, पत्थर आदि) पर लिखा गया लेख।

आकाशीय तत्व— व्योम अथवा आकाशीय तत्व, जो अंतरिक्ष को भरता है और सभी निकायों का निर्माण करता है। इसे दिव्यता या सूक्ष्मता का प्रतीक माना जाता है।

छोड़कर अन्यत्र जाना— किसी स्थान से संकट के कारण लोगों को वहाँ से हटा देना।

संभावित स्थिति— ऐसी संभावित घटना या परिस्थिति, जो भविष्य में घट सकती है।

उद्भव या क्रमिक विकास— समय के साथ धीरे-धीरे बदलना या और अधिक उन्नत होना।

उत्खनन प्रक्रिया— प्रायः पुरातात्विक गतिविधियों के अंतर्गत धरती से कुछ खोदना या निकालना।

उद्धृत अंश— किसी लेख, भाषण, पुस्तक, फिल्म आदि से लिया गया एक छोटा-सा अंश।

शोषण— किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थिति का अपने लाभ के लिए अनुचित (जैसे – बलपूर्वक कार्य करवाना, दोहन करना) उपयोग करना।

उत्तम— मनमोहक।

सुगम बनाना— किसी काम को आसान या सहज बनाना।

भोज— विशेष अवसर पर अनेक लोगों के लिए परोसा गया स्वदिष्ट भोजन।

शौर्यपूर्ण कार्य— ऐसा कार्य जिसे हासिल करने के लिए अत्यधिक कौशल, शक्ति, साहस की आवश्यकता होती है।

भयंकर— शारीरिक रूप से हिंसक और भयावह।

चापलूसी— अधिकांशतः स्वार्थवश किसी की अत्यधिक या झूठी प्रशंसा करना।

फलना-फूलना— उन्नति करना, सफलतापूर्वक विकसित होना।

विदेशी वृत्तांत— किसी देश के बारे में अन्य देशों से आए यात्रियों द्वारा लिखा गया विवरण।

गढ़ना— धातु को आग या भट्टी में गर्म करके, उसे किसी वस्तु के रूप में आकार देना।

किलेबंदी— सुरक्षा की दृष्टि से किसी स्थान को सशक्त बनाना।

पोषण करना— किसी व्यक्ति, भावना या विचार को बढ़ावा देना या प्रोत्साहन देना।

विखंडित— कई अलग-अलग हिस्सों में बिखरना।

एक विशेष अधिकार या अनुमति— एक व्यापारिक व्यवस्था, जिसमें एक कंपनी किसी अन्य व्यक्ति या समूह

को अपने व्यापार मॉडल, ब्रांड नाम, उत्पाद, सेवाएँ और संचालन प्रणाली उपयोग करने का अधिकार देती है।

बर्फीला— अत्यधिक ठंडा या हिमयुक्त (सामान्यत: मौसम से संबंधित)।

सीमांत— वह भौगोलिक सीमा जहाँ एक देश की सीमा दूसरे देश से मिलती है।

पाला— बर्फीली परत, जो ठंड में नमी के जम जाने से जमीन, पौधों या अन्य सतहों पर बन जाती है।

भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफ.एस.एस.ए.आई.) — भारत सरकार का एक स्वायत्त संगठन, जिसका उद्देश्य देश में खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता, सुरक्षा और मानकों को सुनिश्चित करना है।

कीप— चौड़े मुँह और पतली नली वाला एक उपकरण, जिसका उपयोग तरल या बारीक पदार्थों को एक बर्तन से दूसरे बर्तन में डालने के लिए किया जाता है।

प्रवेश-द्वार— किसी क्षेत्र, नगर आदि में प्रवेश के लिए बना मुख्य द्वार।

मापयंत्र— मापने का उपकरण।

झिलमिलाती सजावटी वस्तुएँ— सामान्यतया चमकदार किंतु व्यावहारिक रूप से अनुपयोगी वस्तुएँ, जिनका उपयोग केवल सजावट के लिए होता है।

हिमनदीय— हिमनद (ग्लेशियर) से संबंधित।

अन्नागार— अन्न भंडारण के लिए प्रयोग में आने वाला एक बड़ा भवन।

ग्रेगोरियन कैलेंडर/ग्रेगोरियन पंचांग— अधिकांश देशों में प्रयुक्त होने वाला पंचांग, जिसमें वर्ष में 365 दिन, 12 माह तथा 52 सप्ताह होते हैं।

निकुंज— प्राय: एक ही प्रकार के पेड़ों का एक छोटा समूह।

हस्तशिल्प— एक कुशल गतिविधि, जिसमें किसी वस्तु को पारंपरिक ढँग से हाथों से बनाया जाता है, न कि किसी कारखाने में मशीनों द्वारा उत्पादित किया जाता है। इस गतिविधि के द्वारा बनी वस्तु के लिए भी इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

हैलियोडोरस— ग्रीक राजदूत जिसने विदिशा के समीप एक स्तंभ बनवाया, जो सांस्कृतिक आदान-प्रदान को दर्शाता है।

हीलियम— एक रासायनिक तत्व; यह एक गंधहीन, रंगहीन, स्वादहीन, अक्रिय और हल्की गैस है।

वंशानुगत— वह विशेषता, अधिकार या गुण, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को जन्म या संबंध के आधार पर मिलता है।

विरासत— एतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान या भवन।

समग्र दृष्टिकोण— किसी व्यवस्था या प्रणाली को उसके सभी पहलुओं के साथ देखने-समझने का दृष्टिकोण।

मुख्य स्थल— ऐसा स्थान या क्षेत्र, जो किसी गतिविधि, व्यापार, संचार और परिवहन आदि का मुख्य केंद्र हो।

चित्रण— किसी पुस्तक, पत्रिका आदि के लिए चित्र बनाना।

प्रासंगिक— कोई ऐसी बात या घटना, जो मुख्य विषय या उद्देश्य से जुड़ी हो लेकिन मुख्य न हो।

अक्षम— किसी कार्य को अच्छी तरह से करने के लिए आवश्यक कौशल की कमी।

दायित्व— किसी खर्च या स्थिति की जिम्मेदारी।

मुद्रास्फीति— समय के साथ वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में सामान्य वृद्धि, जिससे मुद्रा की क्रय शक्ति घट जाती है।

कौशलपूर्ण— किसी समस्या को कुशलता और बुद्धिमत्ता से हल करना।

अंतर्देशीय— वह भूभाग जो समुद्र तट या सीमा से दूर, किसी देश या क्षेत्र के अंदर स्थित होता है।

अंकन— विशेष तौर पर औपचारिक या स्थायी रिकॉर्ड रखने के लिए किसी ठोस सतह पर (शब्द या प्रतीक) लिखना या उकेरना।

दृढ़ता से कहना— किसी बात पर अडिग रहना।

घटना— किसी विशिष्ट परिस्थिति या उदाहरण का उल्लेख।

अमूर्त— कोई ऐसी चीज जिसे शारीरिक रूप से छुआ न जा सके, जैसे– मौखिक परंपरा, रीति-रिवाज, मूल्य आदि।

हस्तक्षेप— समस्या को सुलझाने, स्थिति को नियंत्रित करने या बेहतर बनाने के लिए हस्तक्षेप।

गूँथना— विभिन्न वस्तुओं को एक साथ बुनना या एक साथ जोड़ना।

बारीक काम— सूक्ष्मता से बनाई गई कलाकृति या चित्रकारी।

आह्वान करना— किसी देवी-देवता को प्रार्थना या प्रेरणा हेतु साक्षी रूप में बुलाना।

भारतीय मानक ब्यूरो (बी.आई.एस.)— उत्पादों, सेवाओं और प्रक्रियाओं के प्रमाणीकरण के लिए भारत सरकार की संस्था द्वारा प्रदान किया गया चिह्न।

रिश्तेदार— समान वंश अथवा संबंधों से जुड़े हुए लोगों का समूह।

संकेतिका— नक्शे की एक कुंजी या मार्गदर्शक, जो प्रयुक्त प्रतीकों, रंगों या चिह्नों की व्याख्या करता है।

किंवदंती— किसी प्रसिद्ध व्यक्ति, स्थान या घटना की कहानी के लिए प्रयुक्त।

लाइसेंस— किसी व्यक्ति, संस्था या व्यवसाय को कोई विशेष कार्य करने की विधिक अनुमति या अधिकार।

क्रोधित— अत्यधिक आक्रोश की स्थिति।

प्रतीक चिह्न— एक ऐसा दृश्य प्रतीक, जो नाम, उद्देश्य या पहचान को संक्षेप में और प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करता है।

दीर्घजीविता— लंबे समय तक जीवित रहने की क्षमता या अवधि।

दीर्घकालिक— लंबे समय तक चलने वाला।

हरा-भरा— पेड़-पौधों एवं हरियाली से परिपूर्ण

शानदार— बहुत सुंदर या प्रशंसनीय।

भव्य— ऐसा कुछ, जो अत्यंत विशाल और भव्य हो।

मानस्राव— अर्थशास्त्र के अनुसार किसी आपूर्ति में कमी को पूरा करने के लिए दिया गया अतिरिक्त लाभ।

आगे बढ़ना— सैन्य टुकड़ी द्वारा तालबद्ध तरीके से आगे बढ़ना।

सामुद्रिक— जो समुद्र या समुद्री क्षेत्र से संबंधित हो।

नरसंहार— बड़े पैमाने पर जनसंख्या की हत्या।

वैवाहिक गठबंधन— राजपरिवारों के सदस्यों के बीच रणनीतिक विवाह, जिसका उद्देश्य राजनीतिक संबंधों को सशक्त करना, शांति सुनिश्चित करना, प्रभाव का विस्तार करना या विभिन्न शासकों या राज्यों के बीच सैन्य और आर्थिक साझेदारी बनाना है।

धात्विक— धातु से बना या धातु जैसा।

मौसम विज्ञानी— वह व्यक्ति, जो मौसम विज्ञान का अध्ययन करता है।

पराक्रमी— अत्यंत शक्तिशाली एवं साहसी।

हल्का— न ज्यादा न कम, संतुलित भार वाला।

सहस्राब्दियाँ— अधिकांशतः अतीत के संदर्भ में 1000 वर्षों की अवधि या वह समय जब 1000 वर्षों की अवधि समाप्त होती है।

लघु— एक ऐसी वस्तु, जो सामान्य से बहुत छोटी होती है, विशेष रूप से एक छोटी प्रतिकृति या मॉडल।

खाई— एक लंबी-चौड़ी नाली जैसी संरचना, जो किसी किले के चारों ओर खोदी जाती है, जिसमें पानी भरा होता है, ताकि बाहरी आक्रमणों से किले को सुरक्षित रखा जा सके।

गतिशील करना— किसी कार्य या गतिविधि को सक्रिय रूप से आगे बढ़ाना।

मठ— विहार, जहाँ बौद्ध भिक्षु रहते, ध्यान करते और धार्मिक प्रथाओं का पालन करते थे।

निगरानी— व्यवहार या मौसमी गतिविधि या परिस्थिति का सूक्ष्म निरीक्षण।

आकृति— एक विशेष सजावटी छवि, जो दोहराई जाती है या जिसका प्रतीकात्मक अर्थ होता है।

पारस्परिक— परस्पर भावना, आदान-प्रदान आदि।

वार्ता— किसी समझौते या निर्णय पर पहुँचने के लिए की गई बातचीत।

भद्र— उदार और कुलीन स्वभाव वाला।

प्रतिमान— समाज, समूह या स्थिति में व्यवहार करने की एक अपेक्षित पद्धति।

शपथ— विधिपूर्वक लिया गया वचन या संकल्प, जिसमें व्यक्ति किसी उच्च आदर्श को साक्षी मानकर सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपालन या गोपनीयता आदि का संकल्प लेता है।

तिरछा— झुका हुआ या कोणीय दिशा में झुका हुआ।

अग्रभाग— एक सिक्के या पदक का शीर्ष भाग।

घटना— किसी तथ्य या प्रक्रिया के घटित होने की स्थिति।

आरंभ— किसी कार्य, घटना या प्रक्रिया की शुरुआत जैसे – मौसम, ऋतु।

प्रतिद्वंद्वी— वह व्यक्ति, जो किसी प्रतियोगिता, खेल या तर्क में किसी दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करता है।

प्रताड़ित करना— किसी व्यक्ति या समूह पर अनुचित अमानवीय या क्रूर व्यवहार करना या शासन करना।

चौकियाँ— मुख्य क्षेत्र से दूर स्थित छोटी बस्तियाँ या सैन्य निगरानी केंद्र।

आउटसोर्स— किसी बाहरी आपूर्तिकर्ता से अनुबंध के द्वारा वस्तु या सेवा प्राप्त करना।

अधिराज— सर्वोच्च सत्ताधारी शासक।

देख-रेख करना— किसी कार्य या गतिविधि की निगरानी करना या उसे व्यवस्थित करना, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वह सही ढँग से किया जा रहा है।

पैकेटबंद— पहले से तैयार कंटेनर में बेची जाने वाली कोई वस्तु, जो सामान्यतया कागज या कार्डबोर्ड से बनी होती है।

सार्वजनिक जुलूस— विशेष रूप से एक विशेष दिन या घटना का उत्सव मनाने के लिए निकाली गई शोभायात्रा।

विरोधाभास— ऐसी स्थिति या कदम जिसमें परस्पर विरोध प्रतीत होता है।

प्रतिभागी— वह व्यक्ति, जो किसी कार्यक्रम या प्रतियोगिता में भाग लेता है।

तीतर— एक पक्षी, जिसका शरीर गोलाकार व पूँछ छोटी होती है।

चारागाह— घास से ढँका हुआ मैदान, जहाँ पशु चरते हैं।

देशभक्ति— अपने देश के प्रति अत्यधिक समर्पण एवं निष्ठा।

संरक्षक— वह व्यक्ति जो किसी अन्य व्यक्ति या संगठन को किसी उद्देश्य हेतु वित्तीय या अन्य सहायता प्रदान करता है।

संरक्षणपूर्ण— धर्म, कला साहित्य और व्यवसाय संबंधी गतिविधियों के लिए राजाओं द्वारा दी गई सहायता, सुरक्षा और वित्तीय सहायता।

समझना— किसी बात को अपने दृष्टिकोण से देखना और समझना।

खतरनाक— जोखिम से भरा।

लंबवत— यह ज्यामितीय शब्द है और इसका उपयोग दो रेखाओं या सतहों के बीच समकोण को व्यक्त करने के लिए किया जाता है।

औषधीय— औषधियों अथवा उपचार से संबंधित।

परिघटना— कोई ऐसी घटना, जो ध्यान आकर्षित करती है।

चित्रमय— ऐसा दृश्य या स्थान, जो देखने में इतना सुंदर और आकर्षक हो कि किसी चित्र जैसा प्रतीत हो।

अभिधारणा— किसी सिद्धांत, विचार आदि को एक बुनियादी सिद्धांत के रूप में सुझाना, जिससे आगे कोई विचार विकसित होता है।

शक्ति— निर्णय लेने, संसाधनों को नियंत्रित करने या दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता या अधिकार।

प्रस्तावना— किसी प्रलेख या औपचारिक वक्तव्य का प्रारंभिक भाग, जो विषय या संक्षिप्त परिचय देता है।

वर्षण— वायुमंडल में जलवाष्प का संघनित होकर पृथ्वी पर गिरना।

पूर्वानुमान लगाना— भविष्य में होने वाली किसी घटना के बारे में अनुमान लगाना।

संरक्षित करना— किसी वस्तु को उसकी मूल या मौजूदा स्थिति में बनाए रखना।

विशेषाधिकार प्राप्त— कोई ऐसा व्यक्ति या समूह जिसे सामान्य लोगों की तुलना में विशेष सुविधाएँ या लाभ प्राप्त हों।

कार्यवाही— किसी बैठक, न्यायालय, सभा या संस्था में होने वाली क्रमबद्ध और औपचारिक गतिविधियाँ या उनका विवरण।

प्राप्त करना— किसी वस्तु, सेवा या संसाधन को विशेष प्रयत्न, प्रक्रिया या माध्यम से प्राप्त करना।

उत्पादन— किसी वस्तु या सामग्री को तैयार करना या अस्तित्व में लाना।

गहन— अत्यंत गहरा, महत्वपूर्ण और प्रभावशाली जिसे आप बहुत दृढ़ता से महसूस करें।

प्रावधान— ऐसी व्यवस्था, जो किसी कार्य को सही ढँग से चलाने के लिए आवश्यक होती है।

निकटता— किसी स्थान या समय में किसी वस्तु, व्यक्ति या घटना के समीप होना।

बटेर— एक छोटा भूरा पक्षी, जो सामान्यत: भूमि पर चलता है।

प्राचीर— किसी शहर, महल आदि के चारों ओर उसकी सुरक्षा के लिए बनाई गई एक बड़ी दीवार।

पुनरावलोकन— पहले कही या पढ़ी गई बातों को दोबारा देखना, विचार करना या संक्षेप में पुनः प्रस्तुत करना।

पुनर्चक्रण करना— किसी उपयोग की हुई वस्तु या सामग्री को पुन: प्रयोग करने योग्य रूप में बदलना।

घटाव— किसी वस्तु, संख्या, आकार, मात्रा या मूल्य में कमी लाना या उसे घटाना।

नियामक— किसी प्रक्रिया, नियम या गतिविधि को नियंत्रित या विनियमित करना।

पुनर्स्फूर्ति — नई ऊर्जा से भर जाना।

पावन अवशेष— कोई वस्तु, परंपरा या प्रणाली, जो प्राचीन समय से लेकर वर्तमान तक विद्यमान है। सामान्यतया उसका प्रयोग सुप्रसिद्ध चिंतक व आध्यात्मिक गुरु, जैसे– महात्मा बुद्ध के संदर्भ में किया जाता है।

दमन— किसी समुदाय या समूह को नियंत्रित करने के लिए बल या हिंसा का उपयोग।

गणतंत्र— वे देश जहाँ का प्रमुख (राष्ट्राध्यक्ष) निर्वाचित होता है।

पुन:प्रयोजन— किसी चीज को उसके मूल उद्देश्य से अलग किसी नए उद्देश्य या काम के लिए उपयोग करना।

प्रतिष्ठा— किसी व्यक्ति, संस्था या वस्तु के प्रति समाज में व्याप्त सम्मानजनक छवि, जो उसके पूर्व आचरण या गुणों पर आधारित होती है।

बचाव— किसी व्यक्ति या वस्तु को हानिकारक या अप्रिय स्थिति से बाहर निकालना या बचाना।

संसाधन— धन और सामग्री के उपयोगी स्रोत, जो जीवन

को बेहतर बनाते हैं।

पीछे हटना— लड़ाई या संकट से बचने के लिए किसी स्थान या व्यक्ति से दूर जाना।

सम्मान— किसी व्यक्ति या वस्तु की प्रशंसा और आदर करना।

पृष्ठ भाग— सिक्के या पदक का पिछला भाग, जो शीर्ष भाग के विपरीत होता है।

धार्मिकता— नैतिक रूप से सही या न्यायोचित होने का गुण।

उचित स्थिति— नैतिक रूप से या कानूनी रूप से सही।

अनुष्ठान— किसी कार्य को करने की पारंपरिक विधि।

शैलकृत स्थापत्य— मंदिर या अन्य संरचनाएँ, जो ठोस चट्टान को उकेरकर या काटकर बनाई जाती हैं। ईंटों या पत्थरों से निर्माण करने के स्थान पर कलाकार गुफाओं, दीवारों या मूर्तियों जैसी चीजों को बनाने के लिए चट्टान को ही आकार देते हैं। यह सीधे पहाड़ या बड़ी चट्टान से मंदिर या कलाकृति बनाने जैसा है।

ऊबड़-खाबड़ और असमान— प्रायः शैलों और पहाड़ियों से भरी भूमि का वर्णन करने के लिए प्रयोग होता है।

पावन— वह, जो दिव्य उपस्थिति या आध्यात्मिक भावना जागृत करता है।

पावनता— पावन या संत होने की स्थिति या गुण।

क्षत्रप— वह व्यक्ति जो प्राचीन फारस में किसी प्रांत (राजनीतिक क्षेत्र) पर शासन करता था।

अनुसूची— कोई सूची, तालिका या किसी क्रम की व्यवस्थित प्रस्तुति।

शिस्ट— एक प्रकार की परतदार चट्टान, जो आसानी से पतले टुकड़ों में टूट जाती है। ये सामान्यत: अभ्रक या अन्य खनिजों से बनी होती हैं।

खोजना— किसी वस्तु या तथ्य को बारीकी से एवं ध्यानपूर्वक ढूँढ़ना।

आत्म-संयम— अपने स्वयं के कार्यों एवं विचारों पर नियंत्रण।

मूठ— एक डंडा या रॉड, जो किसी उपकरण या हथियार का हैंडल होता है।

अत्यधिकता— किसी वस्तु या बात की अत्यधिक मात्रा या सीमा।

घेराबंदी— किसी स्थान को सशस्त्र बल द्वारा घेरना, ताकि उसका बचाव करने वाले को हराया जा सके।

रेशम मार्ग— व्यापार मार्गों का एक प्राचीन नेटवर्क, जो एशिया, यूरोप और अफ्रीका को जोड़ता था। इसे यह नाम इसलिए मिला क्योंकि मुख्यतः चीन के मूल्यवान रेशम का इस मार्ग से व्यापार किया जाता था।

दास— वह व्यक्ति जो किसी अन्य की सेवा करने और उसकी आज्ञा मानने के लिए बाध्य हो और जिसे उस व्यक्ति की संपत्ति माना जाता था।

कारीगर— वह व्यक्ति जो अपने हाथों से कोई वस्तु बनाने का कार्य करता है। जैसे – लोहार, सुनार।

सामाजिक— समाज से संबंधित या समाज को सम्मिलित करने वाला।

गंभीर— धैर्यशाली और चिंतनशील स्वभाव वाला।

अतिरिक्त— किसी वस्तु का अतिरिक्त या बचा हिस्सा, जो किसी अन्य के उपयोग के लिए हो।

अल्पकाल— कोई विशेष स्थिति या छोटी अवधि।

वैभव— भव्य सौंदर्य, जो प्रशंसा और ध्यान आकर्षित करता है।

मंजिल— इमारत का वह भाग जिसमें सभी कमरे एक ही स्तर या तल पर हों।

तनाव— मानसिक चिंता या दबाव की स्थिति।

मजबूत— भौतिक रूप से ठोस, जिसके टूटने की संभावना

कम होती है।

प्रतिस्थापन— किसी वस्तु या व्यक्ति को बदलने के लिए अन्य समान वस्तु या व्यक्ति का प्रयोग करना।

अदला-बदली—दो वस्तुओं का आपस में आदान-प्रदान या बदलना।

कपड़े सिलने का काम— कपड़े या वस्त्रों को सिलने का पेशा।

मूर्त— कुछ ऐसा जिसे छुआ जा सके या शारीरिक रूप से महसूस किया जा सके।

द्रव डामर मिश्रित सड़क— डामर और पत्थर की पक्की सतह।

साक्ष्य— प्रमाण, सबूत या वसीयत।

टूर्नामेंट— प्रतियोगात्मक खेलों की शृंखला।

दु:खद— अत्यंत पीड़ादायक प्रायः मृत्यु से संबंधित।

लेन-देन— किसी कार्य या प्रक्रिया का आदान-प्रदान।

रूपांतरित करना— किसी वस्तु या व्यक्ति के स्वरूप या चरित्र को पूरी तरह से बदलना।

संक्रमण— एक रूप या प्रकार से दूसरे में परिवर्तन।

संचारित करना— एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी वस्तु या संदेश को भेजना।

यात्रा वृत्तांत— किसी यात्री द्वारा देखी गई जगहों या उसके अनुभवों के बारे में एक पुस्तक या आख्यान।

सहायक नदी— एक नदी, जो किसी बड़ी नदी या झील में जुड़ती है।

श्रद्धांजलि— किसी के प्रति गहन सम्मान या कृतज्ञता किसी शासक या सत्ताधारी को दी गई औपचारिक भेंट।

क्षोभमंडल— वायुमंडल की सबसे निचली परत, जो पृथ्वी की सतह से लगभग 6 से 10 कि.मी. तक फैली होती है।

उथल-पुथल— अनिश्चितता या अव्यवस्था की स्थिति।

फहराना— ध्वज का ऊँचाई पर लगाकर लहराना।

अबाधित— बिना किसी रूकावट या विघ्न के लगातार चलने वाला।

साहसिक उद्यम— ऐसा कार्य या परियोजना जिसमें जोखिम हो और सफलता या लाभ की सुनिश्चितता न हो।

उत्साहपूर्ण ओज— किसी व्यक्ति, स्थान, कला या कृति में प्रकट जीवंतता और ऊर्जा।

जीवंत— ऊर्जा तथा उत्साह से भरपूर।

प्राणिक— अस्तित्व या परिस्थिति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण।

औपचारिक संरक्षण— संरक्षित बालक या बालिका।

माल— बिक्री के लिए पेश किया जाने वाला सामान।

मौसम— पृथ्वी पर किसी विशेष रूप या किसी विशेष समय पर किसी विशिष्ट क्षेत्र में पवन, वर्षा या तापमान की स्थितियाँ।

बुनाई— करघे पर लंबे धागे के दो सेटों के माध्यम से एक ही धागे को बार-बार पार करके कपड़ा बनाने का कार्य।

कल्याण— किसी व्यक्ति या समुदाय की समृद्धि, सुरक्षा और सुख-शांति की स्थिति।

चँवर— एक प्रकार का पारंपरिक पंखा।

मौखिक प्रचार— किसी बात को बोलकर बताना।

नोट— इस शब्दावली में दिए शब्दों को विद्यार्थियों की कक्षा के अनुरूप एवं पाठ्यपुस्तक में उनके संदर्भ के अनुसार सरलीकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है।

बाह्य स्रोतों से प्राप्त चित्र और मानचित्र

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् निम्नलिखित संगठनों और व्यक्तियों को उनके चित्रों का उपयोग करने की अनुमति प्रदान करने के लिए धन्यवाद देती है—

1. संगठन और व्यक्ति

- चित्र 1.2 — स्रोत — NASAhttps://eoimages.gsfc.nasa.gov/images/imagerecords/147000/1479 80/ISS053-E-317703.jpeg
  https://eoimages.gsfc.nasa.gov/images/imagerecords/147000/147980/ISS031-E-67020.jpeg
- चित्र 1.3 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Gangotri_Glacier#/media/File:Gomukh_the_source_of_Ganga.jpg
- https://en.wikipedia.org/wiki/Gomukh#/media/File:View_of_Gaumukh.jpg
- चित्र 1.5 — स्रोत — https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/e/ec/Folded_Himalayan Rock Layers_at_Kali_Gandaki_in_Nepal_2014.jpg
- चित्र 1.6 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Kath_kuni_architecture#/media/File:Old_ style home, Manali 2004.jpg
- चित्र 1.7.1 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Great_Himalayan_National_Park#/media/File:GreatHimalayan_National_ParkKullu Himachal.jpg
- चित्र 1.7.3 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Himalayas#/media/File:View_of_the_Lakir_Monastery.JPG
- चित्र 1.7.5 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Himalayas#/media/File:Irbis4.JPG
- चित्र 1.16 स्रोत — https://earthobservatory.nasa.gov/images/147622/lighting-the-edge-of-the-roof
- चित्र 1.19 — स्रोत — सौजन्य: लेखक का श्रेय: चार्ल्स जे. शार्प द्वारा – स्वयं का कार्य, शार्प फोटोग्राफी sharpenphotography.co.uk, CC BY-SA 4.0, https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=65657798
- चित्र 1.20 — स्रोत — https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/c/c0/Indian_Peacock_Courtship_display_at_Pench_national_park_%28April%2C_2024%29_10.jpg
- चित्र 1.24 — एक बस्ती में वर्षा जल संचयन की संरचना। स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Rainwater_harvesting_tank_India.jpg
- चित्र 1.25 — स्रोत — https://eoimages.gsfc.nasa.gov/images/imagerecords/90000/90329/aravalli_oli 2016357_Jrg.jpg
  https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/8/8a/Arbuda_Mountains.JPG

- चित्र 1.29 — स्रोत — N. A. Naseer /www.nilgirimarten.com/naseerart@gmail.com, CC BY-SA 2.5, https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=27774329>
- चित्र 1.30 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:King_Cobra_from_western_ghats.jpg
- चित्र 1.31 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Flowering_plant#/media/File:Drosera_anglica_ne2.Jpg
- चित्र 1.32 — स्रोत — https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/d/d5/Coal_mine_in_Dhanbad%2C India.jpg
- चित्र 1.35 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Indo-Gangetic_Plain#/media/File:Ganges_Delta_ ESA22274217.jpeg
- चित्र 1.36 और चित्र 1.37 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Feather_star_coral_reef.jpghttps://commons.wikimedia.org/wiki/File:The_Coral_Reef_at_the_Andaman_Islands.jpg
- चित्र 1.38 — स्रोत — https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/6/6c/Induction of Floating Dock Navy-2 %28FDN-2%29_into_the_Indian_Navy_%284%29.jpg
- चित्र 1.39 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Barren_Volcano बैरन द्वीप। अंडमान_और_निकोबार_द्वीप,_भारत%E2%80%94Cropped.png
- चित्र 1.41 — स्रोत — सेवन सिस्टर्स वाटरफॉल्स, मेघालय, भारत, स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Nohsngithiang_Falls#/media/File:Seven_Sisters Water Falls Mawsmal Cherrapunjee_513.JPG
- शाद सुक म्यंसिएम त्योहार खासी लोगों द्वारा प्रकृति के प्रति आभार प्रकट करने के रूप में मनाया जाता है। स्रोत — https://indianculture.gov.in/node/2884697
- चित्र 2.5 — भारत मौसम विज्ञान विभाग का प्रतीक चित्र, स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/India Meteorological Department#/media/File:India_Meteorological Department_(logo).png
- चित्र 2.11 — स्रोत — http://nianp.res.in/automated-weather-station
- चित्र 2.12 — स्रोत — https://www.ndma.gov.in/sites/default/files/2023-10/NDMA PR_GLOF_121023.pdf
- चित्र 2.9 — नीचे बाईं ओर चित्र क, स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Alsomitra_macrocarpa#/media/File:Alsomitra_macrocarpa_seed_(syn_Zanonia_macrocarpa).jpg
- चित्र 3.8 — अरावली, स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Aravalli.jpg
- चित्र 3.8 — नगरीय ऊष्मा द्वीप, स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:DLF_Epitome_Tower, DLF_ Phase 3, Gurugram.jpg
- चित्र 3.11 — लोहड़ी, स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:%E0%A8%B2%E0%A9%8B%E0%A8%B9%E0 %A9%9C%E0%A9%80_Lohri.jpg

पोंगल, स्रोत— https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Pongal_Festival.jpg ओणम-https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Aranmula-boat_race-_Kerala-India-1.jpg बांगला-https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Aranmula-boat_race-_Kerala-India-1.jpg

- चित्र 3.12— राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल का प्रतीक चित्र, स्रोत— https://en.wikipedia.org/wiki/National_Disaster Response_Force#/media/File:National_Disaster_Response_Force_Logo.png
- चित्र 3.13— चक्रवात फानी, स्रोत— https://visibleearth.nasa.gov/images/144987/tropical-cyclone-fani/1449881
- चित्र 3.15— जंगल की आग, बृजेश जोशी के सौजन्य से
असम में बाढ़— https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Assam_flood_in_2015.jpg
- चित्र 4.1— मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- चित्र 4.3— हरिता कडप्पा के सौजन्य से
- चित्र 4.4— मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- चित्र 4.5— भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सौजन्य से
- चित्र 4.6— सिक्कों के भंडार का चित्र, स्रोत— https://en.wikipedia.org/wiki/Punch-marked_coins#/media/File:Hoard_of_mostly_Mauryan_coins.jpg; मुड़े हुए बार सिक्कों का चित्र, स्रोत— https://commons.wikimedia.org/wiki/File:AR_%E2%80%9CBent_Bar%E2%80%9D_Satamanas. All_coins_ Taxila; गांधार बेंट बार सिक्के का चित्र, स्रोत— https://en.wikipedia.org/wiki/Punch-marked_coins#/media/File:Gandhara_bent_bar.jpg
- चित्र 4.7— भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सौजन्य से
- चित्र 4.9— प्रो. के. राजन के सौजन्य से
- चित्र 5.6— स्रोत— https://commons.wikimedia.org/wiki/File:035_The_War_over_the_Buddha%27s_ Relics (33813012975).jpg एट्रिब्यूशन-धर्म
- चित्र 5.7— स्रोत— https://en.wikipedia.org/wiki/File:112_1karshapana_Maghada_1ar_(8482307176).jpg
- चित्र 5.8— श्वेता राव के सौजन्य से
- चित्र 5.11— स्रोत— https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Porus_alexander_coin.png
- चित्र 5.14— स्रोत— https://museumsofindia.gov.in/repository/record/alh_ald-AM-MOD-214-135 मंत्रालय
- चित्र 5.16— स्रोत— https://en.wikipedia.org/wiki/Ashoka#/media/File:Ashoka’s_visitto_the_Ramagrama Culture stupa Sanchi Stupa_1_Southern_gateway.jpg

- चित्र 5.18 — गिरनार में शिलालेख, स्रोत — https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/c/c3/GRE1-2.jpg
  टोपरा अशोक शिलालेख, मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- चित्र 5.19 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Sohgaura_copper_plate_inscription#/media/File:Soghaura_Inscription.jpg
- चित्र 5.20 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Lion_Capital_of_Ashoka#/media/File:Sarnath_capital.jpg
- चित्र 5.21 — बिहार संग्रहालय के सौजन्य से
- चित्र 5.22 — स्रोत — https://artsandculture.google.com/asset/vAEws25wkD-Qcw?childassetid=nwHQv9DQ4AL-Tg
- चित्र 5.23 — बिहार संग्रहालय के सौजन्य से
- चित्र 5.24 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Terracota_statue_of_Saptmatrikas_from_Maurya period, National_Museum, New_Delhi.jpg
- चित्र 5.25 — राष्ट्रीय संग्रहालय के सौजन्य से
- चित्र 5.26 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Sanchi_Stupa Sanchi.jpg
- चित्र 5.27 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Elephant-sculpture-dhauli.JPG
- चित्र 5.28 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/State_Emblem_of_India#/media/File:Emblem_of_India.svg
- चित्र 5.29.1 स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Punch-marked_coins#/media/File:Hoard_of_mostly_ Mauryan_coins.jpg
- चित्र 5.29.2 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Ashoka#/media/File:India_Mauryan_emperor_Ashoka Punch-marked_Coin.jpg
- चित्र 6.1.1 — चित्र संग्रह (कोलाज)

  1. https://en.wikipedia.org/wiki/Shunga_Empire#/media/File:Royal_family_Sunga_Westबंगाल_1st_century_BCE.jpg
  2. https://picryl.com/media/kitlv-88119-unknown-relief-from-the-amaravati-stupa-in-british-india-1897-608776
  3. https://en.wikipedia.org/wiki/Shunga_Empire#/media/File:MET_2001_588_Strm1_(vertical).jpg
  4. https://museumsofindia.gov.in/repository/record/nat_del-67-195-4745

- चित्र 6.1.2 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Shunga_Empire#/media/File:MET_DP158770.jpg
- चित्र 6.4 — स्रोत — https://artsandculture.google.com/story/rama-performs-the-sacrificial-ritual-of-the-Ashwamedha-yajna-national-museum-delhi/AAVRBNGG2R9ZxA?hl=en
- चित्र 6.5.1 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Shunga_Empire#/media/File:Interiors_of_Stupa_1.JPG
- चित्र 6.5.2 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Shunga_Empire#/media/File:Sanchi_8-17.jpg
- चित्र 6.5.3 — मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- चित्र 6.5.4 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Shunga_Empire#/media/File:Sanchi_8-17.jpg
- चित्र 6.6.1 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Shunga_Empire/#/media/File:Bharhut Yavana.jpg
- चित्र 6.6.2 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:भारत, चंद्रकेतुगढ़_(पश्चिम बंगाल), शुंग काल की पुरुष आकृति_-_1992.116_-_Cleveland_Museum_of_Art.tif
- चित्र 6.6.3 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Shunga_Empire#/media/File:SungaWithChild.jpg
- चित्र 6.6.4 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/Category:Shunga_Empire#/media/File:Female_ figure_holding_a_fan_Kausambl,_200_BCE.jpg
- चित्र 6.6.5 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Shunga_Empire#/media/File:MET_2001_588_Strm1_(vertical).Jpg
- चित्र 6.6.6 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Female_figure_with_hair_ornaments. पकी हुई मिट्टी (टेराकोटा), 200-250_BCE.jpg
- चित्र 6.6.7 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Shunga_Empire#/media/File:Royal_familySunga_West Bengal_1st_century_BCE.jpg
- चित्र 6.6.8 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:India,_Sunga_Period_-_Bangle_-_1973.64 Cleveland Museum_of_Art.tif
- चित्र 6.6.9 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:India_Sunga_Period_style_of_Chandraketugarh_-_Comb_-_2000.74- Cleveland_Museum_of_Art.tif
- चित्र 6.6.10 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:India,_periodo_sunga,_vaghi_di_collana_a_ form_di_pesce,_e_due_a_forma_di_triratna,_185-72_ac_ca.jpg
- चित्र 6.7 — स्रोत — https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/8/8d/Nationalmuseum_Neu-delhi_2017-12-27t.jpg
- चित्र 6.8 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Satavahana_dynasty#/media/File:Vashishtiputra_Shri_Pulumavi.jpg

- चित्र 6.9 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/Category:Nanepatti_cave_Inscription#/media/File:Nanepatti_caves.jpg
- चित्र 6.10 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Gautamiputra_Satakarni#/media/File:Coinage_of_Gautamiputra Satakarni_with_Brahmi_legend.jpg
- चित्र 6.11 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Karla_Caves#/media/File:Karla_caves_Chaitya.jpg
- चित्र 6.12 — स्रोत — https://museumsofindia.gov.in/repository/record/nat_del-67-195-4745
- चित्र 6.13.1 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Udayagiri_and_Khandagiri_caves#/media/File:Khandagari and_Udaygiri_featured_image.jpg
- चित्र 6.13.2 — मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- चित्र 6.13.3 — मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- चित्र 6.15 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Kannagi#/media/File:Statue_of_Kannagi.jpg
- चित्र 6.17 — मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- चित्र 6.18 — स्रोत — https://museumsofindia.gov.in/repository/record/im_kol-C-13526-Chera-74291 संस्कृति मंत्रालय
- चित्र 6.19 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Heliodorus_pillar#/media/File:Heliodorus_pillar_(cropped).Jpg
- चित्र 6.20 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Bharhut#/media/File:Bharhut_Ajatasattu_Pillar_-_Descent From_Tavatimsa.jpg
- चित्र 6.21 — स्रोत — https://egazette.gov.in/WriteReadData/2024/256436.pdf भारत का राजपत्र
- चित्र 6.22 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Brahmi_script#/media/File:Coin_of_the_Bactrian_King_Agathokles.jpg
- चित्र 6.23 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Kushan_coinage#/media/File:Coin_of_Kanishka_L.jpg
- चित्र 6.24 — मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- चित्र 6.26 — स्रोत — https://artsandculture.google.com/asset/kubera-unknown/FAE3vJTOtYgVLQ?hl=en
- चित्र 7.3 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/File:Inscription_on_Iron_Pillar%2C_Delhi.jpg

- चित्र 7.4 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Chandragupta_1_or_Samudragupta.Circa_320-335_or_335-380_AD.jpg
- चित्र 7.5 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Allahabad_Pillar#/media/File:Allahabad_stone_pillar_ inscription_of_Samudragupta.jpg
- चित्र 7.6 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Samudragupta#/media/File:Samudragupta_Circa_335-380_CE_ Lyrist type.jpg
- चित्र 7.7 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Samudragupta#/media/File:Samudragupta_circa_335-380_CE_ Ashvameda_type.jpg
- चित्र 7.9 — स्रोत — https://commons.m.wikimedia.org/w/index.Php?search=केवला+नरसिंह+मंदिर&title=विशेष:मीडियासर्च&type=
- चित्र 7.11 — मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- चित्र 7.12 — स्रोत — https://en wikipedia.org/wiki/Chandragupta #/media/File:Vikramaditya_goes_forth_to_ war (क्रॉप्ड) jpg
- चित्र 7.15.1 — स्रोत — https://museumsofindia.gov.in/repository/record/alh_ald-AM-SCL-153-4112
- चित्र 7.15.2 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Gupta_art#/media/File:Vishnu_of_Mathura 5th_century.jpg
- चित्र 7.15.3 — राष्ट्रीय संग्रहालय के सौजन्य से
- चित्र 7.16 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Dashavatara_Temple देवगढ़
- चित्र 7.17 — मिशेल डैनिनो के सौजन्य से
- चित्र। 7.18.2 — स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Sanchi#/media/File:Temple_17-बौद्ध स्मारक सांची स्तूप 2013-02-21_4494.JPG
- चित्र. 7.18.3 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Mahabharat_Gupta_artefacts_03 राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली.jpg
- चित्र. 8.5 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:12th-century_Belur_Vaishnavism_Hindutemples_complexVishnu_avatar_Varaha_savingBhudevi_(goddess_earth_and_crushing_evil demon.jpg
- चित्र. 8.11 — स्रोत — https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/2/23/Harappa_seals_nm_india 02.JPG
- चित्र 8.12 — डॉ. एराच भरूचा के सौजन्य से

- चित्र 8.13 — डॉ. एराच भरूचा के सौजन्य से
- चित्र 8.14 — डॉ. एराच भरूचा के सौजन्य से
- चित्र 8.15 — सी.पी.आर. पर्यावरण शिक्षा केंद्र के सौजन्य से
- चित्र 8.16 — सी.पी.आर. पर्यावरण शिक्षा केंद्र के सौजन्य से
- चित्र 9.4 — स्रोत — https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/a/a3/Government-Vedder-Highsmith. Jpeg
- चित्र 9.6 — उत्तरमेरुर शिलालेख, स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Vaikunta Perumal Uthiramerur4.JPG
- चित्र 9.8 — बाणों की शय्या पर लेटे भीष्म को दर्शाता लघु चित्र, स्रोत — https://commons. Wikimedia.org/wiki/File:The_Death_of_Bhishma_(cropped).jpg
- चित्र 9.9 — राजा चार्ल्स तृतीय एक औपचारिक गाड़ी में, स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:King चार्ल्स तृतीय डायमंड जुबली स्टेट_कोच (स्टेट_विजिट_ऑफ_कतर_टू_द_यूनाइटेड_किंगडम).jpg
- चित्र 9.10 और 9.11 — एडॉल्फ हिटलर और ईदी अमीन के कैरिकेचर, स्रोत — https://www.loc.gov/pictures/item/2002709650/ सौजन्य — लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, प्रिंट्स एंड फोटोग्राफ्स डिवीजन, एडमंड एस. वाल्टमैन द्वारा बनाई गई ड्राइंग
- चित्र 9.12 — रोमा गर्ल, स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Romani_Girl.jpg
- चित्र 9.13 — कुलीनतंत्र स्थिति, स्रोत — https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/e/e5/The_Bosses of_the_Senate_by_Joseph_Keppler.jpg
- चित्र 10.3 — प्रारूप समिति के कुछ सदस्यों के साथ, बी.आर. आंबेडकर, स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/ConstituentAssembly_of_India#/media/File:Dr. बाबासाहेब_अंबेडकर अध्यक्ष, भारतीय संविधान की प्रारूप समिति अन्य सदस्यों के साथ 29 अगस्त, 1947 को.jpg
- चित्र 10.4.1 — संविधान सभा, स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:A_Constituent Assembly_of_India_meeting_in_1950.jpg
- चित्र 10.4.2 — संविधान सभा, स्रोत — https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/d/db/Jawaharlal_Nehru_addressing_the_constituent_assembly_jn_1946.jpg
- चित्र 10.4.3 — संविधान सभा, स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Indian_Constituent Assembly.JPG
- चित्र 10.5 — अधिकारों की घोषणा, स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Declaration_of_the_Rights_of_Man_and_of_the_Citizen#/media/File:Declaration_of_the_Rights_of_Man_and_of_the_Citizen_in_1789.jpg
- चित्र 10.6 से 10.13 — मूल संविधान की प्रति से लिया गया

- चित्र 10.15 — भारतीय संविधान की प्रस्तावना, स्रोत — https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/0/0d/India-constitution-preamble.svg
- चित्र 11.3 — जुनबील मेला, मनब ज्योति के सौजन्य से
- चित्र 11.4 — जुनबील मेला, मनब ज्योति के सौजन्य से
- चित्र 11.5 — जुनबील मेला, मनब ज्योति के सौजन्य से
- चित्र 11.11 — चालुक्य सिक्का, स्रोत — https://commons.wikimedia.org/w/index. Php?search=chalukya+coin&title=Special:MediaSearch&type=image
- चित्र 11.11 — चोल सिक्का, सौजन्य-भारतीय रिज़र्व बैंक, स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Chalukyas_of Kalyana.jpg

  https://www.newworldencyclopedia.org/entry/File:Uttama_coin.png
- चित्र 11.12 — रोमन स्वर्ण सिक्का, भारतीय रिज़र्व बैंक, स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Roman gold coins_excavated_in_Pudukottai_India_one_coin_of_Caligula_31_41_and_two_coins_of_Nero_54_68. Jpg
- चित्र 11.13 — श्रेय — ए.एम. दिवाकर के सौजन्य से
- चित्र 11.14 — आज के सिक्के, भारतीय रिज़र्व बैंक के सौजन्य से

  स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_10-rupee_coin

  स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_20-rupee_coin

  स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Rupees_5_Grain_Series_coin_reverse.png

  स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Indian_1_Rupee_Coin_Reverse_or_Tails.jpg
- चित्र 11.15 — एकमुखी नोट और दस रुपए का नोट, भारतीय रिज़र्व बैंक के सौजन्य से

  स्रोत — https://rbi.org.in/Scripts/pm_earlyissues.aspx
- चित्र 11.16 — कागजी मुद्रा, भारतीय रिज़र्व बैंक के सौजन्य से

  स्रोत — https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_100-rupee_note

  स्रोत —https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_50-rupee_noten
- चित्र 12.2 — स्रोत — https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Hampi_Bazaar.jpg

2. Dreamstime.com से रॉयल्टी मुक्त स्टॉक

- चित्र 12.3 — स्रोत — https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/6/65/Hampi_Bazaar.jpg
- चित्र 1.1 — कर्नाटक में जोग जलप्रपात
- चित्र 1.7.2, 1.7.4, 1.7.6, 1.7.7
- चित्र 1.8, 1.9
- चित्र 1,11, 1,12, 1,13, 1,14
- चित्र 1.15
- चित्र 1,17, 1,18
- चित्र 1.21, 1.22
- चित्र 1.23
- चित्र 1.24 — घर से दूर किसी स्रोत से पानी लाती महिलाएँ
- चित्र 1.26
- चित्र 1.27
- चित्र 1.33
- चित्र 1,34
- चित्र 1.40
- चित्र 1.41 — नोंग्रियाट गाँव, चेरापूंजी, मेघालय के पास जीवित जड़ों का पुल
- चित्र 1.42
- चित्र 2.1 — सभी चित्र
- चित्र 2.3.1, 2.3.2, 2.3.3, 2.3.4 — अवलोकन संकेत
- चित्र 2.8 — खारदुंगला शीर्ष
- चित्र 2.9 — सभी चित्र (ऊपर के 3 और 1 दायाँ चित्र)
- चित्र 2.10 — पवन वेन और एनीमोमीटर
- चित्र 3.1 सभी चित्र
- चित्र 3.2 — सभी चित्र
- चित्र 3.3
- चित्र 3.5 — चित्र संग्रह में सभी चित्र
- चित्र 3.10
- चित्र 3.11 — बिहू, छठ पूजा, बैसाखी, हेमिस, लोसूंघ, गुड़ी पड़वा और मकर संक्रांति को दर्शाते चित्र
- चित्र 3.14 — तूफान का केंद्र
- चित्र 3.15 — (भूस्खलन)
- चित्र 3.15 — (चक्रवात)
- चित्र 3.16 — (जलवायु परिवर्तन)
- चित्र 3.16
- चित्र 5.1 — प्राचीन बराबर गुफा पहाड़ियाँ
- चित्र 5.10 — समय-रेखा पर सिकंदर की मूर्ति
- चित्र 6.16
- चित्र 6.27.6
- चित्र 7.1 — (अजंता की गुफाएँ)
- चित्र 7.17
- चित्र 7.18.1
- चित्र 8.1 — परिचयात्मक चित्र संग्रह में सभी चित्र
- चित्र 8.2 — चित्र संग्रह में सभी चित्र
- चित्र 8.3
- चित्र 8.4

- चित्र 8.6
- चित्र 8.7
- चित्र 8.8
- चित्र 8.9
- चित्र 8.10
- चित्र 8.16
- चित्र 8.18 — चित्र संग्रह में सभी चित्र
- चित्र 9.1 — संसद के अंदर
- चित्र 9.5 — भारत में मतदान
- चित्र 9.7 — सांची के स्तंभ की आराधना
- चित्र 10.1 — शीर्षक पृष्ठ
- चित्र 10.2 — भारत का संविधान
- चित्र 11.2.1 पत्थर की मुद्रा
- चित्र 11.2.2 — एज्टेक कॉपर तजादेरो
- चित्र 11.2.3 — तेवाऊ
- चित्र 12.8
- चित्र 12.9
- चित्र 12.10 — सभी चित्र
- चित्र 12.12
- चित्र 12.13
- चित्र 12.15
- चित्र 12.16
- चित्र 12.17
- चित्र 12.18
- चित्र 12.19
- चित्र 12.20
- चित्र 12.21
- चित्र 12.22 — चित्र संग्रह में सभी चित्र
- चित्र 12.25
- चित्र 12.28
- चित्र 12.30

3. AI द्वारा निर्मित चित्र

- चित्र 12.1
- चित्र 12.14

नोट — (1) 'ASI' का अर्थ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण है। (2) सभी इंटरनेट लिंक फरवरी 2025 तक एक्सेस किए गए हैं।